

दिल्ली राजपत्र
Delhi Gazette
सत्यमेव जयते

असाधारण

EXTRAORDINARY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 212]	दिल्ली, बृहस्पतिवार, जून 1, 2017/ज्येष्ठ 11, 1939	[रा.रा.रा.क्षे.दि. सं. 91
No. 212]	DELHI, THURSDAY, JUNE 1, 2017/JYAISTHA 11, 1939	[N.C.T.D. No. 91

भाग—IV

PART—IV

राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र दिल्ली सरकार

GOVERNMENT OF THE NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI

विधान सभा सचिवालय

अधिसूचना

दिल्ली, 31 मई, 2017

सं. 21(32)/माल एवं सेवाकर/2017/वि.स.स.—VI/वि./1208.—निम्नलिखित को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है :—

विधेयक संख्या (03) 2017

दिल्ली माल और सेवा कर विधेयक, 2017 (संख्या 3)

खंडों का क्रम

खंड

अध्याय 1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम, प्रारंभ और विस्तार ।
2. परिभाषाएं ।

अध्याय 2

प्रशासन

3. इस अधिनियम के अधीन अधिकारी ।
4. अधिकारियों की नियुक्ति ।
5. अधिकारियों की शक्तियां ।
6. कतिपय परिस्थितियों में केंद्रीय कर अधिकारियों का समुचित प्राधिकारी के रूप में प्राधिकार देना ।

अध्याय 3**कर का उद्ग्रहण और संग्रहण**

7. प्रदाय की परिधि ।
8. संयुक्त और मिश्रित पूर्तियों पर कर का दायित्व ।
9. उद्ग्रहण और संग्रहण ।
10. प्रशमन उद्ग्रहण ।
11. कर से छूट देने की शक्ति ।

अध्याय 4**प्रदाय का समय और मूल्य**

12. माल की पूर्ति का समय ।
13. सेवाओं की पूर्ति का समय ।
14. माल या सेवाओं की पूर्ति के संबंध में कर की दर में परिवर्तन ।
15. कराधेय पूर्ति का मूल्य ।

अध्याय 5**इनपुट कर प्रत्यय**

16. इनपुट कर प्रत्यय लेने के लिए पात्रता और शर्तें ।
17. प्रत्यय और निरुद्ध प्रत्ययों का प्रभाजन ।
18. विशेष परिस्थितियों में प्रत्यय की उपलब्धता ।
19. छुटपुट काम के लिए किए गए निवेशों और भेजे गए पूंजी माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का लिया जाना ।
20. इनपुट सेवा वितरक द्वारा प्रत्यय के वितरण की रीति ।
21. आधिक्य में वितरित प्रत्यय के वसूली की रीति ।

अध्याय 6**रजिस्ट्रीकरण**

22. रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी व्यक्ति ।
23. व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं है ।
24. कतिपय मामलों में अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण ।
25. रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रक्रिया ।
26. रजिस्ट्रीकरण समझा जाना ।
27. आकस्मिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति से संबंधित विशिष्ट उपबंध ।
28. रजिस्ट्रीकरण का संशोधन ।
29. रजिस्ट्रीकरण का रद्दकरण ।
30. रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण ।

अध्याय 7**कर बीजक, जमा पत्र और नामे नोट**

31. कर बीजक ।
32. कर के अप्राधिकृत संग्रहण का प्रतिषेध ।
33. कर बीजक और अन्य दस्तावेजों में उपदर्शित की जाने वाले कर की रकम ।
34. जमा और नामे पत्र ।

अध्याय 8

लेखे और अभिलेख

35. लेखे और अन्य अभिलेख ।
36. लेखों के प्रतिधारण की अवधि ।

अध्याय 9**विवरणियां**

37. जावक पूर्तियों के ब्यौरे देना ।
38. आवक पूर्तियों के ब्यौरे देना ।
39. विवरणियां देना ।
40. प्रथम विवरणी ।
41. इनपुट कर प्रत्यय का दावा और उसकी अनंतिम स्वीकृति ।
42. इनपुट कर प्रत्यय का मिलान, उलटाव और वापस लेना ।
43. आउटपुट कर दायित्व का मिलान, प्रतिलोम और प्रतिदाय ।
44. वार्षिक विवरणी ।
45. अंतिम विवरणी ।
46. विवरणी व्यतिक्रमियों को सूचना ।
47. विलंब फीस का उद्ग्रहण ।
48. माल और सेवा कर व्यवसायी ।

अध्याय 10**कर संदाय**

49. कर, ब्याज, शास्ति और अन्य रकमों का संदाय ।
50. विलंबित कर संदाय पर ब्याज ।
51. स्रोत पर कर कटौती ।
52. स्रोत पर कर का संग्रहण ।
53. इनपुट कर प्रत्यय का अंतरण ।

अध्याय 11**प्रतिदाय**

54. कर प्रतिदाय ।
55. कतिपय मामलों में प्रतिदाय ।
56. विलंबित प्रतिदाय पर ब्याज ।
57. उपभोक्ता कल्याण निधि ।
58. निधि का उपयोग ।

अध्याय 12**निर्धारण**

59. स्वतः निर्धारण ।
60. अनंतिम निर्धारण ।
61. विवरणियों की संवीक्षा ।
62. विवरणियों को फाइल न करने वालों का निर्धारण ।
63. अरजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का निर्धारण ।
64. कतिपय विशेष मामलों में त्वरित निर्धारण ।

अध्याय 13**लेखापरीक्षा**

65. कर प्राधिकारियों द्वारा लेखापरीक्षा ।
66. विशेष लेखापरीक्षा ।

अध्याय 14**निरीक्षण, तलाशी, अभिग्रहण और गिरफ्तारी**

67. निरीक्षण, तलाशी और अभिग्रहण की शक्ति ।
68. संचलन में मालों का निरीक्षण ।
69. गिरफ्तार करने की शक्ति ।
70. व्यक्तियों को साक्ष्य देने और दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए समन करने की शक्ति ।
71. कारबार परिसरों तक पहुंच ।
72. समुचित अधिकारियों की सहायता के लिए अधिकारी ।

अध्याय 15**मांग और वसूली**

73. असंदत्त कर या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या कपट से भिन्न किसी अन्य कारण से उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाए गए कर का अवधारण ।
74. असंदत्त कर या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या कपट से उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाए गए कर का अवधारण ।
75. कर अवधारण के संबंध में साधारण उपबंध ।
76. संगृहित किंतु सरकार को संदत्त न किया गया कर ।
77. गलती से संगृहित किया गया और केंद्रीय सरकार या राज्य सरकार को संदत्त किया गया कर ।
78. वसूली कार्यवाहियों का आरंभ किया जाना ।
79. कर की वसूली ।
80. कर और अन्य रकम का किस्तों में संदाय ।
81. कतिपय मामलों में संपत्ति अंतरण का शून्य होना ।
82. कर का संपत्ति पर पहला प्रभार होना ।
83. कतिपय मामलों में राजस्व के संरक्षण के लिए अनंतिम कुर्की ।
84. कतिपय वसूली कार्यवाहियों का जारी रहना और विधिमान्यकरण ।

अध्याय 16**कतिपय मामलों में संदाय करने का दायित्व**

85. कारबार के अंतरण की दशा में दायित्व ।
86. अभिकर्ता और प्रधान व्यक्ति का दायित्व ।
87. कंपनियों के समामेलन या विलयन की दशा में दायित्व ।
88. परिसमापन के अधीन कंपनियों की दशा में दायित्व ।
89. प्राइवेट कंपनियों के निदेशकों का दायित्व ।
90. फर्म के भागीदारों का कर का संदाय करने के लिए दायित्व ।
91. संरक्षकों, न्यासियों आदि का दायित्व ।
92. प्रतिपाल्य अधिकरण आदि का दायित्व ।
93. कतिपय मामलों में कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायित्व के संबंध में विशेष उपबंध ।
94. अन्य मामलों में दायित्व ।

अध्याय 17**अग्रिम विनिर्णय**

95. परिभाषाएं ।
96. अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण का गठन ।
97. अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन ।
98. आवेदन की प्राप्ति पर प्रक्रिया ।
99. अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण का गठन ।
100. अपील प्राधिकारी को अपील ।
101. अपील प्राधिकारी के आदेश ।
102. अग्रिम विनिर्णय की परिशुद्धि ।
103. अग्रिम विनिर्णय का लागू होना ।
104. कतिपय परिस्थितियों में अग्रिम विनिर्णय का शून्य होना ।
105. प्राधिकारी और अपील प्राधिकारी की शक्तियां ।
106. प्राधिकारी और अपील प्राधिकारी की प्रक्रिया ।

अध्याय 18**अपील और पुनरीक्षण**

107. अपील प्राधिकारी की अपीलें ।
108. पुनरीक्षण प्राधिकारी की शक्तियां ।
109. अपील अधिकरण और उसकी न्यायपीठें ।
110. अपील अधिकरण के अध्यक्ष और सदस्य, उनकी अहर्ताएं, नियुक्ति, सेवा की शर्तें आदि ।
111. अपील अधिकरण के समक्ष प्रक्रिया ।
112. अपील अधिकरण को अपील ।
113. अपील अधिकरण के आदेश ।
114. राज्य अध्यक्ष की वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियां ।
115. अपील के दाखिल करने के लिए संदत्त रकम की वापसी पर ब्याज ।
116. प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा हाजिरी ।
117. उच्च न्यायालय को अपील ।
118. उच्चतम न्यायालय को अपील ।
119. राशि जो अपील आदि के होने के बाद भी संदत्त किए जाने हैं ।
120. कतिपय मामलों में अपील का फाइल नहीं किया जाना ।
121. अपील न किए जा सकने वाले विनिश्चय और आदेश ।

अध्याय 19**अपराध और शास्तियां**

122. कतिपय अपराधों के लिए शास्ति ।
123. सूचना विवरणी देने में असफल रहने पर शास्ति ।
124. आंकड़े देने में असमर्थ रहने पर जुर्माना ।
125. साधारण शास्ति ।
126. शास्ति से संबंधित साधारण विधाएं ।

127. कतिपय मामलों में शास्ति अधिरोपित करने की शक्ति ।
128. शास्ति या फीस या दोनों के अधित्यजन करने की शक्ति ।
129. अभिरक्षा, अभिग्रहण और माल की निर्मुक्ति तथा अभिवहन में प्रवहण ।
130. माल की जब्ती या प्रवहण और शास्ति का उद्ग्रहण ।
131. जब्ती या शास्ति अन्य दंडों से व्यतिरेक नहीं करेगा ।
132. कतिपय अपराधों के लिए दंड ।
133. अधिकारियों और कतिपय अन्य व्यक्तियों का दायित्व ।
134. अपराध का संज्ञान ।
135. आपराधिक मानसिक दशा का अनुमान ।
136. कतिपय परिस्थितियों के अधीन कथनों की सुसंगतता ।
137. कंपनियों द्वारा अपराध ।
138. अपराधों का प्रशमन ।

अध्याय 20

संक्रमणकालीन उपबंध

139. विद्यमान करदाताओं का प्रवर्जन ।
140. निवेश प्रतिदेय कर के लिए संक्रमणकालीन व्यवस्थाएं ।
141. फुटकर काम के संबंध में संक्रमणकालीन उपबंध ।
142. प्रकीर्ण संक्रमणकालीन उपबंध ।

अध्याय 21

प्रकीर्ण

143. कार्य की प्रक्रिया ।
144. कतिपय मामलों में दस्तावेजों के लिए उपधारणा ।
145. माइक्रो फिल्मों, दस्तावेजों की प्रतिकृति प्रतियों और कंप्यूटर प्रिंट आउट की दस्तावेजों के रूप में और साक्ष्य के रूप में ग्राह्यता ।
146. सामान्य पोर्टल ।
147. निर्यात समझा जाना ।
148. कतिपय प्रक्रियाओं के लिए विशेष पद्धति ।
149. माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग ।
150. सूचना विवरणी प्रस्तुत करने की बाध्यता ।
151. आंकड़े संग्रहण करने की शक्ति ।
152. सूचना के प्रकटन पर वर्जन ।
153. किसी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त करना ।
154. नमूनों को प्राप्त करने की शक्ति ।
155. सबूत का भार ।
156. व्यक्ति लोक सेवक समझा जाएगा ।
157. इस अधिनियम के अधीन की गई कार्रवाई का संरक्षण ।
158. लोक सेवक द्वारा सूचना का प्रकट किया जाना ।
159. कतिपय मामलों में व्यक्ति के विषय में सूचना का प्रकाशन ।
160. कतिपय स्तरों पर निर्धारण कार्यवाहियां, आदि का अविधिमान्य न किया जाना ।
161. अभिलेख पर प्रकट त्रुटि का परिशोधन ।
162. सिविल न्यायालय की अधिकारिता पर वर्जन ।

163. फीस उद्ग्रहण ।
164. नियमों को बनाने की सरकार की शक्ति ।
165. विनियम बनाने की शक्ति ।
166. नियमों, विनियमों और अधिसूचनाओं का रखा जाना ।
167. शक्तियों का प्रत्यायोजन ।
168. अनुदेशों या निदेशों को जारी करना ।
169. कतिपय मामलों में नोटिस तामील करना ।
170. कर का पूर्णांकन आदि ।
171. मुनाफाखोरी निरोधी उपाय ।
172. कठिनाइयों को दूर करना ।
173. कतिपय अधिनियमों का संशोधन ।
174. निरसन और व्यावृत्ति ।

अनुसूची 1

अनुसूची 2

अनुसूची 3

2017 का विधेयक संख्यांक 03.

[दि दिल्ली गुड्स एंड सर्विस टैक्स बिल, 2017 का हिन्दी अनुवाद]

दिल्ली माल और सेवा कर विधेयक, 2017

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा माल या सेवाओं या दोनों के अंतःराज्यीय पूर्ति पर कर के उद्ग्रहण और संग्रहण के लिए और उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का उपबंध

करने के लिए

विधेयक

भारत गणराज्य के अड़सठवें वर्ष में दिल्ली विधान-सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :--

अध्याय 1

प्रारंभिक

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम दिल्ली माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 है।

(2) इसका विस्तार संपूर्ण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली पर है।

(3) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा, जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, राजपत्र में, अधिसूचना द्वारा, नियत करे :

परंतु इस अधिनियम के भिन्न-भिन्न उपबंधों के लिए भिन्न-भिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी और ऐसे किसी उपबंध में इस अधिनियम के प्रारंभ के प्रति किसी निर्देश का यह अर्थ लगाया जाएगा कि वह उस उपबंध के प्रवृत्त होने के प्रतिनिर्देश है।

संक्षिप्त नाम,
विस्तार और
प्रारंभ।

परिभाषाएं।

2. इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,--

(1) "अनुयोज्य दावे" का वही अर्थ होगा, जो संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 की धारा 3 में उसका है ;

(2) "परिदान का पता" से माल या सेवाओं या दोनों के पाने वाले का ऐसा पता अभिप्रेत है, जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के परिदान के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कर बीजक पर उपदर्शित है ;

(3) "अभिलेख पर पता" से पाने वाले का वह पता अभिप्रेत है, जो पूर्तिकार के अभिलेखों में उपलब्ध है ;

(4) "न्यायनिर्णायक प्राधिकारी" से अधिनियम के अधीन कोई आदेश या विनिश्चय देने के लिए नियुक्त या प्राधिकृत कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है, किंतु इसके अंतर्गत आयुक्त, पुनरीक्षण

1882 का 4

प्राधिकारी, अग्रिम विनिर्णय प्राधिकारी, अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकारी, अपील प्राधिकारी और अपील अधिकरण नहीं है ;

(5) "अभिकर्ता" से फेक्टर, दलाल, कमीशन अभिकर्ता, आडुतिया, प्रत्यायक अभिकर्ता (डेल क्रेडर एजेंट), नीलामकर्ता या कोई अन्य वाणिज्यिक अभिकर्ता, चाहे जिस नाम से ज्ञात हो, सहित कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो किसी अन्य व्यक्ति की ओर से माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति या प्राप्ति का कारबार करता है ;

(6) "सकल आवर्त" से सभी कराधेय पूर्तियों (ऐसी आवक पूर्तियों के मूल्य को अपवर्जित करके, जिन पर किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है), छूट प्राप्त पूर्तियों, माल या सेवाओं या दोनों के निर्यातों और अखिल भारतीय आधार पर संगणित समान स्थायी खाता संख्यांक वाले व्यक्तियों के अंतरराज्यिक पूर्ति का संकलित मूल्य अभिप्रेत है, किंतु इसमें केंद्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर अपवर्जित है ;

(7) "कृषक" से ऐसा कोई व्यक्ति या कोई हिंदू अविभक्त कुटुंब अभिप्रेत है, जो,--

(क) स्वयं के श्रम द्वारा ; या

(ख) कुटुंब के श्रम द्वारा ; या

(ग) नकद या वस्तु के रूप में संदेय मजदूरी पर सेवकों द्वारा या व्यक्तिगत पर्यवेक्षण के अधीन या कुटुंब के किसी सदस्य के व्यक्तिगत पर्यवेक्षण के अधीन भाड़े के मजदूरों द्वारा,

भूमि पर खेती करता है ;

(8) "अपील प्राधिकारी" से अपीलों की सुनवाई के लिए नियुक्त या प्राधिकृत धारा 107 में यथानिर्दिष्ट कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है ;

(9) "अपील अधिकरण" से धारा 109 में निर्दिष्ट माल और सेवा कर अपील अधिकरण अभिप्रेत है ;

(10) "नियत दिन" से वह दिन अभिप्रेत है जिसको इस अधिनियम के उपबंध प्रवृत्त होंगे ;

(11) "निर्धारण" से इस अधिनियम के अधीन कर के दायित्व का अवधारण अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत स्वतःनिर्धारण, पुनः निर्धारण, अनंतिम निर्धारण, संक्षिप्त निर्धारण और सर्वोत्तम विवेक बुद्धि के अनुसार निर्धारण भी है ;

1961 का 43

(12) "सहयुक्त उद्यमों" का वही अर्थ होगा, जो आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 92क में उसका है ;

(13) "संपरीक्षा" से इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा अनुरक्षित या दिए गए अभिलेखों, विवरणियों और अन्य दस्तावेजों की, घोषित आवर्त, संदत्त करें, दावाकृत प्रतिदाय और उपभोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय की शुद्धता को और इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुरूप उसके अनुपालन को सत्यापित करने के लिए परीक्षा अभिप्रेत है ;

(14) "प्राधिकृत बैंक" से इस अधिनियम के अधीन संदेय कर या किसी अन्य रकम का संग्रहण करने के लिए सरकार द्वारा प्राधिकृत कोई बैंक या किसी बैंक की कोई शाखा अभिप्रेत है ;

(15) "प्राधिकृत प्रतिनिधि" से धारा 116 के अधीन यथा निर्दिष्ट प्रतिनिधि अभिप्रेत है ;

1963 का 54

(16) "बोर्ड" से केंद्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम, 1963 के अधीन गठित केंद्रीय उत्पाद-शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड अभिप्रेत है ;

(17) "कारबार" में निम्नलिखित सम्मिलित है,--

(क) कोई व्यापार, वाणिज्य, विनिर्माण, वृत्ति, व्यवसाय, प्रोद्यम, पद्यम् या उसी प्रकार का कोई अन्य क्रियाकलाप, चाहे वह किसी धनीय फायदे के लिए हो या न हो ;

(ख) उपखंड (क) के संबंध में या उसके आनुषंगिक या प्रासंगिक कोई क्रियाकलाप या संव्यवहार ;

(ग) उपखंड (क) की प्रकृति का कोई क्रियाकलाप या संव्यवहार, चाहे ऐसे संव्यवहार का कोई परिमाण, आवृत्ति, निरंतरता या नियमितता हो या न हो ;

(घ) कारबार के प्रारंभ या उसकी बंदी के संबंध में पूंजी माल सहित माल और सेवाओं की पूर्ति या अर्जन ;

(ङ) किसी क्लब, संगम, सोसाइटी या वैसी ही सुविधाओं या फायदों वाले किसी निकाय द्वारा उसके सदस्यों के लिए (किसी अभिदान या किसी अन्य प्रतिफल के लिए)

कोई व्यवस्था ;

(च) किसी परिसर में किसी प्रतिफलार्थ व्यक्तियों का प्रवेश ;

(छ) किसी व्यक्ति द्वारा ऐसे पदधारक के रूप में, जो उसने अपने व्यापार, वृत्ति या व्यवसाय के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए स्वीकार किया है, पूर्ति की गई सेवाएं;

(ज) किसी घुड़दौड़ क्लब द्वारा, योगक के माध्यम से उपलब्ध कराई गई सेवाएं या ऐसे क्लब में के बुक-मेकर की अनुज्ञप्ति ; और

(झ) केंद्रीय सरकार, किसी राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी द्वारा किया गया कोई ऐसा क्रियाकलाप या संव्यवहार, जिसमें वे लोक प्राधिकारियों के रूप में लगे हुए हैं ;

(18) "कारबार शीर्षक" से किसी ऐसे उद्यम का विशिष्ट संघटक अभिप्रेत है, जो ऐसे पृथक्-पृथक् माल या सेवाओं के या ऐसे संबंधित माल या सेवाओं की पूर्ति में लगा हुआ है, जो ऐसे जोखिम और प्रत्यागमके अध्यक्षीन है, जो उन अन्य कारबार शीर्षकों से भिन्न है ;

स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजनों के लिए, ऐसे कारक, जिन पर यह अवधारण करने के लिए विचार किया जाना चाहिए कि क्या ऐसा माल या सेवाएं, जिनसे संबंधित हैं, उसमें निम्नलिखित सम्मिलित है,—

(क) माल या सेवाओं की प्रकृति ;

(ख) उत्पादन प्रक्रियाओं की प्रकृति ;

(ग) माल या सेवाओं के ग्राहकों के प्रकार या वर्ग ;

(घ) माल के वितरण या सेवाओं की पूर्ति में प्रयुक्त पद्धतियां ; और

(ङ) विनियामक पर्यावरण की प्रकृति (जहां कहीं लागू हो), इसके अंतर्गत बैंककारी, बीमा या लोक उपयोगिताएं हैं ;

(19) "पूंजी माल" से ऐसा माल अभिप्रेत है, जिनका मूल्य इनपुट कर प्रत्यय का दावा करने वाले व्यक्ति की लेखा पुस्तकों में पूंजीकृत है और जिनका कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में उपयोग किया जाता है या उपयोग किया जाना आशयित है ;

(20) "नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो किसी ऐसे कराधेय क्षेत्र में जहां उसके कारबार का निश्चित स्थान नहीं है, प्रधान, अभिकर्ता या किसी अन्य हैसियत में कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में यदा कदा ऐसे संव्यवहार करता है, जिनमें माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अंतर्बलित है ;

(21) "केंद्रीय कर" से केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 9 के अधीन उद्गृहीत केंद्रीय माल और सेवा कर अभिप्रेत है ;

(22) "उपकर" का वही अर्थ हो, जो माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम में उसका है ;

1949 का 38

(23) "चार्टर्ड अकाउंटेंट" से चार्टर्ड अकाउंटेंट अकाउंटेंट अधिनियम, 1949 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ख) में यथापरिभाषित चार्टर्ड अकाउंटेंट अभिप्रेत है ;

(24) "आयुक्त" से केंद्रीय कर आयुक्त अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत धारा 3 के अधीन नियुक्त केंद्रीय कर प्रधान आयुक्त और एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त एकीकृत कर आयुक्त भी है ;

(25) "बोर्ड में का आयुक्त" से केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 168 में निर्दिष्ट आयुक्त अभिप्रेत है ;

(26) "सामान्य पोर्टल" से धारा 146 में निर्दिष्ट सामान्य माल और सेवा कर इलेक्ट्रॉनिक पोर्टल अभिप्रेत है ;

(27) किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र के संबंध में "सामान्य कार्य दिवस" से लगातार ऐसे दिन अभिप्रेत हैं, जिन्हें केंद्रीय सरकार या **राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र** दिल्ली सरकार द्वारा राजपत्रित अवकाश घोषित नहीं किया गया है ;

1980 का 56

(28) "कंपनी सचिव" से कंपनी सचिव अधिनियम, 1980 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ग) में यथापरिभाषित कंपनी सचिव अभिप्रेत है ;

(29) "सक्षम प्राधिकारी" से ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है, जिसे सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाए ;

(30) "संयुक्त प्रदाय" से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी प्राप्तिकर्ता को किया गया कोई

ऐसी पूर्ति अभिप्रेत है, जो माल या सेवाओं या दोनों के दो या अधिक कराधेय पूर्तियों से मिलकर बना है या उनका कोई ऐसा समुच्चय है, जिन्हें कारबार के साधारण अनुक्रम में एक दूसरे के साथ संयोजन में प्रकृतितः बांधा गया है और पूर्ति किया गया है, जिनमें एक मूल पूर्ति है ;

दृष्टांत : जहां माल का बीमा के साथ पैक और परिवहन किया जाता है, वहां माल की पूर्ति , पैकिंग सामग्री, परिवहन और बीमा संयुक्त पूर्ति होगा और माल की पूर्ति एक मुख्य पूर्ति होगा ।

(31) माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में "प्रतिफल" के अंतर्गत निम्नलिखित भी है,--

(क) प्राप्तिकर्ता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में, उनके प्रत्युत्तर में या उनके उत्प्रेरण के लिए, चाहे धन के रूप में या अन्यथा किया गया या किया जाने वाला कोई संदाय, किंतु इसमें केंद्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा दी गई कोई सहायकी सम्मिलित नहीं होगी ;

(ख) प्राप्तिकर्ता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में, उनके प्रत्युत्तर में या उनके उत्प्रेरण के लिए, किसी कार्य या प्रवर्तित रहने का धनीय मूल्य, किंतु इसमें केंद्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा दी गई कोई सहायिकी सम्मिलित नहीं होगी :

परंतु माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में दिए गए निक्षेप को ऐसे पूर्ति के लिए किए गए संदाय के रूप में नहीं समझा जाएगा, जब तक कि पूर्तिकार ऐसे निक्षेप का, उक्त पूर्ति के लिए प्रतिफल के रूप में उपयोजन न करे ;

(32) "माल का निरंतर प्रदाय" से माल का ऐसा पूर्ति अभिप्रेत है, जो किसी संविदा के अधीन तार, केवल पाइपलाइन या अन्य नलिका के माध्यम से या अन्यथा, निरंतर रूप से या आवर्ती आधार पर उपलब्ध कराई जाए या उपलब्ध कराने के लिए करार पाई जाए और जिसके लिए नियमित या आवधिक आधार पर पूर्तिकार, प्राप्तिकर्ता के लिए बीजक बनाता है और इसके अंतर्गत ऐसे माल का, जो सरकार ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो वह अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, पूर्ति भी है ;

(33) "सेवाओं का निरंतर प्रदाय" से सेवाओं का ऐसा पूर्ति अभिप्रेत है, जो किसी संविदा के अधीन आवधिक संदाय की बाध्यताओं के साथ तीन मास से अधिक की अवधि के लिए निरंतर रूप से या आवर्ती आधार पर उपलब्ध कराई जाए या उपलब्ध कराने के लिए करार पाई जाए और इसके अंतर्गत ऐसी सेवाओं का, जो सरकार ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो वह अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, पूर्ति भी है ;

(34) "प्रवहण" के अंतर्गत कोई जलयान, वायुयान और यान भी है ;

(35) "लागत लेखापाल" से लागत और संकर्म लेखापाल अधिनियम, 1959 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ग) में यथापरिभाषित कोई लागत लेखापाल अभिप्रेत है ;

1959 का 23

(36) "परिषद्" से संविधान के अनुच्छेद 279क के अधीन स्थापित माल और सेवा कर परिषद् अभिप्रेत है ;

(37) "जमापत्र" से धारा 34 की उपधारा (1) के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कोई दस्तावेज अभिप्रेत है ;

(38) "नामे नोट" से धारा 34 की उपधारा (3) के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कोई दस्तावेज अभिप्रेत है ;

(39) "समझा गया निर्यात" से माल का ऐसी पूर्ति अभिप्रेत है, जिसे धारा 147 के अधीन अधिसूचित किया जाए ;

(40) "अभिहित प्राधिकारी" से ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है, जिसे आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया जाए ;

(41) "दस्तावेज" के अंतर्गत किसी प्रकार का लिखित या सूत्रित अभिलेख तथा सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 2 के खंड (न) में यथापरिभाषित इलेक्ट्रानिक अभिलेख भी है ;

2000 का 21

(42) भारत में विनिर्मित और निर्यात किए गए किसी माल के संबंध में "चुंगी वापसी" से ऐसे माल के विनिर्माण में प्रयुक्त किसी आयातित निवेश पर या किसी घरेलू निवेशों या इनपुट सेवाओं पर प्रभार्य शुल्क, कर या उपकर का रिबेट अभिप्रेत है ;

(43) "इलेक्ट्रानिक नकद खाते" से धारा 49 की उपधारा (1) में निर्दिष्ट इलेक्ट्रानिक नकद

खाता अभिप्रेत है ;

(44) "इलेक्ट्रानिक वाणिज्य" से माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत डिजिटल या इलेक्ट्रानिक नेटवर्क के माध्यम से डिजिटल उत्पाद भी हैं ;

(45) "इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक" से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है, जो इलेक्ट्रानिक वाणिज्य के लिए डिजिटल या इलेक्ट्रानिक सुविधा या प्लेटफार्म पर स्वामित्व रखता हो, उसका प्रचालन या प्रबंध करता हो ;

(46) "इलेक्ट्रानिक जमा खाते" से धारा 49 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट इलेक्ट्रानिक जमा खाता अभिप्रेत है ;

(47) "छूट प्राप्त प्रदाय" से ऐसे किसी माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अभिप्रेत है, जिसकी, एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 6 के अधीन कर की दर शून्य हो या जिसे धारा 11 के अधीन कर से पूरी छूट दी जा सकेगी और इसके अंतर्गत गैर-कराधेयपूर्ति भी है ;

(48) "विद्यमान विधि" से माल या सेवाओं या दोनों पर शुल्क या कर के उद्ग्रहण और संग्रहण से संबंधित कोई ऐसी विधि, अधिसूचना, आदेश, नियम या विनियम अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के प्रारंभ से पहले ऐसी विधि, अधिसूचना, आदेश, नियम या विनियम बनाने की शक्ति रखने वाली संसद् या किसी प्राधिकारी या व्यक्ति द्वारा पारित किया गया है या बनाया गया है ;

(49) "कुटुंब" से अभिप्रेत है,--

(i) व्यक्ति का पति या पत्नी और बालक ; और

(ii) व्यक्ति के माता-पिता, पितामह-पितामही, मातामह-मातामही, भाई और बहन, यदि वे पूर्ण रूप से या मुख्य रूप से उक्त व्यक्ति पर आश्रित हैं ;

(50) "नियत स्थापन" से (कारबार के रजिस्ट्रीकृत स्थान से भिन्न) कोई ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जिसकी अपनी स्वयं की आवश्यकताओं के लिए सेवाओं की पूर्ति करने या सेवाएं प्राप्त करने और उनका उपयोग करने के लिए मानव और तकनीकी संसाधनों के निबंधनानुसार स्थायित्व और उपयुक्त संरचना की पर्याप्त डिग्री द्वारा विशिष्टता का वर्णन किया गया है ;

(51) "निधि" से धारा 57 के अधीन स्थापित उपभोक्ता कल्याण निधि अभिप्रेत है ;

(52) "माल" से मुद्रा और प्रतिभूतियों से भिन्न प्रत्येक प्रकार की जंगम संपत्ति अभिप्रेत है, किंतु इसमें अनुयोज्य दावे, उगती फसलें, भूमि से जुड़ी हुई या उसके भागरूप ऐसी घास और वस्तुएं सम्मिलित हैं जिस की पूर्ति के पूर्व या पूर्ति की संविदा के अधीन पृथक् किए जाने का करार किया गया है ;

(53) "सरकार" से संविधान की धारा 239 के अन्तर्गत नियुक्त तथा धारा 239_{AA} के अन्तर्गत यथानामित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उप-राज्यपाल अभिप्रेत है ;

(54) "माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम" से माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है ;

(55) "माल और सेवा कर व्यवसायी" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसका धारा 48 के अधीन ऐसे व्यवसायी के रूप में कार्य करने के लिए अनुमोदन किया गया है ;

(56) "भारत" से संविधान के अनुच्छेद 1 में यथानिर्दिष्ट भारत का राज्यक्षेत्र, उसका राज्यक्षेत्रीय सागर-खंड, राज्यक्षेत्रीय सागर-खंड, महाद्वीपीय मग्नतट भूमि, अनन्य आर्थिक क्षेत्र और अन्य सामुद्रिक क्षेत्र अधिनियम, 1976 में यथानिर्दिष्ट ऐसे सागर-खंडों, महाद्वीपीय मग्नतट भूमि, अनन्य आर्थिक क्षेत्र या किसी अन्य सामुद्रिक क्षेत्र के नीचे का समुद्र तल और अवमृदा और उसके राज्यक्षेत्र और राज्यक्षेत्रीय सागर-खंडों के ऊपर का आकाशी क्षेत्र अभिप्रेत है ;

(57) "एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम" से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है ;

(58) "एकीकृत कर" से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन उदगृहीत एकीकृत माल और सेवा कर अभिप्रेत है ;

(59) "इनपुट" से कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी पूर्तिकार द्वारा उपयोग किए गए या उपयोग किए जाने के लिए आशयित पूंजी माल से भिन्न कोई माल अभिप्रेत है ;

(60) "इनपुट सेवा" से कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी पूर्तिकार द्वारा उपयोग की गई या उपयोग किए जाने के लिए आशयित कोई सेवा अभिप्रेत है ;

(61) "इनपुट सेवा वितरक" से माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे पूर्तिकार का कार्यालय

अभिप्रेत है, जो इनपुट सेवाओं की प्राप्ति के मद्दे धारा 31 के अधीन जारी कर बीजक प्राप्त करता है और उक्त कार्यालय के समान स्थायी खाता संख्यांक वाले कराधेय माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे पूर्तिकार को उक्त सेवाओं पर संदत्त केंद्रीय कर, राज्य कर, एकीकृत कर या संघ राज्यक्षेत्र संबंधी कर के प्रत्यय का वितरण करने के प्रयोजनों के लिए कोई विहित दस्तावेज जारी करता है ;

(62) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में "इनपुट कर" से माल या सेवाओं या दोनों के किसीपूर्ति पर प्रभारित केंद्रीय कर, राज्य कर, एकीकृत कर या संघ राज्यक्षेत्र संबंधी कर अभिप्रेत हैं और इसके अंतर्गत निम्नलिखित भी हैं,--

(क) माल के आयात पर प्रभारित एकीकृत माल और सेवा कर ;

(ख) धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर ;

(ग) एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 5 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर ;

(घ) केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर ;

किंतु इसमें उद्धरण के प्रथमन के अधीन संदत्त कर सम्मिलित नहीं है ;

(63) "इनपुट कर प्रत्यय" से इनपुट कर का प्रत्यय अभिप्रेत है ;

(64) "माल का अंतरराज्यिक प्रदाय" का वही अर्थ होगा, जो एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 8 में उसका है ;

(65) "सेवाओं का अंतरराज्यिक प्रदाय" का वही अर्थ होगा, जो एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 8 में उसका है ;

(66) "बीजक" या "कर बीजक" से धारा 31 में निर्दिष्ट कर बीजक अभिप्रेत है ;

(67) किसी व्यक्ति के संबंध में "आवक प्रदाय" से क्रय, अर्जन या किसी अन्य साधन द्वारा प्रतिफल के साथ या उसके बिना माल या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति अभिप्रेत है ;

(68) "छुटपुट कार्य" से किसी अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के माल पर किसी व्यक्ति द्वारा किया गया कोई उपचार या की गई प्रक्रिया अभिप्रेत है और छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा ;

(69) "स्थानीय प्राधिकारी" से निम्न अभिप्रेत हैं,--

(क) संविधान के अनुच्छेद 243 के खंड (घ) में यथा परिभाषित कोई पंचायत ;

(ख) संविधान के अनुच्छेद 243त के खंड (ड) में यथा परिभाषित कोई नगरपालिका ;

(ग) कोई नगरपालिका समिति और कोई जिला परिषद्, जिला बोर्ड और कोई अन्य प्राधिकारी, जो नगरपालिका या स्थानीय निधि के नियंत्रण या प्रबंध करने का विधिक हकदार है या जिसे केंद्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा नगरपालिका या स्थानीय निधि का नियंत्रण या प्रबंध सौंपा गया है ;

(घ) छावनी अधिनियम, 2006 की धारा 3 में यथा परिभाषित छावनी बोर्ड ;

(ड) संविधान की छहठी अनुसूची के अधीन गठित कोई प्रादेशिक परिषद् या कोई जिला परिषद् ;

(च) संविधान के अनुच्छेद 371 के अधीन गठित कोई विकास बोर्ड ; या

(छ) संविधान के अनुच्छेद 371क के अधीन गठित कोई प्रादेशिक परिषद् ;

(70) "सेवाओं के प्राप्तिकर्ता का अवस्थान" से,--

(क) जहां पूर्ति कारबार के ऐसे स्थान पर प्राप्त की जाती है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है, वहां कारबार के ऐसे स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(ख) जहां पूर्ति कारबार के उस स्थान से भिन्न किसी अन्य ऐसे स्थान पर प्राप्त की जाती है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है (नियत स्थापन अन्यत्र है), वहां ऐसे नियत स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(ग) जहां पूर्ति एक से अधिक स्थापनों पर प्राप्त की जाती है, चाहे वह कारबार का स्थान हो या नियत स्थापन, वहां पूर्ति की प्राप्ति से सर्वाधिक सीधे संबंधित स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(घ) ऐसे स्थानों के अभाव में प्राप्तिकर्ता के प्रायिक निवास स्थान का अवस्थान

अभिप्रेत है ;

(71) "सेवाओं के पूर्तिकार का अवस्थान" से,--

(क) जहां पूर्ति कारबार के ऐसे स्थान से की जाती है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है, वहां कारबार के ऐसे स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(ख) जहां पूर्ति कारबार के उस स्थान से भिन्न किसी अन्य ऐसे स्थान से की जाती है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है (नियत स्थापन अन्यत्र), वहां ऐसे नियत स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(ग) जहां पूर्ति एक से अधिक स्थापनों से की जाती है, चाहे वह कारबार का स्थान हो या नियत स्थापन है, वहां पूर्ति की व्यवस्था से सर्वाधिक सीधे संबंधित स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(घ) ऐसे स्थानों के अभाव में पूर्तिकार के प्रायिक निवास स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है ;

(72) "विनिर्माण" से कच्ची सामग्री या इनपुट का ऐसी रीति से प्रसंस्करण अभिप्रेत है, जिसके परिणामस्वरूप सुभिन्न नाम, स्वरूप और उपयोग वाले एक नए उत्पाद का अविर्भाव होता है और "विनिर्माता" पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा ;

(73) "बाजार मूल्य" से ऐसी पूरी रकम अभिप्रेत होगी, जिसकी पूर्ति के प्राप्तिकर्ता से, वैसे ही प्रकार और क्वालिटी के माल या सेवाओं या दोनों को, उसी समय पर या उसके आसपास और जहां प्राप्तिकर्ता और पूर्तिकार संबंधित नहीं हैं, वहां उसी वाणिज्यिक स्तर पर अभिप्राप्त करने के लिए संदाय किए जाने की अपेक्षा होती है ;

(74) "मिश्रित प्रदाय" से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा, किसी एकल कीमत के लिए माल या सेवाओं का या उसके किसी ऐसे समुच्चय का, जो परस्पर सहयोजन से बनाया गया है, दो या अधिक पृथक्-पृथक् पूर्ति अभिप्रेत हैं, जहां ऐसी पूर्ति से कोई संयुक्त पूर्ति गठित नहीं होता है ।

दृष्टांत : डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों, मिठाई, चाकलेट, केक, मेवा, वातित पेय और फल के जूस को मिलाकर बनाए गए पैकेज की पूर्ति, जब वह किसी एकल कीमत के लिए किया गया है, तो वह पूर्ति मिश्रित पूर्ति होगी । इन मदों में से प्रत्येक मद का अलग-अलग भी पूर्ति किया जा सकती है और वह किसी अन्य पर निर्भर नहीं होगा । यदि इन मदों का अलग-अलग पूर्ति की जाती है तो वह मिश्रित पूर्ति नहीं होगी ;

(75) "धन" से भारतीय विधिमान्य मुद्रा या कोई विदेशी करेंसी, चैक, वचनपत्र, विनिमय पत्र, मुजरा पत्र, ड्राफ्ट, संदाय आदेश, यात्री चैक, मनी आर्डर, डाक या इलेक्ट्रानिक विप्रेषणादेश या भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मान्यताप्राप्त कोई अन्य लिखत अभिप्रेत है, जब उसका उपयोग किसी बाध्यता के परिनिर्धारण के लिए या किसी अन्य अंकित मूल्य की भारतीय विधिमान्य मुद्रा से विनिमय के प्रतिफल के रूप में किया जाता है, किंतु इसमें कोई ऐसी करेंसी सम्मिलित नहीं होगी, जिसका अपना मुद्रा विषयक मूल्य है ;

1988 का 59

(76) "मोटर यान" का वही अर्थ होगा, जो मोटर यान अधिनियम, 1988 की धारा 2 के खंड (28) में उसका है ;

(77) "अनिवासी कराधेय व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो यदा कदा, प्रधान या अभिकर्ता के रूप में या किसी अन्य हैसियत में ऐसे संव्यवहार करता है जिनमें माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अंतर्वर्तित है, किंतु जिसका भारत में कारबार का कोई नियत स्थान या कोई निवास स्थान नहीं है ;

(78) "गैर-कराधेय प्रदाय" से माल या सेवाओं या दोनों की ऐसी पूर्ति अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कर से उदग्रहणीय नहीं है ;

(79) "गैर-कराधेय राज्यक्षेत्र" से ऐसा राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है, जो कराधेय राज्यक्षेत्र से बाहर है ;

(80) "अधिसूचना" से राजपत्र में प्रकाशित कोई अधिसूचना अभिप्रेत है और "अधिसूचित करना" और "अधिसूचित" पदों का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा ;

(81) "अन्य राज्यक्षेत्र" में ऐसे राज्यक्षेत्रों से भिन्न राज्यक्षेत्र सम्मिलित हैं, जो किसी राज्य में समाविष्ट हैं और जो खंड (114) के उपखंड (क) से उपखंड (ड) में निर्दिष्ट हैं ;

(82) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में "आउटपुट कर" से उसके द्वारा या उसके अभिकर्ता द्वारा किया गया माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति पर इस अधिनियम के अधीन प्रभार्य कर अभिप्रेत है, किंतु इसमें प्रतिलोम प्रभार के आधार पर उसके द्वारा संदेय कर को अपवर्जित किया

गया है ;

(83) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में "जावक प्रदाय" से किसी व्यक्ति द्वारा कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किया गया या किए जाने के लिए करार पाया गया माल या सेवाओं या दोनों का, विक्रय, अंतरण, वस्तु-विनिमय, विनिमय, अनुज्ञप्ति, भाटक, पट्टा या व्ययन या किसी भी अन्य रीति से की गई पूर्ति अभिप्रेत है ;

(84) "व्यक्ति" के अंतर्गत निम्नलिखित हैं,--

(क) कोई व्यक्ति ;

(ख) कोई हिंदू अविभक्त कुटुंब ;

(ग) कोई कंपनी ;

(घ) कोई फर्म ;

(ङ) कोई सीमित दायित्व भागीदारी ;

(च) कोई व्यक्ति संगम या व्यक्ति निकाय, चाहे भारत में या भारत के बाहर निगमित हो या न हो ;

(छ) किसी केंद्रीय अधिनियम या राज्य अधिनियम या प्रांतीय अधिनियम द्वारा या उसके अधीन स्थापित कोई निगम या कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 2 के खंड (45) में यथापरिभाषित कोई सरकारी कंपनी ;

2013 का 18

(ज) भारत के बाहर किसी देश की विधि द्वारा या उसके अधीन निगमित कोई निगमित निकाय ;

(झ) सहकारी सोसाइटियों से संबंधित किसी विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई सहकारी सोसाइटी ;

(ञ) कोई स्थानीय प्राधिकारी ;

(ट) केंद्रीय सरकार या कोई राज्य सरकार ;

(ठ) सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 के अधीन यथा परिभाषित सोसाइटी ;

1860 का 21

(ड) न्यास ; और

(ढ) प्रत्येक ऐसा कृत्रिम विधिक व्यक्ति, जो उपरोक्त किसी में नहीं आता है ;

(85) "कारबार के स्थान" के अंतर्गत निम्नलिखित हैं,--

(क) वह स्थान, जहां से मामूली तौर से कारबार किया जाता है और इसके अंतर्गत कोई भांडागार, गोदाम या कोई अन्य स्थान भी है, जहां कराधेय व्यक्ति अपने माल का भंडारण करता है, माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति करता है या प्राप्त करता है ; या

(ख) वह स्थान, जहां कराधेय व्यक्ति अपनी लेखा पुस्तकों को अनुरक्षित रखता है ; या

(ग) वह स्थान, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, किसी अभिकर्ता के माध्यम से, चाहे वह किसी नाम से ज्ञात हो, कारबार में लगा हुआ है ;

(86) "प्रदाय का स्थान" से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अध्याय 5 में यथानिर्दिष्ट पूर्ति का स्थान अभिप्रेत है ;

(87) "विहित" से परिषद् की सिफारिशों पर इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है ;

(88) "प्रधान" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसकी ओर से कोई अभिकर्ता माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति या प्राप्ति का कारबार करता है ;

(89) "कारबार का मुख्य स्थान" से रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में कारबार के मुख्य स्थान के रूप में विनिर्दिष्ट कारबार का स्थान अभिप्रेत है ;

(90) "मुख्य प्रदाय" से ऐसे माल या सेवाओं की पूर्ति अभिप्रेत है, जिससे किसी संयुक्त पूर्ति के प्रधान कारक का गठन होता है और जिसके लिए उस संयुक्त पूर्ति के भागरूप कोई अन्य पूर्ति आनुषंगिक है ;

(91) इस अधिनियम के अधीन पालन किए जाने वाले किसी कृत्य के संबंध में "उचित अधिकारी" से राज्य कर का ऐसा आयुक्त या अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे आयुक्त द्वारा वह कृत्य

सौंपा गया है ;

(92) "तिमाही" से ऐसी अवधि अभिप्रेत है, जिसमें किसी कलेंडर वर्ष के मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर के अंतिम दिन को समाप्त होने वाले तीन क्रमवर्ती कलेंडर मास समाविष्ट हों;

(93) माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के "प्राप्तिकर्ता" से,--

(क) जहां माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए कोई प्रतिफल संदेय है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो उस प्रतिफल के संदाय का दायी है ;

(ख) जहां माल की पूर्ति के लिए कोई प्रतिफल संदेय नहीं है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसको माल प्रदत्त किया गया है या उपलब्ध कराया गया है या जिसे माल का कब्जा या उपयोग के लिए दिया गया है या उपलब्ध कराया गया है ;

(ग) जहां किसी सेवा की पूर्ति के लिए प्रतिफल का संदाय नहीं किया गया है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसे सेवाएं दी जाती हैं,

और किसी ऐसे व्यक्ति के प्रतिनिर्देश का, जिसे पूर्ति की गई है, पूर्ति के प्राप्तिकर्ता के प्रतिनिर्देश के रूप में अर्थ लगाया जाएगा और इसके अंतर्गत पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में प्राप्तिकर्ता की ओर से उस रूप में कार्य करने वाला कोई अभिकर्ता भी होगा ;

(94) "रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, किंतु इसमें विशिष्ट पहचान संख्यांक वाला कोई व्यक्ति सम्मिलित नहीं है ;

(95) "विनियम" से इस अधिनियम के अधीन बोर्ड द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर बनाए गए विनियम अभिप्रेत हैं ;

(96) माल के संबंध में "हटाए जाने" से,--

(क) उसके पूर्तिकार द्वारा या ऐसे पूर्तिकार की ओर से कार्य करने वाले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा परिदान के लिए माल का प्रेषण अभिप्रेत है ; या

(ख) उसके प्राप्तिकर्ता द्वारा या ऐसे प्राप्तिकर्ता की ओर से कार्य करने वाले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा माल का संग्रहण अभिप्रेत है ;

(97) "विवरणी" से इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों द्वारा या उनके अधीन दिए जाने के लिए अपेक्षित विहित या उससे अन्यथा कोई विवरणी अभिप्रेत है ;

(98) "प्रतिलोम प्रभार " से धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 5 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के पूर्तिकार के बजाए माल या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता द्वारा कर संदाय का दायित्व अभिप्रेत है ;

(99) "पुनरीक्षण प्राधिकारी" से धारा 108 में यथानिर्दिष्ट विनिश्चय या आदेशों के पुनरीक्षण के लिए नियुक्त या प्राधिकृत कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है ;

(100) "अनुसूची" से इस अधिनियम से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है ;

(101) "प्रतिभूति" का वही अर्थ होगा, जो प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 2 के खंड (ज) में उसका है ;

(102) "सेवाओं" से माल, धन और प्रतिभूतियों से भिन्न कुछ भी अभिप्रेत है, किंतु इसमें धन का उपयोग या नकद या किसी अन्य रीति से एक करेंसी या अंकित मूल्य का किसी अन्य रूप, करेंसी या अंकित मूल्य में उसका ऐसा संपरिवर्तन, जिसके लिए पृथक् प्रतिफल प्रभारित हो, सम्मिलित से संबंधित क्रियाकलाप हैं ;

(103) "राज्य" से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का संघ शासित क्षेत्र अभिप्रेत है ;

(104) "राज्य कर" से इस अधिनियम के अधीन उदगृहीत कर अभिप्रेत है ;

(105) माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में "पूर्तिकार" से उक्त माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति करने वाला व्यक्ति अभिप्रेत होगा और इसमें पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में ऐसे पूर्तिकार की ओर से उस रूप में कार्य करने वाला कोई अभिकर्ता सम्मिलित होगा ;

(106) "कर अवधि" से ऐसी अवधि अभिप्रेत है, जिसके लिए विवरणी देने की अपेक्षा है ;

(107) "कराधेय व्यक्ति" से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो धारा 22 या धारा 24 के

अधीन रजिस्ट्रीकृत है या रजिस्ट्रीकृत किए जाने का दायी है ;

(108) "कराधेय प्रदाय" से ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कर से उद्गृहणीय है ;

(109) "कराधेय राज्यक्षेत्र" से ऐसा राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है, जिसको इस अधिनियम के उपबंध लागू होते हैं ;

(110) "दूर-संचार सेवा" से किसी प्रकार की ऐसी सेवा अभिप्रेत है, (जिसके अंतर्गत इलेक्ट्रानिक मेल, वायस मेल, डाटा सर्विस, आडियो टेक्स सर्विस, वीडियो टेक्स सर्विस, रेडियो पेजिंग और सेल्युलर मोबाइल टेलीफोन सेवाएं भी हैं) जो उपयोक्ता को किसी संकेत, सिग्नल, लेख, आकृति और ध्वनि के पारेषण या ग्रहण करने या किसी प्रकार की आसूचना के माध्यम से तार, रेडियो, दृश्य या अन्य इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक साधनों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है ;

(111) "केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम" से संबंधित केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है ;

(112) "राज्य में के आवर्त" से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र के भीतर किए गए (ऐसी आवक पूर्तियों के मूल्य को अपवर्जित करते हुए, जिस पर किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर संदेय है) सभी कराधेय पूर्तियों और छूट प्राप्त पूर्तियों, उक्त कराधेय व्यक्ति द्वारा माल या सेवाओं या दोनों के निर्यात और राज्य या संघ राज्यक्षेत्र से किया गया माल या सेवाओं या दोनों का अंतरराज्यिक पूर्ति का संकलित मूल्य अभिप्रेत है, किंतु इसमें केंद्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर अपवर्जित हैं ;

(113) "प्रायिक निवास स्थान" से,--

(क) किसी व्यक्ति की दशा में ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जहां वह मामूली तौर पर निवास करता है ;

(ख) अन्य दशाओं में ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जहां व्यक्ति निगमित है या अन्यथा विधिक रूप से गठित है ;

(114) "संघ राज्यक्षेत्र" से,--

(क) अंदमान और निकोबार द्वीप ;

(ख) लक्षद्वीप ;

(ग) दादरा और नागर हवेली ;

(घ) दमन और दीव ;

(ङ) चंडीगढ़ ; और

(च) अन्य राज्यक्षेत्र,

का राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है ;

स्पष्टीकरण—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, उपखंड (क) से उपखंड (च) में विनिर्दिष्ट राज्यक्षेत्र में से प्रत्येक को एक पृथक् संघ राज्यक्षेत्र समझा जाएगा ;

(115) "संघ राज्यक्षेत्र कर" से संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन उद्गृहीत संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अभिप्रेत है ;

(116) "संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम" से संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है ;

(117) "विधिमन्य विवरणी" से धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन दी गई कोई ऐसी विवरणी अभिप्रेत है, जिस पर स्वतः निर्धारण कर का पूर्ण रूप से संदाय किया गया है ;

(118) "वाऊचर" से कोई ऐसी लिखत अभिप्रेत है, जहां उसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए प्रतिफल के रूप में या भागिक प्रतिफल के रूप में स्वीकार करने की बाध्यता है और जहां पूर्ति किए जाने वाला माल या सेवाओं या दोनों या उनके संभावी पूर्तिकारों की पहचान या तो लिखत पर ही उपदर्शित है या दस्तावेजीकरण में उपदर्शित है, किंतु इसके अंतर्गत ऐसी लिखत के उपयोग के निबंधन और शर्तें भी हैं ;

(119) "कार्य संविदा" से जहां ऐसी संविदा के निष्पादन में माल के रूप में संपत्ति के अंतरण (चाहे वह माल या किसी अन्य रूप में हो) में संपत्ति का अंतरण अंतर्बलित है, किसी स्थावर संपत्ति का निर्माण, सन्निर्माण, रचना करने, पूरा करने, परिनिर्माण, संस्थापन, सज्जित करने, सुधारने, उपांतरण करने, मरम्मत करने, अनुरक्षण करने, नवीकरण करने, परिवर्तन करने

या बनाने के लिए कोई संविदा अभिप्रेत है ;

(120) उन शब्दों और पदों के, जो इस अधिनियम में प्रयुक्त हैं और परिभाषित नहीं हैं, किंतु एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगे जो उनके उन अधिनियमों में हैं ;

अध्याय 2

प्रशासन

इस अधिनियम के अधीन अधिकारी।

3. सरकार, अधिसूचना द्वारा, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, निम्नलिखित वर्ग के अधिकारियों को नियुक्त करेगी, अर्थात् :-

(क) राज्य कर आयुक्त;

(ख) राज्य कर विशेष आयुक्त ;

(ग) राज्य कर के अपर आयुक्त ;

(घ) राज्य कर संयुक्त आयुक्त ;

(ङ) राज्य कर उपायुक्त ;

(च) राज्य कर सहायक आयुक्त ; और

(छ) अधिकारियों का कोई अन्य वर्ग, जो वह ठीक समझे :

1944 का 1

परंतु दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 के अधीन नियुक्त अधिकारियों को इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन नियुक्त अधिकारी समझा जाएगा।

4. (1) सरकार, धारा 3 के अधीन यथाअधिसूचित अधिकारियों के अतिरिक्त ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति कर सकेगा, जिन्हें वह इस अधिनियम के अधीन अधिकारी के रूप में ठीक समझे।

अधिकारियों की नियुक्ति।

(2) आयुक्त की अधिकारिता संपूर्ण राज्य पर होगी, किसी विशेष आयुक्त और किसी अपर आयुक्त के पास, उसे समनुदेशित सभी या किसी कृत्य के संबंध में संपूर्ण राज्य या जहां कहीं राज्य सरकार इस प्रकार निदेश दे, उसके किसी स्थानीय क्षेत्र पर की अधिकारिता होगी तथा सभी अन्य अधिकारियों के पास, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विनिर्दिष्ट की जाएं, संपूर्ण राज्य या ऐसे स्थानीय क्षेत्रों पर की अधिकारिता होगी, जैसा कि आयुक्त द्वारा आदेश द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए।

5. (1) राज्य कर अधिकारी, ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए, जो आयुक्त अधिरोपित करे, इस अधिनियम के अधीन उसे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और उस पर अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेगा।

अधिकारियों की शक्तियां।

(2) राज्य कर अधिकारी, किसी अन्य ऐसे राज्य कर अधिकारी को, जो उसके अधीनस्थ है, इस अधिनियम के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेगा।

(3) आयुक्त, ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए, जो उसके द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट की जाए, अपनी शक्तियों का, उसके अधीनस्थ किसी अन्य अधिकारी को प्रत्यायोजन कर सकेगा।

(4) इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, कोई अपील प्राधिकारी, किसी अन्य राज्य कर अधिकारी को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और उस पर अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करेगा।

6. (1) इस अधिनियम के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त अधिकारी, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो सरकार, अधिसूचना द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर विनिर्दिष्ट करेगी, उचित अधिकारी के रूप में प्राधिकृत होंगे।

कतिपय परिस्थितियों में केंद्रीय कर अधिकारियों का समुचित प्राधिकारी के रूप में प्राधिकार देना।

(2) उपधारा (1) के अधीन जारी अधिसूचना में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन रहते हुए,--

(क) जहां कोई उचित अधिकारी, इस अधिनियम के अधीन कोई आदेश देता है, वहां वह राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन, राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर के अधिकारिता अधिकारी की प्रजापता के अधीन, यथास्थिति, राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम द्वारा प्राधिकृत रूप में

भी आदेश दे सकेगा ;

(ख) जहां राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई उचित अधिकारी किसी विषय-वस्तु पर कोई कार्यवाहियां आरंभ करता है, वहां उचित अधिकारी द्वारा उसी विषय वस्तु पर इस अधिनियम के अधीन कोई कार्यवाहियां आरंभ नहीं करेगा।

(3) इस अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी द्वारा पारित आदेश की परिशुद्धि, अपील और पुनरीक्षण, जहां-जहां लागू हों, के लिए कोई कार्यवाही राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी के समक्ष नहीं होगी।

अध्याय 3

कर का उद्ग्रहण और संग्रहण

प्रदाय की परिधि।

7. (1) इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, "प्रदाय" पद में निम्नलिखित सम्मिलित हैं,--

(क) किसी व्यक्ति द्वारा कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी प्रतिफल के लिए किया गया या किए जाने के लिए करार पाया गया विक्रय, अंतरण, वस्तु-विनिमय, विनिमय, अनुज्ञप्ति, भाटक, पट्टा या व्ययन जैसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के सभी प्ररूप ;

(ख) किसी प्रतिफल के लिए सेवाओं का आयात, चाहे वह कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए हो या नहीं ;

(ग) किसी प्रतिफल के बिना किए गए या किए जाने के लिए करार पाए गए अनुसूची 1 में विनिर्दिष्ट क्रियाकलाप ; और

(घ) अनुसूची 2 में यथाविनिर्दिष्ट माल की पूर्ति या सेवाओं की पूर्ति के रूप में माने गए क्रियाकलाप।

(2) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी,--

(क) अनुसूची 3 में विनिर्दिष्ट क्रियाकलापों या संव्यवहारों को, या

(ख) केंद्रीय सरकार, किसी राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी द्वारा किए गए ऐसे क्रियाकलापों या संव्यवहारों को, जिनमें वे ऐसे लोक प्राधिकारियों, जिन्हें सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए, के रूप में लगे हुए हैं,

न तो माल की पूर्ति के रूप में और न ही सेवाओं की पूर्ति के रूप में माना जाएगा।

(3) उपधारा (1) और उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसे संव्यवहारों को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिन्हें,--

(क) माल की पूर्ति के रूप में, न कि सेवाओं की पूर्ति के रूप में ; या

(ख) सेवाओं की पूर्ति के रूप में, न कि माल की पूर्ति के रूप में,

माना जाएगा।

8. किसी संयुक्त या मिश्रित पूर्ति पर कर के दायित्व का अवधारण निम्नलिखित रीति से किया जाएगा, अर्थात् :--

(क) दो या अधिक पूर्तियों को समाविष्ट करके किए गए किसी संयुक्तपूर्ति को, जिसमें से एक मुख्य है, ऐसी मुख्य पूर्ति की आपूर्ति के रूप में माना जाएगा ; और

(ख) दो या अधिक पूर्तियों को समाविष्ट करके किए गए मिश्रित पूर्ति को उस विशिष्ट पूर्ति की आपूर्ति के रूप में माना जाएगा, जिसके कर की दर उच्चतम है।

9. (1) उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, मानवीय उपभोग के लिए मद्यसारिकपान की पूर्ति को छोड़कर, माल या सेवाओं या दोनों के सभी अंतरराज्यिक पूर्तियों पर, धारा 15 के अधीन अवधारित मूल्य पर और बीस प्रतिशत से अनधिक ऐसी दरों पर, जो सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाए, दिल्ली माल और सेवा कर नामक कर का, ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, उद्ग्रहण और संग्रहण किया जाएगा और जो कराधेय व्यक्ति द्वारा संदत्त किया जाएगा।

(2) अपरिष्कृत पेट्रोलियम, हाई स्पीड डीजल, मोटर स्प्रिट (जिसे आमतौर पर पेट्रोल कहा जाता

संयुक्त और मिश्रित पूर्तियों पर कर का दायित्व।

उद्ग्रहण और संग्रहण।

है), प्राकृतिक गैस और विमानन टर्बाइन ईंधन की पूर्ति पर राज्य कर का उद्ग्रहण उस तारीख से किया जाएगा, जो सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाए।

(3) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के ऐसे प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिस पर कर का संदाय, ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता द्वारा प्रतिलोम प्रभार के आधार पर किया जाएगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा व्यक्ति है जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में कर के संदाय का दायी है।

(4) किसी ऐसे पूर्तिकार द्वारा, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को कराधेय माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में राज्य कर, ऐसे व्यक्ति द्वारा प्राप्तिकर्ता के रूप में प्रतिलोम प्रभार के आधार पर संदत्त किया जाएगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा व्यक्ति है जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में कर के संदाय का दायी है।

(5) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, सेवाओं के प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिसके अंतरराज्यिक पूर्तियों पर कर, यदि सेवाओं की पूर्ति इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक के माध्यम से किया जाता है तो, उसके द्वारा संदत्त किया जाएगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा पूर्तिकार है जो ऐसी सेवाओं की पूर्ति के संबंध में कर के संदाय का दायी है :

परंतु यदि कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक की भौतिक रूप से उपस्थिति नहीं है तो कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी प्रयोजन के लिए ऐसे इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई व्यक्ति कर संदाय करने का दायी होगा :

परंतु यह और कि कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक की भौतिक रूप से उपस्थिति नहीं है और उक्त राज्यक्षेत्र में उसका कोई प्रतिनिधि भी नहीं है, वहां ऐसा इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक, कर संदाय के प्रयोजन के लिए कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी व्यक्ति को नियुक्त करेगा और ऐसा व्यक्ति कर संदाय करने का दायी होगा।

प्रशमन उद्ग्रहण।

10. (1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी तत्प्रतिकूल बात के होते हुए भी, किंतु धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसका पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में संकलित आवर्त पचास लाख रुपए से अधिक नहीं है, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, उसके द्वारा संदेय कर के स्थान पर, ऐसी दर पर, जो विहित की जाए, किंतु जो,—

(क) किसी विनिर्माता की दशा में, राज्य में के आवर्त के एक प्रतिशत से अधिक नहीं होगी ;

(ख) अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट पूर्ति करने में लगे व्यक्तियों की दशा में, राज्य में के आवर्त के ड्राई प्रतिशत से अधिक नहीं होगी ; और

(ग) अन्य पूर्तिकारों की दशा में, राज्य में के आवर्त के आवर्त के आधे प्रतिशत से अधिक नहीं होगी,

संगणित रकम के संदाय का विकल्प चुन सकेगा :

परंतु सरकार, अधिसूचना द्वारा, पचास लाख रुपए की उक्त सीमा को एक करोड़ रुपए से अनधिक की ऐसी सीमा तक बढ़ा सकेगी, जिसकी परिषद् द्वारा सिफारिश की जाए।

(2) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उपधारा (1) के अधीन विकल्प चुनने का पात्र होगा, यदि,—

(क) वह अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में निर्दिष्ट पूर्तियों से भिन्न सेवाओं की पूर्ति में नहीं लगा हुआ है ;

(ख) वह ऐसे किसी माल की पूर्ति करने में नहीं लगा हुआ है, जो इस अधिनियम के अधीन कर से उद्ग्रहणीय नहीं है ;

(ग) वह माल के किसी अंतरराज्यिक जावक पूर्ति करने में नहीं लगा है ;

(घ) वह किसी ऐसे इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक के माध्यम से, जिससे धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर के संग्रहण की अपेक्षा है, किसी माल की पूर्ति करने में नहीं लगा है ;

(ङ) वह ऐसे माल का विनिर्माता नहीं है, जिसे सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर,

अधिसूचित किया जाए :

1961 का 43

परंतु जहां एक से अधिक रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का (आय-कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी) स्थायी खाता संख्यांक एक ही है, वहां ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उपधारा (1) के अधीन तब तक स्कीम के लिए विकल्प का चुनाव करने का पात्र नहीं होगा जब तक ऐसे सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उस धारा के अधीन कर के संदाय के विकल्प का चुनाव नहीं करते हैं।

(3) उपधारा (1) के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपयोग किया गया विकल्प उस दिन से, जिसको वित्तीय वर्ष के दौरान उसका संकलित आवर्त उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट सीमा से अधिक हो जाता है, व्यपगत हो जाएगा।

(4) कोई ऐसा कराधेय व्यक्ति, जिसको उपधारा (1) के उपबंध लागू होते हैं, उसके द्वारा की गई पूर्तियों पर प्राप्तकर्ता से किसी कर का संग्रहण नहीं करेगा और न ही वह किसी इनपुट कर प्रत्यय का हकदार होगा।

(5) यदि उचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि किसी कराधेय व्यक्ति ने पात्र न होते हुए भी, उपधारा (1) के अधीन कर संदत्त कर दिया है तो ऐसा व्यक्ति, किसी ऐसे कर के अतिरिक्त, जो इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध के अधीन उसके द्वारा संदेय हो, शास्ति का दायी होगा और धारा 73 या धारा 74 के उपबंध यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित कर और शास्ति के अवधारण के लिए लागू होंगे।

11. (1) जहां सरकार का यह समाधान हो जाता है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है, वहां वह, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, साधारणतया, पूर्ण रूप से या ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो उसमें विनिर्दिष्ट की जाएं, उस तारीख से, जो ऐसी अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाए, किसी विनिर्दिष्ट विवरण के माल या सेवाओं या दोनों को उस पर उद्बहणीय संपूर्ण कर से या उसके किसी भाग से छूट दे सकेगी।

कर से छूट देने की शक्ति।

(2) जहां सरकार का यह समाधान हो जाता है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है, वहां वह, परिषद् की सिफारिशों पर, प्रत्येक मामले में विशेष आदेश द्वारा, ऐसे आदेश में कथित अपवादिक प्रकृति की परिस्थितियों के अधीन ऐसे किसी माल या सेवाओं या दोनों को, जिन पर कर उद्बहणीय है, कर के संदाय से छूट दे सकेगी।

(3) सरकार, यदि वह उपधारा (1) के अधीन जारी किसी अधिसूचना की या उपधारा (2) के अधीन जारी आदेश की परिधि या लागू किए जाने को स्पष्ट करने के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक या समीचीन समझती है तो, उपधारा (1) के अधीन अधिसूचना या उपधारा (2) के अधीन आदेश जारी होने के एक वर्ष के भीतर किसी समय अधिसूचना द्वारा, यथास्थिति, ऐसी अधिसूचना या ऐसे आदेश में स्पष्टीकरण अंतःस्थापित कर सकेगी और ऐसे प्रत्येक स्पष्टीकरण का वही प्रभाव होगा मानों वह, सदैव, यथास्थिति, ऐसी पहली अधिसूचना या आदेश का भाग था।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, जहां किसी माल या सेवा या दोनों के संबंध में, उस पर उद्बहणीय संपूर्ण कर से या उसके किसी भाग से पूर्ण रूप से छूट दी गई है, वहां ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति पर प्रभावी दर से अधिक कर का संग्रहण नहीं करेगा।

अध्याय 4

प्रदाय का समय और मूल्य

माल की पूर्ति का समय।

12. (1) माल पर कर के संदाय का दायित्व, इस धारा के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित पूर्ति के समय उद्भूत होगा।

(2) माल की पूर्ति का समय निम्नलिखित तारीखों से पूर्वतर होगा, अर्थात् :--

(क) धारा 31 की उपधारा (1) के अधीन पूर्तिकार द्वारा बीजक जारी किए जाने की तारीख या ऐसी अंतिम तारीख, जिसको उससे पूर्ति की बाबत बीजक जारी करने की अपेक्षा है ; या

(ख) वह तारीख, जिसको पूर्तिकार पूर्ति की बाबत संदाय प्राप्त करता है :

परंतु जहां कराधेय माल का पूर्तिकार, कर बीजक में उपदर्शित रकम से अधिक एक हजार रुपए तक की कोई राशि प्राप्त करता है, वहां पूर्ति का समय, ऐसी आधिक्य रकम के विस्तार तक, उक्त पूर्तिकार के विकल्प पर, ऐसी आधिक्य रकम के संबंध में बीजक जारी किए जाने की तारीख होगा।

स्पष्टीकरण 1—खंड (क) और खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए, "प्रदाय" को उस विस्तार तक किया गया समझा जाएगा, जहां तक वह, यथास्थिति, बीजक या संदाय के अंतर्गत आता है।

स्पष्टीकरण 2—खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए, ऐसी तारीख, जिसको पूर्तिकार संदाय प्राप्त करता है, वह तारीख होगी, जिसको उसकी लेखा-पुस्तकों में संदाय की प्रविष्टि की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो।

(3) ऐसी पूर्तियों की दशा में, जिसके संबंध में, प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है या कर संदेय है, पूर्ति का समय निम्नलिखित तारीखों से पूर्वतर होगा, अर्थात् :--

(क) माल प्राप्ति की तारीख ; या

(ख) संदाय की तारीख, जो प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि है या वह तारीख, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय का विकलन किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो ; या

(ग) पूर्तिकार द्वारा बीजक या उसके बजाए कोई अन्य दस्तावेज, चाहे वह जिस नाम से ज्ञात हो, जारी किए जाने की तारीख से तीस दिन के ठीक पश्चात्पूर्ति तारीख :

परंतु जहां खंड (क), खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन पूर्ति के समय का अवधारण संभव नहीं है, वहां पूर्ति का समय, पूर्ति के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख होगी।

(4) किसी पूर्तिकार द्वारा वाऊचरों की पूर्ति की दशा में पूर्ति का समय,--

(क) वाऊचर जारी करने की तारीख होगा, यदि पूर्ति उस बिंदु पर पहचान योग्य है ; या

(ख) अन्य सभी मामलों में, वाऊचर के मोचन की तारीख होगा।

(5) जहां उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन पूर्ति के समय का अवधारण करना संभव नहीं है, वहां पूर्ति का समय,--

(क) उस दशा में, जहां कोई आवधिक विवरणी फाइल की जानी है, वहां वह तारीख होगा, जिसको ऐसी विवरणी फाइल की जानी है ; या

(ख) किसी अन्य दशा में, वह तारीख होगा, जिसको कर संदत्त किया जाता है।

(6) उस सीमा तक, जिस तक उसका संबंध किसी प्रतिफल के देर से संदाय के लिए ब्याज, विलंब फीस या शास्ति को पूर्ति के मूल्य में जोड़े जाने का है, पूर्ति का समय वह तारीख होगा, जिसको पूर्तिकार मूल्य के साथ ऐसा अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करता है।

13. (1) सेवाओं पर कर के संदाय का दायित्व, इस धारा के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित पूर्ति के समय उद्भूत होगा।

सेवाओं की पूर्ति का समय।

(2) सेवाओं की पूर्ति का समय निम्नलिखित तारीखों से पूर्वतर होगा, अर्थात् :--

(क) पूर्तिकार द्वारा बीजक जारी किए जाने की तारीख, यदि बीजक धारा 31 की उपधारा (2) के अधीन विहित अवधि के भीतर जारी किया जाता है या संदाय प्राप्त करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो ; या

(ख) सेवा उपलब्ध कराने की तारीख, यदि धारा 31 की उपधारा (2) के अधीन विहित अवधि के भीतर बीजक जारी नहीं किया जाता है या संदाय प्राप्त करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो ; या

(ग) वह तारीख, जिसको प्राप्तिकर्ता अपनी लेखा-पुस्तकों में सेवाओं की प्राप्ति दर्शित करता है, उस मामले में, जहां खंड (क) या खंड (ख) में के उपबंध लागू नहीं होते हैं :

परंतु जहां कराधेय सेवा का पूर्तिकार, कर बीजक में उपदर्शित रकम से अधिक एक हजार रुपए तक की कोई राशि प्राप्त करता है, वहां पूर्ति का समय, ऐसी आधिक्य रकम के विस्तार तक, उक्त पूर्तिकार के विकल्प पर, ऐसी आधिक्य रकम के संबंध में बीजक जारी करने की तारीख होगा।

स्पष्टीकरण—खंड (क) और खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए,--

(i) पूर्ति को उस सीमा तक किया गया समझा जाएगा, जिस तक वह, यथास्थिति, बीजक या संदाय के अंतर्गत आता है ;

(ii) "संदाय प्राप्त करने की तारीख" वह तारीख होगी, जिसको संदाय की प्रविष्टि पूर्तिकार की लेखा-पुस्तकों में की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो ।

(3) ऐसी पूर्तियों की दशा में, जिसके संबंध में, प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है या कर संदेय है, पूर्ति का समय निम्नलिखित तारीखों से पूर्वतर होगा, अर्थात् :--

(क) संदाय की तारीख, जो प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्ट है या वह तारीख, जिसको उसके बैंक खाते से संदाय का विकलन किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो ; या

(ख) पूर्तिकार द्वारा बीजक या उसके बजाए कोई अन्य दस्तावेज, चाहे जिस नाम से ज्ञात हो, जारी किए जाने की तारीख से साठ दिन के ठीक पश्चात्पूर्वी तारीख :

परंतु जहां खंड (क) या खंड (ख) के अधीन पूर्ति के समय का अवधारण संभव नहीं है, वहां पूर्ति का समय, पूर्ति के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख होगी :

परंतु यह और कि सहयुक्त उद्यमों द्वारा पूर्ति की दशा में, जहां सेवा का पूर्तिकार भारत से बाहर स्थित है, वहां पूर्ति का समय, पूर्ति के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख या संदाय की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा ।

(4) किसी पूर्तिकार द्वारा वाऊचरों की पूर्ति की दशा में पूर्ति का समय,--

(क) वाऊचर जारी करने की तारीख होगा, यदि पूर्ति उस बिंदु पर पहचान योग्य है ; या

(ख) अन्य सभी मामलों में, वाऊचर के मोचन की तारीख होगा ।

(5) जहां उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन पूर्ति के समय का अवधारण करना संभव नहीं है, वहां पूर्ति का समय,--

(क) उस दशा में, जहां कोई आवधिक विवरणी फाइल की जानी है, वहां वह तारीख होगा, जिसको ऐसी विवरणी फाइल की जानी है ; या

(ख) किसी अन्य दशा में, वह तारीख होगा, जिसको कर का संदाय किया जाता है ।

(6) उस सीमा तक, जिस तक उसका संबंध किसी प्रतिफल के देर से संदाय के लिए ब्याज, विलंब फीस या शास्ति को पूर्ति के मूल्य में जोड़े जाने का है, पूर्ति का समय वह तारीख होगा, जिसको पूर्तिकार मूल्य के साथ ऐसा अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करता है ।

माल या सेवाओं की पूर्ति के संबंध में कर की दर में परिवर्तन ।

14. धारा 12 या धारा 13 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में कर की दर में कोई परिवर्तन होता है, वहां पूर्ति के समय का अवधारण निम्नलिखित रीति से किया जाएगा, अर्थात् :--

(क) यदि कर की दर में परिवर्तन से पूर्व माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति की गई है, उस दशा में,--

(i) जहां उसके लिए बीजक जारी किया गया है और संदाय भी कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, वहां पूर्ति का समय संदाय प्राप्ति की तारीख या बीजक जारी करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा ;

(ii) जहां बीजक कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व जारी कर दिया गया है, किंतु संदाय कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, वहां पूर्ति का समय बीजक जारी करने की तारीख होगा ; या

(iii) जहां संदाय कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व प्राप्त हो गया है, किंतु उसके लिए बीजक कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् जारी किया जाता है, वहां पूर्ति का समय संदाय की प्राप्ति की तारीख होगा ;

(ख) कर की दर में परिवर्तन के पश्चात् माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति किए जाने की दशा में,—

(i) जहां संदाय, कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, किंतु बीजक कर की दर में परिवर्तन के पहले जारी कर दिया गया है, वहां पूर्ति का समय संदाय प्राप्ति की तारीख होगा ;

(ii) जहां कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व बीजक जारी कर दिया गया है और संदाय प्राप्त हो जाता है, वहां पूर्ति का समय संदाय प्राप्ति की तारीख या बीजक जारी करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा ; या

(iii) जहां कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् बीजक जारी किया गया है, किंतु संदाय, कर की दर में परिवर्तन होने के पूर्व प्राप्त हो जाता है, वहां पूर्ति का समय, बीजक जारी करने की तारीख होगा ;

परंतु संदाय प्राप्त होने की तारीख, बैंक खाते में जमा करने की तारीख होगी यदि बैंक खाते में ऐसी जमा कर की दर में परिवर्तन की तारीख से चार कार्य दिवस के पश्चात् की जाती है।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, "संदाय के प्राप्त होने की तारीख" वह तारीख होगी, जिसको पूर्तिकार की लेखा-पुस्तकों में संदाय की प्रविष्टि की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो।

15. (1) जहां पूर्तिकार या पूर्ति का प्राप्तिकर्ता संबंधित नहीं है और पूर्ति के लिए एक मात्र प्रतिफल कीमत है, वहां माल या सेवाओं या दोनों के किसी पूर्ति का मूल्य ऐसा संव्यवहार मूल्य होगा, जो माल या सेवाओं या दोनों के उक्त पूर्ति के लिए वास्तविक रूप से संदत्त किया जाता है या संदेय है।

कराधेय पूर्ति का मूल्य।

(2) पूर्ति के मूल्य में निम्नलिखित सम्मिलित होगा,—

(क) इस अधिनियम, केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम से भिन्न तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उदगृहीत कोई कर, शुल्क, उपकर, फीस और प्रभार, यदि पूर्तिकार द्वारा पृथक् रूप में प्रभारित किया गया है ;

(ख) कोई ऐसी रकम, जिसका पूर्तिकार, ऐसे पूर्ति के संबंध में संदाय करने के लिए दायी है, किंतु जो पूर्ति के प्राप्तिकर्ता द्वारा उपगत की गई है और उसे माल या सेवाओं या दोनों के लिए वास्तविक रूप से संदत्त या संदेय कीमत में सम्मिलित नहीं किया गया है ;

(ग) किसी पूर्ति के प्राप्तिकर्ता से पूर्तिकार द्वारा प्रभारित आनुपंगिक व्यय, जिसके अंतर्गत कमीशन और पैक करना भी है, माल के परिदान या सेवाओं की पूर्ति के समय या उसके पूर्व माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में पूर्तिकार द्वारा की गई किसी बात के लिए प्रभारित कोई रकम ;

(घ) किसी पूर्ति के लिए किसी प्रतिफल के विलंबित संदाय के लिए ब्याज या विलंब फीस या शास्ति ; और

(ङ) केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायिकियों को अपवर्जित करते हुए कीमत से प्रत्यक्षतः जुड़ी हुई सहायिकियां।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए, सहायिकी की रकम को ऐसे पूर्तिकार के, जो सहायिकी प्राप्त करता है, पूर्ति के मूल्य में सम्मिलित किया जाएगा।

(3) पूर्ति के मूल्य में किसी को ऐसी छूट सम्मिलित नहीं होगी, जो,—

(क) पूर्ति के पूर्व या पूर्ति के समय दी जाती है, यदि ऐसी छूट को ऐसे पूर्ति के संबंध में जारी बीजक में सम्यक् रूप से अभिलिखित किया गया है ; और

(ख) पूर्ति के प्रभावी होने के पश्चात् दी जाती है, यदि,—

(i) ऐसी छूट, ऐसे पूर्ति के समय या उसके पूर्व किए गए किसी करार के निबंधनानुसार स्थापित की जाती है और विनिर्दिष्ट रूप से सुसंगत बीजकों से जुड़ी हुई है ; और

(ii) इनपुट कर प्रत्यय, जिसे पूर्तिकार द्वारा जारी ऐसे दस्तावेज के आधार पर छूट

माना गया है, जिसे पूर्ति के प्राप्तिकर्ता द्वारा उलट दिया गया है।

(4) जहां उपधारा (1) के अधीन माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के मूल्य का अवधारण नहीं किया जा सकता है, वहां उसका अवधारण ऐसी रीति से किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(5) उपधारा (1) या उपधारा (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, ऐसी पूर्तियों के, जिन्हें सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए, मूल्य का अवधारण ऐसी रीति से किया जाएगा, जो विहित की जाए।

स्पष्टीकरण—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए,—

(क) ऐसे व्यक्तियों को "संबंधित व्यक्ति" समझा जाएगा, यदि,—

(i) ऐसे व्यक्ति किसी अन्य कारबार के अधिकारी या निदेशक हैं ;

(ii) ऐसे व्यक्ति कारबार में विधिक रूप से मान्यताप्राप्त भागीदार हैं ;

(iii) ऐसे व्यक्ति नियोजक और कर्मचारी हैं ;

(iv) कोई व्यक्ति, जिसका प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से पच्चीस प्रतिशत या अधिक के परादेय मतदान स्टाक या शेयरों या उन दोनों पर स्वामित्व, नियंत्रण है या धारण करता है ;

(v) उनमें से एक प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य पर नियंत्रण रखता है ;

(vi) वे दोनों प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नियंत्रित हैं ;

(vii) वे साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य व्यक्ति पर नियंत्रण रखते हैं ; या

(viii) वे एक ही कुटुंब के सदस्य हैं ;

(ख) "व्यक्ति" पद के अंतर्गत विधिक व्यक्ति भी है ;

(ग) कोई व्यक्ति, जो किसी अन्य व्यक्ति के कारबार से सहबद्ध हैं, जिसमें वह किसी अन्य का एक मात्र अभिकर्ता या एक मात्र वितरक या एक मात्र रियायतग्राही, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हो, है, संबद्ध व्यक्ति समझा जाएगा।

अध्याय 5

इनपुट कर प्रत्यय

16. (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी निबंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, और धारा 49 में विनिर्दिष्ट रीति से उसको किए गए ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति पर प्रभारित इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा, जिसका उसके कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने के उपयोग किया जाता है या उपयोग किया जाना आशयित है और उक्त रकम ऐसे व्यक्ति के इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते में जमा की जाएगी।

इनपुट कर प्रत्यय लेने के लिए पात्रता और शर्तें ।

(2) उक्त धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उसको किए गए किसी माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में कोई इनपुट कर का प्रत्यय प्राप्त करने का तब तक हकदार नहीं होगा, जब तक,—

(क) उसके कब्जे में इस अधिनियम के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत पूर्तिकार द्वारा जारी कोई कर बीजक या नामे नोट (डेबिट नोट) या कोई अन्य ऐसा कर संदाय दस्तावेज, जो विहित किया जाए, न हो ;

(ख) वह माल या सेवाओं या दोनों प्राप्त नहीं कर लेता है।

स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजन के लिए यह समझा जाएगा कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने माल प्राप्त कर लिया है, जहां पूर्तिकार द्वारा, किसी प्राप्तिकर्ता को या ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निदेश पर किसी अन्य व्यक्ति को, चाहे वह अभिकर्ता के रूप में कार्य कर रहा हो या नहीं, माल के संचलन पूर्व या उसके दौरान माल पर हक के दस्तावेजों के अंतरण द्वारा या अन्यथा, माल परिदत्त कर दिया जाता है ;

(ग) धारा 41 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, ऐसे पूर्ति के संबंध में प्रभारित कर का, नकद में या उक्त पूर्ति के संबंध में अनुज्ञेय इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग करके वास्तविक रूप से सरकार को संदाय न कर दिया जाए; और

(घ) वह धारा 39 के विवरणी न दे दे :

परंतु जहां माल, बीजक के विरुद्ध, लाट या किस्तों में प्राप्त होता है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अंतिम लाट या किस्त की प्राप्ति पर प्रत्यय लेने का हकदार होगा :

परंतु यह और कि जहां कोई प्राप्तिकर्ता, ऐसी पूर्तियों से भिन्न, जिन पर प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर संदेय है, माल या सेवाओं या दोनों के पूर्तिकार को पूर्ति के मूल्य के साथ उस पर संदेय कर के मद्दे रकम का, पूर्तिकार द्वारा बीजक जारी करने की तारीख से एक सौ अस्सी दिन की अवधि के पश्चात् भी संदाय करने में असफल रहता है, वहां प्राप्तिकर्ता द्वारा उपभोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय के बराबर रकम को, उस पर के ब्याज के साथ, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, उसके आउटपुट कर दायित्व में जोड़ दिया जाएगा :

परंतु यह भी कि प्राप्तिकर्ता माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति मूल्य के साथ उस पर संदेय कर के मद्दे रकम का उसके द्वारा किए गए संदाय पर इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग करने का हकदार होगा।

(3) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने आय-कर अधिनियम, 1961 के उपबंधों के अधीन पूंजी माल और संयंत्र तथा मशीनरी की लागत के कर संघटक पर अवक्षयण का दावा किया है, वहां उक्त कर संघटक पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

1961 का 43

(4) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उस वित्तीय वर्ष के, जिससे ऐसा बीजक या ऐसे नामे नोट से संबंधित बीजक संबंधित है, अंत के अगले सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी के दिए जाने की देय तारीख के पश्चात् माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए किसी बीजक या नामे नोट के संबंध में या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने के लिए, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार नहीं होगा।

प्रत्यय और
निरुद्ध प्रत्ययों
का प्रभाजन।

17. (1) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों का उपयोग भागतः किसी कारवार के प्रयोजन के लिए किया जाता है और भागतः अन्य प्रयोजन के लिए किया जाता है, वहां प्रत्यय की उतनी रकम को, जिसे उसके कारवार के प्रयोजनों के लिए माना जा सकता है, निर्बंधित किया जाएगा।

(2) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों का उपयोग भागतः इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन शून्य दर पूर्तियों सहित कराधेय पूर्तियों को पूर्ण करने के लिए और भागतः उक्त अधिनियमों के अधीन छूट प्राप्त पूर्तियों को पूर्ण करने के लिए किया जाता है, वहां प्रत्यय की उतनी रकम को, जिसे शून्य दर पूर्तियों सहित उक्त कराधेय पूर्तियों के लिए माना जा सकता है, निर्बंधित किया जाएगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन छूट प्राप्त पूर्ति का मूल्य वह होगा, जो विहित किया जाए, और उसमें ऐसे प्रदाय, जिस पर प्राप्तिकर्ता प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर संदाय का दायी है, प्रतिभूति संव्यवहारों, भूमि विक्रय और अनुसूची 2 के पैरा 5 के खंड (ख) के अधीन रहते हुए भवन का विक्रय सम्मिलित होगा।

(4) किसी बैंककारी कंपनी या किसी ऐसी वित्तीय कंपनी को, जिसके अंतर्गत ऐसी गैर बैंककारी वित्तीय कंपनी भी है, जो निक्षेपों का प्रतिग्रहण करके, ऋणों या अग्रिम धन का विस्तार करके सेवाओं की पूर्ति करने में लगी हुई है, उपधारा (2) के उपबंधों का पालन करने का या उस मास के प्रत्ययों, पूंजी माल और इनपुट सेवाओं पर उपयुक्त इनपुट कर प्रत्यय के पचास प्रतिशत के बराबर रकम का उपभोग करने का विकल्प होगा और शेष व्यपगत हो जाएगा ;

परंतु एक बार उपयोग किए गए विकल्प को वित्तीय वर्ष के शेष भाग के दौरान प्रत्याहृत नहीं किया जाएगा :

परंतु यह और कि पचास प्रतिशत का निर्बंधन एक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा समान स्थायी खाता संख्यांक वाले किसी अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को की गई पूर्तियों पर संदत्त कर को लागू नहीं होगा।

(5) धारा 16 की उपधारा (1) और धारा 18 की उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, निम्नलिखित के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध नहीं होगा, अर्थात् :--

(क) मोटर यान और अन्य प्रवहण, सिवाय तब के जब उनका उपयोग,--

(i) निम्नलिखित कराधेय पूर्तियों को करने के लिए किया जाता है, अर्थात् :--

(अ) ऐसे यानों या प्रवहणों के और पूर्ति के लिए ; या

(आ) यात्रियों के परिवहन के लिए ; या

(इ) ऐसे यानों या प्रवहणों के चालन, उड़ान, नौपरिवहन का प्रशिक्षण देने के लिए ;

(ii) माल के परिवहन के लिए ;

(ख) माल या सेवाओं या दोनों के निम्नलिखित पूर्ति के लिए :--

(i) खाद्य और पेय पदार्थ, बाह्य खानपान, सौंदर्य उपचार, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रसाधन और प्लास्टिक शल्य चिकित्सा, वहां के सिवाय, जहां किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के आवक पूर्ति का उपयोग वैसे ही प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के जावक कराधेय पूर्ति के लिए या कराधेय संयुक्त या मिश्रित पूर्ति के कारक के रूप में किया जाता है ;

(ii) किसी क्लब, स्वास्थ्य और फिटनेस केंद्र की सदस्यता ;

(iii) किराए की गाड़ी, जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा, वहां के सिवाय, जहां,--

(अ) सरकार ने ऐसी सेवाओं को अधिसूचित किया है, जिनका तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन किसी नियोजक के लिए उसके कर्मचारियों को उपलब्ध कराना वाध्यकर है ; या

(आ) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे आवक पूर्ति का उपयोग उसी प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों का जावक कराधेय पूर्ति करने के लिए या कराधेय संयुक्त या मिश्रित पूर्ति के भागरूप किया जाता है ; और

(iv) छुट्टी या गृह यात्रा रियायत जैसे प्रवकाश पर कर्मचारियों के लिए विस्तारित यात्रा फायदे ।

(ग) (संयंत्र और मशीनरी से भिन्न) कार्य संविदा सेवाएं, जब उन की पूर्ति स्थावर संपत्ति के सन्निर्माण के लिए किया जाता है, वहां के सिवाय जहां वह कार्य संविदा सेवा के और पूर्ति के लिए कोई आवक सेवा है ;

(घ) किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा, अपने स्वयं के उपयोग के लिए (संयंत्र और मशीनरी से भिन्न) किसी स्थावर संपत्ति के सन्निर्माण के लिए प्राप्त किया गया माल या सेवाएं या दोनों, जिसके अंतर्गत ऐसा माल या सेवाओं या दोनों भी हैं, जिनका उपयोग कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए किया जाता है ।

स्पष्टीकरण—खंड (ग) और खंड (घ) के प्रयोजनों के लिए, "सन्निर्माण" पद के अंतर्गत उक्त स्थावर संपत्ति का पूंजीकरण के विस्तार तक पुनर्निर्माण, नवीकरण, परिवर्धन या परिवर्तन या मरम्मत भी है ;

(ङ) ऐसा माल या सेवाओं या दोनों, जिन पर धारा 10 के अधीन कर संदत्त कर दिया गया है ;

(च) किसी अनिवासी कराधेय व्यक्ति द्वारा, उसके द्वारा आयातित माल पर के सिवाय, प्राप्त माल या सेवाएं या दोनों ;

(छ) व्यक्तिगत उपभोग के लिए प्रयुक्त माल या सेवाएं या दोनों ;

(ज) खोया हुआ, चोरी हुआ, नष्ट हुआ, दान या निःशुल्क सैंपल द्वारा अपलिखित या व्ययनित माल ;

(झ) धारा 74, धारा 129 और धारा 130 के उपबंधों के अनुसार संदत्त कोई कर ।

(6) सरकार ऐसी रीति विहित कर सकेगी, जिसमें उपधारा (1) और उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्रत्यय निर्धारित किया जा सकेगा ।

स्पष्टीकरण—इस अध्याय और अध्याय 6 के प्रयोजनों के लिए, "संयंत्र और मशीनरी" पद से ऐसे साधित्र, उपस्कर और प्रतिष्ठापन या संरचनात्मक आलंब द्वारा भूमि पर स्थिर मशीनरी अभिप्रेत है, जिनका उपयोग माल या सेवाओं या दोनों का जावक पूर्ति करने के लिए किया जाता है और इसके अंतर्गत ऐसा प्रतिष्ठापन या संरचनात्मक आलंब भी हैं, किंतु इसमें निम्नलिखित अपवर्जित हैं,—

- (i) भूमि, भवन या कोई अन्य सिविल सन्निर्माण ;
- (ii) दूर-संचार टावर ; और
- (iii) कारखाना परिसर के बाहर बिछाई गई पाइप लाइनें ।

18. (1) ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं,—

(क) कोई ऐसा व्यक्ति, जिसने इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन किया है, उस तारीख से तीस दिन के भीतर, जिसको वह रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी हो गया है और उसे ऐसा रजिस्ट्रीकरण दे दिया गया है, उस तारीख से, जिससे वह इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर संदाय करने के लिए दायी हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को स्टॉक में धारित निवेशों और स्टॉक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ;

(ख) कोई व्यक्ति, जो धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकरण लेने का हकदार है, स्टॉक में धारित निवेशों और रजिस्ट्रीकरण अनुदत्त करने की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती दिन को स्टॉक में अंतर्विष्ट अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ;

(ग) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने धारा 10 के अधीन कर का संदाय रोक दिया है, उस तारीख से, जिससे वह धारा 9 के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को वहां वह स्टॉक में धारित निवेशों, स्टॉक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ;

परंतु पूंजी माल पर प्रत्यय को ऐसे प्रतिशतता बिंदु तक कम कर दिया जाएगा, जो विहित किया जाए ;

(घ) जहां किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा माल या सेवाओं या दोनों का छूट प्राप्त पूर्ति कराधेय पूर्ति हो गया है, वहां ऐसा व्यक्ति ऐसे छूट प्राप्त पूर्ति संबंधित स्टॉक में धारित निवेशों और स्टॉक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और उस तारीख से, जिसको ऐसा पूर्ति कराधेय हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को ऐसे छूट प्राप्त पूर्ति के लिए अनन्य रूप से प्रयुक्त पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा :

परंतु पूंजी माल पर प्रत्यय को ऐसे प्रतिशतता के बिंदु तक कम कर दिया जाएगा, जो विहित किया जाए ।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे पूर्ति से संबंधित कर बीजक जारी किए जाने की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् उसे पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में उपधारा (1) के अधीन इनपुट कर प्रत्यय प्राप्त करने का हकदार नहीं होगा ।

(3) जहां किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के गठन में, दायित्व अंतरण के विनिर्दिष्ट उपबंधों के अनुसार कारबार के विक्रय, विलयन, निर्विलयन, समामेलन, पट्टा या अंतरण के कारण कोई परिवर्तन होता है, वहां उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को ऐसा इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात होगा, जो ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसे विक्रीत, विलीन, निर्विलीन, समामेलित, पट्टे पर दिए गए या अंतरित कारबार के उसके इलेक्ट्रानिक निवेश खाते में अनुपयोजित है ।

(4) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने धारा 10 के अधीन इनपुट कर प्रत्यय का संदाय करने के विकल्प का उपयोग किया है या जहां उसके द्वारा पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों पूर्ण रूप से छूट प्राप्त हो गए हैं, वहां वह इलेक्ट्रानिक निवेश खाते या इलेक्ट्रानिक नकद खाते में, विकलन द्वारा ऐसी

विशेष
परिस्थितियों में
प्रत्यय की
उपलब्धता ।

रकम का संदाय करेगा, जो स्टाक में धारित निवेशों और स्टाक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल पर, यथास्थिति, ऐसे विकल्प का प्रयोग करने या ऐसी छूट की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती तारीख को, ऐसी प्रतिशतता बिंदु को, जो विहित किया जाए, कम करके इनपुट कर प्रत्यय के बराबर है :

परंतु ऐसी रकम का संदाय करने के पश्चात् उसके इलेक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में पड़ा हुआ इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष, यदि कोई हो, व्यपगत हो जाएगा ।

(5) उपधारा (1) के अधीन प्रत्यय की रकम और उपधारा (4) के अधीन संदेय रकम की संगणना ऐसी रीति में की जाएगी, जो विहित की जाए ।

(6) ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी की पूर्ति की दशा में, जिस पर इनपुट कर प्रत्यय लिया गया है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे प्रतिशतता बिंदु को घटाकर, जो विहित किया जाए, उक्त पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी पर लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के बराबर रकम का या धारा 15 के अधीन ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के संव्यवहार मूल्य पर कर का, इनमें से जो भी अधिक हो, संदाय करेगा :

परंतु जहां स्क्रेप के रूप में रिफैक्टरी ईटें, सांचे और डाई, जिम्स और फिक्चरों की पूर्ति की जाती है, वहां कराधेय व्यक्ति धारा 15 के अधीन अवधारित ऐसे माल के संव्यवहार मूल्य पर कर का संदाय कर सकेगा ।

छुटपुट काम के लिए किए गए निवेशों और भेजे गए पूंजी माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का लिया जाना ।

19. (1) प्रधान, ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, छुटपुट काम के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए निवेशों पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात करेगा ।

(2) धारा 16 की उपधारा (2) के खंड (ख) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्रधान निवेशों को पहले उसके कारबार के स्थान पर लाए बिना छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे भेजे जाने पर भी, निवेशों पर, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ।

(3) जहां प्रधान को, छुटपुट कार्य के लिए भेजे गए निवेश भेजे जाने के एक वर्ष के भीतर, धारा 143 की उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) के अनुसार छुटपुट कार्य पूरा होने के पश्चात् या अन्यथा वापस प्राप्त नहीं होता है या छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति के कारबार के स्थान से पूर्ति नहीं की जाती है, वहां यह समझा जाएगा कि प्रधान द्वारा छुटपुट कार्य के लिए ऐसे निवेशों की पूर्ति उस दिन किया गया था, जब उक्त निवेश भेजे गए थे :

परंतु जहां किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे निवेश भेजे जाते हैं, वहां छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा निवेशों के प्राप्त करने की तारीख से एक वर्ष की अवधि की संगणना की जाएगी ।

(4) प्रधान, ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात करेगा ।

(5) धारा 16 की उपधारा (2) के खंड (ख) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्रधान पूंजी माल को पहले उसके कारबार के स्थान पर लाए बिना छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे भेजे जाने पर भी, पूंजी माल पर, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ।

(6) जहां प्रधान को छुटपुट कार्य के लिए भेजा गया पूंजी माल, भेजे जाने के तीन वर्ष की अवधि के भीतर वापस प्राप्त नहीं होता है, वहां यह समझा जाएगा कि प्रधान द्वारा छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को ऐसे पूंजी माल की पूर्ति उस दिन की गई थी जब उक्त पूंजी माल भेजा गया था :

परंतु जहां किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे पूंजी माल भेजा जाता है, वहां छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा पूंजी माल के प्राप्त करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि की संगणना की जाएगी ।

(7) उपधारा (3) या उपधारा (6) में अंतर्विष्ट कोई बात छुटपुट कार्य करने के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए सांचे और डाई, जिम्स और फिक्चरों और औजारों को लागू नहीं होगी ।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए, "प्रधान" से धारा 143 में निर्दिष्ट व्यक्ति अभिप्रेत है।

20. (1) इनपुट सेवा वितरक, ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, कोई ऐसा दस्तावेज जारी करके, जिसमें वितरण किए जाने वाले इनपुट कर प्रत्यय की रकम अंतर्विष्ट हो, राज्य कर के प्रत्यय का राज्य कर या एकीकृत कर के रूप में और एकीकृत कर का एकीकृत कर या राज्य कर के रूप में वितरण

इनपुट सेवा वितरक द्वारा प्रत्यय के वितरण

करेगा।

की रीति।

(2) इनपुट सेवा वितरक, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, प्रत्यय का वितरण कर सकेगा, अर्थात् :--

(क) प्रत्यय के प्राप्तिकर्ताओं को किसी दस्तावेज के लिए, जिसमें ऐसे व्यौरे अंतर्विष्ट हों, जो विहित किए जाएं, प्रत्यय का वितरण किया जा सकता है ;

(ख) वितरण किए गए प्रत्यय की रकम, वितरण के लिए उपलब्ध प्रत्यय की रकम से अधिक नहीं होगी ;

(ग) किसी प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता को मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर प्रत्यय का वितरण केवल उस प्राप्तिकर्ता को ही किया जाएगा ;

(घ) एक से अधिक प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता को मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर के प्रत्यय का वितरण ऐसे प्राप्तिकर्ताओं के बीच किया जाएगा, जिनके लिए इनपुट सेवा मानी जा सकती है और ऐसा वितरण सुसंगत अवधि के दौरान ऐसे प्राप्तिकर्ता के राज्य में के आवर्त या संघ राज्यक्षेत्र में के आवर्त के आधार पर, ऐसे सभी प्राप्तिकर्ताओं के, जिनके लिए ऐसी इनपुट सेवा मानी गई है, आवर्त का अनुपाततः होगा ;

(ङ) प्रत्यय के सभी प्राप्तिकर्ताओं के लिए मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर प्रत्यय का ऐसे प्राप्तिकर्ताओं के बीच वितरण किया जाएगा और ऐसा वितरण, सुसंगत अवधि के दौरान सभी प्राप्तिकर्ताओं के संकलित आवर्त और जो उक्त सुसंगत अवधि के दौरान चालू वर्ष में सक्रियात्मक हैं, ऐसे प्राप्तिकर्ता के राज्य में के आवर्त या संघ राज्यक्षेत्र में के आवर्त के आधार पर अनुपाततः होगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए,—

(क) "सुसंगत अवधि",--

(i) यदि प्रत्यय के प्राप्तिकर्ताओं का, उस वर्ष के पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, उनके राज्यों या संघ राज्यक्षेत्रों में आवर्त है तो उक्त वित्तीय वर्ष होगी ;

(ii) यदि प्रत्यय के कुछ या सभी प्राप्तिकर्ताओं का, उस वर्ष के पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, उनके राज्यों या संघ राज्यक्षेत्रों में कोई आवर्त नहीं है तो ऐसा उस मास के पहले का, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, ऐसी अंतिम तिमाही होगी, जिसके लिए सभी प्राप्तिकर्ताओं के ऐसे आवर्त के व्यौरे उपलब्ध है ;

(ख) "प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता" पद से उस इनपुट सेवा वितरक के रूप में समान स्थायी खाता संख्यांक वाला माल या सेवाओं या दोनों का पूर्तिकार अभिप्रेत है ;

(ग) इस अधिनियम के अधीन कराधेय माल और ऐसे माल के, जो कराधेय नहीं हैं, पूर्ति में लगा हुआ किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में "आवर्त" से संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 की प्रविष्टि 84 और उक्त अनुसूची की सूची 2 की प्रविष्टि 51 और प्रविष्टि 54 के अधीन उदगृहीत किसी शुल्क या कर की रकम को घटाकर आवर्त का मूल्य अभिप्रेत है।

आधिक्य में वितरित प्रत्यय के वसूली की रीति।

21. जहां इनपुट सेवा वितरक, धारा 20 में अंतर्विष्ट उपबंधों के उल्लंघन में प्रत्यय का ऐसा वितरण करता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्यय के एक या अधिक प्राप्तिकर्ताओं को आधिक्य में प्रत्यय का वितरण हो जाता है वहां ऐसे प्राप्तिकर्ताओं से इस प्रकार वितरित आधिक्य प्रत्यय ब्याज के साथ वसूल किया जाएगा और, यथास्थिति, धारा 73 या धारा 74 के उपबंध वसूल किए जाने वाली रकम के अवधारण के लिए यथा आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

अध्याय 6

रजिस्ट्रीकरण

22. (1) किसी राज्य में मालों या सेवाओं या दोनों के कराधेय पूर्ति को करने वाला प्रत्येक प्रदाता इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने का दायी होगा, यदि किसी वित्तीय वर्ष में उसका संकलित आवर्त बीस लाख रुपए से अधिक है :

रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी व्यक्ति ।

परंतु जहां कोई व्यक्ति, विशेष प्रवर्ग के राज्यों में से किसी राज्य से माल या सेवाओं या दोनों का कराधेय पूर्ति करता है, वहां वह रजिस्ट्रीकृत किए जाने का दायी होगा, यदि किसी वित्तीय वर्ष में उसका संकलित आवर्त दस लाख रुपए से अधिक है ।

(2) प्रत्येक व्यक्ति जो, नियत दिन से ठीक पूर्ववर्ती दिन, विद्यमान विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत है या अनुज्ञप्ति धारण करता है, नियत दिन से अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी होगा ।

(3) जहां इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत कराधेय व्यक्ति द्वारा चलाया गया कारबार, किसी अन्य व्यक्ति को चालू समुत्थान के रूप में, चाहे उत्तराधिकार या अन्यथा के लेखे अंतरित किया जाता है, अंतरिति या उत्तराधिकारी, जैसा भी मामला हो, ऐसे अंतरण या उत्तराधिकार की तारीख से रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी होगा ।

(4) उपधारा (1) और (3) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जैसा भी मामला हो, स्कीम की मंजूरी या समामेलन के लिए ठहराव या अंतरण की दशा में उच्च न्यायालय, अधिकरण के आदेश के अनुसरण में या अन्यथा दो या अधिक कंपनियों के निर्विलयन के मामले, अंतरिती ऐसी तारीख से जिससे उच्च न्यायालय या अधिकरण के ऐसे आदेश को प्रभाव देते हुए कंपनी रजिस्ट्रार निगमन का प्रमाणपत्र जारी करता है, रजिस्ट्रीकृत किए जाने के लिए दायी होगा

स्पष्टीकरण--इस धारा के प्रयोजन के लिए,--

(i) अभिव्यक्ति संकलित व्यापारवर्त में, कराधेय व्यक्ति द्वारा की गई सभी पूर्ति, चाहे उसके अपने लेखे के रूप में या उसके सभी मालिकों की ओर से सम्मिलित है ;

(ii) रजिस्ट्रीकृत फुटकर कर्मकार द्वारा फुटकर-काम पूर्ण करने के पश्चात्, मालों की आपूर्ति, धारा 143 के निर्दिष्ट प्रधान द्वारा मालों की आपूर्ति मानी जाएगी और ऐसे मालों में रजिस्ट्रीकृत फुटकर कर्मकार का संकलित व्यापारवर्त सम्मिलित नहीं होगा ;

(iii) अभिव्यक्ति "विशेष प्रवर्ग राज्यों" से संविधान के अनुच्छेद 279क के खंड (4) के उपखंड (6) में यथाविनिर्दिष्ट राज्य अभिप्रेत है ।

23. (1) निम्नलिखित व्यक्ति रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं होंगे, अर्थात् :--

व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं है ।

(क) कोई व्यक्ति जो ऐसे मालों या सेवाओं या दोनों के कारबार में अनन्य रूप से लगा हुआ है जो इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल या सेवा कर अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी नहीं है या कर से पूर्ण रूप से छूट प्राप्त है ;

(ख) कृषक, भूमि की खेती की उपज की पूर्ति के विस्तार तक ।

(2) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसे व्यक्तियों का प्रवर्ग जिन्हें इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने से छूट दी जा सकती है, विनिर्दिष्ट कर सकती है ।

कतिपय मामलों में अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण ।

24. धारा 22 की उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, व्यक्तियों के निम्नलिखित प्रवर्गों को इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किया जाना अपेक्षित होगा,--

(i) व्यक्ति जो अंतरराज्यिक कराधेय पूर्ति करते हैं ;

(ii) कराधेय पूर्ति करने वाले आकस्मिक कराधेय व्यक्ति ;

(iii) व्यक्ति जिससे प्रतिलोम प्रभार के अधीन कर अदा करना अपेक्षित है ;

(iv) व्यक्ति जिससे धारा 9 की उपधारा (5) के अधीन कर का संदाय करना अपेक्षित है ;

(v) कराधेय पूर्ति करने वाले अनिवासी कराधेय व्यक्ति ;

(vi) व्यक्ति जिससे धारा 51 के अधीन कर की कटौती करना अपेक्षित है चाहे इस अधिनियम के

अधीन पृथक रूप से रजिस्ट्रीकृत हो या नहीं ;

(vii) व्यक्ति जो, चाहे अभिकर्ता के रूप में या अन्यथा, अन्य कराधेय व्यक्तियों की ओर से कराधेय मालों या सेवाओं अथवा दोनों की पूर्ति करते हैं ;

(viii) इनपुट सेवा वितरक, चाहे इस अधिनियम के अधीन पृथक रूप से रजिस्ट्रीकृत है या नहीं ;

(ix) व्यक्ति जो धारा 9 की उपधारा (5) के अधीन विनिर्दिष्ट पूर्ति से भिन्न मालों या सेवाओं अथवा दोनों की ऐसे इलेक्ट्रानिक वाणिज्य ऑपरेटर जिससे धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर एकत्र करना अपेक्षित है, के माध्यम से पूर्ति करता है ;

(x) प्रत्येक इलेक्ट्रानिक वाणिज्य ऑपरेटर ;

(xi) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न, प्रत्येक व्यक्ति जो भारत से बाहर के स्थान से ऑन लाइन सूचना और डाटा आधारित पहुंच या सुधार सेवाओं भारत में किसी व्यक्ति की पूर्ति करता है ;

(xii) ऐसे अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग जिन्हें केंद्रीय सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए ।

रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रक्रिया ।

25. (1) प्रत्येक व्यक्ति जो धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी है, वह उस तारीख, जिसको वह रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी होता है, से तीस दिवस के भीतर, ऐसी रीति और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करेगा :

परंतु आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति कारबार प्रारंभ होने के कम से कम पांच दिवस पहले रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन कर सकेगा ।

स्पष्टीकरण--प्रत्येक व्यक्ति, जो भारत के राज्यक्षेत्रीय सागर-खंड से पूर्ति करता है, ऐसे राज्य, जहां समुचित आधार रेखा का निकटतम बिन्दु अवस्थित है, ऐसे राज्य में रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करेगा ।

(2) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण चाहता है को एकल रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया जाएगा :

परंतु एक राज्य में बहुल कारबार वर्टिकल रखने वाले व्यक्ति को, ऐसी शर्तों, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए, प्रत्येक कारबार वर्टिकल के लिए पृथक रजिस्ट्रीकरण मंजूर किया जा सकेगा ।

(3) कोई व्यक्ति जो धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी नहीं है वह स्वयं को स्वेच्छया रजिस्ट्रीकृत करा सकता है और इस अधिनियम के सभी उपबंध जैसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति पर लागू होते हैं, वैसे ही ऐसे व्यक्ति पर लागू होंगे ।

(4) एक व्यक्ति जिसने एक से अधिक रजिस्ट्रीकरण ऐसे चाहे एक राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में एक से अधिक राज्यों अथवा संघ राज्यक्षेत्र में प्राप्त किया है या प्राप्त करना अपेक्षित है ऐसे प्रत्येक रजिस्ट्रीकरण के संबंध में अधिनियम के प्रयोजनों के लिए सुभिन्न व्यक्ति के रूप में माना जाएगा

(5) जहां एक व्यक्ति जिसने एक स्थापन की बावत राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में रजिस्ट्रीकरण प्राप्त किया है या प्राप्त करना अपेक्षित है, के पास किसी अन्य राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में एक स्थापन है, तब ऐसे स्थापनों को इस अधिनियम के प्रयोजन के लिए सुभिन्न व्यक्तियों के स्थापनों के रूप में माना जाएगा।

(6) प्रत्येक व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण प्रदान किए जाने के लिए पात्र होने के लिए आय-कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी स्थायी खाता संख्या रखेगा :

1961 का 43

परंतु व्यक्ति जिससे धारा 51 के अधीन कर की कटौती करना अपेक्षित है, स्थायी खाता संख्या के बजाय, रजिस्ट्रीकरण प्रदान करने के लिए पात्र होने के लिए उक्त अधिनियम के अधीन जारी कर कटौती और संग्रहण खाता संख्या रख सकेगा ।

(7) उपधारा (6) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, एक अनिवासी कराधेय व्यक्ति को ऐसे अन्य दस्तावेजों जो विहित किए जाए के आधार पर उप धारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया जा सकता है ।

(8) जहां एक व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किए जाने के लिए दायी है रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने में विफल हो जाता है, उचित अधिकारी कोई कार्रवाई जिसे इस अधिनियम के

अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किया जा सकता है, पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसे व्यक्ति को ऐसी रीति, जो विहित की जाए, में रजिस्टर करने के लिए कार्यवाही कर सकेगा।

(9) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी--

(क) संयुक्त राष्ट्र संगठन का कोई विशिष्ट अभिकरण या संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियाँ, अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित बहुपार्श्व वित्तीय संस्था और संगठन, विदेशी देशों के कौंसल-कार्यालय या राजदूतावास ; और

(ख) ऐसे अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग, जो आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया जाए ऐसी रीति और ऐसे प्रयोजनों, जिसके अंतर्गत उनके द्वारा प्राप्त मालों का सेवाओं अथवा दोनों की अधिसूचित पूर्ति पर, करों का प्रतिदाय, जैसा कि विहित किया जाए, विशिष्ट पहचान संख्या प्रदान करेगा।

1947 का 46

(10) रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या ऐसी रीति में सम्यक् सत्यापन के पश्चात् और ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, प्रदान किया जाएगा या खारिज किया जाएगा।

(11) रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र ऐसे प्ररूप में, और ऐसी तारीख से जारी किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(12) एक रजिस्ट्रीकरण या एक विशिष्ट पहचान संख्या उप धारा 10 के अधीन विहित अवधि के समाप्त होने के पश्चात् प्रदान किया गया समझा जाएगा, यदि आवेदक द्वारा उस अवधि के भीतर आवेदक को कोई कमी संसूचित नहीं की जाती है।

रजिस्ट्रीकरण
समझा जाना।

26. (1) केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या का प्रदान किया जाना, इस शर्त के अध्वधीन रहते हुए कि रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या के लिए आवेदन धारा 25 की उपधारा (10) में यथाविनिर्दिष्ट समय के भीतर खारिज नहीं किया गया है, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या का प्रदान किया जाना समझा जाएगा।

(2) धारा 25 की उपधारा (10) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या के लिए आवेदन का खारिज किया जाना, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन का खारिज किया जाना समझा जाएगा।

आकस्मिक कराधेय
व्यक्ति और
अनिवासी कराधेय
व्यक्ति से संबंधित
विशिष्ट उपबंध।

27. (1) आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति को जारी किया गया रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन में विनिर्दिष्ट अवधि के लिए या रजिस्ट्रीकरण के प्रभावी होने की तारीख से नब्बे दिन की अवधि जो भी पहले हो, के लिए विधिमाम्य होगा और ऐसा व्यक्ति केवल रजिस्ट्रीकरण, प्रमाणपत्र जारी करने के पश्चात् कराधेय पूर्ति करेगा :

परंतु उचित अधिकारी, पर्याप्त कारणों से जो उक्त कराधेय व्यक्ति द्वारा दर्शाए जाए, उक्त नब्बे दिन की अवधि को नब्बे दिन से अनधिक की और अवधि के लिए बढ़ा सकेगा।

(2) एक आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति धारा 25 की उपधारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत करने के समय, ऐसी अवधि जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण चाहा गया है, के लिए ऐसे व्यक्ति के प्राक्कलित कर दायित्व के समतुल्य रकम में कर का अग्रिम निक्षेप करेगा :

परंतु जहां उपधारा (1) के अधीन समय का कोई विस्तार चाहा गया है, ऐसा कराधेय व्यक्ति, ऐसी अवधि जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण चाहा गया है, के लिए ऐसे व्यक्ति के प्राक्कलित कर दायित्व के समतुल्य कर की अतिरिक्त रकम निक्षेप करेगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन निक्षेप की गई रकम, ऐसे व्यक्ति के इलेक्ट्रानिक नकद खाते में जमा की जाएगी और धारा 49 के अधीन उपबंधित रीति में उपयोग किया जाएगा।

28 (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति और ऐसा व्यक्ति जिसे विशिष्ट पहचान संख्या समनुदेशित की गई है रजिस्ट्रेशन के समय या तत्पश्चात् ऐसे प्ररूप और रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, दी गई सूचना में किसी परिवर्तन को उचित अधिकारी को सूचित करेगा।

रजिस्ट्रीकरण का
संशोधन।

(2) उचित अधिकारी, उपधारा (1) के अधीन दी गई या उसके द्वारा अभिनिश्चित की गई सूचना के आधार पर, रजिस्ट्रीकरण विशिष्टियों में ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए संशोधनों का अनुमोदन करेगा या खारिज करेगा :

परंतु ऐसी विशिष्टियों जो विहित की जाएं, के संशोधन की बाबत समुचित अधिकारी का अनुमोदन अपेक्षित नहीं होगा :

परंतु यह और कि उचित अधिकारी रजिस्ट्रीकरण विशिष्टियों में संशोधन के लिए आवेदन को किसी व्यक्ति को सुने जाने का अवसर दिए बिना खारिज नहीं करेगा ।

(3) यथास्थिति, राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन संशोधनों का खारिज किया जाना या अनुमोदन, इस अधिनियम के अधीन खारिज किया जाना या अनुमोदित किया जाना माना जाएगा ।

29. (1) उचित अधिकारी या तो स्वप्रेरणा से या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाने की दशा में उसके विधिक वारिसों द्वारा दाखिल किए गए आवेदन पर, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, ऐसी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए रजिस्ट्रीकरण रद्द कर सकेगा, जहां--

रजिस्ट्रीकरण का रद्दकरण ।

(क) कारबार किन्हीं कारणों जिसके अंतर्गत स्वत्वधारी की मृत्यु किसी अन्य विधिक सत्ता के साथ सामेलन, निर्विलयन या अन्यथा निपटान भी है, बंद कर दिया है, पूरी तरह से अंतरित कर दिया है ; या

(ख) कारबार के गठन में कोई परिवर्तन हुआ है ; या

(ग) धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न कराधेय व्यक्ति, धारा 22 या धारा 24 के अधीन इससे अधिक रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं होगा ।

(2) उचित अधिकारी, ऐसी तारीख जिसके अंतर्गत किसी भूतलक्षी तारीख से जैसा वह उचित समझे, किसी व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण रद्द कर सकेगा, जहां--

(क) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन जैसा विहित किया जाए, ऐसे उपबंधों का उल्लंघन किया है ; या

(ख) धारा 10 के अधीन कर अदा करने वाले व्यक्ति ने, तीन क्रमवर्ती कर अवधियों तक विवरणी नहीं दी है ; या

(ग) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट व्यक्ति से भिन्न किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने लगातार छह मास की अवधि तक विवरणी नहीं दी है ; या

(घ) कोई व्यक्ति, जिसने धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन स्वैच्छया रजिस्ट्रीकरण कराया है रजिस्ट्रीकरण की तारीख से छह मास के भीतर कारबार प्रारंभ नहीं किया है ; या

(ङ) रजिस्ट्रीकरण कपट के साधनों से, जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों के छिपाने के द्वारा प्राप्त किया गया है :

परंतु उचित अधिकारी किसी व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए बिना रजिस्ट्रीकरण को रद्द नहीं करेगा ।

(3) ऐसी धारा के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना, कराधेय व्यक्ति के कर अदा करने के दायित्व पर और इस अधिनियम के अधीन अन्य शोधय या इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन, रद्दकरण की तारीख से पहले किसी अवधि के लिए, चाहे ऐसा कर और अन्य शोधय, रद्दकरण की तारीख से पहले या पश्चात् अवधारित किए जाते हैं, किसी बाध्यता के निर्वहन पर प्रभाव नहीं डालेगा ।

(4) केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना समझा जाएगा ।

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसका रजिस्ट्रीकरण रद्द किया गया है, इलेक्ट्रानिक प्रत्यय खाता या इलेक्ट्रानिक नकद खाते में विकलन के माध्यम से ऐसी रकम का संदाय करेगा जो रद्दकरण की ऐसी तारीख से ठीक पूर्व दिन को स्टॉक में धारित निवेश के संबंध में इनपुट कर और स्टॉक में धारित अर्द्ध-तैयार या तैयार माल में अंतर्विष्ट निवेश या पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी या ऐसी रीति में, जो विहित की जाए संगणित ऐसे माल पर संदेय आउटपुट कर, जो भी अधिक हो, के प्रत्यय के समतुल्य है :

परंतु पूंजीमाल या संयंत्र और मशीनरी के मामले में कराधेय व्यक्ति उक्त पूंजीमाल या संयंत्र और मशीनरी पर लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के समान ऐसी रकम का संदाय करेगा जो ऐसे प्रतिशतता बिन्दु

जो विहित किए जाए, से घटाकर आये या धारा 15 के अधीन ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के संव्यवहार मूल्य पर कर जो भी अधिक हो, संदत्त करेगा।

(6) उपधारा (5) के अधीन देय रकम ऐसी रीति जो विहित की जाए, से प्रकलित की जाएगी

30. (1) ऐसी शर्तों, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए, कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसका रजिस्ट्रीकरण उचित अधिकारी द्वारा स्वयं के प्रस्ताव पर रद्द किया जाता है, रद्दकरण आदेश की तारीख से तीस दिन के भीतर ऐसे अधिकारी को विहित रीति में रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन कर सकेगा।

रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण।

(2) उचित अधिकारी, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि में जो आदेश द्वारा विहित की जाए, या तो रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण कर सकेगा या आवेदन को खारिज कर सकेगा :

परंतु रजिस्ट्रीकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन आवेदक को सुनवाई का अवसर दिए बिना खारिज नहीं किया जाएगा।

(3) केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण माना जाएगा।

अध्याय 7

कर बीजक, जमा पत्र और नामे नोट

31. (1) कराधेय मालों की पूर्ति करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे समय से पहले या उस पर,--

कर बीजक।

(क) प्राप्तिकर्ता की पूर्ति, जहां पूर्ति में मालों का संचलन अंतर्बलित है, के लिए माल को हटाएगा ; या

(ख) किसी अन्य मामले में, मालों का परिदान करेगा या प्राप्तिकर्ता को उसको उपलब्ध कराएगा, वर्णन, परिमाण और मालों के मूल्य, उस पर भारित कर और ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं, दर्शाने वाला कर बीजक जारी करेगा :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश पर अधिसूचना द्वारा ऐसे समय में और ऐसी रीति में जो विहित किया जाए, मालों या पूर्तियों के प्रवर्गों जिनके संबंध में कर बीजक जारी किया जाएगा, को विनिर्दिष्ट कर सकेगी।

(2) कराधेय सेवाओं की पूर्ति करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति सेवाओं के उपबंध के पूर्व या पश्चात् परंतु विहित अवधि के भीतर वर्णन और मालों के मूल्य, उस पर भारित कर और ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं, दर्शाने वाला कर बीजक जारी करेगा :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचना द्वारा और उसमें उल्लिखित शर्तों के अधीन रहते हुए संगठनों के प्रवर्गों को विनिर्दिष्ट करेगी, जिनके संबंध में—

(क) पूर्ति के संबंध में जारी किया गया कोई अन्य दस्तावेज कर बीजक समझा जाएगा ; या

(ख) कर बीजक जारी किया जाना अपेक्षित नहीं हो।

(3) उपधारा (1) और उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी,--

(क) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख से एक मास के भीतर और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकरण की प्रभावी तारीख से, उसे रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख तक, प्रारंभ होने वाली अवधि के दौरान पहले से जारी बीजक के विरुद्ध पुनरावलोकित बीजक जारी कर सकेगा ;

(ख) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, कर बीजक जारी नहीं कर सकेगा यदि ऐसी शर्तों और ऐसी रीति जो विहित की जाए के अधीन रहते हुए, मालों या सेवाओं या दोनों पूर्तियों का मूल्य दो सौ रुपए से कम है;

(ग) छूट प्राप्त मालों और सेवाओं या दोनों की पूर्ति करने वाला या धारा 10 के उपबंधों के अधीन कर अदा करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, कर बीजक के बजाय ऐसी विशिष्टताएं अंतर्विष्ट करने वाला और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, एक बिल जारी करेगा :

परन्तु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, पूर्ति का बिल जारी नहीं करेगा, यदि पूर्ति किया गया माल या सेवाओं या दोनों का मूल्य ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, दो सौ रुपए से

कम है ;

(घ) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति माल या सेवा या दोनों की किसी पूर्ति के संबंध में अग्रिम संदाय की प्राप्ति पर ऐसे संदाय का साक्ष्य देते हुए ऐसी विशिष्टियों से अंतर्विष्ट, जो विहित की जाए, कोई रसीद वाउचर या कोई अन्य दस्तावेज जारी करेगा ;

(ङ) जहां, माल या सेवा या दोनों की पूर्ति के संबंध में अग्रिम की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति कोई रसीद वाउचर जारी करता है, परंतु पश्चात्कर्त्ता कोई पूर्ति नहीं की जाती है और उसके अनुसरण में कोई कर बीजक जारी नहीं किया जाता है, उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उस व्यक्ति को जिसमें संदाय किया है, ऐसे संदाय के विरुद्ध कोई प्रतिदाय वाउचर जारी कर सकेगा ;

(च) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन कर संदत्त करने के लिए दायी है, उसके द्वारा किसी ऐसे प्रदाता से, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है, प्राप्त माल या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति की तारीख को माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में कोई बीजक जारी करेगा ;

(छ) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन कर संदत्त करने के लिए दायी है, पूर्तिकार संदाय वाउचर जारी करेगा ।

(4) माल की निरंतर पूर्ति की दशा में जहां लेखाओं के क्रमवार विवरण या क्रमवार संदाय अंतर्वलिप्त हैं, वहां बीजक प्रत्येक ऐसे विवरण के जारी करते समय या उससे पूर्व या, यथास्थिति, जब प्रत्येक ऐसा संदाय प्राप्त किया जाता है, जारी किया जाएगा ।

(5) उपधारा (3) के खंड (घ) के उपबंधों के अधीन सेवाओं की निरंतर पूर्ति की दशा में,--

(क) जहां संदाय की नियत तारीख का संविदा से पता लगाया जा सकता है, वहां बीजक संदाय की नियत तारीख को या उससे पूर्व जारी किया जाएगा ;

(ख) जहां संदाय की नियत तारीख का संविदा से पता नहीं लगाया जा सकता है, वहां बीजक जब सेवाओं का पूर्तिकार संदाय प्राप्त करता है, के समय या उससे पूर्व जारी किया जाएगा ;

(ग) जहां संदाय को किसी घटना के पूरा होने से जोड़ा जाता है, वहां बीजक उस घटना के पूरा होने की तारीख को या उससे पूर्व जारी किया जाएगा ।

(6) किसी ऐसे मामले में जहां किसी संविदा के अधीन पूर्ति के पूरा होने से पूर्व सेवाओं की पूर्ति समाप्त हो जाती है, वहां बीजक ऐसे समय पर जारी किया जाएगा जब पूर्ति समाप्त होती है और ऐसा बीजक ऐसी समाप्ति से पूर्व प्रभावित पूर्ति की सीमा तक जारी किया जाएगा ।

(7) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां विक्रय या वापसी के लिए अनुमोदन पर भेजा जा रहा या लिया जा रहा माल पूर्ति किए जाने से पूर्व हटाया जाता है, वहां बीजक आपूर्ति के समय या उससे पूर्व अथवा हटाए जाने की तारीख से छह मास तक, जो भी पूर्वतर हो, जारी किया जाएगा ।

स्पष्टीकरण--इस धारा के प्रयोजनों के लिए "कर बीजक" पद के अंतर्गत पहले की गई पूर्ति के संबंध में पूर्तिकार द्वारा जारी कोई पुनरीक्षित बीजक होगा ।

32. (1) कोई व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति नहीं है, माल और सेवाओं या दोनों की किसी पूर्ति के संबंध में इस अधिनियम के अधीन कर के रूप में कोई रकम संगृहीत नहीं करेगा ।

(2) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार के सिवाय, कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति कर का संग्रहण नहीं करेगा ।

33. इस अधिनियम में या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जहां कोई पूर्ति किसी प्रतिफल के लिए की जाती है, वहां प्रत्येक व्यक्ति जो ऐसी पूर्ति के लिए कर संदाय करने के लिए दायी है निर्धारण से संबंधित सभी दस्तावेजों में कर बीजक और अन्य ऐसे अन्य दस्तावेज, टैक्स की रकम जो उस मूल्य का भाग होगी जिस पर ऐसी पूर्ति की जाती है प्रमुखतः उपदर्शित करेगा ।

34. (1) जहां किसी माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए कोई कर बीजक जारी किया गया है और उस कर बीजक में प्रभावित कर योग्य मूल्य या कर ऐसी पूर्ति के संबंध में कर योग्य मूल्य या संदेय कर से अधिक पाया जाता है या जहां पूर्तिकार द्वारा पूर्ति किए गए माल को वापिस किया जाता है या

कर के
अप्राधिकृत
संग्रहण का
प्रतिषेध ।

कर बीजक और
अन्य दस्तावेजों
में उपदर्शित की
जाने वाले कर
की रकम ।

जमा और नामे
पत्र ।

जहां पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों में कमी पाई जाती है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसमें ऐसा माल या सेवाएं या दोनों की पूर्ति की है पूर्तिकार को ऐसी विशिष्टियों जो विहित की जाएं से अंतर्विष्ट जमापत्र जारी कर सकेगा।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में कोई जमा पत्र जारी करता है। ऐसे जमा पत्र के ब्यौरे उस मास की विवरणी में घोषित करेगा जिसके दौरान ऐसा साख पत्र जारी किया गया है परंतु उस वित्तीय वर्ष जिसमें ऐसी पूर्ति की गई थी, के अंत के पश्चात् सितंबर मास से अपश्चात् या सुसंगत वार्षिक विवरणी फाइल करने की तारीख, जो भी पूर्वतर हो, तथा कर दायित्व ऐसी रीति जो विहित की जाए, में समायोजित किया जाएगा :

परंतु यदि ऐसी पूर्ति पर कर और ब्याज का प्रभाव किसी अन्य व्यक्ति को पास किया गया है तो पूर्तिकार के आउटपुट कर दायित्व में कोई कमी अनुज्ञात नहीं की जाएगी।

(3) जहां किसी माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए कोई कर बीजक जारी किया गया है और उस कर बीजक में कर योग्य मूल्य या प्रभारित कर कर योग्य मूल्य या ऐसी पूर्ति के संबंध में संदेय कर से कम पाया जाता है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति की है प्राप्त कर्ता को ऐसी विशिष्टियों जो विहित की जाए, से अंतर्विष्ट नामे पत्र जारी करेगा।

(4) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के संबंध में कोई नामे पत्र जारी करता है, ऐसे नामेपत्र के ब्यौरे उस मास की विवरणी में, जिसके दौरान ऐसा नामे पत्र जारी किया गया है, घोषित करेगा और कर दायित्व ऐसे रीति में जो विहित की जाए में समायोजित करेगा।

स्पष्टीकरण--इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए "नामे पत्र" पद के अंतर्गत पूरक बीजक सम्मिलित है।

अध्याय 8

लेख और अभिलेख

लेख और अन्य अभिलेख।

35. (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र में यथावर्णित अपने कारबार के मूल स्थान पर --

- (क) माल के उत्पादन और विनिर्माण ;
 - (ख) माल या सेवाओं या दोनों की आवक या जावक पूर्ति ;
 - (ग) माल का स्टॉक ;
 - (घ) प्राप्त किया गया इनपुट कर प्रत्यय ;
 - (ङ) संदेय और संदत्त आउटपुट कर ; और
 - (च) ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं,
- की सत्य और शुद्ध लेखे रखेगा और अनुरक्षित करेगा :

परंतु जहां रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र में एक से अधिक कारबार के स्थान विनिर्दिष्ट, किए गए हैं वहां कारबार के प्रत्येक स्थान से संबंधित लेखे कारबार के उन्हीं स्थानों में रखे जाएंगे :

परंतु यह और कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे लेखे और अन्य विशिष्टियां इलेक्ट्रानिक रूप में ऐसी रीति में जो विहित की जाए, रख सकेगा और अनुरक्षित कर सकेगा।

(2) भंडागार या गोदाम या माल के भंडारण के लिए उपयोग में लाया गया किसी अन्य स्थान का प्रत्येक स्वामी या ऑपरेटर और प्रत्येक वाहक इस बात पर ध्यान दिए बिना कि क्या वह रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति है या नहीं, परेषक, परेषिती और ऐसे माल के अन्य सुसंगत ब्यौरे जो विहित किए जाएं, के अभिलेख रखेगा।

(3) आयुक्त ऐसे प्रयोजन के लिए जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं के अतिरिक्त लेखे या दस्तावेज अनुरक्षित करने के लिए कर योग्य व्यक्तियों का वर्ग अधिसूचित कर सकेगा।

(4) जहां आयुक्त समझता है कि कर योग्य व्यक्तियों का कोई वर्ग इस धारा के उपबंधों के अनुसार लेखे रखने और अनुरक्षित करने की दशा में नहीं है, वहां वह कारणों को अभिलिखित करते हुए

कर योग्य व्यक्तियों के ऐसे वर्ग को लेखों को ऐसी रीति में जो विहित की जाए अनुरक्षित करने के लिए अनुज्ञात कर सकेगा।

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसका आवर्त किसी वित्तीय वर्ष के दौरान विहित सीमा से अधिक होता है, अपने लेखे किसी चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार द्वारा संपरीक्षित करवाएगा और संपरीक्षित वार्षिक लेखों की एक प्रति, धारा 44 की उपधारा (2) के अधीन समाधान विवरण और ऐसे अन्य दस्तावेज ऐसे प्ररूप और रीति में प्रस्तुत करेगा, जो विहित की जाए।

(6) धारा 17 की उपधारा (5) के खंड (ज) के उपबंधों के अध्याधीन जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उपधारा (1) के अनुसार माल या सेवाओं या दोनों का लेखा देने में विफल रहता है, वहां उचित अधिकारी माल या सेवाओं या दोनों पर संदेय कर की रकम, जिसका लेखा नहीं दिया गया है, अवधारित करेगा, मानो ऐसा माल या सेवाएं या दोनों की ऐसी व्यक्ति द्वारा पूर्ति की गई थी और, यथास्थिति, धारा 73 या धारा 74 के उपबंध ऐसे कर के अवधारण के लिए आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

36. धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन लेखों की बहियों और अन्य अभिलेखों को रखने और अनुरक्षित करने के लिए अपेक्षित प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उनको ऐसे लेखों और अभिलेखों से संबंधित वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी फाइल करने की नियत तारीख से 72 मास की समाप्ति तक प्रतिधारित करेगा :

लेखों के
प्रतिधारण की
अवधि।

परंतु प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो किसी अपील प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के समक्ष किसी अपील या पुनरीक्षण या किसी अन्य कार्यवाही चाहे उसके द्वारा या आयुक्त द्वारा फाइल की गई हो, में कोई पक्षकार है, या अध्याय 19 के अधीन किसी अपराध के लिए अन्वेषणाधीन है, ऐसी अपील या पुनरीक्षण या कार्यवाही या अन्वेषण की विषयवस्तु से संबंधित लेखाबहियों और अन्य अभिलेखों को ऐसी अपील या पुनरीक्षण या कार्यवाही या अन्वेषण के अंतिम निपटान के पश्चात् एक वर्ष की अवधि के लिए या ऊपर विनिर्दिष्ट अवधि के लिए, जो भी पश्चात्पूर्वी हो, के लिए प्रतिधारित करेगा।

अध्याय 9

विवरणियां

37. (1) किसी इनपुट सेवा वितरक, किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति और धारा 10 या धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इलेक्ट्रानिक रूप में ऐसे प्ररूप में और रीति में जो विहित की जाए माल या सेवाओं या दोनों की की गई जावक पूर्तियों के ब्यौरे कर अवधि के दौरान उक्त कर अवधि के मास के उत्तरवर्ती 10वें दिन से पूर्व या को देगा और ऐसे ब्यौरे उक्त पूर्तियों के प्राप्तिकर्ता को ऐसी समयावधि के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे :

जावक पूर्तियों के
ब्यौरे देना।

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 11वें दिन से 15वें दिन तक की अवधि के दौरान जावक पूर्तियों के ब्यौरे देने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा :

परंतु यह और कि आयुक्त, कारणों को लिखित में अभिलिखित करते हुए अधिसूचना द्वारा कर योग्य व्यक्ति, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, के ऐसे वर्ग के लिए ऐसे ब्यौरे देने के लिए समय सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

परंतु यह और भी कि केंद्रीय कर आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय सीमा का कोई विस्तार आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।

(2) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसको धारा 38 की उपधारा (3) के अधीन ब्यौरे या धारा 38 की उपधारा (4) के अधीन इनपुट सेवा वितरक की जावक पूर्तियों से संबंधित ब्यौरे संसूचित किए गए हैं, 17वें दिन से पूर्व या को इस प्रकार संसूचित ब्यौरे को स्वीकार या अस्वीकार करेगा, परंतु कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 15वें दिन से पूर्व नहीं तथा उसके द्वारा उपधारा (1) के अधीन दिए गए ब्यौरे तदनुसार संशोधित होंगे।

(3) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसमें किसी कर अवधि के लिए उपधारा (1) के अधीन ब्यौरे दिए हैं और जो धारा 42 या धारा 43 के अधीन बे-मिलान रह गए हैं, उसमें किसी त्रुटि या लोप का पता

लगने पर ऐसी त्रुटि या लोप का ऐसी रीति में जो विहित की जाए, सुधार करेगा, तथा यदि ऐसी कर अवधि के लिए दी जाने वाली विवरणी में ऐसी त्रुटि या लोप के कारण कर का कम संदाय हुआ है तो कर और ब्याज, यदि कोई हो, का संदाय करेगा :

परंतु उस वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे व्यौरे संबंधित हैं, के अंत के पश्चात् सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी देने के पश्चात् या सुसंगत वार्षिक विवरणी देते हुए, जो भी पूर्वतर है, उपधारा (1) के अधीन दिए गए व्यौरे के संबंध में त्रुटि या लोप का कोई सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा ।

स्पष्टीकरण--इस अध्याय के प्रयोजन के लिए, "जावक पूर्तियों के व्यौरे" पद के अंतर्गत किसी कर-अवधि के दौरान की गई जावक पूर्तियों के संबंध में जारी बीजक, नामे पत्र, जमा पत्र और पुनरीक्षित बीजक के व्यौरे हैं ।

आवक पूर्तियों के व्यौरे देना ।

38. (1) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबन्धों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, यदि अपेक्षित हो, अपनी आवक पूर्तियों और जमा या नामे पत्रों के व्यौरे तैयार करने के लिए धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन संसूचित जावक पूर्तियों और जमा या नामे पत्रों से संबंधित व्यौरे सत्यापित करेगा, विधि मान्य करेगा, उपांतरित करेगा या हटाएगा और उसमें ऐसी पूर्तियों, जो धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन पूर्तिकार द्वारा घोषित नहीं की गई हैं, के संबंध में प्राप्त आवक पूर्तियों और जमा या नामे पत्रों के व्यौरे सम्मिलित कर सकेगा ।

1975 का 51

(2) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10 या धारा 51 या धारा 52 के उपबन्धों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, इलेक्ट्रानिक रूप में कर योग्य माल या सेवाओं या दोनों, जिसके अंतर्गत माल या सेवाओं या दोनों की आवक पूर्तियां, जिन पर इस अधिनियम के अधीन प्रतिलोम आधार पर कर संदेय है तथा समन्वित माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन माल या सेवा या दोनों की आवक पूर्तियां या जिस पर सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन समन्वित माल और सेवा कर संदेय है तथा कर अवधि के दौरान 10वें दिन के पश्चात् परंतु कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 15वें दिन से पूर्व या को ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए, ऐसी पूर्तियों के संबंध में प्राप्त जमा या नामे पत्रों के व्यौरे देगा :

परंतु आयुक्त, कारणों को लिखत में अभिलिखित करते हुए अधिसूचना द्वारा कर योग्य व्यक्ति, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, के ऐसे वर्ग के लिए ऐसे व्यौरे देने के लिए समय सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

परंतु यह और कि केंद्रीय कर आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा का कोई विस्तार आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा ।

(3) प्राप्तिकर्ता द्वारा उपांतरित, हटाई गई या सम्मिलित की गई पूर्तियों के और उपधारा (2) के अधीन दिए गए व्यौरे संबंधित पूर्तिकार को ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे ।

(4) धारा 39 की उपधारा (2) या उपधारा (4) के अधीन प्राप्तिकर्ता द्वारा दी गई विवरणी में उपांतरित, हटाई गई या सम्मिलित की गई पूर्तियों के व्यौरे संबंधित पूर्तिकार को ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे ।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसमें किसी कर अवधि के लिए उपधारा (2) के अधीन व्यौरे दिए हैं और जो धारा 42 या धारा 43 के अधीन बे-मिलान रह गए हैं, उसमें किसी त्रुटि या लोप का पता लगने पर ऐसी त्रुटि या लोप का ऐसी रीति में जो विहित की जाए, सुधार करेगा, तथा यदि ऐसी कर अवधि के लिए दी जाने वाली विवरणी में ऐसी त्रुटि लोप के कारण कर का कम संदाय हुआ है तो कर और ब्याज, यदि कोई हो, का संदाय करेगा :

परंतु उस वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे व्यौरे संबंधित हैं, के अंत के पश्चात् सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी देने के पश्चात् या सुसंगत वार्षिक विवरणी देते हुए, जो भी पूर्वतर है, उपधारा (2) के अधीन दिए गए व्यौरे के संबंध में त्रुटि या लोप का कोई सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा ।

39. (1) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबन्धों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक कलेंडर मास या उसके किसी भाग के लिए इलेक्ट्रानिक रूप में माल या सेवा या दोनों की आवक और जावक पूर्तियां, प्राप्त इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर, संदत्त कर और अन्य विशिष्टियां और ऐसे

विवरणियां देना ।

कलेंडर मास या उसके किसी भाग के उत्तरवर्ती मास के 20वें दिन से पूर्व या को ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए, विवरणी देगा।

(2) धारा 10 के उपबंधों के अधीन कर संदाय करने वाला कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति प्रत्येक तिमाही या उसके किसी भाग के लिए ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, कोई माल या सेवा या दोनों की आवक पूर्तियों, संदेय कर और संदत्त कर की विवरणी, प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के पश्चात् 18 दिन के भीतर इलेक्ट्रानिक रूप में संदत्त करेगा।

(3) धारा 51 के उपबंधों के अधीन स्रोत पर कर की कटौती करने के लिए अपेक्षित प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित की जाए, उस मास के लिए जिसमें ऐसी कटौती ऐसे मास की समाप्ति के पश्चात् दस दिन के भीतर, की गई है, की विवरणी इलेक्ट्रानिक रूप में देगा।

(4) किसी इनपुट सेवा वितरक के रूप में रजिस्ट्रीकृत प्रत्येक करयोग्य व्यक्ति प्रत्येक कलेंडर मास या उसके भाग के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए, ऐसे मास की समाप्ति के पश्चात् 13 दिन के भीतर इलेक्ट्रानिक रूप में विवरणी देगा।

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत अनिवासी कर योग्य व्यक्ति प्रत्येक कलेंडर मास या उसके किसी भाग के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए कलेंडर मास के अंत के पश्चात् 20 दिन के भीतर या धारा 27 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट रजिस्ट्रीकरण की अवधि के अंतिम दिन के पश्चात् सात दिन के भीतर, जो भी पूर्वतर हो, इलेक्ट्रानिक रूप में विवरणी देगा।

(6) आयुक्त, कारणों को लिखित में अभिलिखित करते हुए, अधिसूचना द्वारा इस धारा के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग के लिए जो उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, विवरणियां देने के लिए समय-सीमा विस्तारित कर सकेगा :

परंतु केंद्रीय कर आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा का कोई विस्तार आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।

(7) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (5) के अधीन कोई विवरणी देने की अपेक्षा की गई है, ऐसी विवरणी के अनुसार देय कर अंतिम तारीख, जिसको उससे ऐसी विवरणी देने की अपेक्षा की जाती है से अपश्चात् सरकार को संदत्त करेगा।

(8) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन कोई विवरणी देने की अपेक्षा की जाती है। प्रत्येक कर अवधि के लिए विवरणी देगा, चाहे माल या सेवा या दोनों की कोई पूर्ति ऐसी कर अवधि के दौरान की गई या नहीं।

(9) धारा 37 और धारा 38 के उपबंधों के अध्वधीन यदि किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) या उपधारा (5) के अधीन विवरणी देने के पश्चात् कर प्राधिकारियों द्वारा संवीक्षा, संपरीक्षा, निरीक्षण या प्रवर्तन क्रियाकलाप के परिणामस्वरूप से अन्यथा, उसमें किसी लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का पता चलता है तो वह इस अधिनियम के अधीन ब्याज के संदाय के अध्वधीन, उस मास या तिमाही, जिसके दौरान ऐसा लोप या अशुद्ध विशिष्टियां ध्यान में आई हैं दी जाने वाली विवरणी में ऐसे लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का सुधार करेगा :

परंतु वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् सितंबर मास के लिए या वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् दूसरी तिमाही के लिए या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने की वास्तविक तारीख जो भी पूर्वतर हो, के लिए विवरणी देने की नियत तारीख के पश्चात् किसी लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का ऐसा सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

(10) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को किसी कर अवधि के लिए कोई विवरणी देने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा, यदि उसके द्वारा किसी पूर्ववर्ती कर अवधि के लिए विवरणी नहीं दी गई है।

40. प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने उस तारीख, जिसको वह रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी बना, से उस तारीख तक जिसको रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया गया, के मध्य अवधि में जावक पूर्तियां की हैं रजिस्ट्रीकरण प्रदान करने के पश्चात् उसके द्वारा दी गई प्रथम विवरणी में उसकी घोषणा करेगा।

प्रथम विवरणी।

41. (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी शर्तों और निबंधनों जो विहित किए जाएं, के अध्वधीन यथा स्वनिर्धारित, पात्र इनपुट कर, का अपनी विवरणी में जमा लेने का हकदार होगा और ऐसी रकम अनंतिम आधार पर उसकी इलेक्ट्रानिक जमा बही में जमा की जाएगी।

इनपुट कर प्रत्यय का दावा और उसकी अनंतिम स्वीकृति।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट जमा का उपयोग केवल उक्त उपधारा में निर्दिष्ट विवरणी के

अनुसार स्व निर्धारित आउटपुट कर के संदाय के लिए किया जाएगा।

42. (1) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "प्राप्तिकर्ता" कहा गया है) द्वारा किसी कर अवधि के लिए ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, दिए गए प्रत्येक आवक पूर्ति के ब्यौरे -

इनपुट कर प्रत्यय का मिलान, उलटाव और वापस लेना।

(क) तत्स्थानी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में "पूर्तिकार" कहा गया है) द्वारा उसी कर अवधि या किसी पूर्ववर्ती कर अवधि के लिए उसकी विधिमान्य विवरणी में दी गई जावक पूर्ति के तत्स्थानी ब्यौरे के साथ ;

(ख) उसके द्वारा आयातित माल के संबंध में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन संदत्त समन्वित माल और सेवा कर के साथ ; और

1975 का 51

(ग) इनपुट कर प्रत्यय के दावों के अनुलिपिकरण के लिए,

मिलान किया जाएगा।

1975 का 51

(2) उस आवक पूर्ति, जो तत्स्थानी जावक पूर्ति के ब्यौरों के साथ या उसके द्वारा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन आयातित माल के संबंध में संदत्त समन्वित माल और सेवा कर के साथ मिलान होता है, के संबंध में बीजकों या नामे पत्रों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का दावा अंतिम रूप से स्वीकृत किया जाएगा और ऐसी स्वीकृति प्राप्तिकर्ता को ऐसी रीति में जो विहित की जाए, संसूचित की जाएगी।

(3) जहां आवकपूर्ति के संबंध में किसी प्राप्तिकर्ता द्वारा दावाकृत इनपुट कर प्रत्यय उसी पूर्ति के लिए पूर्तिकार द्वारा घोषित कर से अधिक है या पूर्तिकार द्वारा अपनी विधिमान्य विवरणियों में जावक पूर्ति घोषित नहीं की गई है, वहां अंतर दोनों ऐसे व्यक्तियों को ऐसी रीति में जो विहित की जाए संसूचित किया जाएगा।

(4) इनपुट कर जमा के दावों की अनुलिपि प्राप्तिकर्ता को ऐसी रीति में जो विहित की जाए, संसूचित की जाएगी।

(5) कोई रकम, जिसके संबंध में उपधारा (3) के अधीन किसी विसंगति की संसूचना दी गई है और जिसको उस मास की विधिमान्य विवरणी में पूर्तिकार द्वारा ठीक नहीं किया गया है जिसमें विसंगति संसूचित की गई है, को प्राप्तिकर्ता के उस मास के, जिसमें विसंगति की संसूचना दी गई है, के उत्तरवर्ती मास की विवरणी आउटपुट कर में ऐसी रीति में जोड़ा जाएगा, जो विहित की जाए।

(6) इनपुट कर प्रत्यय के रूप में दावा की गई रकम, जो दावों की आवृत्ति के कारण आधिक्य पाई जाती है, को प्राप्तिकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास, जिसमें आवृत्ति संसूचित की जाती है, की विवरणी में जोड़ा जाएगा।

(7) प्राप्तिकर्ता अपने आउटपुट कर दायित्व से उपधारा (5) के अधीन जोड़ी गई रकम को घटाने का पात्र होगा, यदि पूर्तिकार धारा 39 की उपधारा (9) में विनिर्दिष्ट समय-सीमा के भीतर अपनी विधिमान्य विवरणी में बीजक या नामे नोट के ब्यौरों को घोषित करता है।

(8) कोई प्राप्तिकर्ता, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, प्रत्यय लेने की तारीख से उक्त उपधाराओं के अधीन तत्स्थानी वर्धन किए जाने तक इस प्रकार जोड़ी गई रकम पर धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

(9) जहां उपधारा (7) के अधीन आउटपुट कर दायित्व पर किसी कटौती को स्वीकार किया गया है तो उपधारा (8) के अधीन संदत्त ब्याज का प्राप्तिकर्ता को उसकी इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में तत्स्थानी शीर्ष में रकम का ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रतिदाय किया जाएगा :

परंतु किसी भी दशा में प्रत्यय किए गए ब्याज की रकम पूर्तिकार द्वारा संदत्त ब्याज की रकम से अधिक नहीं होगी।

(10) उपधारा (7) के उपबंधों के उल्लंघन में आउटपुट कर दायित्व से घटाई गई रकम को प्राप्तिकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास की उसकी विवरणी में जोड़ा जाएगा, जिसमें ऐसा उल्लंघन होता है और प्राप्तिकर्ता इस प्रकार जोड़ी गई रकम पर धारा 50 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट

दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

आउटपुट कर
दायित्व में
मिलान, उलटाव
और कटौतियों
का प्रतिदाय।

43. (1) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "पूर्तिकार" कहा गया है) द्वारा किसी करावधि के लिए बाहर के लिए आपूर्ति के लिए प्रस्तुत प्रत्येक प्रत्यय टिप्पण के ब्यौरे का ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, निम्नलिखित के लिए मिलान किया जाएगा—

(क) तत्स्थानी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "प्राप्तिकर्ता" कहा गया है) द्वारा इनपुट कर प्रत्यय में तत्स्थानी कटौती दावे के लिए उसी करावधि या अन्य पश्चात्कर्ती करावधि के लिए उसकी विधिमान्य विवरणी में ; और

(ख) आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए दावों की आवृत्ति के लिए।

(2) पूर्तिकार द्वारा आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए दावा, जो प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय में तत्स्थानी दावे में कमी से मिलान करता है, को अंतिमतः स्वीकार किया जाएगा तथा उसकी संसूचना ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, पूर्तिकार को दी जाएगी।

(3) जहां बाहर के लिए पूर्तियों के संबंध में आउटपुट कर दायित्व में कमी इनपुट कर दावे में तत्स्थानी कमी से अधिक हो जाती है या तत्स्थानी प्रत्यय टिप्पण की प्राप्तिकर्ता द्वारा उसकी विधिमान्य विवरणियों में घोषणा नहीं की गई है तो इस विसंगति की संसूचना दोनों ऐसे व्यक्तियों को ऐसी रीति में दी जाएगी, जो विहित की जाए।

(4) आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए दावों की आवृत्ति की संसूचना पूर्तिकार को ऐसी रीति में दी जाएगी, जो विहित की जाए।

(5) वह रकम, जिसके संबंध में उपधारा (3) के अधीन कोई विसंगति संसूचित की गई है और जिसको प्राप्तिकर्ता द्वारा उस मास की विवरणी, जिसमें ऐसी विसंगति संसूचित की गई है, की विधिमान्य विवरणी में ठीक नहीं किया गया है, को पूर्तिकार के आउटपुट कर दायित्व में उस मास के पश्चात्कर्ती मास में, जिसमें विसंगति संसूचित की गई है, की विवरणी में उस रीति में जोड़ दिया जाएगा, जो विहित की जाए।

(6) आउटपुट कर दायित्व में किसी कटौती के संबंध में रकम, जो दावों की आवृत्ति के लेखे पाई जाती है, को पूर्तिकार के आउटपुट कर दायित्व में उस मास की विवरणी में जोड़ दिया जाएगा, जिसमें ऐसी आवृत्ति संसूचित की जाती है।

(7) पूर्तिकार अपने आउटपुट कर दायित्व से उपधारा (5) के अधीन जोड़ी गई रकम को घटाने का पात्र होगा यदि प्राप्तिकर्ता अपने प्रत्यय टिप्पण के ब्यौरों को अपनी विधिमान्य विवरणी में धारा 39 की उपधारा (9) के अधीन विनिर्दिष्ट समय के भीतर घोषित कर देता है।

(8) कोई पूर्तिकार, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, इस प्रकार जोड़ी गई रकम के संबंध में आउटपुट कर दायित्व में कटौती के ऐसे दावे की तारीख से उक्त उपधाराओं के अधीन तत्स्थानी जोड़े जाने तक धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

(9) जहां उपधारा (7) के अधीन आउटपुट कर दायित्व में किसी कटौती को स्वीकार किया जाता है वहां उपधारा (8) के अधीन संदत्त ब्याज का पूर्तिकार को उसकी इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में तत्स्थानी शीर्ष में ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, रकम का प्रत्यय करके प्रतिदाय किया जाएगा :

परंतु किसी भी दशा में प्रत्यय किए जाने वाले ब्याज की रकम प्राप्तिकर्ता द्वारा संदत्त ब्याज की रकम से अधिक नहीं होगी।

(10) उपधारा (7) के उपबंधों के उल्लंघन में आउटपुट कर दायित्व से घटाई गई रकम को पूर्तिकार की उस मास की विवरणी के आउटपुट कर दायित्व में जोड़ दिया जाएगा जिसमें ऐसा उल्लंघन होता है और ऐसा पूर्तिकार इस प्रकार जोड़ी गई रकम में धारा 50 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

वार्षिक
विवरणी।

44. (1) इनपुट सेवा वितरक, धारा 51 या धारा 52 के अधीन कर संदाय करने वाले व्यक्ति, नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति से भिन्न प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक वित्त वर्ष के लिए इलैक्ट्रानिकी रूप से ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसे वित्त वर्ष के पश्चात् 31 दिसंबर को या उससे पूर्व एक वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करेगा।

(2) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे धारा 35 की उपधारा (5) के उपबंधों के अनुसार उसके लेखाओं की संपरीक्षा करवाने की अपेक्षा है, वार्षिक लेखाओं की संपरीक्षित प्रति और एक समाधान विवरण के साथ वित्तीय वर्ष के लिए प्रस्तुत वार्षिक विवरणी में घोषित पूर्तियों के मूल्य को संपरीक्षित वार्षिक वित्तीय विवरण के साथ मिलाते हुए और ऐसी अन्य विशिष्टियों, जो विहित की जाए, के साथ इलैक्ट्रॉनिकी रूप में उपधारा (1) के अधीन एक वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करेगा।

अंतिम विवरणी।

45. प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन विवरणी प्रस्तुत करना अपेक्षित है और जिसके रजिस्ट्रीकरण को रद्द कर दिया गया है, रद्द करने की तारीख या रद्द करने के आदेश की तारीख, जो भी पश्चात्पूर्ति हो, से तीन मास के भीतर ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित किया जाए, एक अंतिम विवरणी प्रस्तुत करेगा।

विवरणी
व्यतिक्रमियों को
सूचना।

46. जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 39 या धारा 44 या धारा 45 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने में असफल रहता है तब वहां पन्द्रह दिन के भीतर ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित किया जाए, विवरणी प्रस्तुत करने की अपेक्षा करते हुए एक सूचना जारी की जाएगी।

विलंब फीस का
उदग्रहण।

47. (1) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 37 या धारा 38 के अधीन अपेक्षित बहिर्गामी या अंतर्गामी पूर्तियों या धारा 39 या धारा 45 के अधीन के व्यौरे सम्यक् तारीख तक प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो वह पांच हजार रुपए की अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए, प्रत्येक ऐसे दिन के लिए जिसके दौरान असफलता जारी रहती है, सौ रुपए विलंब फीस का संदाय करेगा।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो सम्यक् तारीख तक धारा 44 के अधीन अपेक्षित विवरणी प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में उसके कारबार के एक चौथाई प्रतिशत पर संगणित अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए प्रत्येक दिन के लिए जिसके दौरान ऐसी असफलता जारी रहती है, सौ रुपए की विलंब फीस का संदाय करने का दायी होगा।

माल और सेवा
कर व्यवसायी।

48. (1) माल और सेवा कर व्यवसायी के अनुमोदन की रीति, उनकी पात्रता शर्तें, कर्तव्य और बाध्यताएं, हटाने की रीति तथा अन्य शर्तें, जो उनके कार्य करने के लिए सुसंगत हैं, वे होंगी, जो विहित की जाएं।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति किसी अनुमोदित माल और सेवा कर व्यवसायी को धारा 37 के अधीन बहिर्गामी पूर्तियों के व्यौरे धारा 38 के अधीन अंतर्गामी पूर्तियों के व्यौरे और धारा 39 या धारा 44 के अधीन विवरणी को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रस्तुत करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी माल और सेवा कर व्यवसायी द्वारा प्रस्तुत किसी विवरणी या फाइल किए गए अन्य व्यौरों के सही होने का उत्तरदायित्व उस रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति पर होगा जिसके निमित्त ऐसी विवरणी और व्यौरे प्रस्तुत किए गए हैं।

अध्याय 10

कर संदाय

49. (1) किसी व्यक्ति द्वारा इंटरनेट बैंकिंग या क्रेडिट या डेबिट कार्ड या राष्ट्रीय इलैक्ट्रॉनिकी निधि अंतरण या वास्तविक समय समग्र निपटान या किसी ऐसे अन्य ढंग द्वारा और ऐसी शर्तों तथा ऐसे निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, कर, व्याज, शास्ति, फीस या किसी अन्य रकम के लिए किया गया प्रत्येक जमा का ऐसे व्यक्ति की इलैक्ट्रॉनिकी रोकड़ बही जिसे ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, में प्रत्यय किया जाएगा।

कर, व्याज,
शास्ति और अन्य
रकमों का संदाय।

(2) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की विवरणी में यथा स्वयं निर्धारित इनपुट कर प्रत्यय का उसकी इलैक्ट्रॉनिकी प्रत्यय बही, जिसे ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, में धारा 41 के अनुसरण में प्रत्यय किया जाएगा।

(3) इलैक्ट्रॉनिकी रोकड़ बही में उपलब्ध रकम का उपयोग इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन संदेय कर, व्याज, शास्ति, फीस या किसी अन्य रकम के लिए ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, किया जा सकेगा।

(4) इलैक्ट्रॉनिकी प्रत्यय बही में उपलब्ध रकम का उपयोग इस अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन आउटपुट कर दायित्व का संदाय करने के लिए ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, किया जा सकेगा।

(5) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की इलैक्ट्रॉनिकी प्रत्यय बही में निम्नलिखित के लेखे उपलब्ध

इनपुट कर प्रत्यय की रकम—

(क) एकीकृत कर का पहले उपयोग एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, केंद्रीय कर और राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का उस क्रम में संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

(ख) केंद्रीय कर का पहले उपयोग केंद्रीय कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यदि कोई हो, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

(ग) राज्य कर का पहले उपयोग, राज्य कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यदि कोई हो, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

(घ) संघ राज्यक्षेत्र कर का पहले उपयोग संघ राज्यक्षेत्र कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

(ङ) केंद्रीय कर का उपयोग राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का संदाय करने के लिए नहीं किया जाएगा ; और

(च) राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का उपयोग केंद्रीय कर का संदाय करने के लिए नहीं किया जाएगा ।

(6) इस अधिनियम या तद्विना बनाए गए नियमों के अधीन संदेय कर, व्याज, शास्ति, फीस या संदेय किसी अन्य रकम का संदाय करने के पश्चात् इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही या इलैक्ट्रानिकी प्रत्यय बही में शेष का धारा 54 के उपबंधों के अनुसार प्रतिदाय किया जा सकेगा ।

(7) इस अधिनियम के अधीन कराधेय व्यक्ति के सभी दायित्वों को इलैक्ट्रानिकी उत्तरदायित्व रजिस्टर में अभिलिखित किया जाएगा और उनका ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, अनुरक्षण किया जाएगा ।

(8) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति इस अधिनियम या तद्विना बनाए गए नियमों के अधीन अपने कर और अन्य शोध्यों का निम्नलिखित क्रम में निर्वहन करेगा, अर्थात् :--

(क) स्वयं निर्धारित कर और अन्य पूर्व कर कालावधियों से संबंधित विवरणियों के शोध्य ;

(ख) स्वयं निर्धारित कर और अन्य चालू कर कालावधियों से संबंधित विवरणियों के शोध्य ;

(ग) इस अधिनियम या तद्विना बनाए गए नियमों के अधीन संदेय कोई अन्य रकम, जिसके अंतर्गत धारा 73 या धारा 74 के अधीन अवधारित मांग भी है ।

(9) प्रत्येक व्यक्ति, जिसने इस अधिनियम के अधीन मालों या सेवाओं या दोनों पर कर संदत्त किया है, जब तक कि उसके द्वारा प्रतिकूल न साबित किया जाए, से यह समझा जाएगा कि उसने ऐसे कर की पूर्ण रकम को ऐसे मालों या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता को पारित कर दिया है ।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए,--

(क) प्राधिकृत बैंक में सरकार के खाते में जमा की जाने की तारीख को इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में जमा करने की तारीख समझा जाएगा ;

(ख) पद,--

(i) “कर शोध्य” से इस अधिनियम के अधीन संदेय कर अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत व्याज, फीस और शास्ति सम्मिलित नहीं है ; और

(ii) “अन्य शोध्य” से इस अधिनियम या तद्विना बनाए गए नियमों के अधीन संदेय व्याज, शास्ति, फीस या कोई अन्य रकम अभिप्रेत है ।

50. (1) प्रत्येक व्यक्ति, जो इस अधिनियम या तद्विना बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसरण में कर का संदाय करने का दायी है, किंतु सरकार को विहित अवधि के भीतर कर या उसके किसी भाग का संदाय करने में असफल रहता है, उस अवधि के लिए जिसके दौरान कर या उसका कोई भाग असंदत्त रहता है, स्वयं ऐसी दर पर व्याज का, जो अठारह प्रतिशत से अधिक नहीं होगा, जैसा सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए, संदाय करेगा ।

विलंबित कर
संदाय पर व्याज ।

(2) उपधारा (1) के अधीन ब्याज की संगणना उस दिन, जिसको ऐसा कर संदाय किए जाने के लिए शोध था, के पश्चात् त्वर्ती दिन से यथाविहित ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, की जाएगी।

(3) कोई कराधेय व्यक्ति, जो धारा 42 की उपधारा (10) के अधीन इनपुट कर प्रत्यय का असम्यक् या आधिक्य का दावा करता है या धारा 43 की उपधारा (10) के अधीन आउटपुट कर दायित्व में असम्यक् या आधिक्य कटौती का दावा करता है, तो वह, यथास्थिति, ऐसे असम्यक् या आधिक्य दावे या ऐसी असम्यक् या आधिक्य कटौती पर केंद्रीय सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर यथा-अधिसूचित चौबीस प्रतिशत से अनधिक दर पर ब्याज का संदाय करेगा।

51. (1) इस अधिनियम में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी सरकार,--

(क) केंद्रीय सरकार या राज्य सरकार के किसी विभाग या स्थापन को ; या

(ख) स्थानीय प्राधिकारी को ; या

(ग) सरकारी अभिकरणों को ; या

(घ) ऐसे व्यक्तियों या व्यक्तियों के ऐसे प्रवर्ग को, जो सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए,

स्रोत पर कर
कटौती।

जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "कटौतीकर्ता" कहा गया है, को पूर्तिकार (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "जिससे कटौती की गई है" कहा गया है) को कराधेय वस्तुओं या सेवाओं या दोनों के पूर्तिकार को किए गए संदाय या किए गए प्रत्यय से वहां, जहां ऐसा पूर्ति का कुल मूल्य किसी संविदा के अधीन दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक है, के एक प्रतिशत की दर से कर कटौती करने का आदेश दे सकेगी :

परंतु कोई कटौती तब नहीं की जाएगी यदि आपूर्ति का स्थान और किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में पूर्तिकार का स्थान, जो कि यथास्थिति, प्राप्तिकर्ता के रजिस्ट्रीकरण राज्य या संघ राज्यक्षेत्र से भिन्न है।

स्पष्टीकरण—पूर्वोक्त विनिर्दिष्ट कर की कटौती के प्रयोजन के लिए आपूर्ति के मूल्य को बीजक में उपदर्शित केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर को अपवर्जित करते हुए रकम के रूप में लिया जाएगा।

(2) इस धारा के अधीन कर के रूप में कटौती की गई रकम का कटौतीकर्ता द्वारा उस मास के अंत से दस दिन के भीतर, जिसमें ऐसी कटौती की गई है, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, सरकार को संदाय किया जाएगा।

(3) कटौती करने वाला, जिससे कटौती की जा रही है, को संविदा मूल्य, कटौती की दर, कटौती की गई रकम, सरकार को संदत्त रकम और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, वर्णित करते हुए एक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा।

(4) यदि कोई कटौतीकर्ता, जिसकी कटौती की जा रही है, को स्रोत पर कर की कटौती करने के पश्चात् सरकार के लिए इस प्रकार कटौती की गई रकम का प्रत्यय करने के पांच दिन के भीतर प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो कटौतीकर्ता विलंब फीस के माध्यम से ऐसी पांच दिन की कालावधि के अवसान के पश्चात् प्रत्येक दिन के लिए जब तक कि ऐसी असफलता को ठीक नहीं कर लिया जाता है, पांच हजार रुपये की अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए सौ रुपये की राशि का संदाय करेगा।

(5) जिसकी कटौती की जा रही है वह अपने इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में कटौती किए गए और धारा 39 की उपधारा (3) के अधीन ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रस्तुत कटौतीकर्ता की विवरणी में उपदर्शित कर के प्रत्यय का दावा करेगा।

(6) यदि कोई कटौतीकर्ता उपधारा (1) के अधीन कर के रूप में कटौती की गई रकम का सरकार को संदाय करने में असफल रहता है तो वह कटौती किए गए कर की रकम के अतिरिक्त धारा 50 की उपधारा (1) के उपबंधों के अनुसरण में ब्याज का संदाय करेगा।

(7) इस धारा के अधीन व्यतिक्रम की रकम का अवधारण धारा 73 या धारा 74 में विनिर्दिष्ट रीति में किया जाएगा।

(8) आधिक्य या त्रुटिपूर्ण कटौती के मद्दे उद्भूत कटौती के कटौतीकर्ता या जिसकी कटौती की जा रही है, को प्रतिदाय से धारा 54 के उपबंधों के अनुसरण में व्योहार किया जाएगा :

परंतु कटौतीकर्ता को किसी प्रतिदाय को अनुदत्त नहीं किया जाएगा यदि कटौती की गई रकम का,

जिसकी कटौती की जा रही है, की इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में प्रत्यय कर दिया गया है।

स्रोत पर कर का संग्रहण।

52. (1) इस अधिनियम में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी प्रत्येक इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "प्रचालक" कहा गया है), जो अभिकर्ता नहीं है, एक रकम का संग्रहण करेगा जिसकी संगणना परिषद् द्वारा की गई सिफारिशों पर सरकार द्वारा यथा अधिसूचित, उसके द्वारा अन्य पूर्तिकारों द्वारा की गई कराधेय पूर्तियों के कुल मूल्य का एक प्रतिशत से अनधिक दर पर की जाएगी, जहां ऐसी पूर्तियों के संबंध में प्रतिफल का संग्रहण प्रचालक द्वारा किया जाना है।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए धारा 9 की उपधारा (5) के अधीन अधिसूचित सेवाओं से भिन्न "कराधेय पूर्तियों का शुद्ध मूल्य" से मालों या सेवाओं की कराधेय पूर्तियों या दोनों, जिनकी सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा किसी मास के दौरान प्रचालक द्वारा आपूर्ति की गई है, से उक्त मास के दौरान पूर्तिकारों द्वारा वापस लौटाई गई कराधेय पूर्तियों के समग्र मूल्य को घटाकर समग्र मूल्य अभिप्रेत है।

(2) उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करने की शक्ति प्रचालक से वसूली के किसी अन्य ढंग पर बिना किसी प्रतिकूल प्रभाव के होगी।

(3) उपधारा (1) के अधीन संग्रहित रकम का संदाय प्रचालक द्वारा सरकार को उस मास, जिसमें ऐसा संग्रह किया गया था, के अंत से दस दिन के भीतर ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, किया जाएगा।

(4) प्रत्येक प्रचालक, जो उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करता है, उसके द्वारा किए जाने वाले मालो या सेवाओं या दोनों की बहिर्गामी पूर्तियों, जिनके अंतर्गत उसके द्वारा वापस की गई मालों या सेवाओं या दोनों की पूर्ति हैं तथा मास के दौरान उपधारा (1) के अधीन संग्रहित रकम के व्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, में ऐसे मास के अंत से दस दिन के भीतर इलैक्ट्रानिकी रूप में एक विवरण प्रस्तुत करेगा।

(5) प्रत्येक प्रचालक, जो उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करता है, उसके द्वारा की जाने वाली मालो या सेवाओं या दोनों की बहिर्गामी पूर्तियों, जिसके अंतर्गत उसके द्वारा वापस की गई मालों या सेवाओं या दोनों की पूर्ति हैं तथा वित्तीय वर्ष के दौरान उपधारा के अधीन संग्रहित रकम के व्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसे वित्त वर्ष के अंत के पश्चात् 31 दिसंबर से पूर्व इलैक्ट्रानिकी रूप में एक वार्षिक विवरण प्रस्तुत करेगा।

(6) यदि कोई प्रचालक उपधारा (4) के अधीन विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् उसमें कोई लोप या गलत विशिष्टियां पाता है, जो कि संवीक्षा, संपरीक्षा, निरीक्षण या कर प्राधिकारियों के प्रवर्तन कार्यकलापों से भिन्न है तो वह ऐसे उस मास, जिसके दौरान ऐसा लोप या गलत विशिष्टियां ध्यान में आई है, के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले विवरण में लोप या गलत विशिष्टियों को धारा 50 की उपधारा (1) में यथाविनिर्दिष्ट ब्याज के संदाय के अधीन रहते हुए ठीक करेगा :

परंतु ऐसे लोप या गलत विशिष्टियों के ऐसे शुद्ध करने को वित्त वर्ष की समाप्ति के पश्चात् सितंबर मास का विवरण प्रस्तुत करने के लिए सम्यक् तारीख या सुसंगत वार्षिक विवरण प्रस्तुत करने की वास्तविक तारीख, जो भी पूर्वतर हो, के पश्चात् अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

(7) पूर्तिकार, जिसने प्रचालक के माध्यम से मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति की है, संग्रहित रकम और उपधारा (4) के अधीन प्रस्तुत प्रचालक की विवरणी में उपदर्शित रकम का ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, अपनी इलैक्ट्रानिकी रोकड़ बही में प्रत्यय का दावा करेगा।

(8) उपधारा (4) के अधीन प्रत्येक प्रचालक द्वारा प्रस्तुत पूर्तिकारों के व्यौरों का इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत संबंधित पूर्तिकार द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी पूर्तिकारों के तत्स्थानी व्यौरों के साथ ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, मिलान किया जाएगा।

(9) जहां उपधारा (4) के अधीन प्रत्येक प्रचालक द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी पूर्तिकारों के व्यौरे धारा 37 के अधीन पूर्तिकारों द्वारा प्रस्तुत तत्स्थानी व्यौरों के साथ मिलान नहीं करते हैं तो इस विसंगति की दोनों व्यक्तियों को ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, संसूचना दी जाएगी।

(10) वह रकम, जिसके संबंध में उपधारा (9) के अधीन किसी विसंगति की संसूचना दी गई है

और जिसको पूर्तिकारों द्वारा विधिमान्य विवरणी में या प्रचालक द्वारा उस मास के विवरण में, जिसमें विसंगति की सूचना दी गई थी, ठीक नहीं किया जाता है तो उसे उक्त पूर्तिकार के आउटपुट कर दायित्व में वहां ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, जोड़ा जाएगा जहां प्रचालक द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी पूर्तियों का मूल्य पूर्तिकार द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी पूर्तियों के मूल्य से उस मास के पश्चात्पूर्ति मास की विवरणी में जिसमें विसंगति की सूचना दी गई थी, अधिक है।

(11) संबंधित पूर्तिकार, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (10) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, वह ऐसा पूर्ति के संबंध में व्याज सहित कर का संदाय धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर जोड़ी गई रकम पर उस तारीख से, जिसको ऐसा कर शोध्य था, उसके संदाय की तारीख तक करेगा।

(12) उपायुक्त के रैंक से अन्यून कोई प्राधिकारी इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों से पूर्व या उनके प्रक्रम में प्रचालक को निम्नलिखित से संबंधित ऐसे व्यौरे प्रस्तुत करने की सूचना की तामील कर सकेगा—

(क) किसी कालावधि के दौरान ऐसे प्रचालक के माध्यम से की गई मालों या सेवाओं या दोनों की पूर्ति ; या

(ख) ऐसे प्रचालक के माध्यम से पूर्ति कर रहे पूर्तिकारों द्वारा गोदामों या भांडागारों, चाहे किसी भी नाम से वे जात हों, धृत मालों का स्टॉक, जिसका ऐसे प्रचालक द्वारा प्रबंध किया जा रहा है और ऐसे पूर्तिकारों ने जिसकी कारबार के अतिरिक्त स्थान के रूप में घोषणा की है,

जो सूचना द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

(13) प्रत्येक प्रचालक, जिस पर उपधारा (12) के अधीन सूचना की तामील की गई है, ऐसी सूचना की तामील की तारीख से पन्द्रह कार्य दिवस के भीतर अपेक्षित जानकारी प्रस्तुत करेगा।

(14) कोई व्यक्ति, जो उपधारा (12) के अधीन तामील की गई सूचना द्वारा अपेक्षित जानकारी प्रस्तुत करने में असफल रहता है, धारा 122 के अधीन की जा सकने वाली किसी कार्रवाई पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना शास्ति का दायी होगा, जो पच्चीस हजार रुपए तक हो सकेगी।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए “संबंधित पूर्तिकार” पद से प्रचालक के माध्यम से मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति करने वाला पूर्तिकार अभिप्रेत है।

53. एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कर शोध्य के संदाय के लिए इस अधिनियम के अधीन धारा 49 की उपधारा (5) के उपबंधों के अनुसरण में लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के उपयोग पर जैसा कि धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन प्रस्तुत विधिमान्य विवरणी में उपदर्शित है, राज्य कर के रूप में संगृहीत रकम को इस प्रकार उपयोग किए गए ऐसे प्रत्यय के बराबर रकम से घटा दिया जाएगा और राज्य सरकार राज्य कर लेखे से इस प्रकार घटाई गई रकम के समतुल्य रकम को एकीकृत कर लेखे में ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, अंतरित करेगी।

इनपुट कर प्रत्यय का अंतरण।

अध्याय 11

प्रतिदाय

54. (1) कोई व्यक्ति, जो किसी कर और ऐसे कर पर संदत्त व्याज, यदि कोई हो तो, या उसके द्वारा संदत्त किसी रकम के प्रतिदाय का दावा करता है वह सुसंगत तारीख से दो वर्ष के अवसान से पूर्व ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, आवेदन कर सकेगा :

कर प्रतिदाय।

परंतु कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 49 की उपधारा (6) के उपबंधों के अनुसरण में इलैक्ट्रॉनिकी रोकड़ बही में किसी शेष के प्रतिदाय का दावा करता है वह धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी में ऐसे प्रतिदाय का ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, दावा कर सकेगा।

(2) संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई विशेषीकृत अभिकरण या कोई अन्य बहुपक्षीय वित्तीय संस्था और संगठन, जो संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां) अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित है, विदेशी राज्यों के कन्सुलेट या दूतावास या कोई अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग जो धारा 55 के अधीन अधिसूचित है, उसके द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों की अंतर्गामी पूर्तियों के लिए संदत्त कर का प्रतिदाय करने के लिए ऐसे प्रतिदाय के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित किया जाए, में उस

तिमाही, जिसमें आपूर्ति प्राप्त की गई थी, के अंतिम दिन से छह मास के अवसान से पूर्व आवेदन कर सकेगा।

(3) उपधारा (10) के उपबंधों के अधीन रहते हुए कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति कर अवधि के अंत में ऐसे इनपुट कर प्रत्यय का, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, प्रतिदाय का दावा कर सकेगा :

परंतु निम्नलिखित से भिन्न मामलों में उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय के प्रतिदाय का कोई दावा अनुज्ञात नहीं किया जाएगा—

(i) कर का संदाय किए बिना की गई शून्य दर पूर्ति ;

(ii) जहां इनपुट पर कर की दर मद्दे सिवाय मालों या सेवाओं या दोनों की पूर्तियों के जैसा कि परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाए, बहिर्गामी पूर्तियों (शून्य मूल्यांकित या पूर्णतः छूट प्राप्त से भिन्न) पर कर की दर के उच्चतर होने के लेखे संचित हुआ है :

परंतु यह और कि इनपुट कर प्रत्यय, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, के प्रतिदाय को उन मामलों में अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां भारत से निर्यात किए गए माल निर्यात शुल्क की शर्त के अधीन है :

परंतु यह भी कि इनपुट कर प्रत्यय के किसी प्रतिदाय को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा, यदि मालों या सेवाओं या दोनों का पूर्तिकार केन्द्रीय कर के संबंध में शुल्क वापसी लेता है या ऐसी पूर्तियों पर संदत्त एकीकृत कर के प्रतिदाय का दावा करता है।

(4) आवेदन के साथ निम्नलिखित संलग्न होंगे—

(क) यह साबित करने के लिए ऐसे दस्तावेजी साक्ष्य कि आवेदक को प्रतिदाय शोध्य है ; और

(ख) ऐसे दस्तावेजी या अन्य साक्ष्य (जिसके अंतर्गत धारा 33 में निर्दिष्ट दस्तावेज हैं) जैसा कि आवेदक यह साबित करने के लिए प्रस्तुत करे कि कर की रकम और व्याज, यदि कोई है, का ऐसे कर पर संदाय किया गया है या ऐसी किसी रकम का संदाय किया गया है जिसके संबंध में ऐसे प्रतिदाय का दावा किया गया है, उस रकम को उससे एकत्रित किया गया था या उसके द्वारा संदत्त किया गया था तथा ऐसे कर और व्याज को चुकाने को किसी अन्य व्यक्ति को पारित नहीं किया गया है :

परंतु जहां प्रतिदाय का दावा की गई रकम दो लाख रुपए से कम है, तो आवेदक के लिए कोई दस्तावेज और अन्य साक्ष्य प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं होगा किंतु वह उसके पास उपलब्ध दस्तावेज या अन्य साक्ष्यों के आधार पर यह प्रमाणित करते हुए एक घोषणा फाइल कर सकेगा कि ऐसे कर और व्याज का भार किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं डाला गया है।

(5) यदि किसी ऐसे आवेदन की प्राप्ति पर समुचित अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि दावा किए गए प्रतिदाय की संपूर्ण रकम या उसके किसी भाग का प्रतिदाय किया जा सकता है तो वह तदनुसार आदेश करेगा और इस प्रकार अवधारित रकम का धारा 57 में निर्दिष्ट निधि में प्रत्यय करेगा।

(6) उपधारा (5) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी समुचित अधिकारी इस निमित्त परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा अधिसूचित किए जाने वाले रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे प्रवर्ग से भिन्न रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों के लेखे शून्य अंकित मालों या सेवाओं या दोनों के प्रतिदाय के दावे के किसी मामले में अनंतिम आधार पर दावा की गई रकम, जिसके अंतर्गत अंतिमतः स्वीकृत इनपुट कर प्रत्यय की रकम नहीं है, के नब्बे प्रतिशत का अनंतिम आधार पर प्रतिदाय ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों, परिसीमाओं और सुरक्षापायों के अधीन रहते हुए, जैसा की विहित किया जाए, कर सकेगा तथा तत्पश्चात् उपधारा (5) के अधीन आवेदक द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के सम्यक् सत्यापन के पश्चात् प्रतिदाय के निपटान के लिए अंतिम आदेश करेगा।

(7) समुचित अधिकारी उपधारा (5) के अधीन सभी परिप्रेक्ष्यों में संपूर्ण आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के भीतर आदेश जारी करेगा।

(8) उपधारा (5) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी प्रतिदेय रकम का निधि में प्रत्यय किए जाने के स्थान पर आवेदक को संदाय किया जाएगा यदि ऐसी रकम निम्नलिखित से संबंधित है—

(क) शून्य अंकित मालों या सेवाओं या दोनों या इनपुट या इनपुट सेवाओं जिनका उपयोग ऐसी शून्य अंकित पूर्तियों के लिए किया गया है, पर कर का प्रतिदाय ;

(ख) उपधारा (3) के अधीन प्रत्यय किया गया इनपुट कर, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, का प्रतिदाय ;

(ग) आपूर्ति पर संदत्त कर का प्रतिदाय, जिसको या तो पूर्णतः या भागतः उपलब्ध नहीं कराया गया है और जिसके लिए बीजक जारी नहीं किया गया है या जहाँ कोई प्रतिदाय वाउचर जारी किया गया है ;

(घ) धारा 77 के अनुसरण में कर का प्रतिदाय ;

(ङ) कर और ब्याज, यदि कोई हो, या आवेदक द्वारा संदत्त कोई रकम, यदि उसने ऐसे कर और ब्याज को किसी अन्य व्यक्ति को पारित नहीं किया हो ; या

(च) आवेदकों के ऐसे अन्य वर्ग, जैसा कि सरकार परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, द्वारा चुकाया जाने वाला कर या ब्याज ।

(9) अपील अधिकरण या किसी न्यायालय के निर्णय, डिक्री, आदेश या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल किसी बात के होते हुए भी सिवाय उपधारा (8) के उपबंधों के अनुसरण में कोई प्रतिदाय नहीं किया जाएगा ।

(10) जहाँ किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (3) के अधीन कोई प्रतिदाय देय है, जिसने कोई विवरणी प्रस्तुत करने में व्यतिक्रम किया है या जिससे कोई कर, ब्याज या शास्ति का संदाय किए जाने की अपेक्षा है, जिस पर किसी न्यायालय, अधिकरण या अपील प्राधिकारी ने विनिर्दिष्ट तारीख तक कोई रोक नहीं लगाई है, समुचित अधिकारी—

(क) उक्त व्यक्ति द्वारा विवरणी प्रस्तुत करने या यथास्थिति, कर, ब्याज या शास्ति का संदाय किए जाने तक शोध्य प्रतिदाय के संदाय को विधारित कर सकेगा ;

(ख) शोध्य प्रतिदाय में से किसी कर, ब्याज, शास्ति, फीस या किसी रकम की, जिसका संदाय करने के लिए कराधेय व्यक्ति दायी है किंतु जो इस अधिनियम या विद्यमान विधि के अधीन असंदत रहती है, कटौती कर सकेगा ।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए “विनिर्दिष्ट तारीख” से इस अधिनियम के अधीन अपील फाइल करने की अंतिम तारीख अभिप्रेत है ।

(11) जहाँ किसी प्रतिदाय को देने वाला आदेश किसी अपील या और कार्यवाहियों की विषय-वस्तु है या जहाँ इस अधिनियम के अधीन अन्य कार्यवाहियां लंबित हैं और आयुक्त का यह मत है कि ऐसा प्रतिदाय अनुदत्त करने से उक्त अपील या अन्य कार्यवाही में अपकरण या किए गए कपट के कारण राजस्व के प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने की संभावना है तो वह कराधेय व्यक्ति को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात् प्रतिदाय को उस समय तक, जैसा वह अवधारित करे, विधारित कर सकेगा ।

(12) जहाँ उपधारा (11) के अधीन किसी प्रतिदाय को विधारित किया गया है तो धारा 56 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कराधेय व्यक्ति परिषद् की सिफारिशों पर यथा अधिसूचित छह प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर ब्याज का हकदार होगा यदि अपील या और कार्यवाहियों के परिणामस्वरूप वह प्रतिदाय का हकदार हो जाता है ।

(13) इस धारा में अंतर्विष्ट तत्प्रतिकूल किसी बात के होते हुए भी नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति या धारा 27 की उपधारा (2) के अधीन अनिवासी कराधेय व्यक्ति द्वारा जमा की गई अग्रिम कर की रकम का तब तक प्रतिदाय नहीं किया जाएगा जब तक कि ऐसे व्यक्ति ने उस समस्त कालावधि के लिए, जिसके लिए उसे रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र अनुदत्त किया गया है, के प्रवृत्त रहने की अवधि के लिए धारा 39 के अधीन अपेक्षित सभी विवरणियां प्रस्तुत नहीं करनी है ।

(14) इस धारा में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन किसी प्रतिदाय का आवेदक को संदाय नहीं किया जाएगा यदि रकम एक हजार रुपए से कम है ।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए,—

(1) “प्रतिदाय” में शून्य दर मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति या ऐसे शून्य दर पूर्तियों को करने के लिए उपयोग किए गए इनपुटों या इनपुट सेवाओं के लिए कर का प्रतिदाय या माने गए निर्यात के रूप में मालों की आपूर्ति पर कर प्रतिदाय या उपधारा (3) के अधीन यथाउपबंधित उपयोग न किया

गया इनपुट कर प्रत्यय का प्रतिदाय सम्मिलित है।

(2) "सुसंगत तारीख" से निम्नलिखित अभिप्रेत है—

(क) भारत से निर्यात किए गए मालों की दशा में, यथास्थिति, जहां ऐसे मालों के लिए स्वयं या ऐसे मालों में उपयोग किए गए इनपुट या इनपुट सेवाओं के संबंध में संदत्त कर का प्रतिदाय उपलब्ध है,—

(i) यदि मालों का निर्यात समुद्र या वायु मार्ग द्वारा किया जाता है तो वह तारीख जिसको पोत या वह वायुयान, जिसमें ऐसे मालों की लदाई की जाती है, भारत छोड़ता है ; या

(ii) यदि मालों का निर्यात भूमि मार्ग से किया जाता है तो वह तारीख जिसको ऐसे माल सीमा से गुजरते हैं ; या

(iii) यदि मालों का निर्यात डाक द्वारा किया जाता है तो संबंधित डाकघर द्वारा भारत से बाहर स्थान को मालों के पारेषण की तारीख ;

(ख) माने गए निर्यात के संबंध में मालों की आपूर्ति की दशा में जहां संदत्त कर का प्रतिदाय मालों के संबंध में उपलब्ध है, वह तारीख जिसको ऐसे समझे गए निर्यातों के संबंध में विवरणी प्रस्तुत की गई है;

(ग) भारत से बाहर सेवाओं के निर्यात की दशा में जहां संदत्त कर का प्रतिदाय, यथास्थिति, सेवाओं के लिए स्वयं या ऐसी सेवाओं में उपयोग किए गए इनपुट या इनपुट सेवाओं के संबंध में उपलब्ध है तो निम्नलिखित की तारीख—

(i) संपरिवर्तनीय विदेशी मुद्रा में संदाय की रसीद, जहां सेवाओं की आपूर्ति को ऐसे संदाय की प्राप्ति से पूर्व पूरा कर लिया गया है ; या

(ii) बीजक जारी करना, जहां सेवाओं के लिए संदाय को बीजक जारी करने की तारीख से पूर्व अग्रिम में प्राप्त कर लिया गया था ;

(घ) उस दशा में जहां कर किसी अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या किसी न्यायालय के निर्णय, डिक्री, आदेश या निदेश के परिणामस्वरूप कर प्रतिदेय हो जाता है तो ऐसे निर्णय, डिक्री, आदेश या निदेश की तारीख ;

(ङ) उपधारा (3) के अधीन उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय की दशा में उस वित्त वर्ष का अंत, जिसमें ऐसे प्रतिदाय का दावा उद्भूत होता है ;

(च) उस दशा में, जहां कर का अंतिम रूप से इस अधिनियम या तद्विनिर्णय बनाए गए नियमों के अधीन संदाय किया जाता है तो कर के अंतिम निर्धारण के पश्चात् समायोजन की तारीख ;

(छ) पूर्तिकार से भिन्न किसी व्यक्ति की दशा में ऐसे व्यक्ति द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति की तारीख ; और

(ज) किसी और दशा में कर के संदाय की तारीख ।

55. सरकार परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई विशेषीकृत अभिकरण या कोई अन्य बहुपक्षीय वित्तीय संस्था और संगठन, जो संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियाँ) अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित है, विदेशी राज्यों के कन्सुलेट या दूतावास या कोई अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग, जो इस निमित्त विनिर्दिष्ट किए जाएं, जो कि ऐसे निबंधनों और शर्तों, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए उनके द्वारा प्राप्त मालों या सेवाओं या दोनों की अधिसूचित आपूर्ति पर संदत्त कर के प्रतिदाय का दावा करने का हकदार होंगे।

कतिपय मामलों में प्रतिदाय।

1947 का 46

56. यदि किसी आवेदक को धारा 54 की उपधारा (5) के अधीन किसी कर के प्रतिदाय का आदेश किया गया है और उस धारा की उपधारा (1) के अधीन आवेदन की प्राप्ति की तारीख के साठ दिन के भीतर उसका प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर जारी अधिसूचना में यथाविनिर्दिष्ट छह प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर उक्त धारा के अधीन आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के अवसान के पश्चात् की तारीख से ऐसे कर का प्रतिदाय करने की तारीख तक ब्याज संदेय होगा :

विलंबित प्रतिदाय पर ब्याज।

परंतु जहां प्रतिदाय के लिए कोई दावा किसी न्यायनिर्णायक प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय द्वारा पारित किसी आदेश, जो अंतिम आदेश है, से उद्भूत होता है और उसका ऐसे आदेश के परिणामस्वरूप पारित आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के भीतर प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाने वाली नौ प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के अवसान के पश्चात् की तारीख से ऐसा

प्रतिदाय करने की तारीख तक ब्याज संदेय होगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए जहाँ किसी अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या किसी न्यायालय द्वारा धारा 54 की उपधारा (5) के अधीन समुचित अधिकारी के किसी आदेश के विरुद्ध प्रतिदाय का आदेश किया जाता है तो अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या न्यायालय द्वारा पारित आदेश को उक्त उपधारा (5) के अधीन पारित आदेश माना जाएगा।

उपभोक्ता
कल्याण निधि।

57. सरकार उपभोक्ता कल्याण निधि नामक एक निधि का गठन करेगी और उस निधि में निम्नलिखित का प्रत्यय किया जाएगा—

- (क) धारा 54 की उपधारा (5) में निर्दिष्ट रकम ;
- (ख) निधि में प्रत्यय की गई रकम के विनिधान से कोई आय ; और
- (ग) उसके द्वारा प्राप्त ऐसी अन्य धनराशियां।

निधि का
उपयोग।

58. (1) निधि में प्रत्यय की गई सभी राशियों का सरकार द्वारा उपयोग उपभोक्ताओं के कल्याण के लिए ऐसी रीति में किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(2) सरकार या उसके द्वारा विनिर्दिष्ट प्राधिकारी निधि के संबंध में उचित और पृथक् लेखे तथा पृथक् अभिलेख रखेगा तथा लेखाओं का एक वार्षिक विवरण भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के परामर्श से यथाविहित प्ररूप में तैयार करेगा।

अध्याय 12

निर्धारण

स्वतः निर्धारण।

59. प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन संदेय करों का स्वतः निर्धारण करेगा और धारा 39 के अधीन यथाविनिर्दिष्ट प्रत्येक करावधि के लिए विवरणी प्रस्तुत करेगा।

अन्ततिम
निर्धारण।

60. (1) उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, जहाँ कराधेय व्यक्ति मालों या सेवाओं या दोनों के मूल्य का अवधारण करने में या उसको लागू कर की दर का अवधारण करने में असमर्थ है तो वह समुचित अधिकारी को अन्ततिम आधार पर लिखित में कर के संदाय के कारणों को देते हुए अनुरोध करेगा और समुचित अधिकारी ऐसा अनुरोध प्राप्त होने की तारीख से नब्बे दिन से अपश्चात् अवधि के भीतर अन्ततिम आधार पर ऐसी दर पर या ऐसे मूल्य पर, जो उसके द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए, कर के संदाय को अनुज्ञात करेगा।

(2) अन्ततिम आधार पर कर के संदाय को अनुज्ञात किया जा सकेगा यदि कराधेय व्यक्ति ऐसे प्ररूप में, जो विहित की जाए, और ऐसा प्रतिभू या ऐसी प्रतिभूति, जो समुचित अधिकारी उचित समझे, जो कराधेय व्यक्ति को अन्ततिम रूप से निर्धारित कर और अन्ततिम रूप से निर्धारित कर की रकम के बीच के अंतर का संदाय करने के लिए बाध्य करती हो, निष्पादित करता है।

(3) समुचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन जारी आदेश की संसूचना की तारीख से छह मास से अनधिक अवधि के भीतर निर्धारण को अन्ततिम रूप देने के लिए यथा अपेक्षित ऐसी सूचना को गणना में लेने के पश्चात् अन्ततिम निर्धारण आदेश पारित करेगा :

परंतु इस उपधारा में विनिर्दिष्ट कालावधि को पर्याप्त कारण उपदर्शित करने पर और कारणों को लेखबद्ध करते हुए संयुक्त आयुक्त या अपर आयुक्त द्वारा छह मास से अनधिक की और अवधि के लिए तथा आयुक्त द्वारा चार वर्ष से अनधिक और अवधि के लिए विस्तारित किया जा सकेगा।

(4) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति मालों या सेवाओं की आपूर्ति या दोनों पर अन्ततिम निर्धारण के अधीन संदेय कर, किंतु जिसका संदाय नियत तारीख तक धारा 39 की उपधारा (7) या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन नहीं किया गया है, पर धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन निर्दिष्ट दर पर मालों या सेवाओं या दोनों की उक्त आपूर्ति के संबंध में कर का संदाय करने की नियत तारीख के पश्चात् वास्तविक संदाय की तारीख तक ब्याज का संदाय करने का दायी होगा चाहे ऐसी रकम का संदाय अन्ततिम निर्धारण के लिए आदेश जारी करने से पूर्व या पश्चात् किया गया हो।

(5) जहाँ रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 54 की उपधारा (8) के उपबंधों के अधीन रहते हुए उपधारा (3) के अधीन अन्ततिम निर्धारण के आदेश के परिणामस्वरूप प्रतिदाय का हकदार हो जाता है तो ऐसे संदाय पर धारा 56 में यथा उपबंधित प्रतिदाय का संदाय किया जाएगा।

61. (1) समुचित अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत विवरणी और संबंधित विशिष्टियों की विवरणी के सही होने का सत्यापन करने के लिए संवीक्षा करेगा और ध्यान में आई विसंगतियों, यदि कोई हों, की ऐसी रीति, जो विहित की जाए, में सूचना देगा तथा उस पर उसका स्पष्टीकरण प्राप्त

विवरणियों की
संवीक्षा।

करेगा।

(2) स्पष्टीकरण के स्वीकार्य पाए जाने की दशा में रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को तदनुसार सूचित किया जाएगा और इस संबंध में कोई और कार्रवाई नहीं की जाएगी।

(3) समुचित अधिकारी द्वारा सूचित किए जाने के तीस दिन की कालावधि के भीतर या ऐसी और कालावधि, जो उसके द्वारा अनुज्ञात की जाए, में समाधानप्रद स्पष्टीकरण प्रस्तुत न किए जाने की दशा में या जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विसंगतियों को स्वीकार करने के पश्चात् उस मास की विवरणी में, जिसमें विसंगति स्वीकार की गई थी, सुधारकारी उपाय करने में असफल रहता है तो समुचित अधिकारी समुचित कार्रवाई आरंभ कर सकेगा, जिसके अंतर्गत धारा 65 या धारा 66 या धारा 67 के अधीन कार्रवाइयां हैं या धारा 73 या धारा 74 के अधीन कर और अन्य शोध्यों का अवधारण करने के लिए अग्रसर होगा।

विवरणियों को
फाइल न करने
वालों का
निर्धारण।

62. (1) धारा 73 या धारा 74 में तत्प्रतिकूल किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी जहां कोई व्यक्ति धारा 39 या धारा 45 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने में धारा 46 के अधीन सूचना की तामील के पश्चात् भी असफल रहता है तो समुचित अधिकारी उक्त व्यक्ति का अपनी सर्वोत्तम जानकारी और उपलब्ध तात्विक सामग्री या वह सामग्री, जिसको उसने एकत्रित किया है, को गणना में लेने के पश्चात् कर के लिए निर्धारण करने के लिए अग्रसर होगा तथा वित्त वर्ष, जिसके लिए असंदत्त कर संबंधित है, की वार्षिक विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए धारा 44 के अधीन विनिर्दिष्ट तारीख से पांच वर्ष की अवधि के भीतर निर्धारण का आदेश जारी करेगा।

(2) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उपधारा (1) के अधीन निर्धारण आदेश की तामील से तीस दिन के भीतर विधिमान्य विवरणी प्रस्तुत कर देता है तो उक्त निर्धारण आदेश का प्रतिसंहरण किया गया समझा जाएगा किंतु धारा 47 के अधीन विलंब फीस के संदाय या धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन ब्याज का संदाय करने का दायित्व जारी रहेगा।

अरजिस्ट्रीकृत
व्यक्तियों का
निर्धारण।

63. धारा 73 या धारा 74 में तत्प्रतिकूल किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी जहां कोई कराधेय व्यक्ति रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी होते हुए भी उसे अभिप्राप्त करने में असफल रहता है या जिसका रजिस्ट्रीकरण धारा 29 की उपधारा (2) के अधीन रद्द कर दिया गया है किंतु जो कर का संदाय करने का दायी था तो समुचित अधिकारी उक्त व्यक्ति का अपने सर्वोत्तम विवेक और उपलब्ध तात्विक सामग्री या वह सामग्री, जिसको उसने एकत्रित किया है, को गणना में लेने के पश्चात् कर के लिए निर्धारण करने के लिए अग्रसर होगा तथा वित्त वर्ष, जिसके लिए असंदत्त कर संबंधित है, की वार्षिक विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए धारा 44 के अधीन विनिर्दिष्ट तारीख से पांच वर्ष की अवधि के भीतर निर्धारण का आदेश जारी करेगा :

परंतु व्यक्ति को सुने जाने का अवसर प्रदान किए बिना ऐसा कोई निर्धारण आदेश नहीं किया जाएगा।

कतिपय विशेष
मामलों में त्वरित
निर्धारण।

64. (1) समुचित अधिकारी उसकी जानकारी में किसी व्यक्ति के कर दायित्व को उपदर्शित करने वाले साक्ष्य के आने पर अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त की पूर्व अनुज्ञा से राजस्व के हित का संरक्षण करने के लिए ऐसे व्यक्ति के कर दायित्व का निर्धारण करने के लिए अग्रसर होगा और निर्धारण आदेश जारी करेगा यदि उसके पास यह विश्वास करने के पर्याप्त आधार हों कि ऐसा करने में कोई विलंब करने से राजस्व के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है :

परंतु कराधेय व्यक्ति, जिससे दायित्व संबंधित है, का निर्धारण नहीं किया जा सकता है और ऐसा दायित्व मालों की आपूर्ति के संबंध में है तो ऐसे मालों के प्रभारी व्यक्ति को निर्धारण के दायी कराधेय व्यक्ति समझा जाएगा और वह कर का और इस धारा के अधीन शोध्य अन्य रकम का संदाय करने का दायी होगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन पारित आदेश की प्राप्ति की तारीख से तीस दिन के भीतर कराधेय व्यक्ति द्वारा किए गए आवेदन पर या स्वयं अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त यह विचार करता है कि ऐसा आदेश त्रुटिपूर्ण है तो वह ऐसे आदेश का प्रतिसंहरण कर लेगा और धारा 73 और धारा 74 में अधिकथित प्रक्रिया का अनुसरण करेगा।

अध्याय 13

लेखापरीक्षा

65. (1) आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी साधारण या विशेष आदेश द्वारा किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की ऐसी कालावधि, ऐसी आवृत्ति और ऐसी रीति, जो विहित की जाए, में लेखापरीक्षा कर सकेगा।

कर प्राधिकारियों द्वारा लेखापरीक्षा।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के कारबार के स्थान या अपने कार्यालय में लेखापरीक्षा का संचालन कर सकेंगे।

(3) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को लेखापरीक्षा के संचालन से कम से कम पन्द्रह कार्य दिवस पूर्व ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, सूचना के माध्यम से लेखापरीक्षा के संचालन की सूचना दी जाएगी।

(4) उपधारा (1) के अधीन लेखापरीक्षा को लेखापरीक्षा के आरंभ होने की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर पूरा किया जाएगा :

परंतु जहां आयुक्त का यह समाधान हो जाता है कि ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में लेखापरीक्षा तीन मास के भीतर पूरी नहीं की जा सकती है तो वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए छह मास से अनधिक और कालावधि के लिए कालावधि का विस्तार कर सकेगा।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए “लेखापरीक्षा का आरंभ” से वह तारीख अभिप्रेत है, जिसको कर प्राधिकारियों द्वारा मांगे गए अभिलेख और दस्तावेज रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा या लेखापरीक्षा के वास्तविक आरंभ पर, कारबार के स्थान, इनमें से जो भी पश्चात्पूर्ति हों, में उपलब्ध करा दिए जाते हैं।

(5) लेखापरीक्षा के प्रक्रम में प्राधिकृत अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से निम्नलिखित की अपेक्षा कर सकेगा,—

(i) लेखा बहियों या अन्य दस्तावेजों की उसकी अपेक्षानुसार सत्यापन के लिए उसे आवश्यक सुविधा प्रदान करना ;

(ii) उसे ऐसी जानकारी, जो वह अपेक्षा करे, प्रस्तुत करने की तथा लेखापरीक्षा के समय पर पूर्ण करने के लिए सहायता प्रदान करने की।

(6) लेखापरीक्षा के पूर्ण होने पर समुचित अधिकारी तीस दिन के भीतर उस रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को, जिसके अभिलेखों की लेखापरीक्षा की गई है, निष्कर्षों, उसके अधिकारों और बाध्यताओं तथा ऐसे निष्कर्षों के कारणों से सूचित करेगा।

(7) जहां उपधारा (1) के अधीन संचालित लेखापरीक्षा का परिणाम कर का संदाय न करना का पता लगने या कम कर संदत्त किए जाने या त्रुटिवश प्रतिदाय किए जाने या इनपुट कर प्रत्यय को गलत तरीके से लेने या उपयोग करने के रूप में होता है तो समुचित अधिकारी धारा 73 या धारा 74 के अधीन कार्रवाई आरंभ कर सकेगा।

66. (1) यदि संवीक्षा, जांच, अन्वेषण या उसके समक्ष किन्हीं अन्य कार्यवाहियों के प्रक्रम में सहायक आयुक्त की पंक्ति से अन्यून अधिकारी का मामले की प्रकृति और जटिलता तथा राजस्व के हित में यह मत है कि मूल्य की सही रूप से घोषणा नहीं की गई है या लिया गया प्रत्यय सामान्य सीमाओं के भीतर नहीं है तो वह आयुक्त के पूर्व अनुमोदन से ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को लिखित संसूचना द्वारा उसके अभिलेखों, जिसके अंतर्गत लेखा बहियां भी हैं, की किसी चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार, जैसा कि आयुक्त द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाए, से जांच करवाने और लेखापरीक्षा करवाने का निदेश दे सकेगा।

विशेष लेखापरीक्षा।

(2) इस प्रकार नामनिर्दिष्ट चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार नब्बे दिन की कालावधि के भीतर ऐसी लेखापरीक्षा की उसके द्वारा सम्यक्तः हस्ताक्षरित और प्रमाणित रिपोर्ट उक्त सहायक आयुक्त को उसमें अन्य विशिष्टियों का वर्णन करते हुए, जैसा कि विनिर्दिष्ट किया जाए, प्रस्तुत करेगा :

परंतु सहायक आयुक्त उसे किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार द्वारा किए गए आवेदन पर या किसी तात्त्विक और पर्याप्त कारण से उक्त कालावधि का नब्बे दिन की और कालावधि से विस्तार कर सकेगा।

(3) उपधारा (1) के उपबंध इस बात के होते हुए भी प्रभावी होंगे कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के लेखाओं की लेखापरीक्षा इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के उपबंधों के अधीन की गई

है।

(4) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन विशेष लेखापरीक्षा के आधार पर एकत्रित किसी सामग्री, जिसका इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन उसके विरुद्ध किन्हीं कार्यवाहियों में उपयोग किया जाना प्रस्तावित है, के संबंध में सुने जाने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

(5) उपधारा (1) के अधीन अभिलेखों की जांच और लेखापरीक्षा व्यय, जिसके अंतर्गत चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार का पारिश्रमिक भी है, का आयुक्त द्वारा अवधारण और संदाय किया जाएगा तथा ऐसा अवधारण अंतिम होगा।

(6) जहां उपधारा (1) के अधीन संचालित लेखापरीक्षा का परिणाम कर का संदाय न करना का पता लगने या कम कर संदत्त किए जाने या त्रुटिवश प्रतिदाय किए जाने या इनपुट कर प्रत्यय को गलत तरीके से लेने या उपयोग करने के रूप में होता है तो समुचित अधिकारी धारा 73 या धारा 74 के अधीन कार्रवाई आरंभ कर सकेगा।

अध्याय 14

निरीक्षण, तलाशी, अभिग्रहण और गिरफ्तारी

निरीक्षण,
तलाशी और
अभिग्रहण की
शक्ति।

67. (1) जहां संयुक्त आयुक्त की पंक्ति से अन्यून समुचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि—

(क) जहां किसी कराधेय व्यक्ति ने मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति या अपने पास रखे गए मालों के स्टॉक के संबंध में किसी संव्यवहार को छिपाया है या इस अधिनियम के अधीन उसकी हकदारी से अधिक इनपुट कर प्रत्यय का दावा किया है या वह इस अधिनियम के अधीन कर अपवंचन के लिए इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के किसी उल्लंघन में लिप्त रहा है; या

(ख) मालों के परिवहन के कारबार में लगा हुआ कोई व्यक्ति या किसी भांडागार या गोदाम या किसी अन्य स्थान का स्वामी या प्रचालक ऐसे मालों को रख रहा है जिन पर कर का संदाय नहीं किया गया है या उसने अपने लेखाओं या मालों को ऐसी रीति में रखा है जिससे इस अधिनियम के अधीन संदेय कर का अपवंचन होने की संभावना है,

तो वह लिखित में राज्य कर के किसी अधिकारी को कराधेय व्यक्ति के कारबार या मालों के परिवहन के कारबार में लगे हुए व्यक्तियों या भांडागार या गोदाम या किसी अन्य स्थान के प्रचालक या स्वामी के किसी स्थान का निरीक्षण करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

(2) जहां संयुक्त आयुक्त की पंक्ति से अन्यून समुचित अधिकारी के पास या तो उपधारा (1) के अधीन किए गए निरीक्षण के अनुसरण में या अन्यथा यह विश्वास करने का कारण है कि अधिहरण के लिए दायी कोई माल या कोई दस्तावेज या बहियां या चीजें, जो उसके मत में इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लिए उपयोगी या सुसंगत होंगी, जिन्हें किसी स्थान पर छिपाकर रखा गया है तो वह राज्य कर के किसी अन्य अधिकारी को तलाशी और अभिग्रहण करने के लिए लिखित में प्राधिकृत कर सकेगा या ऐसे मालों, दस्तावेजों या बहियों या चीजों की तलाशी ले सकेगा और अभिग्रहण कर सकेगा :

परंतु जहां ऐसे मालों को अभिग्रहण करना व्यवहार्य नहीं है तो समुचित अधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी मालों के स्वामी या अभिरक्षक पर एक आदेश की तामील कर सकेगा कि वह ऐसे अधिकारी की पूर्व अनुज्ञा के सिवाय मालों को नहीं हटाएगा, अलग नहीं करेगा या अन्यथा उनसे व्योहार नहीं करेगा :

परंतु इस प्रकार अभिग्रहण किए गए दस्तावेज या बहियां या चीजें ऐसे अधिकारी द्वारा केवल तब तक प्रतिधारित की जाएंगी जब तक वह उनकी परीक्षा के लिए और इस अधिनियम के अधीन किसी जांच या कार्यवाहियों के लिए आवश्यक हैं।

(3) उपधारा (2) में निर्दिष्ट दस्तावेज या बहियां या चीजें या कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत अन्य दस्तावेज बहियां या चीजें जिन पर इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन सूचना जारी करने के लिए अवलंब नहीं लिया गया है, को ऐसे व्यक्ति को उक्त सूचना जारी करने की तारीख से तीस दिन से अनधिक अवधि के भीतर वापस कर दिया जाएगा।

(4) उपधारा (2) के अधीन प्राधिकृत अधिकारी को किसी परिसर के दरवाजे को सील करने की या तोड़ने की या किसी अलमारी, इलैक्ट्रॉनिकी युक्ति, बाक्स, संदूक, जिसमें व्यक्ति के कोई माल, लेख,

रजिस्टर या दस्तावेजों को छिपाए जाने का संदेह है, जहां ऐसे परिसर, अलमारी, इलैक्ट्रॉनिकी युक्ति, बाक्स, संदूक तक पहुंच को रोका जाता है, वहां उन्हें तोड़कर खोल सकेगा।

(5) वह व्यक्ति, जिसकी अभिरक्षा से उपधारा (2) के अधीन किन्हीं दस्तावेजों को अभिग्रहण किया गया है, उनकी प्रतियां बनाने या उनसे प्राधिकृत अधिकारी की उपस्थिति में ऐसे स्थान और ऐसे समय जो ऐसा अधिकारी इस निमित्त उपदर्शित करे, सिवाय जहां ऐसी प्रतियां बनाना या ऐसा उद्धरण लेना समुचित अधिकारी के मत में जांच को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा, लेने का हकदार होगा।

(6) उपधारा (2) के अधीन इस प्रकार अभिग्रहण किया गया माल अनंतिम आधार पर बंधपत्र निष्पादित करने पर और क्रमशः ऐसी रीति और ऐसे मात्रा की प्रतिभूति प्रस्तुत करने पर, जो विहित की जाए, या यथास्थिति, लागू कर, व्याज और संदेय शास्ति के संदाय पर निर्मुक्त किया जा सकेगा।

(7) जहां उपधारा (2) के अधीन किन्हीं मालों का अभिग्रहण किया गया है और मालों के अभिग्रहण से छह मास की अवधि के भीतर उनके संबंध में कोई सूचना जारी नहीं की गई है तो मालों को उस व्यक्ति को लौटा दिया जाएगा जिसके कब्जे से उनका अभिग्रहण किया गया था :

परंतु पर्याप्त कारण उपदर्शित करने पर छह मास की अवधि का समुचित अधिकारी द्वारा छह मास से अतिरिक्त और अवधि के लिए विस्तार किया जा सकेगा।

(8) सरकार मालों के नष्ट होने या परिसंकटमय प्रकृति समय के साथ मालों के मूल्य में अवक्षयण, मालों के लिए भंडारण स्थान की कमी या किन्हीं अन्य सुसंगत विचारणों को ध्यान में रखते हुए अधिसूचना द्वारा मालों या मालों के ऐसे वर्ग को, जिसका समुचित अधिकारी द्वारा ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, उपधारा (2) के अधीन अभिग्रहण के यथासंभव शीघ्र पश्चात् निपटान किया जाएगा, घोषित कर सकेगी।

(9) जहां कोई माल, जो उपधारा (8) के अधीन विनिर्दिष्ट माल है, जिनका समुचित अधिकारी द्वारा या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी उपधारा (2) के अधीन अभिग्रहण किया गया है, वह ऐसे मालों की ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, एक सूची तैयार करेगा।

(10) तलाशी और अभिग्रहण के संबंध में दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के उपबंध, जहां तक हो सके इस धारा के अधीन तलाशी और अभिग्रहण को इस उपांतरण के अधीन रहते हुए लागू होंगे कि उक्त संहिता की धारा 165 उपधारा (5) में "मजिस्ट्रेट" शब्द, जहां-जहां वह आता है, के स्थान पर "आयुक्त" शब्द रख दिया गया था।

1974 का 2

(11) जहां समुचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने के कारण है कि व्यक्ति ने कर का अपवंचन किया है या वह किसी कर के संदाय के अपवंचन का प्रयास कर रहा है, वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए उसके समक्ष प्रस्तुत ऐसे व्यक्ति के लेखाओं, रजिस्ट्रों या दस्तावेजों का अभिग्रहण कर सकेगा और उन्हें इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन अभियोजन के लिए कार्यवाहियों के संबंध में जब तक आवश्यक हो, प्रतिधारित करेगा।

(12) आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकारी अधिकारी किसी कराधेय व्यक्ति के कारबार परिसर से उसके द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों के क्रय को ऐसे व्यक्ति द्वारा कर बीजकों के जारी करने या आपूर्ति बिलों की जांच करने के लिए क्रय करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा और ऐसे अधिकारी द्वारा इस प्रकार क्रय किए गए मालों के वापस करने पर कारबार परिसर का प्रभारी कोई व्यक्ति मालों के लिए इस प्रकार संदत्त रकम का पूर्व में जारी किए गए आपूर्ति के लिए कर बीजक या बिल को रद्द करने के पश्चात् प्रतिदाय करेगा।

68. (1) सरकार ऐसी रकम से अधिक मूल्य के, जो उसके द्वारा प्रवहन करने के लिए विनिर्दिष्ट किया जाए, मालों के परेषण का प्रवहन को ले जाए जाने वाले प्रवहन के प्रभारी व्यक्ति से ऐसे दस्तावेजों और ऐसी युक्तियों की, जो विहित की जाए, अपेक्षा कर सकेगी।

संचलन में मालों का निरीक्षण।

(2) उपधारा (1) के अधीन वहन किए जाने वाले अपेक्षित दस्तावेजों के व्यौरों का ऐसी रीति में विधिमान्यकरण किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(3) जहां उपधारा (1) में निर्दिष्ट किसी प्रवहन को किसी स्थान पर समुचित अधिकारी द्वारा रोक लिया जाता है तो वह उक्त प्रवहन के प्रभारी व्यक्ति से उक्त उपधारा के अधीन विहित दस्तावेजों और युक्तियों की सत्यापन करने के लिए प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा और उक्त व्यक्ति दस्तावेजों और युक्तियों को प्रस्तुत करने का तथा मालों के निरीक्षण को भी अनुज्ञात करने का दायी होगा।

69. (1) जहाँ आयुक्त के पास यह विश्वास करने के कारण हों कि किसी व्यक्ति ने धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) या खंड (घ) में विनिर्दिष्ट कोई अपराध कारित किया है जो उक्त धारा की उपधारा (1) के खंड (i) या खंड (ii) या उपधारा 2 के अधीन दंडनीय है तो वह आदेश द्वारा राज्य कर के किसी अधिकारी को ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए प्राधिकृत करेगा।

गिरफ्तार करने की शक्ति।

(2) जहाँ किसी व्यक्ति को धारा 132 की उपधारा (5) के अधीन विनिर्दिष्ट किसी अपराध के लिए उपधारा (1) के अधीन गिरफ्तार किया जाता है तो व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए प्राधिकृत अधिकारी व्यक्ति को गिरफ्तारी के आधार से सूचित करेगा और उसे चौबीस घंटों के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

1974 का 2

(3) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के उपबंधों के अधीन रहते हुए,--

(क) जहाँ किसी व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन धारा 132 की उपधारा (4) के अधीन विनिर्दिष्ट किसी अपराध के लिए गिरफ्तार किया जाता है तो उसे जमानत मंजूर की जाएगी या जमानत के व्यतिक्रम की दशा में मजिस्ट्रेट की अभिरक्षा के लिए अग्रेषित किया जाएगा ;

(ख) असंज्ञेय और जमानतीय अपराध की दशा में उपायुक्त या सहायक आयुक्त के पास किसी गिरफ्तार व्यक्ति को जमानत पर या अन्यथा निर्मुक्त करने के लिए वहीं शक्तियाँ होंगी और उन्हीं उपबंधों के अधीन रहते हुए, जो किसी पुलिस स्टेशन के प्रभारी व्यक्ति के पास होती हैं।

70. (1) इस अधिनियम के अधीन समुचित अधिकारी को किसी व्यक्ति को समन करने की, जिसकी उपस्थिति को किसी जांच में वह साक्ष्य देने के लिए या किसी दस्तावेज या किसी वस्तु को प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक समझता है, उसी रीति में शक्ति होगी जैसा कि सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन किसी सिविल न्यायालय को दी गई है।

व्यक्तियों को साक्ष्य देने और दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए समन करने की शक्ति।

1908 का 5

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट प्रत्येक ऐसी जांच को भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थान्तर्गत "न्यायिक कार्यवाहियाँ" समझा जाएगा।

1860 का 45

कारबार परिसरों तक पहुँच।

71. (1) संयुक्त आयुक्त से अन्यून समुचित अधिकारी द्वारा इस अधिनियम के अधीन प्राधिकृत किसी अधिकारी की किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के कारबार के किसी स्थान तक लेखावहियाँ, दस्तावेजों, कंप्यूटरों, कंप्यूटर प्रोग्रामों, कंप्यूटर साफ्टवेयर चाहे किसी कंप्यूटर में प्रतिष्ठापित हो या अन्यथा और ऐसी अन्य चीजों तक और जो ऐसे स्थान पर उपलब्ध हों, पर किसी लेखापरीक्षा, संवीक्षा, सत्यापन और जांच, जो राजस्व के हितों के सुरक्षोपाय के लिए आवश्यक हो, पहुँच होगी।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट स्थान का प्रत्येक प्रभारी व्यक्ति मांग किए जाने पर उपधारा (1) के अधीन प्राधिकृत अधिकारी को या समुचित अधिकारी द्वारा तैनात लेखापरीक्षा दल या धारा 66 के अधीन नामनिर्दिष्ट लागत लेखाकार या चार्टर्ड लेखाकार को निम्नलिखित—

(i) ऐसे अभिलेख, जिन्हें रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा तैयार किया गया या रखा गया है और समुचित अधिकारी को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, घोषित किया गया है ;

(ii) शेष परीक्षण पत्र या उसका समतुल्य ;

(iii) सम्यक्तः लेखा परीक्षित वित्तीय लेखाओं की वार्षिक विवरणी, जहाँ अपेक्षित हो ;

(iv) कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 148 के अधीन लागत लेखापरीक्षा रिपोर्ट, यदि कोई हो ;

2013 का 18

(v) आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 44कख के अधीन आय-कर लेखापरीक्षा रिपोर्ट, यदि कोई हो ; और

1961 का 43

(vi) कोई अन्य सुसंगत अभिलेख,

अधिकारी या लेखापरीक्षा दल या चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखापाल द्वारा संवीक्षा करने के लिए उस दिन से, जिसको ऐसी मांग की गई थी, से पन्द्रह कार्य दिवस से अनधिक अवधि के भीतर या ऐसी और अवधि, जो उक्त अधिकारी या लेखापरीक्षा दल या चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार द्वारा अनुज्ञात की जाए, उपलब्ध कराएगा।

समुचित अधिकारियों की सहायता के लिए अधिकारी।

72. (1) पुलिस, रेल, सीमाशुल्क और भू-राजस्व के संग्रहण में लगे हुए अधिकारी, जिसके अंतर्गत ग्रामीण अधिकारी और केंद्रीय कर के अधिकारी और संघ राज्यक्षेत्र कर के अधिकारी हैं, इस अधिनियम के कार्यान्वयन में समुचित अधिकारियों की सहायता करेंगे।

(2) सरकार अधिसूचना द्वारा इस अधिनियम के कार्यान्वयन के लिए समुचित अधिकारियों की सहायता करने के लिए, जब ऐसा करने के लिए आयुक्त द्वारा कहा जाए, अधिकारियों के किसी वर्ग को सशक्त कर सकेगी और उनसे अपेक्षा कर सकेगी।

अध्याय 15

मांग और वसूली

73. (1) जहां समुचित अधिकारी को यह प्रतीत होता है कि किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या कपट से भिन्न किसी अन्य कारण से उसका उपयोग किया गया है या कर अपवंचन के लिए जानबूझकर कोई मिथ्या कथन किया गया है या तथ्यों को छिपाया गया है तो वह कर, जिसका इस प्रकार संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या कपट से भिन्न किसी अन्य कारण से उसका उपयोग किया गया है या कर अपवंचन के लिए जानबूझकर कोई मिथ्या कथन किया गया है या तथ्यों को छिपाया गया है, के लिए प्रभार्य व्यक्ति को हेतुक उपदर्शन करने के लिए सूचना की तामील करेगा कि क्यों न वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के साथ धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज और इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन उदग्रहणीय शास्ति का संदाय करे।

(2) समुचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन सूचना आदेश जारी करने के लिए उपधारा (10) में विनिर्दिष्ट समय-सीमा से कम से कम तीन मास पूर्व जारी करेगा।

(3) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी कालावधि के लिए कोई सूचना जारी की गई है तो समुचित अधिकारी संदत्त न किए गए कर या कम संदत्त किए गए या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए या गलत तरीके से लिए गए या उपधारा (1) के अधीन आने वाली कालावधियों से भिन्न के लिए उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय के व्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए एक विवरण की तामील कर सकेगा।

(4) ऐसे व्यक्ति पर ऐसे विवरण की तामील को इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उपधारा (1) के अधीन आने वाली ऐसी कर अवधियों के लिए अवलंब लिए गए आधार वहीं हैं, जिनका पूर्व सूचना में वर्णन किया गया है, सूचना की तामील समझा जाएगा।

(5) कर से प्रभार्य व्यक्ति, यथास्थिति, उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील या उपधारा (3) के अधीन विवरण की तामील से पूर्व धारा 50 के अधीन उसके द्वारा संदेय ब्याज के साथ कर की रकम का अपने स्वयं के ऐसे कर के निर्धारण या समुचित अधिकारी द्वारा निर्धारित कर के आधार पर संदाय करेगा और समुचित अधिकारी को ऐसे संदाय की लिखित सूचना देगा।

(6) समुचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर, यथास्थिति, उपधारा (1) के अधीन सूचना या उपधारा (3) के अधीन विवरण की इस प्रकार संदत्त कर या इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय किसी शास्ति के लिए तामील नहीं करेगा।

(7) जहां समुचित अधिकारी का यह मत है कि उपधारा (5) के अधीन संदत्त रकम वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है तो वह ऐसी रकम के संबंध में, जो वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम होती है, के लिए उपधारा (1) में यथा-उपबंधित सूचना जारी करने के लिए अग्रसर होगा।

(8) जहां उपधारा (1) या उपधारा (3) के अधीन कर से प्रभार्य व्यक्ति धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज के साथ उक्त कर का हेतुक उपदर्शित करने की सूचना जारी करने के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो कोई शास्ति संदेय नहीं होगी और उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा कर लिया गया समझा जाएगा।

(9) समुचित अधिकारी कर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा किए गए अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् कर, ब्याज और शास्ति की कर के दस प्रतिशत के समतुल्य रकम या दस हजार रुपए, जो भी अधिक हो, को ऐसे व्यक्ति से शोध्य अवधारित करेगा और एक आदेश जारी करेगा।

(10) समुचित अधिकारी उपधारा (9) के अधीन आदेश को वित्त वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी

असंदत्त कर या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या कपट से भिन्न किसी अन्य कारण से उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाए गए कर का अवधारण।

पारित करने की तारीख, जिसके लिए कर संदत्त नहीं किया गया था या कम संदत्त किया गया था या इनपुट कर प्रत्यय गलत लिया गया था या गलत उपयोग किया गया था, से त्रुटिवश प्रतिदाय की तारीख से तीन वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(11) उपधारा (6) या उपधारा (8) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी उपधारा (9) के अधीन शास्ति वहां संदेय होगी जहां स्वतः निर्धारित कर या कर के रूप में एकत्रित किसी रकम को ऐसे कर के संदाय की तारीख से तीस दिन की कालावधि के भीतर संदत्त नहीं किया गया है।

असंदत्त कर या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या कपट से उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाए गए कर का अवधारण।

74. (1) जहां समुचित अधिकारी को यह प्रतीत होता है कि किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या कपट से उसका उपयोग किया गया है या कर अपवंचन के लिए जानबूझकर कोई मिथ्या कथन किया गया है या तथ्यों को छिपाया गया है तो वह कर, जिसका इस प्रकार संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या कपट से उसका उपयोग किया गया है या कर अपवंचन के लिए जानबूझकर कोई मिथ्या कथन किया गया है या तथ्यों को छिपाया गया है, के लिए प्रभार्य व्यक्ति को हेतुक उपदर्शन करने के लिए सूचना की तामील करेगा कि क्यों न वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के साथ धारा 50 के अधीन उस पर संदेय व्याज और इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन उदग्रहणीय शास्ति का संदाय करे।

(2) समुचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन सूचना आदेश जारी करने के लिए उपधारा (10) में विनिर्दिष्ट समय-सीमा से कम से कम छह मास पूर्व जारी करेगा।

(3) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी कालावधि के लिए कोई सूचना जारी की गई है तो समुचित अधिकारी संदत्त न किए गए कर या कम संदत्त किए गए या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए या गलत तरीके से लिए गए या उपधारा (1) के अधीन आने वाली कालावधियों से भिन्न के लिए उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय के व्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए एक विवरण की तामील कर सकेगा।

(4) उपधारा (3) के अधीन विवरण की तामील को धारा 73 की उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील इस शर्त के अधीन समझा जाएगा कि उक्त विवरण में अवलंब लिए गए आधार सिवाय कपट के आधार के या उपधारा (1) के अधीन आने वाली कालावधियों से भिन्न कर अपवंचन के लिए किसी जानबूझकर मिथ्या कथन या तथ्यों के छिपाने के लिए अवलंब लिए गए आधार वहीं हैं, जिनका पूर्व सूचना में वर्णन किया गया है।

(5) कर से प्रभार्य व्यक्ति उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील से पूर्व धारा 50 के अधीन संदेय व्याज के साथ कर की रकम का संदाय करेगा और कर के स्वयं निर्धारण या समुचित अधिकारी द्वारा निर्धारित कर के आधार पर ऐसे कर की रकम के पन्द्रह प्रतिशत के बराबर शास्ति का संदाय करेगा और समुचित अधिकारी को ऐसे संदाय की लिखित सूचना देगा।

(6) समुचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर उपधारा (1) के अधीन इस प्रकार किसी संदत्त कर या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन संदेय किसी शास्ति के संबंध में सूचना की तामील नहीं करेगा।

(7) जहां समुचित अधिकारी का यह मत है कि उपधारा (5) के अधीन संदत्त रकम वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है तो वह ऐसी रकम के संबंध में, जो वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम होती है, के लिए उपधारा (1) में यथा-उपबंधित सूचना जारी करने के लिए अग्रसर होगा।

(8) जहां उपधारा (1) के अधीन कर से प्रभार्य कोई व्यक्ति धारा 50 के अधीन संदेय व्याज के साथ उक्त कर का और ऐसे कर के पच्चीस प्रतिशत के बराबर शास्ति का सूचना जारी करने के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा कर लिया गया समझा जाएगा।

(9) समुचित अधिकारी कर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा किए गए अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति से शोध्य कर की रकम, व्याज और शास्ति का अवधारण करेगा और आदेश जारी करेगा।

(10) समुचित अधिकारी उपधारा (9) के अधीन उस वित्त वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने की सम्यक् तारीख से पांच वर्ष के भीतर जिसके लिए कर संदत्त नहीं किया गया था या कम संदत्त किया गया था या इनपुट कर प्रत्यय गलत लिया गया है या गलत उपयोग किया गया है, से त्रुटिवश प्रतिदाय की तारीख से पांच वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(11) जहाँ कोई व्यक्ति, जिस पर उपधारा (9) के अधीन आदेश की तामील की गई है, धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज के साथ कर और ऐसे कर के पचास प्रतिशत के समतुल्य शास्ति का आदेश की संसूचना के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो ऐसी सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा।

स्पष्टीकरण 1—इस धारा के प्रयोजनों के लिए,—

(i) “उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां” में धारा 132 के अधीन कार्यवाहियां सम्मिलित नहीं होंगी ;

(ii) जहाँ उन्हीं कार्यवाहियों के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी मुख्य व्यक्ति और कुछ अन्य व्यक्तियों को सूचना जारी की जाती है और ऐसी कार्यवाहियों को धारा 73 या धारा 74 के अधीन मुख्य व्यक्ति के विरुद्ध पूरा कर लिया गया है तो धारा 122, धारा 125, धारा 129 और धारा 130 के अधीन शास्ति का संदाय करने के लिए दायी सभी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा।

स्पष्टीकरण 2—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, “छिपाना” पद से ऐसे तथ्यों या जानकारी को घोषित नहीं करना जिससे कराधेय व्यक्ति से इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन विवरणी, विवरण, रिपोर्ट या किसी अन्य दस्तावेज में घोषित करने की अपेक्षा है या लिखित में मांगे जाने पर किसी सूचना को समुचित अधिकारी को प्रस्तुत करने में असफलता अभिप्रेत होगा।

कर अवधारण के संबंध में साधारण उपबंध।

75. (1) जहाँ किसी सूचना की तामील या आदेश के जारी करने पर किसी न्यायालय या अपील अधिकरण द्वारा रोक लगा दी जाती है तो ऐसी रोक की अवधि को, यथास्थिति, धारा 73 की उपधारा (2) या उपधारा (10) तथा धारा 74 की उपधारा (2) और उपधारा (10) में विनिर्दिष्ट अवधि की संगणना करने से अपवर्जित किया जाएगा।

(2) जहाँ कोई अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय का यह निष्कर्ष है कि धारा 74 की उपधारा (1) के अधीन इस कारण से भरणीय नहीं है कि कर अपवंचन के लिए कपट या जानबूझकर मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाना उस व्यक्ति के विरुद्ध साबित नहीं होता है जिसको सूचना जारी की गई थी, तो समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति द्वारा संदेय कर का यह मानते हुए अवधारण करेगा कि धारा 73 की उपधारा (1) के अधीन सूचना जारी की गई थी।

(3) जहाँ अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के निदेशों के अनुसरण में किसी आदेश को जारी करने की अपेक्षा है तो ऐसा आदेश उक्त निदेश की संसूचना की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर जारी किया जाएगा।

(4) सुने जाने के अवसर को वहाँ अनुदत्त किया जाएगा जहाँ कर या शास्ति से प्रभार्य व्यक्ति का लिखित अनुरोध प्राप्त होता है या जहाँ ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध प्रतिकूल विनिश्चय की प्रत्याश है।

(5) समुचित अधिकारी यदि कर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा पर्याप्त कारण उपदर्शित किया जाता है तो उक्त व्यक्ति को समय अनुदत्त करेगा और कारणों को लेखबद्ध करते हुए सुनवाई को स्थगित कर देगा:

परंतु ऐसा कोई स्थगन कार्यवाहियों के दौरान किसी व्यक्ति को तीन बार से अधिक अनुदत्त नहीं किया जाएगा।

(6) समुचित अधिकारी अपने आदेश में अपने विनिश्चय के लिए सुसंगत तथ्यों का अधिकथन करेगा।

(7) आदेश में मांग किए गए कर, ब्याज और शास्ति की रकम सूचना में विनिर्दिष्ट रकम से अधिक नहीं होगी और सूचना में विनिर्दिष्ट आधारों के किसी अन्य आधार पर किसी मांग की पुष्टि नहीं की जाएगी।

(8) जहाँ अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय समुचित अधिकारी द्वारा अवधारित कर की रकम को उपांतरित करता है तो ब्याज और शास्ति की रकम भी इस प्रकार उपांतरित कर की रकम को गणना में लेते हुए तदनुसार उपांतरित हो जाएगी।

(9) कम संदत्त किए गए या संदत्त नहीं किए गए कर पर ब्याज संदेय होगा चाहे कर दायित्व का अवधारण करने वाले आदेश में विनिर्दिष्ट किया गया हो या नहीं।

(10) न्यायनिर्णयन कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा यदि धारा 73 की उपधारा (10) में

यथाउपबंधित तीन वर्ष के भीतर या धारा 74 की उपधारा (10) में यथाउपबंधित पांच वर्ष के भीतर आदेश जारी नहीं किया जाता है।

(11) कोई विवादक, जिस पर अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय द्वारा अपना विनिश्चय लिया गया है जो किन्हीं अन्य कार्यवाहियों में राजस्व के हित के प्रतिकूल है और अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय के ऐसे विनिश्चय के विरुद्ध कोई अपील लंबित है तो अपील प्राधिकारी और अपील प्राधिकारी के विनिश्चय की तारीख के बीच की कालावधि या अपील अधिकरण और उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख और उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय के विनिश्चय की तारीख को धारा 73 की उपधारा (10) या धारा 74 की उपधारा (10) में निर्दिष्ट कालावधि की संगणना करने में वहां अपवर्जित किया जाएगा जहां कार्यवाहियां उक्त धाराओं के अधीन हेतुक उपदर्शित जारी करने के माध्यम से संस्थित की गई हैं।

(12) धारा 73 या धारा 74 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जहां धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी के अनुसार स्वतः निर्धारित कर की कोई रकम पूर्णतः या भागतः असदत्त रहती है या ऐसे कर पर संदेय व्याज की कोई रकम असदत्त रहती है तो उसकी धारा 79 के उपबंधों के अधीन वसूली की जाएगी।

(13) जहां धारा 73 या धारा 74 के अधीन कोई शास्ति अधिरोपित की जाती है तो उसे कृत्य या लोप पर किसी शास्ति को उसी व्यक्ति पर इस अधिनियम के अन्य उपबंधों के अधीन अधिरोपित नहीं किया जाएगा।

76. (1) अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के किसी आदेश या निदेश में या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति, जिसने किसी अन्य व्यक्ति से इस अधिनियम के अधीन कर के रूप में किसी रकम का संग्रह किया है और उक्त रकम का सरकार को संदाय नहीं किया है तो वह तुरंत इस बात के होते हुए कि वह प्रदाय, जिनके संबंध में ऐसी रकम का संग्रह किया गया है, कराधेय है या नहीं, उक्त रकम का सरकार को संदाय करेगा।

संगृहित किंतु सरकार को संदत्त न किया गया कर।

(2) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी रकम का सरकार को संदाय किया जाना अपेक्षित है और जिसका संदाय नहीं किया गया है तो समुचित अधिकारी ऐसी रकम का संदाय करने के लिए दायी व्यक्ति को हेतुक उपदर्शित करने की अपेक्षा करते हुए सूचना जारी करेगा कि सूचना में यथा-विनिर्दिष्ट उक्त रकम को उसके द्वारा सरकार को संदाय क्यों नहीं किया जाना चाहिए तथा सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के समतुल्य शास्ति इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन उस पर अधिरोपित क्यों नहीं की जानी चाहिए।

(3) समुचित अधिकारी उस व्यक्ति द्वारा, जिस पर उपधारा (2) के अधीन सूचना की तामील की गई है, के अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति से शोध्य रकम का अवधारण करेगा और तत्पश्चात् ऐसा व्यक्ति इस प्रकार अवधारित रकम का संदाय करेगा।

(4) उपधारा (1) में निर्दिष्ट व्यक्ति उपधारा (1) या उपधारा (3) में निर्दिष्ट रकम का संदाय करने के अतिरिक्त उस पर धारा 50 के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर उसके द्वारा संगृहित रकम की तारीख से सरकार को ऐसी रकम का संदाय करने की तारीख के लिए व्याज का संदाय करने का भी दायी होगा।

(5) वहां सुने जाने का अवसर प्रदान किया जाएगा जहां ऐसे व्यक्ति से, जिसको हेतुक उपदर्शित करने की सूचना जारी की गई है, लिखित अनुरोध प्राप्त होता है।

(6) समुचित अधिकारी सूचना जारी करने की तारीख से एक वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(7) जहां आदेश जारी करने पर न्यायालय या अपील अधिकरण के किसी आदेश द्वारा रोक लगाई जाती है तो ऐसी रोक की कालावधि को एक वर्ष की कालावधि की संगणना करने में अपवर्जित किया जाएगा।

(8) समुचित अधिकारी अपने आदेश में अपने विनिश्चय के सुसंगत कारणों को अधिकथित करेगा।

(9) उपधारा (1) या उपधारा (3) के अधीन सरकार को संदत्त रकम का उपधारा (1) में निर्दिष्ट पूर्तियों के संबंध में व्यक्ति द्वारा संदेय कर, यदि कोई हो, के विरुद्ध समायोजन किया जाएगा।

(10) जहां उपधारा (9) के अधीन समायोजन के पश्चात् कोई आधिक्य शेष बचता है तो ऐसे आधिक्य की रकम का या तो निधि में प्रत्यय किया जाएगा या उस व्यक्ति को प्रतिदाय किया जाएगा जिसने ऐसी रकम को चुकाया है।

(11) वह व्यक्ति, जिसने रकम को चुकाया है, धारा 54 के उपबंधों के अनुसार उसका प्रतिदाय करने के लिए आवेदन कर सकेगा।

गलती से संगृहीत किया गया और केंद्रीय सरकार या राज्य सरकार को संदत्त किया गया कर।

77. (1) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने उसके द्वारा अंतःराज्य आपूर्ति समझे जाने वाले किसी संव्यवहार पर केंद्रीय कर और संघ राज्यक्षेत्र कर संदत्त किया है किंतु जिसे पश्चात्कर्त्ती रूप से अंतर्राज्यीय आपूर्ति अभिनिर्धारित किया गया है, को इस प्रकार संदत्त रकम का ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, प्रतिदाय किया जाएगा।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने उसके द्वारा अंतःराज्य आपूर्ति समझे जाने वाले किसी संव्यवहार पर एकीकृत कर संदत्त किया है किन्तु जिसे पश्चात्कर्त्ती रूप से अंतर्राज्यीय आपूर्ति अभिनिर्धारित किया गया है, से, यथास्थिति, संदेय केंद्रीय कर और संघ राज्यक्षेत्र कर पर केंद्रीय कर और राज्य कर की रकम पर व्याज का संदाय करने की अपेक्षा नहीं होगी।

78. इस अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश के अनुसरण में कराधेय व्यक्ति द्वारा संदेय किसी रकम को ऐसे व्यक्ति द्वारा ऐसे आदेश की तारीख से तीन मास की कालावधि के भीतर संदत्त किया जाएगा, जिसके न हो सकने पर वसूली कार्यवाहियां आरंभ की जाएंगी :

वसूली कार्यवाहियों का आरंभ किया जाना।

परंतु जहां समुचित अधिकारी राजस्व हित में ऐसा करना समीचीन समझता है तो वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए उक्त कराधेय व्यक्ति से उसके द्वारा ऐसी तीन मास से कम विनिर्दिष्ट की जा सकने वाली कालावधि के भीतर संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।

79. (1) जहां इस अधिनियम या तद्विनिर्माण बनाए गए नियमों के किन्हीं उपबंधों के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा सरकार को संदेय किसी रकम को संदत्त नहीं किया जाता है तो समुचित अधिकारी निम्नलिखित एक या अधिक ढंगों से रकम को वसूल करने के लिए अग्रसर होगा, अर्थात् :-

कर की वसूली।

(क) समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति को देय संदेय किसी रकम से इस प्रकार संदेय रकम की कटौती करेगा या किसी अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी से रकम की कटौती करने की अपेक्षा करेगा, जो रकम समुचित अधिकारी या ऐसे अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी के नियंत्रणाधीन है ;

(ख) समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति को देय संदेय किसी रकम से इस प्रकार संदेय रकम की कटौती करेगा या ऐसे व्यक्ति से संबंध रखने वाली वस्तुओं को निरुद्ध करके और विक्रय करके, जो रकम समुचित अधिकारी या ऐसे अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी के नियंत्रणाधीन है, वसूली करेगा ;

(ग) (i) समुचित अधिकारी लिखित सूचना द्वारा किसी अन्य व्यक्ति से, जिससे धन शोध्य है या ऐसे व्यक्ति को शोध्य हो जाता है, जो ऐसे व्यक्ति के लेखे धन धारण करता है या पश्चात्कर्त्ती रूप से धन धारण करता है, सरकार को तुरंत धन शोध्य होने पर या उसके द्वारा धारण किए जाने पर सूचना में विनिर्दिष्ट समय के भीतर, जो धन के शोध्य या धारण किए जाने से पूर्व की नहीं होगी, उतने धन को, जो ऐसे व्यक्ति से शोध्य रकम को संदाय करने के लिए या संपूर्ण धन को जब वह उस रकम के समतुल्य या कम हो, संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा ;

(ii) प्रत्येक व्यक्ति, जिसे उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी की जाती है ऐसी सूचना का अनुपालन करने के लिए आवद्ध होगा और विशेषतया जहां ऐसी सूचना किसी डाकघर, बैंककारी कंपनी या किसी बीमाकर्ता को जारी की जाती है तो किसी पासबुक, जमा रसीद, पालिसी या किसी अन्य दस्तावेज को किसी प्रविष्टि, पृष्ठांकन या संदाय किए जाने से पूर्व इस बात के होते हुए भी कि तत्प्रतिकूल कोई नियम, पद्धति या अपेक्षा है, प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं होगा ;

(iii) किसी व्यक्ति को, जिसे उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी की गई है, के उसके अनुसरण में सरकार को संदाय करने में असफल रहने की दशा में वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के संबंध में व्यक्तिवर्मी समझा जाएगा और उसे इस नियम या तद्विनिर्माण बनाए गए सभी नियमों के परिणाम लागू होंगे ;

(iv) उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी करने वाला अधिकारी किसी भी समय ऐसी सूचना का संशोधन कर सकेगा या प्रतिसंहरण कर सकेगा या सूचना के अनुसरण में संदाय के लिए समय का विस्तार कर सकेगा ;

(v) उपखंड (i) के अधीन जारी सूचना की अनुपालना में कोई संदाय करने वाले किसी व्यक्ति को व्यतिक्रमी व्यक्ति के प्राधिकार के अधीन संदाय करने वाला समझा जाएगा और ऐसे संदाय का सरकार में प्रत्यय किए जाने पर ऐसे व्यतिक्रमी व्यक्ति के दायित्व का रसीद में विनिर्दिष्ट रकम के विस्तार तक अच्छा और पर्याप्त निर्वहन समझा जाएगा ;

(vi) व्यतिक्रमी व्यक्ति के किसी दायित्व का उपखंड (i) के अधीन जारी सूचना की तामील के पश्चात् निर्वहन करने वाला कोई व्यक्ति निर्वहन किए गए दायित्व के विस्तार तक या कर, ब्याज और शास्ति, इनमें से जो भी कम हो, व्यतिक्रमी व्यक्ति के दायित्व के विस्तार तक सरकार के प्रति दायी होगा;

(vii) जहां कोई व्यक्ति जिस पर उपखंड (i) के अधीन सूचना की तामील की गई है, सूचना जारी करने वाले व्यक्ति को समाधानप्रद रूप में यह साबित कर देता है कि मांग किया गया धन या उसका कोई भाग व्यतिक्रमी व्यक्ति से शोध्य नहीं था या न ही वह व्यतिक्रमी व्यक्ति के लेखे उस पर सूचना की तामील किए जाने के समय किसी धन को धारण कर रहा था, और न ही मांग किया गया धन या उसके किसी भाग के उस व्यक्ति से शोध्य होने या उसके लिए ऐसे व्यक्ति के लेखे धारण किए जाने की संभावना है, इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात की उस व्यक्ति से जिस पर सूचना की ऐसे किसी धन या उसके भाग की सरकार को संदाय करने के लिए तामील की गई है, संदाय करने की अपेक्षा होगी ;

(घ) समुचित अधिकारी इस निमित्त बनाए जाने वाले नियमों के अनुसार ऐसे व्यक्ति की या उसके नियंत्रणाधीन किसी जंगम या स्थावर संपत्ति का करस्थम् और उसे तब तक निरुद्ध कर सकेगा जब तक कि संदेय रकम को संदत्त नहीं कर दिया जाता है और उक्त संदेय रकम का कोई भाग या करस्थम् की लागत या संपत्ति को रखने की लागत ऐसे करस्थम् के पश्चात् अगले तीस दिन की कालावधि के पश्चात् असंदत्त रहती है तो वह उक्त संपत्ति का विक्रय करना कारित कर सकेगा तथा ऐसे विक्रय के आगतों संदेय रकम को चुकाया जाएगा तथा रकम, जिसके अंतर्गत विक्रय की लागत से असंदत्त लागत है और आधिक्य लागत को ऐसे व्यक्ति को दे दिया जाएगा ;

(ङ) समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति से शोध्य रकम को विनिर्दिष्ट करते हुए स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाणपत्र तैयार करेगा और इसे उस जिले के कलेक्टर या सरकार द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति को भेजेगा, जिसमें ऐसे व्यक्ति की संपत्ति है या वह निवास करता है या अपना कारबार करता है और उक्त कलेक्टर या उक्त अधिकारी ऐसे प्रमाणपत्र की प्राप्ति पर ऐसे व्यक्ति से उस प्रमाणपत्र में विनिर्दिष्ट रकम को वसूल करने के लिए अग्रसर होगा मानो कि वह भू-राजस्व का बकाया था ;

1974 का 2

(च) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी समुचित अधिकारी समुचित मजिस्ट्रेट के पास एक आवेदन फाइल कर सकेगा और ऐसा मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्ति से उसमें विनिर्दिष्ट रकम को वसूल करने के लिए ऐसे अग्रसर होगा मानो यह उसके द्वारा अधिरोपित था ;

(2) जहां इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों या तद्धीन बनाए गए विनियमों के अधीन निष्पादित कोई बंधपत्र या लिखत यह उपबंध करता है कि ऐसे लिखित के अधीन शोध्य किसी रकम को उपधारा (1) में अधिकथित रीति में वसूल किया जाएगा तो वसूली के किसी अन्य ढंग पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना रकम की उस धारा के उपबंधों के अनुसार वसूली की जाएगी ।

(3) जहां कर, ब्याज या शास्ति की कोई रकम इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा सरकार को संदेय है और जो असंदत्त रहती है तो राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर का समुचित अधिकारी उक्त कर बकाया की वसूली के प्रक्रम में उक्त व्यक्ति से रकम की ऐसी वसूली करेगा मानो वह केंद्रीय कर का बकाया थी और इस प्रकार वसूल की गई रकम का सरकार के खाते में प्रत्यय करेगा ।

(4) जहां उपधारा (3) के अधीन वसूल की गई रकम केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार को शोध्य रकम से कम है तो संबंधित सरकारों के खाते में रकम का प्रत्यय प्रत्येक ऐसी सरकार को शोध्य रकम के अनुपात में किया जाएगा ।

80. किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा फाइल किए गए आवेदन पर आयुक्त कारणों को लेखबद्ध करते हुए संदाय के लिए समय का विस्तार कर सकेगा या इस अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा किसी

कर और अन्य रकम का किस्तों

विवरणों में स्वतः निर्धारित दायित्व के अनुसार शोध रकम से भिन्न किसी रकम के संदाय को धारा 50 के अधीन व्याज के संदाय के अधीन रहते हुए और ऐसी शर्तों और परिसीमाओं, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए चौबीस से अनधिक मासिक किस्तों में संदाय करने के लिए अनुज्ञात कर सकेगा :

में संदाय ।

परंतु जहां किसी सम्यक् तारीख को किसी एक किस्त के संदाय में कोई व्यतिक्रम होता है तो ऐसी तारीख को संदेय सभी बकाया शोध हो जाएगा और तुरंत संदेय होगा तथा बिना किसी और सूचना की ऐसे व्यक्ति पर तामील किए बिना वसूली का दायी होगा ।

81. जहां कोई व्यक्ति, उससे किसी रकम के शोध हो जाने के पश्चात् उससे संबंधित या उसके कब्जे की किसी संपत्ति पर कोई प्रभार सृजित करता है या उससे विक्रय, बंधक रखने, विनिमय या किसी अन्य विधि से अंतरण चाहे, जो भी हो, द्वारा अपनी किसी संपत्ति को किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में सरकारी राजस्व पर कपट करने के आशय से विलग होता है तो ऐसा प्रभार या अंतरण उक्त व्यक्ति द्वारा संदेय किसी कर या किसी अन्य राशि के संबंध में किसी दावे के विरुद्ध शून्य होगा : परंतु यह कि ऐसा प्रभार या अंतरण शून्य नहीं होगा यदि वह पर्याप्त प्रतिफल के लिए सद्भावपूर्वक और इस अधिनियम के अधीन ऐसी कार्यवाहियों के लंबन पर बिना किसी सूचना के या ऐसे व्यक्ति द्वारा संदेय अन्य राशि या समुचित अधिकारी की पूर्व अनुज्ञा से किया जाता है ।

कतिपय मामलों में संपत्ति अंतरण का शून्य होना ।

कर का संपत्ति पर पहला प्रभार होना ।

82. तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल किसी अन्य बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी, सिवाय दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में अन्यथा उपबंधित के किसी कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कर, व्याज या शास्ति के लेखे संदेय कोई रकम, जिसके लिए वह सरकार को संदाय करने का दायी है, का ऐसे कराधेय व्यक्ति या अन्य व्यक्ति की संपत्ति पर पहला प्रभार होगा ।

2016 का 31

कतिपय मामलों में राजस्व के संरक्षण के लिए अनंतिम कुर्की ।

83. (1) जहां धारा 62 या धारा 63 या धारा 64 या धारा 67 या धारा 73 या धारा 74 के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लंबन के दौरान आयुक्त का यह मत है कि सरकारी राजस्व के हित का संरक्षण करने के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक है तो वह लिखित आदेश द्वारा अनंतिम रूप से ऐसे कराधेय व्यक्ति की संपत्ति, जिसके अंतर्गत बैंक खाता है, की ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, कुर्की कर सकेगा ।

(2) ऐसी अनंतिम कुर्की का उपधारा (1) के अधीन किए गए आदेश की तारीख से एक वर्ष की कालावधि के अवसान पर प्रभाव नहीं होगा ।

कतिपय वसूली कार्यवाहियों का जारी रहना और विधिमान्यकरण ।

84. जहां इस अधिनियम के अधीन संदेय किसी कर, शास्ति, व्याज या किसी अन्य रकम (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "सरकारी शोध" कहा गया है) के संबंध में किसी कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति को किसी सूचना की तामील की जाती है और ऐसे सरकारी शोधों के संबंध में कोई अपील या पुनरीक्षण आवेदन फाइल किया जाता है या कोई अन्य कार्यवाहियां संस्थित की जाती है तब—

(क) जहां ऐसे सरकारी शोधों को ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों में बढ़ा दिया जाता है तो आयुक्त कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति को उस रकम के संबंध में जिसके द्वारा ऐसे सरकारी शोधों को बढ़ा दिया जाता है, की वसूली के लिए दूसरी मांग सूचना जारी करेगा और ऐसे सरकारी शोधों के संबंध में कोई वसूली कार्यवाहियां, जो उस पर तामील की गई मांग की सूचना में आती हैं, ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों के निपटान से पूर्व किसी नई मांग सूचना की तामील के बिना उस प्रक्रम से जारी रहेंगी, जिस पर ऐसी कार्यवाहियां ऐसे निपटान के ठीक पूर्व थी ;

(ख) जहां सरकारी शोधों को ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों में कम कर दिया जाता है तो,—

(i) आयुक्त के लिए कराधेय व्यक्ति पर मांग की नई सूचना की तामील करना आवश्यक नहीं होगा ;

(ii) आयुक्त ऐसी कमी की उसे और समुचित प्राधिकारी को, जिसके पास वसूली कार्यवाहियां लंबित हैं, संसूचना देगा ;

(iii) ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों के निपटान से पूर्व उस पर तामील की गई मांग के आधार पर संस्थित कोई वसूली कार्यवाहियां इस प्रकार कम की गई रकम के संबंध में उसी प्रक्रम से, जिस पर जहां वह ऐसे निपटान से ठीक पूर्व थी, जारी रहेंगी ।

अध्याय 16

कतिपय मामलों में संदाय करने का दायित्व

85. (1) जहाँ कोई कराधेय व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी है, अपने कारबार का पूर्णतया या भागतः विक्रय, उपहार, पट्टा, इजाजत और अनुज्ञप्ति, भाटक या किसी अन्य रीति, चाहे जो भी हो, अंतरण करता है तो कराधेय व्यक्ति और वह व्यक्ति, जिसको इस प्रकार कारबार का अंतरण किया गया है, संयुक्त रूप से और पृथक्तः पूर्णतया या ऐसे अंतरण के परिमाण तक कराधेय व्यक्ति से ऐसे अंतरण तक शोध्य कर, ब्याज या किसी अन्य शास्ति, चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण ऐसे अंतरण से पूर्व किया गया हो किंतु जो असंदत्त रहती है या जिसका तत्पश्चात् अवधारण किया गया है, के लिए दायी होगा।

कारबार के अंतरण की दशा में दायित्व।

(2) जहाँ उपधारा (1) में निर्दिष्ट अंतरिती ऐसे कारबार को स्वयं के नाम से या किसी अन्य के नाम से चलाता है तो वह ऐसे अंतरण की तारीख से उसके द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले मालों या सेवाओं या दोनों के लिए कर का और यदि वह इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति है और विहित समय के भीतर अपने रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में संशोधन के लिए आवेदन करता है, दायी होगा।

86. जहाँ कोई अभिकर्ता अपने प्रधान व्यक्ति के निमित्त कराधेय वस्तुओं की आपूर्ति करता है या उन्हें प्राप्त करता है तो ऐसा अभिकर्ता और उसका प्रधान व्यक्ति संयुक्त रूप से और पृथक्तः इस अधिनियम के अधीन ऐसे मालों पर संदेय कर का संदाय करने के लिए दायी होंगे।

अभिकर्ता और प्रधान व्यक्ति का दायित्व।

87. (1) जब दो या अधिक कंपनियों का किसी न्यायालय या अधिकरण या अन्यथा के आदेश के अनुसरण में समामेलन या विलयन होता है और आदेश का आदेश किए जाने की तारीख से पूर्व प्रभावी होना है तथा दो या उससे अधिक ऐसी कंपनियों ने एक दूसरे को उस तारीख से प्रारंभ होने वाली अवधि से आदेश के प्रभावी होने की तारीख के बीच मालों की या सेवाओं की या दोनों की आपूर्ति की है या मालों को या सेवाओं को या दोनों को प्राप्त किया है तब ऐसा पूर्ति और प्राप्ति के संव्यवहारों को संबंधित कंपनियों के आपूर्ति या प्राप्ति कारबार में सम्मिलित किया जाएगा और वह तदनुसार कर का संदाय करने की दायी होगी।

कंपनियों के समामेलन या विलयन की दशा में दायित्व।

(2) उक्त आदेश में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए ऐसी दो या अधिक कंपनियों को उक्त आदेश की तारीख तक की अवधि के लिए सुभिन्न कंपनियां समझा जाएगा और उक्त कंपनियों के रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र को उक्त आदेश की तारीख से रद्द किया जाएगा।

88. (1) जब कोई कंपनी को किसी न्यायालय या अधिकरण के आदेशों के अधीन या अन्यथा समाप्त किया जा रहा है तो कंपनी की किन्हीं आस्तियों को प्राप्त करने के लिए प्रापक के रूप में नियुक्त व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् "परिसमापक" कहा गया है), अपनी नियुक्ति के तीस दिन के भीतर आयुक्त को अपनी नियुक्ति की संसूचना देगा।

परिसमापन के अधीन कंपनियों की दशा में दायित्व।

(2) आयुक्त ऐसी जांच करने के पश्चात् या ऐसी सूचना मंगाने के पश्चात्, जो वह उचित समझे, उस तारीख से तीन मास के भीतर, जिसको वह परिसमापक की नियुक्ति की सूचना प्राप्त करता है, परिसमापक को और वह रकम, जो उसके मत में किसी कर, ब्याज या शास्ति, जो तब या तत्पश्चात् कंपनी द्वारा संदेय है या संदेय हो जाती है, अधिसूचित करेगा।

(3) जब किसी प्राइवेट कंपनी को समाप्त किया जाता है और इस अधिनियम के अधीन कंपनी पर किसी अवधि के लिए, चाहे परिसमापन के प्रक्रम में या तत्पश्चात् अवधारित कोई कर, ब्याज या शास्ति, जिसको वसूल नहीं किया जा सकता है तो प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अवधि, जिसके लिए कर शोध्य है, के दौरान कंपनी का निदेशक था, संयुक्त रूप से और पृथक्तः ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का सिवाय जब वह आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह साबित नहीं कर देता है कि ऐसी न की गई वसूली कंपनी के कार्यों के संबंध में उसकी गंभीर उपेक्षा, दुष्करण या कर्तव्य भंग के कारण नहीं हुई है, संदाय करने के लिए दायी होगा।

प्राइवेट कंपनियों के निदेशकों का दायित्व।

89. (1) कंपनी अधिनियम, 2013 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहाँ किसी प्राइवेट कंपनी से किसी अवधि के लिए मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति के लिए कोई कर, ब्याज या शास्ति, जिसको वसूल नहीं किया जा सकता है, शोध्य है तो प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अवधि, जिसके लिए कर शोध्य है, के दौरान प्राइवेट कंपनी का निदेशक था, संयुक्त रूप से और पृथक्तः ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का सिवाय जब वह आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह साबित नहीं कर देता है कि ऐसी न की गई वसूली कंपनी के कार्यों के संबंध में उसकी गंभीर उपेक्षा, दुष्करण या कर्तव्य भंग के कारण नहीं हुई है, संदाय करने के लिए दायी होगा।

2013 का 18

(2) जहाँ प्राइवेट कंपनी को किसी पब्लिक कंपनी में संपरिवर्तित किया जाता है और किसी अवधि

के लिए, जिसके दौरान ऐसी कंपनी प्राइवेट कंपनी थी, के दौरान मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति के लिए किसी कर, ब्याज या शास्ति की ऐसे संपरिवर्तन से पूर्व वसूली नहीं की जा सकती है तो उपधारा (1) में अंतर्विष्ट कोई बात ऐसे किसी व्यक्ति को लागू नहीं होगी, जो ऐसी प्राइवेट कंपनी का ऐसी प्राइवेट कंपनी द्वारा मालों की या सेवाओं की या दोनों की आपूर्ति के संबंध में किसी कर, ब्याज या शास्ति के संबंध में निदेशक था :

परंतु इस उपधारा में अंतर्विष्ट कोई बात ऐसे निदेशक पर अधिरोपित वैयक्तिक शास्ति को लागू नहीं होगी।

फर्म के
भागीदारों का
कर का संदाय
करने के लिए
दायित्व।

90. तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल किसी संविदा के होते हुए भी, जहां कोई फर्म इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है तो फर्म और फर्म का प्रत्येक भागीदार ऐसे संदाय के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होगा :

परंतु जहां कोई भागीदार फर्म से सेवानिवृत्त हो जाता है तो वह या फर्म उक्त भागीदार की सेवानिवृत्ति की तारीख को इस निमित्त लिखित सूचना द्वारा आयुक्त को संसूचित करेगा और ऐसा भागीदार अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख को शोध कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने का चाहे उस तारीख को अवधारित की जाए या नहीं, दायी होगा :

परन्तु यह और कि यदि ऐसी कोई सूचना सेवानिवृत्ति की तारीख से एक मास के भीतर नहीं दी जाती है तो पहले परन्तु के अधीन ऐसे भागीदार का दायित्व उस तारीख तक बना रहेगा जिसको ऐसी सूचना आयुक्त द्वारा प्राप्त की जाती है।

91. जहां कोई कारबार, जिसके संबंध में इस अधिनियम के अधीन कोई कर, ब्याज या शास्ति संदेय है, को किसी अल्पव्यय या किसी अन्य अक्षम व्यक्ति के निमित्त और ऐसे अल्पव्यय या अन्य अक्षम व्यक्ति के फायदे के लिए किसी सरक्षक, न्यासी या अभिकर्ता द्वारा चलाया जाता है तो ऐसे सरक्षक या न्यासी या सरक्षक पर कर, ब्याज या शास्ति उसी रूप में और उसी सीमा तक उद्ग्रहित की जाएगी और वसूली जाएगी जैसे कि उसका ऐसे अल्पव्यय या अन्य अक्षम व्यक्ति के लिए अवधारण किया जाता और वसूली जाती, यदि वह व्यस्क या सक्षम व्यक्ति होता और जैसे कि वह स्वयं कारबार का संचालन कर रहा था तथा इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

सरक्षकों,
न्यासियों आदि
का दायित्व।

92. जहां किसी कराधेय व्यक्ति की संपदा या उसके किसी भाग के अधीन कोई कारबार है, जिसके संबंध में इस अधिनियम के अधीन कोई कर, ब्याज या शास्ति कराधेय है, किसी प्रतिपाल्य अधिकरण, महाप्रशासक, शासकीय न्यासी या किसी प्रापक या प्रबंधक (जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति, चाहे किसी भी पदनाम से ज्ञात हो, जो वास्तव में कारबार का प्रबंध करता है), जिसकी नियुक्ति किसी न्यायालय के आदेश के अधीन की गई है, के नियंत्रणाधीन है, कर, ब्याज या शास्ति उस पर उद्ग्रहित की जाएगी और ऐसे प्रतिपाल्य अधिकरण, महाप्रशासक, शासकीय न्यासी, प्रापक या प्रबंधक से उसी प्रकार और उसी सीमा तक वसूली होगी जो वह कराधेय व्यक्ति से इस प्रकार अवधारित और वसूली होती मानो वह कराधेय व्यक्ति स्वयं कारबार का संचालन कर रहा था तथा इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

प्रतिपाल्य
अधिकरण आदि
का दायित्व।

2016 का 31

93. (1) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है, तब—

(क) यदि व्यक्ति द्वारा चलाए जाने वाले कारबार को उसकी मृत्यु के बाद उसके विधिक प्रतिनिधि या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जारी रखा जाता है तो ऐसा विधिक प्रतिनिधि या अन्य व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन ऐसे व्यक्ति से शोध कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा ; और

(ख) यदि ऐसे व्यक्ति द्वारा चलाए जाने वाले कारबार को उसकी मृत्यु से पूर्व या उसके पश्चात् जारी नहीं रखा जाता है तो उसके विधिक प्रतिनिधि मृतक की संपदा से उस परिमाण तक, जिस तक संपदा ऐसे व्यक्ति से इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय चुकाने में सक्षम है, संदाय करने के लिए दायी होगा,

चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण उसकी मृत्यु से पूर्व किया गया हो किंतु जो उसकी मृत्यु के पश्चात् असंदत्त या अवधारित किया गया है।

(2) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय

कतिपय मामलों
में कर, ब्याज या
शास्ति का संदाय
करने के लिए
दायित्व के संबंध
में विशेष
उपबंध।

व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है, हिन्दू अविभक्त कुटुंब या व्यक्तियों का संगम है और हिन्दू अविभक्त कुटुंब या व्यक्तियों के संगम के विभिन्न सदस्यों या व्यक्तियों के दलों के बीच संपत्ति का बंटवारा कर दिया गया है तब प्रत्येक सदस्य या सदस्यों का समूह संयुक्त रूप से या पृथक्: इस अधिनियम के अधीन कराधेय व्यक्ति से बंटवारे के समय तक कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण बंटवारे से पूर्व किया गया हो, किंतु जो बंटवारे के पश्चात् असंदत्त रह गया है या अवधारित किया गया है।

(3) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है और फर्म का विघटन कर दिया गया है तब प्रत्येक व्यक्ति, जो भागीदार था, संयुक्त रूप से या पृथक्: इस अधिनियम के अधीन फर्म से शोध्य, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण बंटवारे से पूर्व किया गया हो, किंतु जो बंटवारे के पश्चात् असंदत्त रह गया है या तत्पश्चात् अवधारित किया गया है।

2016 का 31

(4) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है,—

2016 का 31

(क) किसी प्रतिपाल्य का अभिरक्षक है, जिसकी ओर से अभिरक्षक द्वारा कारबार चलाया जाता है; या

(ख) कोई न्यासी है, जो फायदाग्राही के लिए किसी न्यास के अधीन कारबार का संचालन करता है,

तब यदि अभिरक्षा या न्यास को समाप्त कर दिया जाता है, प्रतिपाल्य या फायदाग्राही कराधेय व्यक्ति से संरक्षकता या न्यास के समापन तक शोध्य कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण अभिरक्षा या न्यास के समापन से पूर्व किया गया है किंतु जो असंदत्त रह गया है या तत्पश्चात् अवधारित किया गया है।

अन्य मामलों में दायित्व।

94. (1) जहां कराधेय व्यक्ति कोई फर्म या व्यक्तियों का संगम या हिन्दू अविभक्त कुटुंब है और ऐसी फर्म, संगम या कुटुंब ने कारबार करना बंद कर दिया है,—

(क) ऐसी फर्म, संगम या कुटुंब द्वारा ऐसे कारबार को बंद करने की तारीख तक इस अधिनियम के अधीन संदेय कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण ऐसे किया जाएगा मानो कारबार को जारी न रखना हुआ ही न हो; और

(ख) प्रत्येक व्यक्ति, जो कारबार को ऐसे बंद करने के समय ऐसी फर्म या ऐसे संगम या कुटुंब का सदस्य था, ऐसा बंद करना होते हुए भी फर्म, संगम या कुटुंब पर अवधारित कर और ब्याज के संदाय के लिए और अधिरोपित शास्ति का संदाय करने के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होगा, चाहे ऐसे कर और ब्याज का अवधारण या शास्ति को उससे पूर्व अधिरोपित किया गया है या ऐसा बंद करने के पश्चात् अधिरोपित किया गया है और पूर्वोक्त के अधीन रहते हुए इस अधिनियम के उपबंध जहां तक हो सके ऐसे व्यक्ति या भागीदार या सदस्यों को ऐसे लागू होंगे मानो वह कराधेय व्यक्ति था।

(2) जहां फर्म या व्यक्तियों के संगम के संगठन में कोई परिवर्तन होता है तो फर्म के भागीदार या संगम के सदस्य, जैसा कि वह पुनर्गठन के पूर्व विद्यमान थे और जैसे कि वह उसके पश्चात् विद्यमान हैं, धारा 90 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसी फर्म या व्यक्तियों से उसके पुनर्गठन की कालावधि से पूर्व शोध्य कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होंगे।

(3) उपधारा (1) के उपबंध, जहां तक हो सके, कराधेय व्यक्ति, जो विघटित हो गई फर्म या व्यक्तियों का संगम है, को या कराधेय व्यक्ति, जो अविभक्त हिन्दू कुटुंब है, जिसने उसके द्वारा चलाए जाने वाले कारबार के संबंध में विभाजन किया है, को लागू होंगे और तदनुसार उस धारा में बंद करने के प्रतिनिर्देश का ऐसे विघटन या विभाजन के प्रति अर्थ लगाया जाएगा।

स्पष्टीकरण—इस अध्याय के प्रयोजनों के लिए—

2009 का 6

(i) "सीमित दायित्व भागीदार" जिसे सीमित दायित्व भागीदारी अधिनियम, 2008 के उपबंधों के अधीन विरचित और रजिस्ट्रीकृत किया गया है, को भी एक फर्म माना जाएगा ;

(ii) "न्यायालय" से जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय अभिप्रेत है।

अध्याय 17

अग्रिम विनिर्णय

95. इस अध्याय में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,--

परिभाषाएं।

(क) "अग्रिम विनिर्णय" से किसी प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण द्वारा किसी आवेदक को धारा 97 की उपधारा (2) या धारा 100 की उपधारा (1) में मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति, जिसे आवेदक द्वारा किया गया है या किए जाने का प्रस्ताव है, पर विनिर्दिष्ट विषयों या प्रश्नों पर दिया गया अग्रिम विनिश्चय अभिप्रेत है ;

(ख) "अपील प्राधिकारी" से धारा 99 के अधीन गठित अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण अभिप्रेत है ;

(ग) "आवेदक" से इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत या रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त करने की वांछा रखने वाला व्यक्ति अभिप्रेत है ;

(घ) "आवेदन" से धारा 97 की उपधारा (1) के अधीन प्राधिकरण को किया गया आवेदन अभिप्रेत है ;

(ङ) "प्राधिकारी" से धारा 96 के अधीन गठित अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण अभिप्रेत है ;

अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण का गठन।

96. (1) सरकार अधिसूचना द्वारा दिल्ली अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण के नाम से ज्ञात एक प्राधिकरण का गठन करेगी :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश से, किसी अन्य राज्य में अवस्थित किसी प्राधिकरण को किसी राज्य के लिए प्राधिकरण के रूप में कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सकेगी।

(2) प्राधिकारी, निम्नलिखित से मिलकर बनेगा,--

(i) केंद्रीय कर के अधिकारियों में से एक सदस्य ; और

(ii) राज्य कर के अधिकारियों में से एक सदस्य,

जिन्हें क्रमशः केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाएगा।

(3) सदस्यों की अर्हताएं, नियुक्ति की पद्धति और उनकी सेवा के निबंधन और शर्तें वे होंगी, जो विहित की जाएं।

अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन।

97. (1) इस अध्याय के अधीन अग्रिम विनिर्णय अभिप्राप्त करने की वांछा रखने वाला आवेदक ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में और ऐसी फीस के साथ, जो विहित की जाए, उन प्रश्नों का कथन करते हुए, जिन पर अग्रिम विनिर्णय की ईप्सा की गई है, एक आवेदन करेगा।

(2) वह प्रश्न, जिस पर इस अधिनियम के अधीन अग्रिम विनिर्णय की ईप्सा की जाती है, निम्नलिखित के संबंध में होगा,--

(क) किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों का वर्गीकरण ;

(ख) इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन जारी अधिसूचना का लागू होना ;

(ग) मालों या सेवाओं या दोनों के समय और मूल्य का अवधारण ;

(घ) संदत्त या समझे गए इन्पुट कर प्रत्यय की अनुज्ञेयता ;

(ङ) किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों के कर दायित्व का अवधारण ;

(च) क्या आवेदक से रजिस्ट्रीकृत होने की अपेक्षा है ;

(छ) क्या आवेदक द्वारा किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों के संबंध में की गई कोई विशिष्ट बात का परिणाम उस पद के अर्थान्तर्गत मालों या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति के बराबर या उनकी आपूर्ति के रूप में होता है।

आवेदन की प्राप्ति पर

98. (1) किसी आवेदन की प्राप्ति पर प्राधिकरण उसकी एक प्रति को संबंधित अधिकारी को अग्रेषित कराएगा और यदि आवश्यक हो तो उससे सुसंगत अभिलेख प्रस्तुत करने की मांग करेगा :

प्रक्रिया ।

परंतु किसी मामले में जहां प्राधिकरण द्वारा किन्हीं अभिलेखों की मांग की गई है तो ऐसे अभिलेखों को यथासंभव शीघ्र संबंधित अधिकारी को लौटा दिया जाएगा ।

(2) प्राधिकरण आवेदन और मांगे गए अभिलेखों की जांच करने के पश्चात् तथा आवेदक या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि और संबंधित अधिकारी या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि को सुने जाने के पश्चात् आदेश द्वारा या तो आवेदन को स्वीकार करेगा या अस्वीकार कर देगा :

परंतु प्राधिकरण वहां आवेदन को मंजूर नहीं करेगा जहां आवेदन में उठाया गया प्रश्न पहले से ही लंबित है या आवेदक के किसी मामले में इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों में उसका विनिश्चय किया जा चुका है :

परंतु यह और कि इस उपधारा के अधीन किसी आवेदन को आवेदक को सुने जाने का अवसर दिए बिना अस्वीकार नहीं किया जाएगा :

परंतु यह भी कि जहां आवेदन को अस्वीकार किया जाता है तो उसके अस्वीकार किए जाने के कारणों को आदेश में विनिर्दिष्ट किया जाएगा ।

(3) उपधारा (2) के अधीन किए गए प्रत्येक आदेश की प्रति आवेदक और संबंधित अधिकारी को भेजी जाएगी ।

(4) जहां किसी आवेदन को उपधारा (2) के अधीन ऐसी और सामग्री, जो उसके समक्ष आवेदक द्वारा रखी जाए या अभिप्राप्त की जाए, की जांच के पश्चात् और आवेदक या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि के साथ संबंधित अधिकारी या प्राधिकृत प्रतिनिधि को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात् स्वीकार किया गया है तो प्राधिकरण द्वारा आवेदन में विनिर्दिष्ट प्रश्न पर अग्रिम विनिर्णय की उदघोषणा की जाएगी ।

(5) जहां प्राधिकरण प्राधिकरण के सदस्य ऐसे किसी प्रश्न पर मतभेद रखते हैं, जिस पर अग्रिम विनिर्णय की ईप्सा की गई है, वे उस बिन्दु या उन बिन्दुओं का कथन करेंगे, जिन पर वह मतभेद रखते हैं और ऐसे प्रश्न पर सुनवाई और विनिश्चय के लिए अपील प्राधिकरण प्राधिकरण को निर्दिष्ट करेंगे ।

(6) प्राधिकरण आवेदन की प्राप्ति की तारीख से नब्बे दिन के भीतर लिखित में अग्रिम विनिर्णय की घोषणा करेगा ।

(7) आवेदक, संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को उदघोषणा के पश्चात् सदस्यों द्वारा समकतः हस्ताक्षरित और ऐसी रीति में प्रमाणित, जो विहित की जाए, प्राधिकरण द्वारा ऐसी उदघोषित अग्रिम विनिर्णय की प्रति भेजी जाएगी ।

99. (1) सरकार अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करने के लिए अधिसूचना द्वारा दिल्ली माल और सेवाकर संबंधी अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण के नाम से ज्ञात एक अपील प्राधिकरण का गठन करेगी, जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगा,--

अग्रिम विनिर्णय
अपील प्राधिकरण
का गठन ।

(i) बोर्ड द्वारा यथा अभिहित केंद्रीय कर मुख्य आयुक्त ; और

(ii) राज्य कर आयुक्त :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश से, किसी अन्य राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में अवस्थित किसी अपील प्राधिकारी को किसी राज्य के लिए अपील प्राधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सकेगी ।

100. (1) धारा 98 की उपधारा (4) के अधीन उदघोषित अग्रिम विनिर्णय से व्यथित संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाला अधिकारी या आवेदक अपील प्राधिकारी को अपील कर सकेगा ।

अपील प्राधिकारी
को अपील ।

(2) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील उस तारीख से, जिसको ईप्सित विनिर्णय के विरुद्ध की गई अपील की संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाला अधिकारी या आवेदक को सूचना दी जाती है, से तीस दिन की अवधि के भीतर फाइल की जाएगी :

परंतु अपील प्राधिकारी का यदि यह समाधान हो जाता है कि आवेदक को नब्बे दिन की उक्त अवधि के भीतर आवेदन करने से पर्याप्त कारणों द्वारा निवारित किया गया था तो वह तीस दिन की उक्त अवधि से अतिरिक्त और अवधि के भीतर उसे प्रस्तुत करना अनुज्ञात कर सकेगा ।

(3) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील ऐसे प्ररूप में और ऐसी फीस के साथ होगी तथा उसका ऐसी रीति में सत्यापन किया जाएगा, जो विहित की जाए ।

101. (1) अपील प्राधिकारी अपील या निर्देश के पक्षकारों को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात् ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जैसा वह अपील किए गए आदेश या निर्दिष्ट आदेश की पुष्टि करने के लिए या उपांतरित करने के लिए उचित समझे।

अपील प्राधिकारी के आदेश।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट आदेश धारा 100 के अधीन अपील पारित करने या धारा 98 की उपधारा (5) के अधीन निर्देश करने की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के भीतर पारित किया जाएगा।

(3) जहां अपील प्राधिकारी के सदस्य उसे निर्दिष्ट किसी अपील या निर्देश में किसी बिन्दु या उन बिन्दुओं पर मतैक्य रखते हैं और यह समझा जाएगा कि अपील या निर्देश के अधीन प्रश्न के संबंध में कोई अग्रिम विनिर्णय जारी नहीं किया गया है।

(4) आवेदक, संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को उदघोषणा के पश्चात् सदस्यों द्वारा सम्मतः हस्ताक्षरित और ऐसी रीति में प्रमाणित, जो विहित की जाए, अपील प्राधिकारी द्वारा ऐसी उदघोषित अग्रिम विनिर्णय की प्रति भेजी जाएगी।

अग्रिम विनिर्णय की परिशुद्धि।

102. प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी धारा 98 या धारा 101 के अधीन उसके द्वारा पारित किसी आदेश संशोधन कर सकेगी ताकि अभिलेख पटल पर स्पष्ट गलतियों को ठीक किया जा सके, यदि ऐसी गलती प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी की जानकारी में स्वयं आती है या उसकी जानकारी में संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाले अधिकारी, आवेदक या अपीलार्थी द्वारा आदेश की तारीख से छह मास के भीतर लाई जाती है :

परंतु ऐसी कोई परिशुद्धि, जिसका प्रभाव कर दायित्व में वृद्धि करने अनुज्ञेय इनपुट कर प्रत्यय की अनुज्ञेय रकम को कम करने के रूप में होता है को तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि आवेदक या अपीलार्थी को सुने जाने का अवसर प्रदान नहीं कर दिया जाता है।

अग्रिम विनिर्णय का लागू होना।

103. (1) इस अध्याय के अधीन प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय केवल निम्नलिखित पर बाध्यकर होगा—

(क) उस आवेदक पर, जिसने अग्रिम विनिर्णय के लिए धारा 97 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट किसी विषय के संबंध में उसकी वांछा की थी ;

(ख) आवेदक के संबंध में संबंधित अधिकारी या अधिकारिता रखने वाले अधिकारी पर।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट अग्रिम विनिर्णय बाध्यकर होगा सिवाय तब जब मूल अग्रिम विनिर्णय की समर्थनकारी विधि, तथ्य या परिस्थितियां न बदल गई हों।

कतिपय परिस्थितियों में अग्रिम विनिर्णय का शून्य होना।

104. (1) जहां अपील प्राधिकारी यह पाता है कि धारा 98 की उपधारा (4) के अधीन या धारा 101 की उपधारा (1) के अधीन उसके द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय को आवेदक या अपीलार्थी द्वारा कपट या तात्त्विक तथ्यों को छिपाने या तथ्यों के दुर्व्यपदेशन द्वारा अभिप्राप्त किया गया है तो वह आदेश द्वारा ऐसे विनिर्णय को आरंभ से ही शून्य घोषित कर देगा और तत्पश्चात् इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंध आवेदक या अपीलार्थी को ऐसे लागू होंगे मानो अग्रिम विनिर्णय कभी किया ही नहीं था :

परन्तु यह कि इस उपधारा के अधीन कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा यदि आवेदक को सुने जाने का कोई अवसर प्रदान नहीं किया गया हो।

स्पष्टीकरण—धारा 73 की उपधारा (2) और उपधारा (10) या धारा 74 की उपधारा (2) और उपधारा (10) में विनिर्दिष्ट अवधि की गणना करते समय इस उपधारा के अधीन ऐसे अग्रिम विनिर्णय की तारीख से प्रारंभ होने वाली और आदेश की तारीख को समाप्त होने वाली अवधि को परिवर्जित कर दिया जाएगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन किए गए आदेश की एक प्रति आवेदक, संबंधित अधिकारी और अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को भेजी जाएगी।

1908 का 5

105. (1) प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी को निम्नलिखित के संबंध में अपनी शक्तियों को प्रयोग करने के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन सिविल न्यायालय की सभी शक्तियां होंगी,—

प्राधिकारी और अपील प्राधिकारी की शक्तियां।

(क) खोज और निरीक्षण ;

(ख) किसी व्यक्ति की उपस्थिति का प्रवर्तन और शपथ पर उसकी परीक्षा करना ;

(ग) कमीशन जारी करना और लेखा बहियों और अन्य अभिलेखों को प्रस्तुत करने के लिए बाध्य

करना ।

1974 का 2

(2) प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी द्वारा 195 के प्रयोजनों के लिए एक सिविल न्यायालय समझा जाएगा किन्तु दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के अध्याय 26 के प्रयोजनों के लिए नहीं, और प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी के समक्ष प्रत्येक कार्यवाही द्वारा 193 और धारा 228 के अर्थातर्गत और भारतीय दंड संहिता की धारा 196 के प्रयोजनों के लिए न्यायिक कार्यवाही समझी जाएगी ।

1860 का 45

106. प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी को इस अध्याय के उपबंधों के अधीन अपनी स्वयं की प्रक्रिया विनियमित करने की शक्ति होगी ।

प्राधिकारी और अपील प्राधिकारी की प्रक्रिया ।

अध्याय 18

अपील और पुनरीक्षण

107. (1) इस अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन न्यायनिर्णायक प्राधिकारी द्वारा पारित किसी विनिश्चय या आदेश से व्यथित कोई व्यक्ति ऐसे अपील प्राधिकारी अपील कर सकेगा जो उस तारीख से जिसको ऐसे व्यक्ति को उक्त विनिश्चय या आदेश संसूचित किया जाता है, तीन मास के भीतर विहित किया जाए ।

अपील प्राधिकारी को अपीलें ।

(2) आयुक्त उक्त विनिश्चय या आदेश की वैधानिकता या औचित्य के संबंध में स्वयं का समाधान करने के प्रयोजन के लिए स्वप्रेरणा से या केंद्रीय कर आयुक्त के निवेदन पर किसी ऐसी कार्यवाही के अभिलेख को मंगा और परीक्षण कर सकेगा जिसमें किसी न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने इस अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई विनिश्चय या आदेश पारित किया है तथा आदेश द्वारा ऐसे बिन्दुओं के अवधारण के लिए जो उक्त विनिश्चय या आदेश से उद्भूत होते हैं, उक्त विनिश्चय या आदेश की संसूचना की तारीख से छह मास के भीतर अपील प्राधिकारी को किसी अधीनस्थ अधिकारी को आवेदन करने के लिए निदेश दे सकेगा जैसा आयुक्त द्वारा अपने आदेश में विनिर्दिष्ट किया जाए ।

(3) जहां उपधारा (2) अधीन आदेश के अनुसरण में प्राधिकृत अधिकारी अपील प्राधिकारी को आवेदन करता है, वहां ऐसा आवेदन अपील प्राधिकारी द्वारा ऐसे व्यवहार किया जाएगा मानो यह न्यायनिर्णायक प्राधिकारी के विनिश्चय या आदेश के विरुद्ध की गई अपील हो और ऐसा प्राधिकृत अधिकारी कोई अपीलकर्ता हो तथा इस अधिनियम के अपील से संबंधित उपबंध ऐसे आवेदन को लागू होंगे ।

(4) अपील प्राधिकारी, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि अपीलकर्ता, यथास्थिति, तीन या छह मास की पूर्वोक्त अवधि के भीतर अपील करने से पर्याप्त कारणों से निवारित किया गया था, तो वह उसे एक मास की और अवधि के भीतर प्रस्तुत करना अनुज्ञात करेगा ।

(5) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील ऐसे प्ररूप में होगी और ऐसी रीति में सत्यपित की जाएगी जो विहित किया जाए ।

(6) उपधारा (1) के अधीन कोई अपील फाइल नहीं की जाएगी यदि अपीलकर्ता ने—

(क) अक्षेपित आदेश से उद्भूत कोई कर, ब्याज, जुर्माना, फीस और शास्ति का पूर्ण या ऐसे भाग का संदाय नहीं किया हो जैसा उसके द्वारा स्वीकारा जाए ; और

(ख) उक्त आदेश, जिसके संबंध में अपील फाइल की गई है, से उद्भूत विवाद में बकाया कर की रकम के दस प्रतिशत के बराबर राशि का संदाय नहीं किया हो ।

(7) जहां उपधारा (6) के अधीन अपीलकर्ता ने रकम का संदाय कर दिया है, वहां बकाया रकम के लिए वसूली कार्यवाहियां स्थगित समझी जाएंगी ।

(8) अपील प्राधिकारी अपीलकर्ता को सुने जाने का अवसर प्रदान करेगा ।

(9) अपील प्राधिकारी, यदि उसे अपील सुनवाई की किसी अवस्था पर पर्याप्त कारण दर्शित किया जाए तो पक्षकारों को या उनमें से किसी एक को समय देगा और लिखित में अभिलेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से अपील की सुनवाई को स्थगित रखेगा :

परन्तु यह कि ऐसा कोई स्थगन अपील की सुनवाई के दौरान किसी पक्षकार को तीन बार से अधिक समय नहीं दिया जाएगा ।

(10) अपील प्राधिकारी अपील की सुनवाई के समय अपीलकर्ता को अपील के आधारों में

विनिर्दिष्ट नहीं किए गए अपील के किसी आधार को जोड़ना अनुज्ञात कर सकेगा यदि उसका समाधान हो जाता है कि अपील के आधारों से उस आधार का लोप जानबूझकर या अयुक्तियुक्त नहीं था।

(11) अपील प्राधिकारी ऐसी और जांच करने के पश्चात् जो आवश्यक हो, उसे संपुष्ट, उपांतरित या अपास्त करने वाला विनिश्चय का आदेश करेगा जो वह उचित समझे, किन्तु उस न्यायनिर्णायक प्राधिकारी को मामला पुनःनिर्दिष्ट नहीं करेगा जिसने ऐसा विनिश्चय या आदेश पारित किया था :

परन्तु अधिहरण या वर्जित मूल्य के माल का अधिकरण के बदले में कोई फीस या शास्ति या जुर्माना बढ़ाने वाला अथवा प्रतिदाय की रकम या आगत कर प्रत्यय घटाने वाला कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा यदि अपीलकर्ता को प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने का उचित अवसर नहीं दे दिया गया हो :

परन्तु यह और कि अपील प्राधिकारी की जहां यह राय है कि कोई कर संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया है या गलती से प्रतिदाय किया गया है अथवा जहां आगत कर प्रत्यय गलत ढंग से प्राप्त किया गया है या उपयोग किया गया है, वहां अपीलकर्ता से ऐसा कर या आगत कर प्रत्यय के संदाय की अपेक्षा करने वाला कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा यदि अपीलकर्ता को प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने का नोटिस नहीं दिया गया है और धारा 73 या धारा 74 के अधीन विनिर्दिष्ट समय-सीमा के भीतर आदेश पारित किया जाता है।

(12) अपील निपटारा करने वाला अपील प्राधिकारी का आदेश लिखित में होगा और अवधारण के बिन्दुओं, उन पर विनिश्चय और ऐसे विनिश्चय के कारणों का कथन करेगा।

(13) अपील प्राधिकारी, जहां ऐसा करना संभव हो, प्रत्येक अपील को उसे फाइल किए जाने की तारीख से एक वर्ष के अवधि के भीतर सुनवाई और विनिश्चय करेगा :

परन्तु जहां आदेश जारी किया जाना न्यायालय या अधिकरण के आदेश द्वारा स्थगित किया जाता है, ऐसे स्थगन की अवधि एक वर्ष की अवधि की गणना करने में अपवर्जित की जाएगी।

(14) अपील के निपटारे पर अपील प्राधिकारी उसके द्वारा पारित आदेश को अपीलकर्ता, प्रत्यर्थी और न्यायनिर्णायक प्राधिकारी को संसूचित करेगा।

(15) अपील प्राधिकारी द्वारा पारित आदेश की एक प्रति अधिकारिता आयुक्त या उसके द्वारा इस निमित्त अभिहित प्राधिकारी को और केंद्रीय कर आयुक्त या उसके द्वारा इस निमित्त अभिहित प्राधिकारी को भी भेजी जाएगी।

(16) इस धारा के अधीन पारित प्रत्येक आदेश धारा 108 या धारा 113 या धारा 117 अथवा धारा 118 के उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतिम और पक्षकारों पर बाध्यकर होगा।

108. (1) धारा 121 और उसके अधीन बनाए गए किन्हीं नियमों के उपबंधों के अधीन रहते हुए, पुनरीक्षण प्राधिकारी स्वप्रेरणा से या उसके द्वारा प्राप्त किसी सूचना पर या केंद्रीय कर आयुक्त के अनुरोध पर किसी ऐसी कार्यवाही के अभिलेख को मंगा सकेगा और पपरीक्षा कर सकेगा तथा यदि वह यह मानता है कि उसके किसी अधीनस्थ अधिकारी ने इस अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई विनिश्चय या आदेश पारित किया है, जो त्रुटिपूर्ण है और राजस्व के हितों के प्रतिकूल है तथा अवैध या अनुचित है अथवा उसने कतिपय सारवान् तथ्यों को ध्यान में नहीं रखा है चाहे वे उक्त आदेश के जारी करने के समय उपलब्ध है या नहीं या भारत के नियंत्रण-महालेखापरीक्षक द्वारा की गई के पारिणामिक है, तो वह यदि आवश्यक हो तो ऐसी अवधि के लिए जो वह उचित समझे ऐसे विनिश्चय या आदेश के प्रवर्तन को स्थगित कर सकेगा और संबंधित व्यक्ति को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् और ऐसी और जांच करने के पश्चात् जो आवश्यक हो ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जो वह ठीक और उचित समझे जिसके अन्तर्गत उक्त विनिश्चय या आदेश को वर्धित करना या उपांतरित करना या अपास्त करना भी है।

पुनरीक्षण
प्राधिकारी की
शक्तियां।

(2) पुनरीक्षण प्राधिकारी उपधारा (1) के अधीन किसी शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा, यदि—

(क) आदेश धारा 107 या धारा 112 या धारा 117 या धारा 118 के अधीन अपील के अध्यक्षीन है ; या

(ख) धारा 107 की उपधारा (2) के अधीन विनिर्दिष्ट अवधि समाप्त नहीं हुई है या पुनरीक्षित किए जाने वाले विनिश्चय या आदेश को पारित करने के पश्चात् तीन वर्ष से अधिक समय समाप्त हो गया है ; या

(ग) इस धारा के अधीन किसी पूर्वतर अवस्था पर आदेश को पहले ही पुनरीक्षण के लिए लिया जा

चुका है ; या

(घ) आदेश उपधारा (1) के अधीन शक्तियों के प्रयोग में पारित किया जा चुका है :

परन्तु यह कि पुनरीक्षण प्राधिकारी उपधारा (1) के अधीन किसी बिन्दु पर कोई आदेश पारित कर सकेगा जो उपधारा (2) के खंड (क) के अधीन निर्दिष्ट किसी अपील में ऐसी अपील में आदेश की तारीख से एक वर्ष की अवधि समाप्त होने के पूर्व या उस उपधारा के खंड (ख) में निर्दिष्ट तीन वर्ष की अवधि के समाप्त होने के पूर्व, जो भी पश्चात्पूर्वी हो, उसके समक्ष नहीं उठाया गया है या विनिश्चित नहीं किया गया है।

(3) उपधारा (1) के अधीन पुनरीक्षण में पारित प्रत्येक आदेश धारा 113 या धारा 117 अथवा धारा 118 के उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतिम और पक्षकारों पर बाध्यकर होगा।

(4) यदि उक्त विनिश्चय या आदेश में कोई ऐसा मुद्दा अन्तर्बलित है जिसमें अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय में किसी अन्य कार्यवाही में अपना विनिश्चय दिया है और अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय के ऐसे विनिश्चय के विरुद्ध उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में कोई अपील लंबित है, अपील अधिकरण के विनिश्चय की तारीख और उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख या उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख और उच्चतम न्यायालय के विनिश्चय की तारीख के बीच व्यतीत अवधि उपधारा (2) के खंड (ख) में निर्दिष्ट परिसीमा की अवधि की गणना करने में अपवर्जित कर दी जाएगी जहां पुनरीक्षण के लिए कार्यवाहियां इस धारा के अधीन नोटिस जारी करने के माध्यम से प्रारंभ की गई हैं।

(5) उपधारा (1) के अधीन जहां आदेश जारी किया जाना न्यायालय या अपील अधिकरण के आदेश द्वारा स्थगित किया जाता है, ऐसे स्थगन की अवधि उपधारा (2) के खंड (ख) में निर्दिष्ट अवधि की परिसीमा की गणना में अपवर्जित कर दी जाएगी।

(6) इस धारा के प्रयोजनों के लिए पद,—

(i) "अभिलेख" में इस अधिनियम के अधीन पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा परीक्षा के समय किसी कार्यवाही से संबंधित सभी अभिलेख सम्मिलित होंगे ;

(ii) "विनिश्चय" में पुनरीक्षण प्राधिकारी से रैंक में न्यून किसी अधिकारी द्वारा दी गई सूचना सम्मिलित होगी।

109. (1) इस अध्याय के उपबंधों के अधीन रहते हुए, केंद्रीय माल और सेवाकर अधिनियम के अधीन गठित माल और सेवा कर अधिकरण, इस अधिनियम के अधीन अपील प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करने के लिए अपील अधिकरण होगा।

अपील अधिकरण और उसकी न्यायपीठें।

(2) राज्य में अवस्थित राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय न्यायपीठों का गठन और अधिकारिता, केंद्रीय माल और सेवाकर अधिनियम की धारा 109 या तदधीन बनाए गए नियमों के अनुसार होगी।

110. राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय न्यायपीठों के अध्यक्ष और सदस्यों की अर्हताएं, नियुक्ति, वेतन और भत्ते, पदावधि, त्यागपत्र और पद से हटाया जाना केंद्रीय माल और सेवाकर अधिनियम की धारा 110 के उपबंधों के अनुसार होगा।

अपील अधिकरण के अध्यक्ष और सदस्य, उनकी अर्हताएं, नियुक्ति, सेवा की शर्तें आदि।

अपील
अधिकरण के
समक्ष प्रक्रिया।

111. (1) अपील अधिकरण, अपने समक्ष किसी कार्यवाहियों या अपील को निपटाने समय सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 में अधिकथित प्रक्रिया द्वारा बद्ध होगा, लेकिन प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों और इस अधिनियम के अन्य उपबंधों तथा उसके अधीन निर्मित नियमों के अध्याधीन द्वारा निर्देशित होगा और अपील अधिकरण को अपनी प्रक्रिया को विनियमित करने की शक्ति होगी।

1908 का 5

(2) अपील अधिकरण की इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों के निर्वहन के प्रयोजनों के लिए शक्ति सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन सिविल न्यायालय में यथा विहित शक्तियों के समान होगी जो निम्नलिखित मामलों के संबंध में वाद के विचारण के समय होगी, अर्थात् :—

1908 का 5

(क) किसी व्यक्ति को सम्मन करना और उपस्थित होने के लिए बाध्य करना तथा उसे शपथ पर उसका परीक्षण करना ;

(ख) दस्तावेजों की खोज और प्रस्तुत करने की अपेक्षा;

(ग) शपथपत्र पर साक्ष्य प्राप्त करना;

(घ) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 123 और धारा 124 के उपबंधों के अधीन किसी भी कार्यालय से किसी लोक अभिलेख या दस्तावेज या ऐसे किसी अभिलेख या दस्तावेज की प्रति मंगाना;

1872 का 1

(ङ) साक्षियों या दस्तावेजों की परीक्षा के लिए कमीशन जारी करना;

(च) चूक या एकपक्षीय विनिश्चय के किसी प्रतिवेदन पर किसी प्रतिवेदन को खारिज करना;

(छ) किसी प्रतिवेदन को चूक के लिए खारिज करने के आदेश या अपने द्वारा पास किसी एकपक्षीय आदेश को अपास्त करना; और

(ज) कोई अन्य मामला जो विहित जाए।

(3) अपील अधिकरण द्वारा किया गया कोई आदेश उसी रीति में लागू होगा जैसे न्यायालय द्वारा उसके यहां लंबित किसी वाद में की गई डिक्री हो और यह अपील अधिकरण के लिए विधि सम्मत होगा कि वह अपने आदेशों के निष्पादन के लिए स्थानीय अधिकारिता के न्यायालय में भेजे--

(क) कंपनी के विरुद्ध आदेश की दशा में जहां कंपनी का रजिस्ट्रीकृत कार्यालय स्थित है; या

(ख) किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध आदेश की दशा में जहां संबद्ध व्यक्ति स्वेच्छा से निवास करता है या लाभ के लिए व्यापारिक या व्यक्तिगत रूप से कार्य करता है।

1860 का 45

(4) अपील अधिकरण के समक्ष कार्यवाहियां भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थ में और धारा 196 के प्रयोजनों के लिए न्यायिक कार्यवाहियां समझी जाएंगी और अपील अधिकरण दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 195 और अध्याय 26 के प्रयोजनों के लिए सिविल न्यायालय समझा जाएगा।

1974 रा 2

112. (1) इस अधिनियम की धारा 107 या धारा 108 के अधीन या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश द्वारा व्यथित कोई व्यक्ति, उस आदेश जिसके विरुद्ध अपील चाही गई है, अपील करने वाले व्यक्ति को संसूचना की तारीख से, ऐसे आदेश के विरुद्ध तीन मास के भीतर अपील कर सकेगा।

अपील अधिकरण
को अपील।

(2) अपील अधिकरण ऐसी किसी अपील को अपने विवेक के अनुसार स्वीकार करने से इन्कार कर सकता है जहां कर या इनपुट कर प्रत्यय अंतर्वलित हो या इनपुट कर में अंतर अंतर्वलित हो या ऐसे आदेश द्वारा जुर्माने की रकम या शास्ति अवधारित होती हो तथा 50 हजार रुपए से अधिक न हो।

(3) आयुक्त उक्त आदेश की विधिमान्यता या उपयुक्तता के संबंध में स्वयं के समाधान के प्रयोजन के लिए इस अधिनियम या केंद्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन अपीलीय अधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा पारित किसी आदेश के अभिलेख को स्वतः या केंद्रीय कर आयुक्त की प्रार्थना पर परीक्षण के लिए मंगा सकेगा और आदेश द्वारा या अपने अधीनस्थ किसी अधिकारी को निदेश देकर उस तारीख को जिसको अपने आदेश में आयुक्त द्वारा यथा विनिर्दिष्ट उक्त आदेश से उत्पन्न ऐसे बिन्दुओं के अवधारण के लिए उक्त आदेश पारित किया गया है, से छह मास में अपील अधिकरण को आवेदन कर सकेगा।

(4) जहां उपधारा (3) के अधीन आदेश के अनुसरण में प्राधिकृत अधिकारी अपील अधिकरण को आवेदन करता है, तो ऐसा आवेदन अपील अधिकरण इस प्रकार निपटाएगा जैसे वह धारा 107 की उपधारा (11) के अधीन या धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन आदेश के विरुद्ध अपील की गई हो और इस अधिनियम के उपबंध आवेदन को ऐसे लागू होंगे जैसे वे उपधारा (1) के अधीन फाइल अपील के संबंध में लागू होते हैं।

(5) इस सूचना की प्राप्ति पर कि इस धारा के अधीन अपील हो चुकी है, पक्षकार जिसके विरुद्ध अपील हुई है किसी अन्य बात के होते हुए भी कि उसने ऐसे आदेश या उसके किसी भाग के विरुद्ध अपील नहीं की है, नोटिस की प्राप्ति के 45 दिन में विहित रीति में सत्यापित प्रति आक्षेपों का ज्ञापन, आदेश जिसके किसी भाग के विरुद्ध अपील की गई है, फाइल करेगा और ऐसा ज्ञापन अपील अधिकरण द्वारा ऐसे निस्तारित किया जाएगा जैसे यह उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट समय में प्रस्तुत की गई अपील हो।

(6) अपील अधिकरण, उपधारा (1) में निर्दिष्ट अवधि के अवसान के पश्चात् तीन मास में एक अपील स्वीकार कर सकेगा या उपधारा (5) में निर्दिष्ट अवधि के अवसान के पश्चात् 45 दिन में प्रति आक्षेपों का ज्ञापन फाइल करने के लिए अनुमति दे सकेगा यदि यह समाधान हो जाए कि इसको उस अवधि में प्रस्तुत न कर पाने का उपयुक्त कारण था।

(7) अपील अधिकरण को अपील ऐसे प्ररूप में उस रीति में सत्यापित और ऐसी फीस सहित जो विहित की जाए, में होगी।

(8) कोई अपील, उपधारा (1) के अधीन जब तक फाइल नहीं की जाएगी तब तक अपीलार्थी निम्नलिखित संदत्त न कर दे,--

(क) पूर्ण कर की रकम का ऐसा कोई भाग, ब्याज, जुर्माना, फीस और आरोपित आदेश से उत्पन्न शास्ति जैसी उसके द्वारा स्वीकार की गई हो; और

(ख) धारा 107 की उपधारा (6) के अधीन संदत्त रकम के अतिरिक्त विवाद में कर की शेष रकम के बीस प्रतिशत के बराबर राशि।

(9) जहां अपीलार्थी उपधारा (8) के अनुसार रकम संदत्त कर चुका है वहां शेष रकम की वसूली कार्यवाहियां अपील के निस्तारण तक रोकी हुई समझी जाएंगी।

(10) अपील अधिकरण के समक्ष--

(क) त्रुटि को ठीक करने या किसी अन्य प्रयोजन के लिए कोई अपील;

(ख) अपील या किसी आवेदन का प्रत्यावर्तन करने हेतु,

प्रत्येक आवेदन ऐसी ऐसे शुल्क सहित होगा जो विहित किया जाए।

अपील अधिकरण
के आदेश।

113. (1) अपीली अधिकरण अपील के पक्षकारों को सुने जाने का अवसर देने के पश्चात् विनिश्चय या आदेश जिसके विरुद्ध अपील दायर की गई है के पुष्टिकरण, उपांतरण या बातीलकरण जैसा ठीक समझे, उस पर आदेश कर सकेगा या अपीली प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी या मूल न्यायनिर्णयन प्राधिकारी को ऐसे निदेशों को जिनको वह ठीक समझे सहित वापस नये न्यायनिर्णयन या अतिरिक्त साक्ष्य लेने के पश्चात् यदि आवश्यक हों, विनिश्चय के लिए वापस भेज सकेगा।

(2) अपीली प्राधिकारी यदि समुचित कारण दिए जाएं तो किसी अपील की सुनवाई की किसी प्रास्थिति पर उनके लिए कारणों को अभिलिखित करते हुए पक्षकारों को समय प्रदान या अपील की सुनवाई स्थगित कर सकेगा :

परंतु यह कि इस प्रकार का स्थगन अपील की सुनवाई के दौरान एक पक्षकार को तीन बार से अधिक नहीं प्रदान किया जाएगा।

(3) यदि ऐसी कोई त्रुटि अपने-आप उसे संज्ञान में आ जाती है या आयुक्त या केंद्रीय कर आयुक्त या अपील के किसी पक्षकार द्वारा संज्ञान में आदेश की तारीख के तीन मास की अवधि में लाई जाती है तो अपीली अधिकरण अभिलेख पर किसी प्रत्यक्ष त्रुटि को ठीक करने के लिए उपधारा (1) के अधीन अपने द्वारा पारित किसी आदेश को संशोधित कर सकेगा।

परंतु यह कि ऐसा कोई संशोधन जो मूल्यांकन की वृद्धि या वापसी की कमी या इनपुट कर प्रत्यय या किसी पक्षकार के दायित्व में अन्यथा वृद्धि करता है, इस अधिनियम के अधीन तब तक नहीं किया जा सकेगा जब तक कि पक्षकार को सुनने का अवसर न प्रदान किया जाए।

(4) अपीली अधिकरण जहां तक संभव हो अपील के फाइल होने की तारीख से एक वर्ष की अवधि में प्रत्येक अपील सुने और विनिश्चय करेगा।

(5) अपीली अधिकरण इस अधिनियम के अधीन पारित प्रत्येक आदेश की प्रति अपीलीय प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी या मूल न्यायनिर्णयन प्राधिकारी अपीलार्थी और अधिकारिता रखने वाले आयुक्त या केंद्रीय कर आयुक्त को यथास्थिति भेजेगा।

(6) जैसा कि धारा 117 या धारा 118 में उपबंधित है, अपील अधिकरण द्वारा किसी अपील पर पारित आदेश पक्षकारों पर अंतिम और बाध्यकारी होगा।

114. राज्य अध्यक्ष, किसी राज्य में अपील अधिकरण की राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय पीठों पर ऐसी वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग करेगा, जैसा विहित किया जाए :

परंतु राज्य अध्यक्ष के पास अपनी ऐसी वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों को, जैसा वह ठीक समझे, राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय पीठों के किसी अन्य सदस्य या अन्य अधिकारी को, इस शर्त के अधीन रहते हुए प्रत्यायोजित करने का प्राधिकार होगा कि ऐसा सदस्य या अधिकारी ऐसी प्रत्यायोजित शक्तियों को प्रयोग करते हुए राज्य अध्यक्ष के निदेश, नियंत्रण और पर्यवेक्षण के अधीन कार्य करेगा।

राज्य अध्यक्ष की
वित्तीय और
प्रशासनिक
शक्तियां।

115. जहाँ अपीलार्थी द्वारा धारा 107 की उपधारा (6) या धारा 112 की उपधारा (8) के अधीन संदत्त रकम को अपीलीय प्राधिकारी या अपील अधिकरण के किसी आदेश के परिणामस्वरूप वापस किया जाना अपेक्षित है तो धारा 56 के अधीन विनिर्दिष्ट ब्याज की दर से ऐसी वापसी के संबंध में रकम के संदाय की तारीख से ऐसे रकम की वापसी की तारीख तक ब्याज का संदाय किया जाएगा।

अपील के दाखिल करने के लिए संदत्त रकम की वापसी पर ब्याज।

116. (1) ऐसा कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी या अपीलीय प्राधिकारी या अपील अधिकरण के समक्ष इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के संबंध में हाजिर होने के लिए हकदार है या अपेक्षित है, इस धारा के अन्य उपबंधों के अध्ययन शपथ या कथन पर परीक्षा के लिए व्यक्तिगत रूप से हाजिर होने के लिए इस अधिनियम के अधीन जब उससे अन्यथा अपेक्षित है तो प्राधिकृत प्रतिनिधि के द्वारा हाजिर हो सकेगा।

प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा हाजिरी।

(2) इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए पद "प्राधिकृत प्रतिनिधि" से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है, जो उपधारा (1) में निर्दिष्ट व्यक्ति द्वारा उसके स्थान पर हाजिर होने के लिए प्राधिकृत व्यक्ति है--

(क) उसका रिश्तेदार या नियमित कर्मचारी ; या

(ख) ऐसा कोई अधिवक्ता जो भारत में किसी न्यायालय में प्रैक्टिस करने का हकदार है और जिसे भारत में किसी न्यायालय के समक्ष प्रैक्टिस करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया है ; या

(ग) कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट, लागत लेखापाल या कंपनी सचिव जो प्रैक्टिस करने का प्रमाण-पत्र रखता है और जिसे प्रैक्टिस करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया है ; या

(घ) किसी राज्य सरकार के वाणिज्य कर विभाग, जिसमें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के व्यापार एवं कर विभाग, आबकारी, मनोरंजन एवं विलासिता कर विभाग भी शामिल हैं, का या संघ राज्यक्षेत्र या बोर्ड का ऐसा सेवानिवृत्त अधिकारी, जिसने सरकार के अधीन अपनी सेवा के दौरान समूह 'ख' राजपत्रित अधिकारी की रैंक की पंक्ति से अन्यून के पद पर कम से कम दो वर्ष की अवधि तक सेवा की हो :

परंतु यह कि ऐसा कोई अधिकारी जिसने अपनी सेवानिवृत्ति या पदत्याग की तारीख से एक वर्ष की अवधि के लिए इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के समक्ष हाजिर होने के लिए अधिकारी नहीं होगा ; या

(ङ) ऐसा कोई व्यक्ति जो संबद्ध रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के लिए माल और सेवा कर प्रैक्टिसकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए प्राधिकृत है।

(3) कोई व्यक्ति--

(क) जो सरकारी सेवा से बर्खास्त या हटाया गया हो ; या

(ख) जो इस अधिनियम, राज्य माल और सेवा कर अधिनियम, समेकित माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम या विद्यमान किसी विधि या माल के विक्रय या माल की पूर्ति या सेवाओं या दोनों पर कर लगाने से संबंधित राज्य विधानसभा द्वारा पारित किसी अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों से संबंधित किसी अपराध का दोषसिद्ध हो ; या

(ग) जो विहित प्राधिकारी द्वारा दुर्व्यावहार का दोषी पाया गया हो ;

(घ) जो दिवालिया के रूप में न्यायनिर्णीत हो चुका हो,

उपधारा (1) के अधीन किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए अर्ह नहीं होगा--

(i) खंड (क), (ख) और (ग) में निर्दिष्ट व्यक्तियों के मामले में सदैव के लिए ; और

(ii) खंड (घ) में निर्दिष्ट किसी व्यक्ति के मामले में उस अवधि के दौरान जब तक दिवालियापन जारी रहे।

(4) ऐसा कोई व्यक्ति जो राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के उपबंधों के अधीन निरर्ह है इस अधिनियम के अधीन भी निरर्ह समझा जाएगा।

उच्च न्यायालय को अपील।

117. (1) राज्य पीठ या अपील अधिकरण की क्षेत्रीय पीठों द्वारा पारित किसी आदेश से व्यथित कोई व्यक्ति उच्च न्यायालय में अपील फाइल कर सकेगा और उच्च न्यायालय ऐसी अपील को स्वीकार कर सकेगा यदि उसका यह समाधान हो जाए कि मामले में विधि का कोई सारवान प्रश्न अंतर्बलित है।

(2) उपधारा (1) के अधीन कोई अपील उस तारीख से जिसको व्यथित व्यक्ति द्वारा अपीलगत आदेश प्राप्त हुआ है से 180 दिन की अवधि में अपील फाइल की जा सकेगी और यह ऐसे प्रारूप में और उस सत्यापित रीति में होगी जो विहित की जाए :

परंतु यह कि उच्च न्यायालय उक्त अवधि के अवसान के पश्चात् अपील को सुन सकेगा, यदि उसका यह समाधान हो जाए कि ऐसी अवधि में इसको फाइल न कर पाने का समुचित कारण था ।

(3) जहां उच्च न्यायालय का समाधान हो जाए कि किसी मामले में विधि का सारवान प्रश्न अंतर्बलित है वहां वह उस प्रश्न को विरचित करेगा और केवल इस प्रकार विरचित प्रश्न पर अपील की सुनवाई करेगा तथा प्रत्यर्थी अपील की सुनवाई के दौरान कि मामले में ऐसा प्रश्न अंतर्बलित नहीं है पर बहस करने के लिए अनुज्ञेय होंगे :

परंतु इस उपधारा की किसी बात के बारे में यह नहीं समझा जाएगा कि वह लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से न्यायालय की किसी अपील की, उसके द्वारा विरचित न किए गए विधि के किसी अन्य सारवान प्रश्न पर सुनवाई करने की शक्ति को समाप्त करने या उसका अल्पीकरण करने के रूप में नहीं समझा जाएगा यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि मामले में ऐसा प्रश्न अंतर्बलित है ।

(4) उच्च न्यायालय इस प्रकार विनियमित विधि के प्रश्न का विनिश्चय करेगा और ऐसे निर्णय को उन आधारों सहित जिन पर ऐसा निर्णय आधारित हैं, प्रदान करेगा और ऐसी लागत लगा सकेगा जो वह ठीक समझे ।

(5) उच्च न्यायालय किसी ऐसे वाद को अवधारित कर सकेगा, जो—

(क) राज्य पीठ या क्षेत्रीय पीठ द्वारा अवधारित न किया गया हो ; या

(ख) उपधारा (3) में यथानिर्दिष्ट ऐसे विधि के प्रश्न पर विनिश्चय के कारण राज्य पीठ या क्षेत्रीय पीठ द्वारा वृटिपूर्ण अवधारण किया गया हो ।

(6) जहां उच्च न्यायालय के समक्ष कोई अपील फाइल की गई हो, वहां यह उच्च न्यायालय के दो न्यायाधीशों से कम की पीठ द्वारा नहीं सुनी जाएगी और ऐसे न्यायाधीशों यदि हों तो उनके बहुमत के मत के अनुसार विनिश्चय की जाएगी ।

(7) जहां ऐसा कोई बहुमत नहीं है, वहां न्यायाधीश विधि के उस बिंदु को बताएं जिस पर वे मतांतर रखते हैं और वहां केवल उस बिंदु पर उच्च न्यायालय के एक या अधिक अन्य न्यायाधीशों द्वारा मामले को सुना जाएगा और ऐसे न्यायाधीशों, जिन्होंने पहले इस मामले को सुना है, सहित के बहुमत के मत के अनुसार ऐसे बिंदु पर विनिश्चय किया जाएगा ।

(8) जहां उच्च न्यायालय ने इस धारा के अधीन फाइल अपील में निर्णय दे दिया है तो ऐसे निर्णय को प्रभाव इसकी सत्यापित प्रतिलिपि के आधार पर किसी पक्ष द्वारा दिया जाएगा ।

(9) इस अधिनियम में जैसे पहले अन्यथा उपबंधित किया गया है, सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के उपबंध, जो उच्च न्यायालय के अपील से संबंधित हैं, इस धारा के अधीन अपील के मामलों में, जहां तक संभव हो लागू होंगे ।

118. ऐसी अपील जो उच्चतम न्यायालय में होगी--

(क) राष्ट्रीय पीठ या अपील अधिकरण की प्रांतीय पीठों द्वारा पारित किसी आदेश के विरुद्ध ; या

(ख) किसी मामले में धारा 117 के अधीन की गई अपील में उच्च न्यायालय द्वारा पारित किसी निर्णय या आदेश के विरुद्ध, जो स्वतः या व्यथित पक्षकार द्वारा या उसके निमित्त के द्वारा किए गए आवेदन पर निर्णय या आदेश के पारित होने के तुरंत बाद, उच्च न्यायालय द्वारा प्रमाणित किया गया हो कि उच्चतम न्यायालय को अपील करने के लिए उचित मामला है ।

(2) सिविल प्रक्रिया संहिता के उपबंध, जो उच्चतम न्यायालय को अपील करने से संबंधित हैं जहां तक संभव हो इस धारा के अधीन अपील के मामलों में उस तरह लागू होंगे जैसे उच्च न्यायालय की डिक्की की अपील के मामले में होते हैं ।

(3) जहां उच्च न्यायालय का निर्णय अपील में बदल या उलट गया हो वहां उच्च न्यायालय का आदेश उस प्रकार प्रभावी होगा, जैसे उच्च न्यायालय के निर्णय के मामले में धारा 117 में यथा उपबंधित रीति में उच्चतम न्यायालय का आदेश होता है ।

119. किसी बात के होते हुए भी कि उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में अपील की गई है, धारा 113 के उपधारा (1) के अधीन अपील अधिकरण की राष्ट्रीय या प्रांतीय पीठों या धारा 113 की उपधारा (1) के अधीन अपील अधिकरण के राज्य पीठों या क्षेत्रीय पीठों या धारा 117 के अधीन उच्च

उच्चतम
न्यायालय को
अपील ।

1908 का 5

राशि जो अपील
आदि के होने के
बाद भी संदत्त

किए जाने हैं।

न्यायालय द्वारा यथास्थिति पारित किसी आदेश के परिणामस्वरूप सरकार को दिए जाने वाली राशि इस प्रकार पारित आदेश के अनुसरण में संदेय की जाएगी।

कतिपय मामलों में अपील का फाइल नहीं किया जाना।

120. (1) आयुक्त, परिषद् की सिफारिशों पर समय-समय पर जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों से, जैसा ठीक समझे इस अध्याय के उपबंधों के अधीन राज्य कर अधिकारी द्वारा फाइल की गई अपील या आवेदन के नियमन के प्रयोजन के लिए ऐसी किसी मौद्रिक सीमा को नियत कर सकेगा।

(2) जहां उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों, अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर का अधिकारी इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन पारित किसी विनिश्चय या आदेश के विरुद्ध कोई अपील या आवेदन नहीं फाइल कर सकेगा, यह राज्य कर के ऐसे अधिकारी को किसी अन्य मामले में अंतर्बलित समान या समतुल्य विवादक या विधि के प्रश्न के विरुद्ध अपील या आवेदन फाइल करने से नहीं रोकेगा।

(3) किसी बात के होते हुए भी यह तथ्य कि उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर के अधिकारी द्वारा कोई अपील या आवेदन फाइल नहीं किया गया है, कोई व्यक्ति अपील में या आवेदन में पक्षकार होते हुए भी किसी अपील या आवेदन के फाइल न किए जाने पर विवादित बिंदु पर विनिश्चय से वह अधिकारी राज्य कर का अधिकारी अवगत था, आशयित नहीं करेगा।

(4) अपील अधिकरण या न्यायालय ऐसी अपील या आवेदन को सुनते समय उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर के अधिकारी द्वारा अपील या आवेदन फाइल न किए जाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखेगा।

121. इस अधिनियम के उपबंधों के विपरीत किसी बात के होते हुए भी राज्य कर के अधिकारी द्वारा लिए गए विनिश्चय या पारित आदेश के विरुद्ध अपील नहीं हो सकेगी, यदि ऐसा लिया गया विनिश्चय या आदेश निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक से संबंधित है अर्थात् :-

अपील न किए जा सकने वाले विनिश्चय और आदेश।

(क) आयुक्त या अन्य प्राधिकारी द्वारा ऐसा आदेश जो कार्यवाहियों को एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी को सीधे अंतरित करने में सशक्त हो ; या

(ख) लेखा बहियों, रजिस्टर और अन्य दस्तावेजों का अभिग्रहण या प्रतिधारित करने का कोई आदेश ; या

(ग) इस अधिनियम के अधीन अभियोजन की मंजूरी देने वाला कोई आदेश ; या

(घ) धारा 80 के अधीन पारित कोई आदेश।

अध्याय 19

अपराध और शास्तियां

122. (1) जहां कराधेय व्यक्ति जो—

कतिपय अपराधों के लिए शास्ति।

(i) किसी बीजक के जारी किए बिना किसी माल या सेवा या दोनों की पूर्ति करता है या ऐसे किसी पूर्ति के लिए झूठा या गलत बीजक जारी करता है ;

(ii) इस अधिनियम के उपबंधों या तद्धीन बनाए गए नियमों उल्लंघन में माल या सेवा या दोनों की पूर्ति के बिना बीजक या बिल जारी करता है ;

(iii) कर के रूप में किसी रकम का संग्रह कर उसको सरकार को संदाय करने में तीन मास से परे उस तारीख को जिसको ऐसा संदाय देय था, असफल रहता है ;

(iv) इस अधिनियम के उपबंधों के विपरीत किसी कर का संग्रह करता है लेकिन उसको सरकार को संदाय करने में तीन मास से परे उस तारीख को जिसको ऐसा संदाय देय था, करने में असफल रहता है ;

(v) धारा 51 की उपधारा (1) की उपबंधों के अनुसार कर कटौती में असफल रहता है या उक्त उपनियम के अधीन कटौती की अपेक्षित रकम से कम रकम की कटौती करता है या उपधारा (2) के अधीन सरकार को इस कटौती की गई रकम को कर के रूप में संदाय करने में असफल रहता है ;

(vi) धारा 52 की उपधारा (1) की उपबंधों के अनुसार कर संग्रहण में असफल रहता है या कोई रकम संग्रहीत करता है जो उक्त उपधारा के अधीन संग्रहीत किए जाने के लिए अपेक्षित रकम से कम रकम का संग्रहण है या जहां वह धारा 52 की उपधारा (3) के अधीन कर के रूप में संग्रहीत रकम को सरकार को संदत्त करने में असफल रहता है ;

(vii) इस अधिनियम के उपबंधों या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के विपरीत चाहे पूर्णतः

या आंशिक रूप से माल या सेवाओं या दोनों की वास्तविक रसीद के बिना इनपुट कर प्रत्यय को लेता या उपभोग करता है ;

(viii) इस अधिनियम के अधीन कर की वापसी कपटपूर्ण तरीके से प्राप्त करता है ;

(ix) धारा 20 या उसके अधीन बनाए गए नियमों के विपरीत इनपुट कर प्रत्यय प्राप्त करता है या बांटता है ;

(x) इस अधिनियम के अधीन देय कर अपवंचन के आशय से या वित्तीय अभिलेखों को बदलता है या झूठलाता है या फर्जी लेखाओं या दस्तावेजों या किसी झूठी सूचना या विवरणी प्रस्तुत करता है ;

(xi) इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी तो है लेकिन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने में असफल रहता है ;

(xii) रजिस्ट्रीकरण का आवेदन करते समय या उसके बाद रजिस्ट्रीकरण के विवरण के संबंध में गलत सूचना देता है ;

(xiii) इस अधिनियम के अधीन अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने से किसी अधिकारी को रोकता है या प्रवारित करता है ;

(xiv) इस निमित्त यथा विनिर्दिष्ट दस्तावेजों के बिना कराधेय किसी माल का परिवहन कराता है ;

(xv) इस अधिनियम के अधीन कर के अपवंचन के लिए अपने टर्नओवर को छिपाता है ;

(xvi) इस अधिनियम के या तद्वीन बने नियमों के उपबंधों के अनुसरण में लेखा की पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों को बनाए रखने या प्रतिधारित करने में असमर्थ रहता है ;

(xvii) इस अधिनियम के या तद्वीन बने नियमों के उपबंधों के अनुसरण में किसी अधिकारी द्वारा मांगी गई सूचना या दस्तावेजों को प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है या इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के दौरान झूठी सूचना या दस्तावेजों को प्रस्तुत करता है ;

(xviii) ऐसे किसी माल को प्रदाय, परिवहन या भंडारण करता है जिसके लिए उसको विश्वास करने का पर्याप्त कारण है कि ये इस अधिनियम के अधीन जब्ती के लिए दायी हैं ;

(xix) अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के रजिस्ट्रीकरण संख्यांक का प्रयोग द्वारा किसी बीजक या दस्तावेज को जारी करता है ;

(xx) किसी सारभूत साक्ष्य या दस्तावेज से छेड़छाड़ करता है या नष्ट करता है ;

(xxi) किसी माल को खुर्दबुर्द या छेड़छाड़ करता है जो इस अधिनियम के अधीन रोके, जव्त या कुर्क किया हुआ था,

दस हजार रुपए या अपवंचित कर या धारा 51 के अधीन कटौती न किए गए कर या कम कटौती किए गए कर या कटौती किए गए परंतु सरकार को संदेय नहीं किए गए कर या धारा 52 के अधीन संगृहीत नहीं किए गए कर या कम संगृहीत या संगृहीत परंतु सरकार को संदत्त नहीं किए गए कर या इनपुट कर प्रत्यय पर लिए गए या अनियमित रूप से वितरित या पारित या कपटपूर्ण ढंग से दावा की गई वापसी जो भी उच्चतर हो, के समतुल्य रकम को शास्ति के रूप में संदाय करने के लिए दायी होगा ।

(2) ऐसा कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो किसी माल की पूर्ति या सेवाओं या दोनों की पूर्ति करता है जिन पर उसने कोई कर नहीं दिया है या कम संदत्त किया है या त्रुटिपूर्ण ढंग से वापस लिया या जहां इनपुट कर प्रत्यय गलत रूप से लिया है या किसी कारण से प्रयोग किया है,--

(क) कपट के कारण भिन्न या किसी जानबूझ कर गलत कथन करता या कर बचाने के लिए तथ्यों को छिपाता है, तो वह दस हजार रुपए या ऐसे व्यक्ति पर शोध्य कर का दस प्रतिशत जो उच्चतर हो, की शास्ति के लिए दायी होगा ।

(ख) कपट के उद्देश्य से या कर अपवंचन के तथ्यों का जानबूझ कर गलत कथन या छिपाता है तो वह दस हजार रुपए या ऐसे व्यक्ति पर शोध्य कर की शास्ति से, जो उच्चतर हो, दायी होगा ।

(3) कोई व्यक्ति जो--

(क) उपधारा (1) के खंड (i) से खंड (xxi) में विनिर्दिष्ट अपराधों में से किसी के लिए सहायता या दुष्प्रेरण करता है;

(ख) किसी ऐसे माल का कब्जा प्राप्त करता है या उसके परिवहन को हटाने, जमा करने, रखने, छिपाने, पूर्ति करने या विक्रय या अन्य किसी रीति में किसी प्रकार अपने को संबद्ध करता है, जिसके विषय में यह जानता है या विश्वास करने का विश्वास रखता है कि वह इस अधिनियम या तद्विनिर्मित नियमों के अधीन जवती के लिए दायी ;

(ग) किसी ऐसे माल को प्राप्त करता है या इसके पूर्ति से किसी प्रकार संबद्ध रहता है या किसी अन्य रीति में सेवा के किसी पूर्ति को करता है जिसके लिए वह जानता है या विश्वास करने का कारण रखता है यह इस अधिनियम या तद्विनिर्मित नियमों के किसी उपबंध के उल्लंघन में है;

(घ) किसी जांच में साक्ष्य या दस्तावेज को प्रस्तुत करने के लिए हाजिरी हेतु सम्मन के जारी होने पर राज्य कर के अधिकारी के समक्ष हाजिर होने में असफल रहता है;

(ङ) इस अधिनियम या तद्विनिर्मित नियमों के उपबंधों के अनुसरण में बीजक को जारी करने में असफल रहता है या अपनी लेखा पुस्तकों में बीजक के लिए कैफियत देने में असमर्थ रहता है,

ऐसी शास्ति के लिए दायी होगा जो पच्चीस हजार रुपए तक हो सकेगी ।

123. यदि कोई व्यक्ति जिससे धारा 150 के अधीन सूचना के अधीन सूचना विवरणी देना अपेक्षित है, वह उसकी उपधारा (3) के अधीन जारी नोटिस में विनिर्दिष्ट अवधि देने में असफल रहता है तो उचित अधिकारी निदेश दे सकता है कि ऐसा व्यक्ति ऐसी अवधि के प्रत्येक दिन के लिए जिसके लिए वह ऐसी विवरणी देने में असफल रहता है, के लिए सौ रुपए प्रतिदिन की शास्ति के लिए दायी होगा :

सूचना विवरणी देने में असफल रहने पर शास्ति।

परंतु यह कि इस धारा के अधीन अधिरोपित शास्ति पांच हजार से अधिक नहीं होगी ।

आंकड़े देने में असमर्थ रहने पर जुर्माना ।

124. यदि किसी व्यक्ति से धारा 151 के अधीन सूचना या विवरणी देना अपेक्षित है,--

(क) इस धारा के अधीन यथा अपेक्षित ऐसी सूचना या विवरणी देने में बिना युक्तियुक्त कारण देने में असमर्थ रहता है, या

(ख) कोई सूचना या विवरणी जिसे वह जानता है कि असत्य है, को जानबूझ कर प्रस्तुत करता है,

वह ऐसे जुर्माने से जो दस हजार तक हो सकेगा और अपराध जारी रखने की दशा में और जुर्माने से जो ऐसे प्रथम दिन जिसके दौरान अपराध जारी रहता है, के पश्चात् प्रत्येक दिन के लिए पच्चीस हजार रुपए की अधिकतम सीमा के अध्वधीन एक सौ रुपए तक के जुर्माने से दंडनीय होगा ।

साधारण शास्ति।

125. कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम या तद्विनिर्मित किन्हीं नियमों के किसी उपबंध जिसके लिए इस अधिनियम में पृथक् रूप से कोई शास्ति नहीं है, का उल्लंघन करता है, ऐसी शास्ति के लिए दायी होगा जो पच्चीस हजार रुपए तक हो सकेगी ।

शास्ति से संबंधित साधारण विधाएं ।

126. (1) इस अधिनियम के अधीन कोई अधिकारी कर विनियमन या प्रक्रियात्मक अपेक्षाओं के छोटे भंग और विशेषतः दस्तावेजीकरण में कोई लोप या गलती जिसे आसानी से शुद्ध किया जा सकता है तथा बिना कपटपूर्ण आशय या समग्र लापरवाही के बिना किए गए हैं, के लिए कोई शास्ति अधिरोपित नहीं करेगा ।

स्पष्टीकरण--इस उपधारा के प्रयोजन के लिए--

(क) यदि किसी भंग जिसमें पांच हजार रुपए से कम का कर अंतर्वलित है तो वह "छोटा भंग" माना जाएगा;

(ख) दस्तावेजीकरण में कोई लोप या गलती आसानी से शुद्ध की जा सकने वाली मानी जा सकेगी जो अभिलेख पर एक प्रत्यक्ष त्रुटि है ।

(2) इस अधिनियम के अधीन अधिरोपित शास्ति तथ्यों पर और प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर निर्भर होगी तथा यह भंग की अवस्था और गंभीरता के अनुपात में होगी ।

(3) किसी व्यक्ति पर बिना उसे सुनवाई का अवसर दिए शास्ति अधिरोपित नहीं की जाएगी।

(4) इस अधिनियम के अधीन कोई अधिकारी किसी विधि, विनियम या प्रक्रियात्मक अपेक्षा के भंग के आदेश में शास्ति अधिरोपित करते समय भंग की प्रकृति और लागू विधि, विनियम या प्रक्रियाएं जिनके अधीन विनिर्दिष्ट भंग के लिए शास्ति की रकम विनिर्दिष्ट करेगा।

(5) जब कोई व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन अधिकारी द्वारा भंग की खोज से पहले या विधि, विनियम या प्रक्रियात्मक अपेक्षाओं के भंग की परिस्थितियां इस अधिनियम के अधीन किसी अधिकारी को स्वेच्छया प्रकट कर देता है तो समुचित अधिकारी उस व्यक्ति के लिए शास्ति की गणना करते समय इस तथ्य पर न्यूनकारी घटक के रूप में विचार करेगा।

(6) इस धारा के उपबंध ऐसे मामलों में लागू नहीं होंगे जहां इस अधिनियम के अधीन विनिर्दिष्ट शास्ति या तो नियत राशि है या नियत प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त है।

127. जहां समुचित अधिकारी इस विचार का है कि व्यक्ति शास्ति के लिए दायी है और वह धारा 62 या धारा 63 या धारा 64 या धारा 73 या धारा 74 या धारा 129 या धारा 130 के अधीन किसी कार्यवाह में नहीं आती है तो वह ऐसे व्यक्ति को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् ऐसी शास्ति उदगृहीत करने का आदेश जारी कर सकेगा।

128. सरकार, अधिसूचना द्वारा, कर दाता के ऐसे वर्ग के लिए धारा 122 या धारा 123 या धारा 125 में निर्दिष्ट किसी शास्ति या धारा 47 में निर्दिष्ट किसी विलंब फीस का भागतः या पूर्णतः और परिषद् की सिफारिशों पर उसमें यथा विनिर्दिष्ट ऐसी कम करने वाली परिस्थितियों के अधीन अधित्यजन कर सकेगी।

129. (1) इस अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी जहां कोई व्यक्ति किसी माल का परिवहन या माल का भंडारण करता है जब वे अभिवहन में इस अधिनियम या तद्दीन निर्मित नियमों के उपबंधों के उल्लंघन में हैं, सभी माल और अभिवहन में उक्त माल को ले जाने के लिए परिवहन के साधनों के रूप में प्रयुक्त साधन और ऐसे माल से संबंधित दस्तावेज और अभिवहन अभिरक्षा में लेने या अभिग्रहण के लिए दायी होगा तथा अभिरक्षा या अभिग्रहण निर्मुक्त हो सकेगा—

(क) ऐसे माल पर लागू कर के और संदेय कर के 100 प्रतिशत के बराबर शास्ति के संदाय पर और छूट प्राप्त माल की दशा में माल के मूल्य के दो प्रतिशत के बराबर रकम या पच्चीस हजार रुपए जो कम हो, के संदाय पर जहां माल का प्रधान ऐसे कर और शास्ति के संदाय के लिए आगे आता है;

(ख) लागू कर के और उस पर संदत्त कर रकम द्वारा कम करके माल के मूल्य का 50 प्रतिशत के बराबर शास्ति और छूट प्राप्त माल की दशा में माल के मूल्य के पांच प्रतिशत के बराबर रकम या पच्चीस हजार रुपए जो कम हो, के संदाय पर जहां माल का प्रधान ऐसे कर और शास्ति के संदाय के लिए आगे आता है;

(ग) ऐसे प्ररूप और रीति जो विहित की जाएं, में खंड (क) या खंड (ख) के अधीन संदेय रकम के समतुल्य प्रतिभूति को देने पर :

परंतु यह कि इस प्रकार का माल या अभिवहन माल का परिवहन करने के लिए व्यक्ति पर अभिरक्षा या अभिग्रहण के आदेश के तामील कराए बिना अभिरक्षा में या अभिग्रहण में नहीं लिया जाएगा।

(2) धारा 67 की उपधारा (6) के उपबंध माल की अभिरक्षा और अभिग्रहण और प्रवहन के लिए यथा आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

(3) माल की अभिरक्षा या अभिग्रहण या प्रवहन करने वाला समुचित अधिकारी कर और संदेय शास्ति को विनिर्दिष्ट करते हुए नोटिस जारी करेगा और उसके पश्चात् खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन संदेय कर और शास्ति के लिए एक आदेश पारित करेगा।

(4) बिना संबद्ध व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए व्याज या शास्ति उपधारा (3) के अधीन अवधारित नहीं की जाएगी।

(5) उपधारा (1) में निर्दिष्ट रकम के संदाय पर उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट नोटिस की बाबत सभी कार्यवाहियां समाप्त समझी जाएंगी।

कतिपय मामलों में शास्ति अधिरोपित करने की शक्ति।

शास्ति या फीस या दोनों के अधित्यजन करने की शक्ति।

अभिरक्षा, अभिग्रहण और माल की निर्मुक्ति तथा अभिवहन में प्रवहन।

(6) जहाँ किसी माल का परिवहन करने वाला व्यक्ति या माल का स्वामी उपधारा (1) में यथा उपबंधित कर और शास्ति की रकम का संदाय करने में ऐसी अभिरक्षा या अभिग्रहण के सात दिन में असफल रहता है तो अन्य कार्यवाहियां धारा 130 की शर्तों के अनुसार आरंभ की जाएंगी :

परंतु यह कि जहाँ अभिरक्षा या अभिग्रहण का माल शीघ्र नष्ट होने योग्य या खतरनाक या समय के साथ मूल्य में ह्रास की प्रकृति का है तो उक्त सात दिन की अवधि समुचित अधिकारी द्वारा कम की जा सकेगी ।

माल की जब्ती
या प्रवहण और
शास्ति का
उद्ग्रहण ।

130. (1) इस अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति--

(i) इस अधिनियम के उपबंधों या उसके अधीन निर्मित नियमों के किसी उल्लंघन में माल की पूर्ति या प्राप्ति कर संदाय के अपवंचन के आशय से करता है; या

(ii) किसी माल के लिए लेखा नहीं रखता है जिस पर वह उस अधिनियम के अधीन कर संदाय के लिए दायी है; या

(iii) रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन किए बिना इस अधिनियम के अधीन कर योग्य किसी माल की पूर्ति ; या

(iv) इस अधिनियम के किन्हीं उपबंधों या तद्धीन बने नियमों का उल्लंघन कर संदाय के अपवंचन के आशय से करता है; या

(v) इस अधिनियम के उपबंधों के उल्लंघन में माल को ढोने के लिए परिवहन के रूप में किसी प्रवहण का प्रयोग करता है जब तक कि प्रवहण का प्रधान यह सिद्ध न कर दे कि उसका या उसके ऐजेंट की बिना जानकारी या गठजोड़ के यह कार्य हुआ है,

तब ऐसा सभी माल या प्रवहण जब्ती के लिए दायी होगा और वह व्यक्ति धारा 122 के अधीन शास्ति के लिए दायी होगा ।

(2) जब कभी किसी माल या प्रवहण की जब्ती इस अधिनियम द्वारा प्राधिकृत है तो उसको न्यायनिर्णयन करने वाला अधिकारी माल के स्वामी को जब्त माल के स्थान पर ऐसा जुर्माना जो उक्त अधिकारी ठीक समझे, संदाय करने का विकल्प दे सकेगा :

परंतु यह कि ऐसा उद्ग्रहणीय जुर्माना जब्त माल के बाजार मूल्य से अधिक तथा उस पर प्रभारित कर से कम नहीं होगा :

परंतु यह और कि ऐसा जुर्माना और उद्ग्रहणीय शास्ति धारा 129 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय शास्ति की रकम से कम नहीं होगा :

परंतु यह भी कि जहाँ माल को ढोने या भाड़े पर यात्रियों को ढोने में प्रयुक्त कोई ऐसा प्रवहण या प्रधान को जब्त प्रवहण के स्थान पर उसमें परिवहन किए माल पर संदेय कर के बराबर जुर्माना संदेय करने का विकल्प किया जा सकेगा ।

(3) जहाँ उपधारा (2) के अधीन अधिरोपित माल या प्रवहण की जब्ती के स्थान पर उपधारा (1) में निर्दिष्ट ऐसे माल का स्वामी या प्रवहण या व्यक्ति इसके अतिरिक्त किसी ऐसे माल का प्रवहण की बाबत शास्ति और शोधय प्रभारों के लिए दायी होगा ।

(4) माल या प्रवहण की जब्ती या शास्ति का अधिरोपण का आदेश उस व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए बिना नहीं जारी किया जाएगा ।

(5) जहाँ इस अधिनियम के अधीन किसी माल या प्रवहण को जब्त कर लिया गया है वहाँ ऐसे माल या प्रवहण का स्वामित्व सरकार में निहित हो जाएगा ।

(6) जब्ती के न्यायनिर्णयन का समुचित अधिकारी जब्त वस्तुओं का कब्जा लेगा और धारण करेगा तथा प्रत्येक पुलिस अधिकारी ऐसे समुचित अधिकारी की अपेक्षा पर ऐसा कब्जा लेने और धारण करने में उसको सहयोग करेगा ।

(7) समुचित अधिकारी स्वयं के समाधान के पश्चात् कि जब्त माल या प्रवहण इस अधिनियम की धारा के अधीन किसी अन्य कार्यवाहियों में अपेक्षित नहीं है और जब्ती के स्थान पर जुर्माना देने के लिए तीन मास से अनधिक युक्तियुक्त समय देने के पश्चात् ऐसे माल या प्रवहण का निस्तारण करेगा और उसके विक्रय उत्पाद सरकार को जमा करेगा ।

1974 का 2

131. दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना इस अधिनियम और तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के अधीन की गई जब्ती या अधिरोपित शास्ति किसी अन्य दंड जो उससे प्रभावित व्यक्ति को इस अधिनियम या प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन दायी है, के दंड से प्रवारित करेगा।

जब्ती या शास्ति अन्य दंडों से व्यतिरेक नहीं करेगा।

132. (1) जो निम्नलिखित में से किसी दंड को कारित करता है, अर्थात् :--

कतिपय अपराधों के लिए दंड।

(क) इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उल्लंघन में किसी बीजक को जारी किए बिना किसी माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति अपवंचन के आशय से करता है;

(ख) इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उल्लंघन में गलत प्राप्ति या निक्षेप कर प्रत्यय के प्रयोग या कर की वापसी के लिए माल या सेवा या दोनों की पूर्ति बिना बीजक या बिल के जारी करना;

(ग) खंड (ख) में निर्दिष्ट ऐसे बीजक या बिल में प्रयोग का इनपुट कर प्रत्यय को प्राप्त करता है;

(घ) कोई रकम कर के रूप में संगृहीत करता है किन्तु उसे उस तारीख से जिसको ऐसा संदाय देय हो जाता है, तीन मास की अवधि के पश्चात् तक सरकार को संदाय करने में असफल होता है;

(ङ) कर अपवंचन, कपट से इनपुट कर प्रत्यय की प्राप्ति या कपट से वापसी प्राप्त करना और जहां ऐसा अपराध खंड (क) से (घ) में नहीं आता;

(च) इस अधिनियम के अधीन शोध्य कर के संदाय से अपवंचन के आशय से या तो वित्तीय अभिलेखों को बदलता है या झूठलाता है या झूठे लेखा या दस्तावेज प्रस्तुत करता है या किसी झूठी सूचना को प्रस्तुत करता है;

(छ) इस अधिनियम के अधीन किसी अधिकारी को उसके कर्तव्यों के निर्वहन से रोकता है या प्रवारित करता है;

(ज) किसी माल जिसे वह जानता है या विश्वास करने का कारण रखता है कि वह इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों को जप्त करने के लिए दायी है, उसका कब्जा अर्जित करता है या परिवहन में स्वयं को किसी माध्यम से संबद्ध करता है, हटाता है या जमा करता है, रखता है, छिपाता है, पूर्ति करता है या विक्रय करता है या किसी अन्य रीति में निपटाता है;

(झ) किसी माल को प्राप्त करता है या किसी अन्य प्रकार से उसके पूर्ति से संबद्ध रहता है या किसी अन्य रीति में सेवा पूर्ति में लगा रहता है जिसको वह जानते हुए करता है या विश्वास करने का कारण रखता है कि इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के उल्लंघन में है;

(ञ) किसी सारभूत साक्ष्य या दस्तावेज से छेड़छाड़ करता है या नष्ट करता है;

(ट) किसी सूचना देने में असफल रहता है जिसे उसे इस अधिनियम में या तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के अधीन पूर्ति के लिए वह अपेक्षित है (बिना युक्तियुक्त विश्वास सहित, सिद्ध करने का भार जो उस पर है कि उसके द्वारा पूर्ति की गई सूचना सत्य है) या झूठी सूचना देता है, या

(ठ) इस धारा के खंड (क) से खंड (ट) में निर्दिष्ट अपराधों में से किसी के कारित करने का प्रयास करता है या दुष्प्रेरण करता है,

दंडनीय होगा--

(i) जहां कर अपवंचन की रकम या गलत रूप से ली गई निवेश के प्रत्यय की रकम या प्रयोग की जा चुकी या वापस प्राप्त की गई रकम पांच सौ लाख रुपए से अधिक ऐसे कारावास से जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा और जुर्माने से;

(ii) जहां कर अपवंचन की रकम या गलत रूप से ली गई निवेश के प्रत्यय की रकम या प्रयोग की जा चुकी या वापस प्राप्त की गई रकम दो सौ लाख रुपए से अधिक है लेकिन पांच सौ लाख रुपए से अनधिक है तो ऐसे कारावास से जो तीन वर्ष तक हो सकेगा और जुर्माने से;

(iii) जहां कर अपवंचन की रकम या गलत रूप से ली गई निवेश के प्रत्यय की रकम या प्रयोग की जा चुकी या वापस प्राप्त की गई रकम एक सौ लाख रुपए से अधिक लेकिन दो सौ लाख रुपए से अनधिक है तो ऐसे कारावास से जो एक वर्ष तक हो सकेगा और जुर्माने से;

(iv) खंड (च) या खंड (छह) या खंड (ज) में विनिर्दिष्ट किसी अपराध को करता है या अपराध को करने के लिए दुष्प्रेरण करता है तो वह ऐसे कारावास से जो छह मास तक हो सकेगा या जुर्माने से या

दोनों से दंडनीय होगा।

(2) यदि कोई व्यक्ति जो इस धारा के अधीन अपराध का दोषसिद्ध है तथा पुनः इस धारा के अधीन दोषसिद्ध होता है तो वह दूसरे और प्रत्येक पश्चात्कर्ती अपराध के लिए ऐसे कारावास से जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा और जुर्माने से,

(3) उपधारा (1) के खंड (i), (ii) और (iii) और उपधारा (2) में निर्दिष्ट कारावास विशेष और उचित कारण जिन्हें न्यायालय के निर्णय में अभिलिखित की गई है की अनुपस्थिति में छह मास से कम अवधि का नहीं होगा।

1974 का 2

(4) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए इस अधिनियम के अधीन सभी अपराध उपधारा (5) में निर्दिष्ट अपराधों के सिवाय असंज्ञेय और जमानतीय होगा।

(5) उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) या खंड (घ) में विनिर्दिष्ट और उस उपधारा के खंड (i) के अधीन दंडनीय अपराध संज्ञेय और गैर जमानतीय होगा।

(6) कोई व्यक्ति आयुक्त की पूर्व अनुमति बिना इस धारा के अधीन किसी अपराध के लिए अभियोजित नहीं किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए पद "कर" में अपवंचित कर की रकम या गलत रूप से रखी गई कर प्रत्यय की रकम या प्रयुक्त की गई रकम या उस अधिनियम के उपबंधों के अधीन गलत रूप से ली गई रकम केंद्रीय माल और सेवाकर अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवाकर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम के अधीन उदगृहीत उपकर सम्मिलित है।

133. (1) जहां कोई व्यक्ति जो धारा 151 के अधीन सांख्यिकियों के संग्रहण या समेकन या उनके कंप्यूटरीकरण या यदि धारा 150 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट सूचना तक पहुंच के लिए राज्य कर का कोई अधिकारी लगा हुआ है या समान पोर्टल पर सेवा के उपबंधों के संबंध में लगा कोई व्यक्ति या यदि समान पोर्टल या अभिकर्ता जानबूझकर इस अधिनियम अध्याधीन निर्मित नियमों के अधीन किसी विवरणी के अंश उक्त धाराओं के अधीन उसके कर्तव्यों के निष्पादन से अन्यथा या इस अधिनियम के अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य अधिनियम के अधीन किसी अपराध के अभियोजन के प्रयोजन के लिए वह ऐसे कारावास से जो छह मास तक का होगा या जुर्माने से जो पच्चीस हजार रुपए या दोनों से दंडनीय होगा।

अधिकारियों और कतिपय अन्य व्यक्तियों का दायित्व।

(2) कोई व्यक्ति,—

(क) जो सरकारी सेवक है, इस धारा के अधीन किसी अपराध के लिए सरकार की बिना पूर्व अनुमति के अभियोजित नहीं किया जा सकेगा;

(ख) जो सरकार सेवक नहीं है, इस धारा के अधीन अपराध के लिए आयुक्त की बिना पूर्व अनुमति के अभियोजित नहीं किया जा सकेगा।

अपराध का संज्ञान।

134. न्यायालय इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के अधीन दंडनीय किसी अपराध या संज्ञान बिना आयुक्त की पूर्व अनुमति के नहीं लेगा और प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट से कम का न्यायालय से अपराध का विचारण नहीं करेगा।

आपराधिक मानसिक दशा का अनुमान।

135. इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध का अभियोजन जो आपराधिक मानसिक दशा अभियुक्त के भाग पर अपेक्षित है, न्यायालय ऐसी मानसिक दशा की विद्यमानता को अनुमान लगाएगा लेकिन अभियुक्त के लिए यह तथ्य सिद्ध करने के लिए यह बचाव होगा कि वह इस अभियोजन में अपराध के रूप में आरोपित कार्य की बावत इस मानसिक स्थिति का नहीं था।

स्पष्टीकरण—

(i) "आपराधिक मानसिक दशा" पद में आशय, उद्देश्य, तथ्य का ज्ञान और उसमें विश्वास या विश्वास करने का कारण, एक तथ्य है;

(ii) एक सिद्ध किया हुआ केवल तब कहा जाएगा जब न्यायालय इस पर बिना युक्तयुक्त संदेय के विश्वास करता है और केवल जब इसकी विद्यमानता प्राथमिकता की संभाव्यता द्वारा स्थापित है।

कतिपय परिस्थितियों के अधीन कथनो की

136. इस अधिनियम के अधीन किसी जांच या कार्यवाहियों के दौरान धारा 70 के अधीन जारी किसी सम्मन के संदर्भ में हाजिर व्यक्ति द्वारा किया और हस्ताक्षरित कथन इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के लिए किसी अभियोजन में सिद्ध करने के प्रयोजन के लिए सुसंगत होगा, तथ्य की सत्यता

सुसंगतता ।

जिसमें होगा-

(क) जब कोई व्यक्ति जिसने कथन किया था मर गया है या नहीं मिल पा रहा है या साक्ष्य देने में अक्षम है या विरोधी पक्ष द्वारा तरीके से भिन्न या जिसको देरी के बिना उपस्थिति नहीं प्राप्त की जा सकती है, मामले की परिस्थितियों के अधीन न्यायालय अनौचित्यपूर्ण मानेगा; या

(ख) जब किसी व्यक्ति जिसने कथन किया है और न्यायालय के समक्ष मामले में साक्षी के रूप में उसका परीक्षण किया गया है और न्यायालय का मत है कि मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कथन को न्यायहित में साक्ष्य के रूप में स्वीकार किया जाएगा ।

कंपनियों द्वारा
अपराध ।

137. (1) जहां कोई अपराध, किसी कंपनी द्वारा किया गया है, वहां ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अपराध के किए जाने के समय उस कंपनी के कारबार के संचालन के लिए उस कंपनी का भारसाधक और उसके प्रति उत्तरदायी था और साथ ही वह कंपनी भी, ऐसे अपराध के दोषी समझे जाएंगे और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही किए जाने और दंडित किए जाने के भागी होंगे :

(2) उपधारा (1) में किसी बात के होते हुए भी, जहां इस अधिनियम के अधीन दंडनीय कोई अपराध, किसी कंपनी द्वारा किया गया है और यह साबित हो जाता है कि वह अपराध कंपनी के किसी निदेशक, प्रबंधक, सचिव या अन्य अधिकारी की सहमति या मौनानुकूलता से किया गया है या उस अपराध का किया जाना उसकी किसी उपेक्षा के कारण माना जा सकता है, वहां ऐसा निदेशक, प्रबंधक, सचिव या अन्य अधिकारी भी उस अपराध का दोषी समझा जाएगा और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही किए जाने और दंडित किए जाने का भागी होगा ।

(3) जहां इस अधिनियम के अधीन कोई दंडनीय अपराध किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी भागीदारी फर्म या किसी सीमित दायित्व भागीदारी या किसी हिन्दू अविभक्त परिवार या किसी न्यास के भागीदार या कर्ता या प्रबंध, न्यासी होने के कारण किया जाता है, उक्त अपराध का दोषी समझा जाएगा और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही के लिए किए जाने के अधीन दायी होंगे । ऐसे व्यक्तियों को उपधारा (2) के उपबंध आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे ।

(4) इस धारा में अंतर्विष्ट कोई बात किसी ऐसे व्यक्ति को इस अधिनियम में उपबंधित किसी दंड का भागी नहीं बनाएगी यदि वह यह साबित कर देता है कि अपराध उसकी जानकारी के बिना किया गया था या उसे ऐसे अपराध के किए जाने का निवारण करने के लिए सम्यक् तत्परता बरती थी ।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए,—

(i) "कंपनी" से कोई निगमित निकाय अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत फर्म या व्यष्टियों का अन्य संगम है ; और

(ii) फर्म के संबंध में, "निदेशक" से उस फर्म का भागीदार अभिप्रेत है ।

138. (1) इस अधिनियम के अधीन कोई अपराध या तो अभियोजन के संस्थित करने या उसके पश्चात् अपराध के अभियुक्त व्यक्ति द्वारा, यथास्थिति, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार को ऐसे प्रशमन रकम को ऐसी रीति से संदाय पर, जो विहित की जाए, आयुक्त द्वारा प्रशमन होगा :

अपराधों का
प्रशमन ।

परंतु इस धारा की कोई बात निम्नलिखित को लागू नहीं होगी—

(क) कोई व्यक्ति जो धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (क) से खंड (च) में विनिर्दिष्ट किसी अपराध के संदर्भ में प्रशमित होने के लिए अनुज्ञात किया गया था और खंड (1) में विनिर्दिष्ट अपराध जिससे उक्त उपधारा के खंड (क) से खंड (च) में विनिर्दिष्ट अपराध से संबंधित है ;

(ख) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन या एक करोड़ रुपए से अत्यधिक मूल्य की पूर्ति के संबंध में, किसी राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के उपबंधों के अधीन जो खंड (क) से भिन्न किसी अपराध के संबंध में एक बार प्रशमन के लिए अनुज्ञात किया गया था ;

(ग) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध को करने का अभियुक्त है, जिसने तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन कोई अपराध भी किया है ;

(घ) कोई व्यक्ति जो किसी न्यायालय द्वारा इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के लिए दोषसिद्ध हो चुका है ;

(ङ) कोई व्यक्ति जो धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (छह) या खंड (ज) या खंड (ट)

में विनिर्दिष्ट कोई अपराध कारित करने के लिए अभियुक्त है ; और

(च) कोई अन्य व्यक्तियों या अपराधों का वर्ग जो विनिर्दिष्ट किया जाए :

परंतु यह और कि इस धारा के उपबंधों के अधीन कोई प्रथमन अनुज्ञात होगा जो किसी अन्य विधि के अधीन संस्थित कार्रवाईयों, यदि कोई हों, पर प्रभाव नहीं डालता :

परंतु यह और भी कि ऐसे अपराधों में केवल अंतर्वलित कर, व्याज और शास्ति का संदाय करने के पश्चात् प्रथमन अनुज्ञात होगा ।

(2) इस धारा के अधीन अपराधों के प्रथमन के लिए रकम, न्यूनतम रकम दस हजार रुपए या अंतर्वलित कर के पचास प्रतिशत, इनमें से जो भी अधिक हो, से कम नहीं होने और अधिकतम रकम तीस हजार रुपए या कर के एक सौ पचास प्रतिशत, इनमें से जो भी अधिक हो, से कम नहीं होने के अध्यधीन रहते हुए, ऐसी होगी, जो विहित की जाए ।

(3) आयुक्त द्वारा अवधारित ऐसे प्रथमन रकम के संदाय पर समान अपराध और किसी अन्य दांडिक कार्यवाहियों के संबंध में अभियुक्त व्यक्ति के विरुद्ध इस अधिनियम के अधीन संस्थित नहीं होंगी, यदि उक्त अपराध के संबंध में पहले से ही संस्थित है, समाप्त हो जाएगी ।

अध्याय 20

संक्रमणकालीन उपबंध

विद्यमान
करदाताओं का
प्रवर्जन ।

139. (1) नियत दिन से ही विद्यमान विधियों में से किसी के अधीन रजिस्ट्रीकृत और विधिमान्य स्थायी खाता संख्यांक रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए अंतिम आधार पर ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी होगा, जिसे जब तक कि उपधारा (2) के अधीन अंतिम प्रमाणपत्र द्वारा प्रतिस्थापित नहीं कर दिया जाता, रद्दकरण के लिए दायी होगा यदि इस प्रकार विहित शर्तों का अनुपालन नहीं किया जाता है ।

(2) रजिस्ट्रीकरण का अंतिम प्रमाणपत्र ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में तथा ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, प्रदान किया जाएगा ।

(3) उपधारा (1) के अधीन किसी व्यक्ति को जारी रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी किया गया नहीं समझा जाएगा यदि उक्त रजिस्ट्रीकरण ऐसे व्यक्ति द्वारा फाइल किए गए किसी आवेदन के अनुसरण में निरस्त है कि वह धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं था ।

निवेश प्रतिदेय
कर के लिए
संक्रमणकालीन
व्यवस्थाएं ।

140. (1) धारा 10 के अधीन कर संदाय का विकल्प देने वाले किसी व्यक्ति से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, अपने इलेक्ट्रानिक जमा खाता में, नियत दिन से ठीक पूर्ववर्ती दिन को समाप्त होने वाली अवधि से संबंधित विवरणी, जिसे उसके द्वारा विद्यमान विधि के अधीन ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रस्तुत किया गया है, मूल्यवर्धित कर की रकम के प्रत्यय को अग्रणीत करने के लिए हकदार होगा :

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति निम्नलिखित परिस्थितियों में प्रत्यय लेने के लिए अनुज्ञात नहीं होगा, अर्थात् :-

(i) जहां प्रत्यय की उक्त रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय नहीं है ; या

(ii) जहां वह नियत दिन के तत्काल पूर्व छह मास की अवधि के लिए विद्यमान विधि के अधीन अपेक्षित सभी विवरणी को नहीं देता है ;

परंतु यह और कि उक्त प्रत्यय की उतनी रकम, जो केंद्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 धारा 3, धारा 5 की उपधारा (3), धारा 6, धारा 6क या धारा 8 की उपधारा (8) से संबंधित किसी ऐसे दावे के कारण है, जिसे केंद्रीय विक्रय कर (रजिस्ट्रीकरण और आवर्त) नियम, 1957 के नियम 12 में विहित रीति और अवधि के भीतर सिद्ध नहीं किया गया है, इलेक्ट्रानिक जमा खाते में जमा किए जाने की पात्र नहीं होगी :

परंतु यह भी कि दूसरे परंतुक में विनिर्दिष्ट प्रत्यय की समतुल्य रकम का उस समय विद्यमान विधि के अधीन प्रतिदाय किया जाएगा जब उक्त दावों को केंद्रीय विक्रय कर (रजिस्ट्रीकरण और आवर्त) नियम, 1957 के नियम 12 में विहित रीति में सिद्ध कर दिया जाता है ।

(2) धारा 10 के अधीन संदेय कर का विकल्प देने वाले व्यक्ति से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति

पूँजी माल के संबंध में अनुपभुक्त इनपुट कर प्रत्यय की जमा अपने इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते में लेने का, जो विवरणी में अग्रणीत नहीं की है, उसके द्वारा विद्यमान विधि के अधीन ऐसी विहित रीति में नियत दिन के तत्काल पूर्ववर्ती दिन लेने को समाप्ति अवधि के लिए हकदार होगा :

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विद्यमान विधि के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय उक्त जमा को जब तक जमा करने के लिए अनुज्ञात नहीं होगा और जब तक कि इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में भी अनुज्ञेय है।

स्पष्टीकरण--इस धारा के प्रयोजन के लिए "अनुपभुक्त इनपुट कर प्रत्यय" पद से वह रकम अभिप्रेत है जो कि निवेश प्रतिदेय कर की रकम के घटाने के पश्चात् शेष रहती है जिसका उक्त व्यक्ति ने इनपुट कर प्रत्यय की औसत रकम से विद्यमान विधि के अधीन कराधेय व्यक्ति द्वारा पूँजी माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय की रकम प्राप्त कर ली है जो विद्यमान विधि के अधीन उक्त पूँजी माल के संबंध में हकदार था ;

(3) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो विद्यमान विधि के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं था या जो किसी विद्यमान विधि के अधीन ऐसे छूट प्राप्त या कर मुक्त मालों, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, के विक्रय में लगा है, किंतु जो इस अधिनियम के अधीन कर के दायी हैं (या जहां व्यक्ति मालों के विक्रय के समय इनपुट कर प्रत्यय के लिए हकदार था), अपने इलेक्ट्रॉनिक जमा खातों में स्टॉक में धारित इनपुटों और स्टॉक में धारित अर्ध-निर्मित माल या निर्मित मालों में अंतर्विष्ट इनपुटों के संबंध में नियत दिन को मूल्यवर्धित कर के प्रत्यय के लिए निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, हकदार होगा, अर्थात् :--

(i) इस अधिनियम के अधीन कराधेय पूर्ति करने के लिए ऐसे निवेश या मालों के उपयोग या कराधेय पूर्ति करने के लिए उपयोग के आशयित है ;

(ii) इस अधिनियम के अधीन उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे निवेशों पर निवेश प्रतिदेय कर के लिए पात्र होगा ;

(iii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अपने कब्जे में बीजक या ऐसे अन्य विहित दस्तावेज, जो ऐसे इनपुटों के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन कर के संदाय के साक्ष्य स्वरूप है, रखता है ;

(iv) नियत दिन के तत्काल पूर्ववर्ती बारह मासों से पूर्वतर जारी किए गए ऐसे बीजक या विहित दस्तावेज जारी नहीं किए गए थे ;

परंतु जहां किसी विनिर्माता या सेवाओं के प्रदाता से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इनपुटों के संबंध में कर के संदाय का साक्ष्य कोई बीजक या कोई अन्य दस्तावेज नहीं रखता है तब ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसी शर्तों, सीमाओं और सुरक्षा उपायों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, जिसके अंतर्गत उक्त कराधेय व्यक्ति ऐसी जमा के लाभ हस्तांतरित करने को प्राप्तकर्ता को मूल्य की कमी के द्वारा ऐसे जमा को, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसी दर पर जमा करने का अनुज्ञात होगा।

(4) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो विद्यमान विधि के अधीन ऐसे कराधेय मालों के साथ-साथ छूट प्राप्त मालों या कर मुक्त मालों, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, किंतु जो इस अधिनियम के अधीन कर के दायी हैं, के विनिर्माण में लगा है, अपने इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते में लेने का हकदार होगा,--

(क) उपधारा (1) के उपबंधों के अनुसरण में उसके द्वारा विद्यमान विधि के अधीन दी गई किसी विवरणी में अग्रणीत मूल्यवर्धित कर के जमा की रकम ; और

(ख) उपधारा (3) के उपबंधों के अनुसरण में ऐसे छूट प्राप्त मालों या कर मुक्त मालों, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, के संबंध में नियत दिन को स्टॉक में रखे गए इनपुटों और अर्ध-निर्मित या तैयार मालों में अंतर्विष्ट इनपुटों के संबंध में मूल्यवर्धित कर के प्रत्यय की रकम।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति नियत दिन को या उसके पश्चात् प्राप्त इनपुटों के संबंध में अपने इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते में मूल्यवर्धित कर की जमा को लेने का हकदार होगा, किंतु जिसके संबंध में कर का संदाय विद्यमान विधि के अधीन पूर्तिकार द्वारा किया गया है, इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उसके बीजक या किसी अन्य कर संदाय संबंधी दस्तावेज को, नियत दिन से तीस दिन की अवधि के भीतर ऐसे व्यक्ति की लेखा बहियों में लेखबद्ध किया गया था :

परंतु तीस दिन की अवधि पर्याप्त कारण दर्शित करने पर तीस दिन की और अधिक अवधि आयुक्त द्वारा विस्तारित होगी :

परंतु यह और कि उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस उपधारा के अधीन जमा के संबंध में ऐसी रीति में,

जो विहित की जाए, विवरणी देगा।

(6) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो या तो किसी नियत दर पर कर का संदाय करता था या विद्यमान विधि के अधीन संदाय योग्य कर के बदले में नियत रकम का संदाय करता था, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए नियत दिन को अपने स्टॉक में अंतर्विष्ट अर्ध-निर्मित या निर्मित मालों के निवेश को स्टॉक में धारित स्टॉक और निवेश के संबंध में पात्र शुल्क की जमा अपने इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते में लेने का हकदार होगा, अर्थात् :-

(i) इस अधिनियम के अधीन कराधेय पूर्ति करने के लिए ऐसे निवेश या माल का उपयोग किया जाता है या उपयोग किए जाने के लिए आशयित है ;

(ii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 10 के अधीन कर संदाय नहीं करता है ;

(iii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन ऐसे निवेशों पर इनपुट कर प्रत्यय के लिए पात्र है ;

(iv) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निवेश के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन शुल्क के संदाय के साक्ष्य के रूप में बीजक या अन्य विहित दस्तावेज के हैं ; और

(v) ऐसे बीजक और अन्य विहित दस्तावेज नियत तारीख के तत्काल पूर्व बारह मास से पूर्व जारी नहीं किए गए थे।

(7) उपधारा (3), उपधारा (4) और उपधारा (6) के अधीन प्रत्यय की रकम ऐसी रीति में प्रगणित होगी, जो विहित की जाए।

141. (1) नियत दिन से पूर्व विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में, जहां कोई इनपुट, कारबार के एक स्थान पर प्राप्त होता है और उसे उसी रूप में आगे और प्रसंस्करण, जांच, मरम्मत, पुनर्नूकूलन या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या किसी कर्मकार को आंशिक रूप से प्रसंस्करण के पश्चात् प्रेषित कर दिया जाता है और ऐसे इनपुटों को उक्त स्थान पर नियत दिन को या उसके पश्चात् वापस भेजा जाता है तो उस समय कोई कर संदेय नहीं होगा, यदि ऐसे इनपुटों को फुटकर काम के पूरा होने के पश्चात् या अन्यथा नियत दिन से छह मास के भीतर उक्त स्थान पर वापस भेज दिया जाता है :

फुटकर काम के संबंध में संक्रमणकालीन उपबंध।

परंतु छह मास की अवधि पर्याप्त हेतुक दर्शाए जाने पर दो मास से अनधिक की अतिरिक्त अवधि के लिए आयुक्त द्वारा बढ़ायी जा सकती :

परंतु यह और कि यदि ऐसा इनपुट छह मास की अवधि के भीतर या विस्तारित अवधि के भीतर वापस नहीं लौटाया जाता है तो इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खण्ड (क) के उपबन्धों के अनुसार वसूल किये जाने का दायी होगा :

(2) जहां कोई अर्ध तैयार माल कारबार के किसी स्थान से नियत दिन से पूर्व विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसार कतिपय विनिर्माणकारी प्रक्रियाएँ करने के लिए किसी अन्य परिसर को प्रेषित किया गया था और ऐसा माल (जिसे इसके पश्चात् इस उपधारा में "उक्त माल" कहा गया है) नियत दिन को या उसके पश्चात् उक्त स्थान को वापस लौटाया जाता है तो कोई कर संदेय नहीं होगा यदि उक्त माल, विनिर्माणकारी प्रक्रियाएँ करने या अन्यथा के पश्चात् नियत दिन से छह मास के भीतर उक्त स्थान को लौटा दिया जाता है :

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छह मास की अवधि को दो मास से अनधिक अवधि तक बढ़ाने के लिए आयुक्त द्वारा विस्तार किया जाएगा :

परन्तु यह और कि यदि उक्त माल को इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस नहीं किया जाता है, इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खंड (क) के उपबंधों के अनुसरण में वसूल करने के लिए दायी होगा :

परन्तु यह भी कि मालों को प्रेषित करने वाला व्यक्ति, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में, नियत दिन से भारत में कर के संदाय पर किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के परिसरों में उक्त मालों को, वहां से आगे उनका कहीं और पूर्ति करने के प्रयोजन के लिए या, यथास्थिति, छह मास के भीतर या विस्तारित अवधि के भीतर निर्यात के लिए कर के संदाय के बिना अंतरित कर सकेगा।

(3) जहां कारबार के स्थान पर कोई विनिर्मित किया गया उत्पाद-शुल्क योग्य माल विनिर्माता को

बिना बताए किसी अन्य प्रक्रिया अथवा बाहर परीक्षण कराए जाने हेतु शुल्क के बिना संदाय के किसी अन्य परिसर में हटा दिया गया था विद्यमान विधि के अनुसरण में नियत की गई तारीख और ऐसे माल के लिए पूर्व में उक्त स्थान पर अथवा नियत की गई तारीख के पश्चात् वापस किया जाता है, कोई कर संदेय नहीं होगा यदि उक्त माल परीक्षण के अधीन अथवा किसी अन्य प्रक्रिया से नियुक्त तारीख से छह मास के भीतर उक्त स्थान पर वापस किया जाता है :

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छह मास की अवधि को, आयुक्त द्वारा दो मास से अनधिक की आगे और अवधि के लिए विस्तारित किया जाएगा :

परन्तु यह और कि यदि उक्त माल को इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस नहीं किया जाता है, इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खंड (क) के उपबंधों के अनुसरण में वसूल करने के लिए दायी होगा :

परन्तु यह भी कि मालों को प्रेषित करने वाला व्यक्ति, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में, नियत दिन से भारत में कर के संदाय पर किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के परिसरों में उक्त मालों को, वहां से आगे उनका कहीं और पूर्ति करने के प्रयोजन के लिए या, यथास्थिति, छह मास के भीतर या विस्तारित अवधि के भीतर निर्यात के लिए कर के संदाय के बिना अंतरित कर सकेगा ।

(4) उपधारा (1), उपधारा (2) और उपधारा (3) के अधीन कर उस समय संदेय नहीं होगा, यदि केवल विनिर्माता और कार्य-कर्मकार यथाविनिर्दिष्ट समय के भीतर और उस प्ररूप और रीति में नियत तारीख पर विनिर्माता की ओर से कार्य-कर्मकार द्वारा स्टॉक में रखे माल अथवा निवेश के व्यौरे में घोषणा करेगा ।

प्रकीर्ण संक्रमण
कालीन उपबंध ।

142. (1) जहां किसी माल पर कोई कर, यदि कोई है, उसके विक्रय के समय पर विद्यमान विधि के अधीन देय किया गया था, नियत तारीख से पूर्व छह मास अपेक्षा पूर्व का समय ना हुआ हो, नियत तारीख के पश्चात् अथवा कारबार के स्थान पर वापस किया जाता है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विद्यमान विधि के अधीन देय शुल्क के वापस किए जाने के लिए पात्र होगा जहां ऐसा माल नियत तारीख से छह मास की अवधि के भीतर कारबार के उक्त स्थान के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के अलावा किसी व्यक्ति को वापस किया जाता है तथा ऐसे माल का उचित अधिकारी के समाधान होने पर पहचान की जानी है :

परन्तु यह कि उक्त माल रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा वापस किया जाता है, ऐसे माल की वापसी आपूर्ति के लिए समझी जाएगी ।

(2) क) जहां नियत तारीख से पूर्व में किसी करार के अनुसरण में, किसी माल अथवा सेवा या दोनों की कीमत नियत तारीख के पश्चात् अथवा उससे पूर्व ऊपर की ओर पुनरीक्षित की जाती है, ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को ऐसे पुनरीक्षित कीमत की 30 दिन की अवधि के भीतर जैसा विहित किया जाए ऐसी विशिष्टियों में अंतर्विष्ट अनुपूरक बीजक अथवा डेबिट नोट को पाने के लिए ऐसे माल या सेवा अथवा दोनों के जारी किए जाने का उपबंध किया गया था या हटा दिया गया था तथा इस अधिनियम के उद्देश्य के लिए ऐसे अनुपूरक बीजक अथवा नामे नोट को इस नियम के अधीन की गई बाहरी आपूर्ति के संबंध में जारी किया समझा जाएगा ।

(ख) जहां नियत तारीख से पूर्व में किसी करार के अनुसरण में, किसी माल अथवा सेवा या दोनों की कीमत नियत तारीख के पश्चात् अथवा उससे पूर्व नीचे की ओर पुनरीक्षित की जाती है, ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को, जिसने मालों का विक्रय किया था, ऐसे पुनरीक्षित कीमत की 30 दिन की अवधि के भीतर जैसा विहित किया जाए ऐसी विशिष्टियों में अंतर्विष्ट अनुपूरक बीजक अथवा जमापत्र को पाने के लिए ऐसे माल या सेवा अथवा दोनों के जारी किए जाने का उपबंध किया गया था या हटा दिया गया था तथा इस अधिनियम के उद्देश्य के लिए ऐसे अनुपूरक बीजक अथवा जमापत्र को इस नियम के अधीन की गई बाहरी आपूर्ति के संबंध में जारी किया समझा जाएगा :

परन्तु यह कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को केवल प्रत्यय नोट के जारी किए जाने पर दायी उसके कर को कम करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा यदि प्रत्यय नोट के पाने पर दायी कर के ऐसे कम करने के लिए तत्स्थानी उसका इनपुट कर प्रत्यय घट जाता है ।

(3) विद्यमान विधि के अधीन इनपुट कर प्रत्यय, कर, ब्याज अथवा कोई अन्य रकम के प्रतिदाय हेतु किसी व्यक्ति के द्वारा फाइल किए गए प्रतिदाय के लिए प्रत्येक दावा विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निपटाया जाएगा और उसके लिए प्रोदभूत की गई पारिणामिक किसी रकम को विद्यमान

विधि के अधीन अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूलता के होते भी, नगद संदेय किया जाएगा :

परन्तु यह कि जहां इनपुट कर प्रत्यय की रकम के प्रतिदाय के लिए कोई दावा पूर्णरूप से अथवा भागतः अस्वीकार किया जाता है, इस प्रकार अस्वीकृत रकम व्यपगत हो जाएगी :

परन्तु यह कि कोई प्रतिदाय दावा इनपुट कर प्रत्यय की रकम का अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत तारीख के रूप में उक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(4)नियुक्त तारीख के पश्चात् अथवा उसके पूर्व निर्यात किए गए किसी माल या सेवा के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन किसी संदेय कर के प्रतिदाय हेतु नियत तारीख के पश्चात् फाइल किए गए प्रतिदाय हेतु प्रत्येक दावा, विद्यमान विधि के अनुसार निपटाया जाएगा :

परन्तु यह कि जहां इनपुट कर प्रत्यय के प्रतिदाय के लिए कोई दावा पूर्णरूप से अथवा भागतः अस्वीकार किया जाता है, इस प्रकार अस्वीकृत रकम व्यपगत हो जाएगी :

परन्तु यह कि कोई प्रतिदाय दावा इनपुट कर प्रत्यय की रकम पर अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत तारीख के रूप में उक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(5) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, नियत दिन से पूर्व उलट दिए गए इनपुट कर प्रत्यय की कोई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर के प्रत्यय के रूप में स्वीकार्य नहीं होगी।

(6)(क) आशयित इनपुट कर प्रत्यय हेतु दावे के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनर्विलोकन अथवा निदेश की कार्यवाही चाहे वह विद्यमान विधि के अधीन नियत तारीख के पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो तथा दावा करने के लिए स्वीकार की गई पायी जाने वाली प्रत्यय की कोई रकम विद्यमान विधि के अधीन अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूलता के होते भी, नगद प्रतिदाय किया जाएगा और वह रकम अस्वीकार की जाएगी यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी :

परन्तु यह कि कोई प्रतिदाय दावा इनपुट कर प्रत्यय की रकम को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत के तारीख के रूप में उक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(ख) आशयित इनपुट कर प्रत्यय की वसूली के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनरीक्षण अथवा निदेश की कार्यवाही चाहे वह विद्यमान विधि के अधीन नियत तारीख के पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निपटाई जाएगी तथा यदि कोई प्रत्यय की रकम ऐसी अपील, पुनरीक्षण या निदेश के परिणाम के रूप में वसूल योग्य है उसी रूप में विद्यमान विधि के अधीन जब तक वसूल ना कर ली गई हो, इस अधिनियम के अधीन कर के किसी बकाया के रूप में वसूल की जाने वाली और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(7)(क) आशयित बाहरी शुल्क अथवा देय कर के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनर्विलोकन अथवा निदेश की कार्यवाही चाहे वह विद्यमान विधि के अधीन नियत तारीख पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निपटाई जाएगी तथा यदि कोई प्रत्यय की रकम ऐसी अपील, पुनरीक्षण या निदेश के परिणाम के रूप में वसूल योग्य है उसी रूप में विद्यमान विधि के अधीन जब तक वसूल ना कर ली गई हो, इस अधिनियम के अधीन शुल्क अथवा कर के किसी बकाया के रूप में वसूल की जाने वाली और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(ख) आशयित आउटपुट कर दायित्व के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनरीक्षण अथवा निदेश की कार्यवाही चाहे वह विद्यमान विधि के अधीन नियत तारीख ds पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसार निपटाई जाएगी तथा कोई दावाकृत रकम स्वीकार योग्य पाई जाती है विद्यमान विधि के अधीन अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूलता के होते भी, नगद प्रतिदाय किया जाएगा और वह अस्वीकार की गई रकम, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(8)(क) जहां विद्यमान विधि के अधीन नियत दिन को या उसके पश्चात् संस्थित निर्धारण या न्यायनिर्णयन कार्यवाहियों के अनुसरण में किसी कर, व्याज, जुर्माना या शास्ति की रकम किसी व्यक्ति वसूलनीय हो जाती है तो उस रकम को जब तक कि विद्यमान विधि के अधीन वसूल न की गई हो, इस अधिनियम के अधीन कर के बकाया के रूप में वसूला जाएगा और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय नहीं होगी। स्वीकार नहीं की जाएगी

(ख) जहां विद्यमान विधि के अधीन नियत दिन को या उसके पश्चात् संस्थित निर्धारण या न्यायनिर्णयन कार्यवाहियों के अनुसरण में किसी कर, ब्याज, जुर्माना या शास्ति की रकम कराधेय व्यक्ति को प्रतिदेय हो जाती है तो उस रकम का उसे उक्त विधि के अधीन नकद में प्रतिदाय किया जाएगा और अस्वीकार की गई रकम, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय नहीं होगी।

(9)(क) जहां कोई विवरणी विद्यमान विधि के अधीन प्रस्तुत की जाती है, का नियत दिन के पश्चात् पुनरीक्षण किया जाता है है, और यदि ऐसे पुनरीक्षण के अनुसरण में कोई रकम वसूलनीय पायी जाती है अथवा इनपुट कर प्रत्यय की रकम अनुज्ञेय पायी जाती है तो उसको विद्यमान विधि के अधीन वसूला जाएगा, उसकी इस अधिनियम के अधीन कर के बकाया के रूप में वसूली की जाएगी और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन करनपुट कर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय नहीं होगी।

(ख) जहां कोई विवरणी विद्यमान विधि के अधीन तैयार की गई हो, नियत तारीख के पश्चात् परन्तु विद्यमान विधि के अधीन ऐसे पुनरीक्षण के लिए विनिर्दिष्ट समय सीमा के भीतर पुनरीक्षित की जाती है, और यदि ऐसे पुनरीक्षण के अनुसरण में कोई रकम प्रतिदाय की जाती है अथवा इनपुट कर प्रत्यय किसी कर योग्य व्यक्ति के लिए स्वीकार्य पाई जाती है, विद्यमान विधि के अधीन तब तक प्रतिदाय नहीं की जाएगी, विद्यमान विधि के अधीन अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूलता के होते भी, नगद प्रतिदाय किया जाएगा और वह रकम अस्वीकार की जाएगी यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(10) अध्याय में यथा उपबंधित के सिवाय नियत तारीख के पूर्व की गई किसी संविदा के अनुसरण में नियत तारीख के पश्चात् अथवा माल या सेवा अथवा दोनों आपूर्ति इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर के लिए दायी होगा।

(11)(क) धारा 12 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, इस अधिनियम के अधीन मालों पर कोई कर उस विस्तार तक संदेय नहीं होगा जिस तक उक्त मालों पर दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 के अधीन उक्त माल पर कर उद्धृति किया गया था।

(ख) धारा 13 में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी, इस अधिनियम के अधीन माल पर कोई कर उस सीमा तक देय नहीं होगा, जिस सीमा तक वह वित्त अधिनियम, 1994 के अध्याय 5 के अधीन उक्त सेवाओं पर उद्धृति किया गया था।

1994 का 32

(ग) जहां दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 और वित्त अधिनियम, 1994 के अध्याय 5 के अधीन दोनों से किसी आपूर्ति पर देय था, ऐसा कर इस अधिनियम के अधीन उद्धृति किया जाएगा तथा कर योग्य व्यक्ति नियत तारीख के पश्चात् की गई पूर्तियों के विस्तार के लिए विद्यमान विधि के अधीन मूल्यवर्धित कर या सेवा कर के प्रत्यय को देने लिए हकदार होगा तथा ऐसे प्रत्यय की उस रीति में जैसी विहित की जाए गणना की जाएगी।

1994 का 32

(12) जहां कोई माल नियत तारीख के पूर्व छह मास से पूर्व अनधिक अवधि के अनुमोदन के आधार पर भेजा जाता है, वहां क्रेता द्वारा वापस किया जाता है अथवा अनुमोदन नहीं किया जाता है और नियत तारीख के पश्चात् अथवा उस तारीख को विक्रेता को वापस किया जाता है, उस पर कोई कर नहीं देय होगा यदि ऐसा माल नियत तारीख से छह मास की अवधि के भीतर वापस किया जाता है :

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छह मास की अवधि को दो मास से अनधिक अवधि तक बढ़ाने के लिए आयुक्त द्वारा विस्तार किया जाएगा :

परन्तु यह और कि कर माल के वापस किए जाने वाले व्यक्ति को देय होगा यदि ऐसा माल इस अधिनियम के अधीन कर लिए दायी होता है तथा इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस किया जाता है :

परन्तु यह भी कि कर किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा संदेय किया जाएगा जिसने अनुमोदन के आधार पर माल को भेजा है यदि ऐसा माल इस अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी है, तथा इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस किया जाता है।

(13) जहां पूर्तिकार ने ऐसे माल का कोई विक्रय किया है जिसके संबंध में दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 के अधीन स्रोत पर कर की कटौती करना अपेक्षित था और नियत तारीख के पूर्व बीजक भी जारी किया गया है, धारा 51 के अधीन स्रोत पर उक्त धारा के अधीन कटौतीकर्ता के द्वारा किसी कर की कटौती नहीं की जाएगी जहां उक्त पूर्तिकार को संदाय नियत तारीख के पश्चात् किया जाता है।

(14) जहां प्रधान के कोई माल या पूंजी माल नियत दिन को अभिकर्ता के परिसरों में रखे हैं, वहां अभिकर्ता निम्नलिखित शर्तों को पूरा किए जाने के अधीन रहते हुए ऐसे मालों पर संदत्त कर का प्रत्यय लेने के लिए हकदार होगा, अर्थात् :--

(i) अभिकर्ता इस अधिनियम के अधीन एक रजिस्ट्रीकृत कराधेय व्यक्ति है ;

(ii) प्रधान और अभिकर्ता, दोनों ही नियत दिन से ठीक पूर्ववर्ती तारीख को ऐसे अभिकर्ता के पास रखे मालों या पूंजी मालों के स्टॉक के व्यौरों की घोषणा ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसे समय के भीतर करते हैं, जो इस निमित्त विहित किया जाए ;

(iii) ऐसे मालों या पूंजी मालों के लिए बीजक नियत दिन से ठीक पूर्व के बारह मासों की अवधि से पूर्व जारी नहीं किए गए थे ; और

(iv) प्रधान ने या तो ऐसे,--

(क) मालों ; या

(ख) पूंजी मालों,

के संबंध में या तो इनपुट कर प्रत्यय को वापस कर दिया है या उसका फायदा नहीं लिया है या ऐसे प्रत्यय का फायदा ले लेने के पश्चात् उसे, उसके द्वारा लिए गए फायदे की सीमा तक वापस लौटा दिया है ।

स्पष्टीकरण--इस अध्याय के प्रयोजनों के लिए "पूंजी माल" पद का वही अर्थ होगा, जो उसका दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 में है ।

अध्याय 21

प्रकीर्ण

छुटपुट कार्य की प्रक्रिया ।

143. (1) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (इसके पश्चात् इस धारा में "प्रधान" कहा गया है) । ऐसी शर्तों के अधीन जो विहित की जाए और सूचना के अधीन छुटपुट कार्य के लिए छुटपुट कार्य को बिना कर के संदाय के कोई निवेश अथवा पूंजीमाल भेज सकता है तथा पश्चात्पूर्ति रूप में अन्य छुटपुट कार्य को भेज सकता है, और—

(क) छुटपुट कार्य या अन्यथा के पूरा हो जाने के पश्चात् निवेश या सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों या औजारों से भिन्न पूंजी लाभ कर के संदाय के बिना, कारबार के उसके किसी स्थान को उनके भेजे जाने के क्रमशः एक वर्ष और तीन वर्ष के भीतर, वापस लाएगा ;

(ख) छुटपुट कार्य या अन्यथा के पूरा हो जाने के पश्चात् निवेश या सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों से भिन्न पूंजी लाभ कर के संदाय के बिना, भारत के भीतर अथवा निर्यात के लिए कर से संदाय के बिना अर्थात् उसके साथ जैसी स्थिति हो कर के संदाय पर छुटपुट कर्मकार के कारबार के उसके किसी स्थान को उनके भेजे जाने के क्रमशः एक वर्ष और तीन वर्ष के भीतर, आपूर्ति करेगा :

परन्तु यह कि प्रधान खंड (ख) के निबंधनों में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से माल की आपूर्ति तब तक नहीं करेगा जब तक उक्त प्रधान उस दशा के सिवाए कारबार के अतिरिक्त स्थान की घोषणा नहीं करता है—

(i) जहां छुटपुट कर्मकार धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है; अथवा

(ii) जहां प्रधान ऐसे माल की आपूर्ति में लगा हुआ है जैसा कि आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया है ।

(2) निवेश अथवा पूंजी लाभ के लिए लेखाओं का ध्यान रखने का उत्तरदायित्व प्रधान पर होगा ।

(3) जहां छुटपुट कार्य हेतु भेजा गया निवेश उपधारा (1) के खंड (क) के अनुसरण में छुटपुट कार्यों से भिन्न कार्य के पूरा होने के पश्चात् प्रधान द्वारा वापस नहीं लिया जाता है अथवा उसके बाहर भेजे जाने के एक वर्ष की अवधि के भीतर उपधारा (1) के खंड (ख) के अनुसरण में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से आपूर्ति नहीं की जाती है, इसे यह समझा जाएगा कि ऐसे निवेश की छुटपुट कर्मकार के लिए प्रधान द्वारा आपूर्ति की गई थी उस दिन जब उक्त निवेश बाहर भेजे गए थे ।

(4) जहां छुटपुट कार्य हेतु भेजे गए सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों या औजारों से भिन्न

पूँजी लाभ उपधारा (1) के खंड (क) के अनुसरण में प्रधान द्वारा वापस नहीं लिया जाता है अथवा उसके बाहर भेजे जाने की तीन वर्ष की अवधि के भीतर उपधारा (1) के खंड (ख) के अनुसरण में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से आपूर्ति नहीं की जाती है, इसे यह समझा जाएगा कि ऐसे पूँजी लाभ छुटपुट कर्मकार के लिए प्रधान द्वारा आपूर्ति की गई थी उस दिन जब उक्त पूँजी लाभ बाहर भेजे गए थे।

(5) उपधारा (1) और उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, किसी छुटपुट कार्य के दौरान कोई अपशिष्ट या उत्पादित स्क्रेप कर के संदाय पर कारबार के उसके स्थान से सीधे छुटपुट कर्मकार के द्वारा आपूर्ति की जा सकती है, यदि ऐसा छुटपुट कर्मकार रजिस्ट्रीकृत है अथवा प्रधान द्वारा यदि छुटपुट कर्मकार रजिस्ट्रीकृत नहीं है।

स्पष्टीकरण--छुटपुट कार्य के उद्देश्य हेतु निवेश में प्रधान या किसी छुटपुट कर्मकार द्वारा निवेश पर लाए गए किसी उपाय या कार्रवाई से उद्भूत होने वाले मध्यवर्ती माल सम्मिलित है।

144. जहाँ कोई दस्तावेज—

(i) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है; अथवा

(ii) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी व्यक्ति की अभिरक्षा अथवा नियंत्रण से अभिग्रहण किया गया है; अथवा

(iii) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी कार्यवाही के क्रम में भारत के बाहर किसी स्थान से प्राप्त किया गया है,

और ऐसा दस्तावेज उसके अथवा किसी अन्य व्यक्ति जिसने उससे संयुक्त होने का प्रयास किया हो, उसके विरुद्ध अभियोजन द्वारा निविदत्त किया गया हो, न्यायालय--

(क) ऐसे व्यक्ति द्वारा जब तक प्रतिकूल साबित नहीं कर दिया जाता है, उपधारणा की जाएगी।

(i) ऐसे दस्तावेज की अंतर्वस्तु की सत्यता;

(ii) यह कि हस्ताक्षर और ऐसे दस्तावेज का प्रत्येक अन्य भाग जिसका तात्पर्य किसी विशिष्ट व्यक्ति के द्वारा हस्तलिखित हो अथवा जिसे न्यायालय ने उचित कारणों के लिए हस्ताक्षर कराया हो अथवा किसी विशेष व्यक्ति के द्वारा हस्तलिखित किया गया हो और ऐसे निष्पादित या अनुप्रमाणित दस्तावेज की दशा में इस प्रकार उसका तात्पर्य निष्पादन या अनुप्रमाणन किया गया हो;

(ख) यह होते हुए भी कि यह सम्यक्तः स्टांपित नहीं है, में दस्तावेज स्वीकार करेगा, यदि ऐसा दस्तावेज साक्ष्य में ग्राह्य है।

माइक्रो फिल्मों, दस्तावेजों की प्रतिकृति प्रतियाँ और कंप्यूटर प्रिंट आउट की दस्तावेजों के रूप में और साक्ष्य के रूप में ग्राह्यता।

.145 तत्समयप्रवृत्त किसी अन्य विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए --

(क) किसी माइक्रोफिल्म में लगा हुआ चित्र या चित्रों के पुनरुत्पादन या दस्तावेजों की माइक्रोफिल्म (चाहे वह बड़ी हो अथवा नहीं); या

(ख) किसी दस्तावेज की प्रतिकृति प्रति; या

(ग) किसी दस्तावेज में अन्तर्विष्ट कोई विवरण और जिसमें किसी कम्प्यूटर द्वारा जनित कोई मुद्रित सामग्री भी शामिल है, ऐसी शर्तों के अधीन जो विहित की जाए; या

(घ) किसी युक्ति या संचार माध्यम में इलैक्ट्रॉनिक रूप से भंडारित कोई सूचना जिसमें ऐसी सूचना की हार्ड प्रतियाँ भी शामिल है,

को इस अधिनियम और उसके अधीन बनाये गये नियमों के प्रयोजन के लिए एक दस्तावेज के रूप में समझा जाएगा और उसके अधीन किसी कार्रवाई में, किसी और सबूत या मूल दस्तावेज के प्रस्तुतीकरण के बिना ही ऐसे ग्राह्य होगा जैसे मूल दस्तावेज की कोई विषय वस्तु के साक्ष्य के रूप में या उसमें कथित कोई तथ्य या साक्ष्य प्रत्यक्ष साक्ष्य के रूप में ग्राह्य होगा।

(2) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाने गये नियमों के अधीन किसी कार्यवाही में, जहाँ इस

कतिपय मामलों में दस्तावेजों के लिए उपधारणा।

धारा के आधार पर साक्ष्य में कथन करने की ईप्सा की गयी है, कोई ऐसा प्रमाणपत्र--

(क) जो ऐसे दस्तावेज को परिलक्षित करता है जिसमें कथन अन्तर्विष्ट है और उस रीति का वर्णन करता है जिसमें इसे लिया गया है ;

(ख) जो उस दस्तावेज को बनाने में शामिल किसी युक्ति की ऐसी विशिष्टियों को देता है जो यह प्रदर्शित करने के प्रयोजन के लिए समुचित हो कि दस्तावेज को किसी कम्प्यूटर द्वारा बनाया गया था,

प्रमाण-पत्र में कथित किसी मामले का साक्ष्य होगा और इस उपधारा से प्रयोजन हेतु यह इसका कथन करने वाले व्यक्ति की पूरी जानकारी और विश्वास से कहा गया कथन होने के मामलों में पर्याप्त होगा।

146. सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर रजिस्ट्रीकरण प्रसुविधा, कर के संदाय, विवरणी के प्रस्तुतीकरण एकीकृत कर की संगणना और निपटान, इलेक्ट्रॉनिक वे बिल को सुकर बनाने के लिए और ऐसे अन्य कृत्यों के क्रियान्वयन के लिए और ऐसे प्रयोजनों के लिए जो विहित किए जाएं के लिए सामान्य माल और सेवा कर इलेक्ट्रॉनिक पोर्टल को अधिसूचित कर सकेगी।

सामान्य पोर्टल।

147. सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर जहां पूर्ति किया गया माल भारत नहीं छोड़ता है और ऐसी पूर्ति के लिए संदाय भारतीय रुपए या संपरिवर्तनीय विदेशी मुद्रा में प्राप्त हो गया है, यदि ऐसा माल भारत में विनिर्मित किया गया है, कतिपय माल की पूर्ति को निर्यात के रूप में समझा जाना अधिसूचित कर सकेगी।

निर्यात समझा जाना।

148. सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर और ऐसी शर्तों और सुरक्षा के अधीन जो विहित किए जाएं, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय वर्गों और ऐसे कराधेय व्यक्तियों, जिसमें रजिस्ट्रीकरण से संबंधित, विवरणी का प्रस्तुतीकरण कर का संदाय और ऐसे कराधेय व्यक्तियों का प्रशासन भी शामिल है, द्वारा अनुसरण की जाने वाली विशेष पद्धति को अधिसूचित कर सकेगी।

कतिपय प्रक्रियाओं के लिए विशेष पद्धति।

149. (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार अनुपालन के उसके अभिलेख पर आधारित सरकार द्वारा एक माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग समानुद्देशित कर सकेगी।

माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग।

(2) माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग गणना को ऐसे मानकों के आधार पर जो विहित किए जाएं, अवधारित किया जा सकेगा।

(3) माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग गणना को अवधारित अन्तरालों पर अद्यतन किया जा सकेगा और रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को सूचित किया जा सकेगा तथा ऐसी रीति जो विहित की जाए पब्लिक डोमेन में भी रखी जा सकेगी।

150. (1) कोई व्यक्ति--

सूचना विवरणी प्रस्तुत करने की बाध्यता।

(क) कोई कराधेय व्यक्ति होने के कारण ; या

(ख) कोई स्थानीय प्राधिकारी या अन्य पब्लिक निकाय या संगम होने के कारण ; या

(ग) मूल्य संचर्धित कर या विक्रय कर या राज्य आउटपुट कर के संग्रहण के लिए उत्तरदायी राज्य सरकार का कोई प्राधिकारी या उत्पाद-शुल्क या सीमा-शुल्क के संग्रहण के लिए उत्तरदायी केन्द्र सरकार का कोई प्राधिकारी होने के कारण ; या

1961 का 43

(घ) आय कर अधिनियम, 1961 के उपबंधों के अधीन नियुक्त कोई आयकर प्राधिकारी होने के कारण ; या

1934 का 2

(ङ) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45क के खंड (क) के अर्थ के अंतर्गत कोई बैंक कंपनी; या

2003 का 36

(च) विद्युत अधिनियम, 2003 या केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार द्वारा ऐसे कृत्यों से न्यस्त कोई इकाई के अधीन कोई राज्य विद्युत बोर्ड या कोई विद्युत वितरण या पारेषण अनुज्ञप्तिधारक; या

(छ) रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 की धारा 6 के अधीन नियुक्त रजिस्ट्रार या उपरजिस्ट्रार; या

1908 का 56

(ज) कंपनी अधिनियम, 2013 के अर्थान्तर्गत कोई रजिस्ट्रार; या	2013 का 18
(झ) मोटर यान अधिनियम, 1988 के अधीन मोटर यान का रजिस्ट्रार करने को सशक्त करने वाला रजिस्ट्रार करने वाला प्राधिकारी ; या	1988 का 59

(ज) भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (2013 का केंद्रीय अधिनियम सं. 30) की धारा 3 के खंड (ग) में निर्दिष्ट कलक्टर होने के कारण इस अधिनियम या तद्विध बनाए गए नियमों के अधीन सद्भावपूर्वक की गई या किए जाने के लिए आशयित किसी बात के लिए इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत किसी अधिकारी के विरुद्ध कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं की जाएंगी ; या	2013 का 30
---	------------

(ट) प्रतिभूति संविदा (विनियम) अधिनियम, 1956 की धारा 2 के खंड (च) में निर्दिष्ट मान्यता प्राप्त स्टोक एक्सचेंज; या	1956 का 42
---	------------

(ठ) निक्षेपागार अधिनियम, 1996 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ड) में निर्दिष्ट निक्षेपागार; या	1996 का 22
--	------------

(ड) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 3 के अधीन यथागठित भारतीय रिजर्व बैंक का कोई अधिकारी; या	1934 का 2
--	-----------

(ढ) कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन कोई रजिस्ट्रार कंपनी, माल और सेवा कर नेटवर्क; या	2013 का 18
--	------------

(ण) धारा 25 की उपधारा (9) के अधीन किसी व्यक्ति को प्रदान किया गया विशिष्ट पहचान संख्या; या	
--	--

(त) सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर, यथाविनिर्दिष्ट कोई अन्य व्यक्ति;

जो, तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन, लेखा रजिस्ट्रीकरण या विवरण या कोई आवधिक विवरणी या कर और माल या सेवा के संव्यवहार के अन्य व्यौरे के अंतर्विष्ट संदाय के दस्तावेज या दोनों या किसी बैंक खाता से संबंधित संव्यवहार या विद्युत खपत या क्रम या विक्रय के संव्यवहार या माल या संपत्ति का आदान प्रदान या किसी संपत्ति में अधिकार या हित के अभिलेख के अनुरक्षण के लिए ऐसी अवधि, ऐसे समय के भीतर, ऐसे प्ररूप या रीति में और यथाविनिर्दिष्ट, ऐसे प्राधिकारी या अभिकरण के संबंध में उसकी सूचना की विवरणी भरने का उत्तरदायित्व होगा ।

(2) जहां आयुक्त या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी, सूचना विवरणी में दी गई उस सूचना जो त्रुटिपूर्ण है, को विचार में लेगा, वह त्रुटिपूर्ण ऐसी सूचना विवरण भरने वाले उस व्यक्ति को सूचित करेगा और उसको ऐसी सूचना की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर या जो कि उसकी ओर से किए गए आवेदन पर ऐसी और अवधि के भीतर त्रुटिपूर्ण के परिशोधन करने का एक अवसर देगा, उक्त प्राधिकारी अनुज्ञात करेगा और यदि त्रुटि का परिशोधन उक्त तीस दिन की अवधि या उसे अनुज्ञात की गई अवधि के भीतर नहीं किया गया है तो, इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंधों में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, ऐसी सूचना विवरणी भरी हुई नहीं समझी जाएगी और इस अधिनियम के उपबंध लागू होंगे ।

(3) जहां कोई व्यक्ति, जिससे सूचना विवरणी दिया जाना अपेक्षित है उसे वह उपधारा (1) या उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट समय के भीतर नहीं देता है, तो उक्त प्राधिकारी उसे सूचना परिदान की तारीख से नब्बे दिनों की अनधिक अवधि के भीतर ऐसी सूचना विवरणी देने की अपेक्षा का नोटिस दे सकेगा और ऐसा व्यक्ति सूचना विवरणी देगा ।

151. (1) आयुक्त, यह विचार करता है कि इसे दिया जाना आवश्यक है, अधिसूचना द्वारा, उससे संबंधित या इस अधिनियम के संबंध में किसी मामले से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण करने को निदेश दे सकेगा ।

आंकड़े संग्रहण करने की शक्ति।

(2) ऐसी सूचना जारी करने पर आयुक्त या उसकी ओर से या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई व्यक्ति, यथा-विहित, ऐसे प्ररूप और रीति में उन आंकड़ों के संग्रहण से संबंधित किसी मामले के संबंध में, ऐसी सूचना या विवरणी देने के लिए संबंधित व्यक्ति को बुला सकेगा ।

152. (1) धारा 150 या धारा 151 के प्रयोजनों के लिए दी गई किसी भी बात के संबंध में किसी

सूचना के प्रकटन

व्यष्टि विवरणी या उसके भाग की सूचना, बिना सहमति के अनुरूप या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि की लिखित सहमति के बिना ऐसी रीति से प्रकाशित की जाएगी ताकि विशिष्ट व्यक्ति के यथाविनिर्दिष्ट पहचान किए गए ऐसी विवरणी को सक्षम बना सके और ऐसी सूचना इस अधिनियम के अधीन किसी प्रक्रियाओं के प्रयोजन के लिए उपयोग में नहीं लाई जाएगी।

पर वर्जन।

(2) इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य अधिनियम के अधीन अभियोजन के प्रयोजन को छोड़कर, कोई व्यक्ति जो कि इस अधिनियम के अधीन आंकड़ों के संग्रहण में या इस अधिनियम के प्रयोजन के लिए संकलन या उसके कंप्यूटीकरण में नहीं लगा हुआ है, को, धारा 151 में निर्दिष्ट कोई सूचना या कोई व्यष्टि विवरणी को देखने या उसकी पहुंच तक को अनुज्ञात करेगा।

(3) इस धारा की किसी बात का कराधेय व्यक्ति वर्ग या संव्यवहार वर्ग से संबंधित कोई सूचना के प्रकाशन पर लागू नहीं होगा, यदि आयुक्त की राय में ऐसी सूचना का प्रकाशन लोकहित में वांछनीय है।

153. सहायक आयुक्त की पंक्ति से कम नहीं कोई अधिकारी, मामले की प्रकृति और जटिलता तथा राजस्व के हित के संबंध को ध्यान में रखते हुए, उसके समक्ष संवीक्षा, जांच अन्वेषण या कोई अन्य प्रक्रिया के किसी भी स्तर पर किसी भी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त कर सकेगा।

किसी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त करना।

154. आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी, जहां वह यह विचार करता है कि यह आवश्यक है किसी कराधेय व्यक्ति के कब्जे से माल के नमूने ले सकेगा, और लिए गए किसी भी नमूनों की रसीद उपलब्ध कराएगा।

नमूनों को प्राप्त करने की शक्ति।

155. जहां कोई व्यक्ति यह दावा करता है कि वह उस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के लिए पात्र है, ऐसे दावे को साबित करने का भार ऐसे व्यक्ति पर होगा।

सबूत का भार।

156. इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का निर्वहन करने वाले सभी व्यक्ति भारतीय दंड संहिता की धारा 21 के अर्थान्तर्गत आने वाले लोक सेवक समझे जाएंगे।

व्यक्ति लोक सेवक समझा जाएगा।

1860 का 45

इस अधिनियम के अधीन की गई कार्रवाई का संरक्षण।

157. (1) कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाहियां इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन की गई कोई बात या सद्भाव में किए जाने को आशयित के लिए या अपील अधिकरण के अध्यक्ष, राज्य अध्यक्ष, सदस्यों, अधिकारियों या अन्य कर्मचारियों या उक्त अपील अधिकरण द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य व्यक्ति के विरुद्ध नहीं की जाएगी।

(2) कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाहियां इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन सदभाव में की गई कोई बात या किए जाने को आशयित के लिए इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत कोई व्यक्ति के विरुद्ध नहीं की जाएगी।

लोक सेवक द्वारा सूचना का प्रकट किया जाना।

158. (1) इस अधिनियम के अनुसरण में प्रस्तुत किए गए विवरण, दी गई विवरणी या लेखा या दस्तावेजों या (दंड न्यायालय के समक्ष कार्यवाहियों से भिन्न) इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों के अनुक्रम में दिए गए साक्ष्य का कोई अभिलेख या इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों के किसी अभिलेख में अंतर्विष्ट सभी विवरणों को उपधारा (3) में यथाउपबंधित के सिवाय प्रकट नहीं किया जाएगा।

(2) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए, कोई न्यायालय, उपधारा (3) में यथाउपबंधित के सिवाय, उपधारा (1) में निर्दिष्ट विवरण के संबंध में उसके पेश किए जाने से पहले या साक्ष्य दिए जाने से पहले इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत कोई अधिकारी से अपेक्षा नहीं करेगा।

1872 का 1

(3) इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के,--

(क) भारतीय दंड संहिता या भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 या तत्समय प्रवृत्त अन्य विधि के अधीन किसी अभियोजन के प्रयोजन के लिए किसी विवरण, विवरणी, लेखाओं, दस्तावेजों, साक्ष्य, शपथपत्र या अभिसाक्ष्य के संबंध में कोई विशिष्टियां; या

1860 का 45

1988 का 49

(ख) इस अधिनियम के उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के प्रयोजन के लिए, इस अधिनियम के

कार्यान्वयन में केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या कार्यकारी कोई व्यक्ति कोई विशिष्टियां ; या

(ग) किसी नोटिस के तामील या किसी मांग की वसूली के लिए कोई कार्यवाही इस अधिनियम के अधीन विधिपूर्ण कार्य द्वारा जहां ऐसे प्रकटन के कारण कोई विशिष्टियां; या

(घ) किसी भी वाद या कार्यवाहियों में एक सिविल न्यायालय जिसके लिए इस अधिनियम के अधीन सरकार या कोई प्राधिकारी, एक पक्षकार है जो कि इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी कार्यवाहियों में उठने वाले किसी मामले से संबंधित है, इसके अधीन किसी भी शक्ति का प्रयोग करने के लिए ऐसा कोई प्राधिकारी को प्राधिकृत करता है की कोई विशिष्टियां ; या

(ङ) इस अधिनियम द्वारा कर प्राप्ति की लेखापरीक्षा या अधिरोपित कर के प्रतिदाय के प्रयोजन के लिए नियुक्त किसी अधिकारी की कोई विशिष्टियां ; या

(च) इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत कोई अधिकारी किसी जांच करने के प्रयोजन के लिए जहां ऐसे विवरण सुसंगत है, तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन जांच अधिकारी के रूप में कोई व्यक्ति या नियुक्त व्यक्ति के कोई विशिष्टियां ; या

(छ) कर या शुल्क का उद्ग्रहण करने के लिए सरकार को सशक्त बनाने के प्रयोजन के लिए यथा-आवश्यक, केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के किसी अधिकारी की कोई ऐसी विशिष्टियां ; या

(ज) तत्समय प्रवृत्त अन्य किसी विधि के अधीन उसकी या उसकी शक्तियां कोई लोक सेवक या कोई अन्य कानूनी प्राधिकारी द्वारा विधिपूर्ण कार्य द्वारा जब ऐसे प्रकटन के कारण कोई विशिष्टियां ; या

(झ) यथास्थिति, किसी विधि व्यवसायी, किसी लागत लेखाकार, चार्टर्ड अकाउंटेंट या कंपनी सचिव के व्यवसाय में व्यवसायरत सदस्यों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के लिए प्राधिकारी को सशक्त किए जाने के लिए विधि व्यवसाय अधिवक्ता, कर व्यवसायिक, लागत लेखाकार चार्टर्ड अकाउंटेंट; कंपनी सचिव के व्यवसाय में लगे हुए के विरुद्ध इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों के संबंध में अवचार के आरोपों में की गई जांच से संबंधित कोई विशिष्टियां; या

(ञ) डाटा प्रविष्टि या स्वचालित प्रणाली के प्रयोजन के लिए या संचालन, उन्नत करने या किसी स्वचालित प्रणाली के अनुरक्षण के प्रयोजन के लिए जहां ऐसे अभिकरण पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए को छोड़ ऐसी विशिष्टियों के प्रयोग या प्रकट करने की संविदा आवश्यक नहीं है, किसी अभिकरण का नियुक्त किए जाने की कोई विशिष्टियां ; या

(ट) तत्समय प्रवृत्त अन्य किसी विधि के प्रयोजन के लिए यथाआवश्यक सरकार के किसी अधिकारी की कोई विशिष्टियां ; और

(ठ) प्रकाशन के लिए किसी कराधेय व्यक्तियों के प्रवर्ग या संव्यवहार के वर्ग की ऐसी सूचना का प्रकाशन यदि, आयुक्त की राय में यह लोकहित में वांछनीय है, से संबंधित कोई सूचना,

को प्रकटन करने को लागू होगी ।

159. (1) यदि आयुक्त, या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी की यह राय है कि ऐसे व्यक्तियों के संबंध में इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों या अभियोजन से संबंधित किसी व्यक्ति का नाम और कोई अन्य विशिष्टियां का प्रकाशन लोकहित में आवश्यक या समीचीन है, जो वह ठीक समझे, ऐसी रीति में ऐसे नाम और विशिष्टियां का प्रकाशन कर सकेगा ।

(2) इस धारा के अधीन कोई प्रकाशन नहीं किया जाएगा और इस अधिनियम के अधीन कोई शास्ति अधिरोपित करने के संबंध में की जाती है जब तक धारा 107 के अधीन अपील प्राधिकारी को कोई अपील प्रस्तुत करने के लिए समय किसी अपील को प्रस्तुत किए बिना अवसान हो जाता है या कोई अपील यदि प्रस्तुत की जाती है, का निपटारा किया जाएगा ।

स्पष्टीकरण—यथास्थिति, फर्म, कंपनी या व्यक्तियों का संगम, फर्म के भागीदारों का नाम, कंपनी के निदेशकों, प्रबंधकीय अभिकर्ताओं, सचिवों और कोषाध्यक्षों या प्रबंधकों या सदस्यों का संगम की दशा में; प्रकाशित किया जा सकेगा, यदि आयुक्त या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी की राय में मामले की परिस्थिति न्यायोचित ठहराई गई है ।

160. (1) इस अधिनियम के किसी उपबंधों के अनुसरण में कोई निर्धारण पुनःनिर्धारण, न्यायनिर्णयन, पुनःविलोकन, पुनरीक्षण, अपील, परिशोधन, नोटिस, समन या की गई अन्य कार्यवाहियां,

कतिपय मामलों में व्यक्ति के विषय में सूचना का प्रकाशन ।

कतिपय स्तरों पर निर्धारण

कार्यवाहियां,
आदि का
अविधिमान्य न
किया जाना।

प्रतिग्रहण, बनाए गए, जारी किया गया, आरंभ किया गया अविधिमान्य या उसमें किसी गलती, त्रुटि या लोप होने के कारण अविधिमान्य समझा नहीं जाएगा, यदि ऐसे निर्धारण, पुनःनिर्धारण, न्यायनिर्णयन, पुनःविलोकन, पुनरीक्षण, अपील, परिशोधन, नोटिस, समन या अन्य कार्यवाहियां इस अधिनियम या विद्यमान किसी विधि के आशय, प्रयोजन और अपेक्षा अनुरूपता या के अनुसरण में सार और प्रभाव हैं।

(2) नोटिस, आदेश या संचार की तामील, प्रश्रुत नहीं किया जाएगा, यदि यथास्थिति, नोटिस, आदेश या संचार उस व्यक्ति को पहले ही पहुंचा दिया गया है जिसके नाम उसे जारी किया गया है या जहां ऐसे तामील प्रश्रुत नहीं किया गया है या ऐसे नोटिस, आदेश या संचार के अनुसरण में पूर्व प्रारंभिक कार्यवाहियां चालू और अतिक्रम में की गई हो।

अभिलेख पर
प्रकट त्रुटि का
परिशोधन।

161. धारा 160 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंधों में अंतर्विष्ट किसी अन्य बातों के होते हुए भी कोई प्राधिकारी, जो किसी पारित या जारी कोई विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज में किसी त्रुटि का परिशोधन कर सकेगा जिसमें ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज में अभिलेख को देखने से ही प्रकट होता है, या तो उसके स्वप्रेरणा से प्रस्ताव पर या जहां ऐसी त्रुटियां इस अधिनियम के अधीन नियुक्त कोई अधिकारी द्वारा उसके संज्ञान में लाई जाती है या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त कोई अधिकारी या यथास्थिति, ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र था कोई अन्य दस्तावेज के जारी होने की तारीख से तीन मास की अवधि के दौरान प्रभावित व्यक्ति द्वारा उसकी जानकारी में लाई जाती है :

परंतु यह कि ऐसे परिशोधन ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य कोई दस्तावेज के जारी होने की तारीख से छह मास की अवधि के पश्चात् किया जाएगा :

परंतु यह और कि उक्त छह मास की अवधि ऐसे मामलों में लागू नहीं होगी जहां परिशोधन लिपिकीय या अंकगणितीय त्रुटि, किसी घटनावश चूक या लोप से उद्भूत संशोधन के स्वरूप में शुद्धता की गई हो :

परंतु यह भी कोई व्यक्ति ऐसे परिशोधन के प्रतिकूल प्रभावित है, नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत का ऐसे परिशोधन किए जाने का प्राधिकारी द्वारा पालन किया गया हो।

सिविल
न्यायालय की
अधिकारिता पर
वर्जन।

162. धारा 117 और 118 में यथाउपबंधित के सिवाय कोई सिविल न्यायालय इस अधिनियम के अधीन की गई कोई बात या किया गया तात्पर्यित है से संबंधित कार्यवाही करना या किसी प्रश्न से उद्भूत विनिश्चय की अधिकारिता नहीं होगी।

163. जहां कहीं किसी आदेश या दस्तावेज की प्रति उस प्रयोजन के लिए उसके द्वारा किए गए आवेदन पर किसी व्यक्ति को उपलब्ध कराई जाती है, वहां यथाविनिर्दिष्ट ऐसी फीस संदत्त की जाएगी।

फीस उद्ग्रहण।

164. (1) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा इस अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के लिए नियम बना सकेगी।

नियमों को बनाने
की सरकार की
शक्ति।

(2) उपधारा (1) के उपबंधों पर साधारणतया प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, सरकार, सभी या इस अधिनियम द्वारा कोई भी मामले जो अपेक्षित है या विहित किया गया है या उन उपबंधों के संबंध में जो किए जाने हैं या नियमों द्वारा बनाए जा सके, नियम बना सकेगी।

(3) इस धारा द्वारा प्रदत्त नियम बनाने की शक्ति में या उनमें से किन्हीं को भूतलक्षी प्रभाव देने की शक्ति सम्मिलित होगी जो उस तारीख से पूर्ववर्ती तारीख नहीं होगी जिसको इस अधिनियम के उपबंध प्रवृत्त होता है।

(4) उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन बनाए गए कोई नियमों का उल्लंघन करने पर दस हजार से अनधिक शास्ति लगाए जाने के दायी का उपबंध कर सकेगा।

165. आयुक्त, इस अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के लिए इस अधिनियम तथा इसके अधीन बनाए गए नियमों के साथ संगत विनियम, अधिसूचना द्वारा बना सकेगा।

विनियम बनाने
की शक्ति।

166. इस अधिनियम के अधीन सरकार द्वारा बनाए गए प्रत्येक नियम, आयुक्त द्वारा बनाए गए प्रत्येक विनियम और सरकार द्वारा जारी प्रत्येक अधिसूचना, उसे बनाए जाने के पश्चात् दिल्ली विधान सभा के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा, यह अवधि एक सत्र या

नियमों,
विनियमों और
अधिसूचनाओं का

दो या अधिक अनुक्रमिक सत्रों में हो सकेगी और यदि पूर्वोक्त सत्र या अनुक्रमिक सत्रों से तुरंत पूर्व के सत्र के अवसान के पूर्व सदन नियम, विनियम या अधिसूचना में कोई उपांतरण करने पर सहमत हो जाते हैं या सदन इस बात के लिए सहमत हो जाते हैं कि ऐसे नियम, विनियम या अधिसूचना को नहीं बनाया जाना चाहिए तो ऐसा नियम, विनियम या अधिसूचना उसके पश्चात् यथास्थिति केवल ऐसे उपांतरित रूप में ही प्रभावी होगी या प्रभावी रहेगी; तथापि ऐसा कोई उपांतरण या रद्दकरण, इस नियम, विनियम या अधिसूचना के अधीन पूर्व में की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेगा।

रखा जाना।

167. आयुक्त, अधिसूचना द्वारा ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, यदि कोई है, जैसा अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किया जाए, इस अधिनियम के अधीन किसी प्राधिकारी या कार्यालय द्वारा प्रयोग की जाने वाली कोई शक्ति, ऐसी अधिसूचना में जैसा विनिर्दिष्ट किया जाए किसी और प्राधिकारी या कार्यालय द्वारा भी प्रयोग करने का निदेश कर सकेगा।

शक्तियों का प्रत्यायोजन।

168. (1) आयुक्त, यदि इस अधिनियम के कार्यान्वयन में समरूपता के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक या समीचीन समझे, राज्य कर अधिकारियों को जो उचित समझे ऐसा आदेश, अनुदेश या निदेश जारी कर सकेगा और इस अधिनियम के कार्यान्वयन में नियोजित सभी ऐसे अधिकारी और सभी अन्य व्यक्ति ऐसे आदेशों, अनुदेशों या निदेशों का संप्रक्षण और पालन करेंगे।

अनुदेशों या निदेशों को जारी करना।

(2) धारा 2 के खंड (91), धारा 5 की उपधारा (3), धारा 25 की उपधारा (9) के खंड (ख), धारा 37 की उपधारा (1), धारा 38 की उपधारा (2), धारा 39 की उपधारा (6), धारा 35 की उपधारा (3) और उपधारा (4), धारा 66 की उपधारा (5) धारा 143 की उपधारा (1), धारा 158 की उपधारा (3) के खंड (1), धारा 151 की उपधारा (1), धारा 169 और धारा 167 में विनिर्दिष्ट आयुक्त से बोर्ड में तैनात आयुक्त या संयुक्त सचिव और ऐसे आयुक्त या संयुक्त सचिव उक्त धाराओं में विनिर्दिष्ट शक्तियों का प्रयोग बोर्ड के अनुमोदन से करेंगे।

कतिपय मामलों में नोटिस तामील करना।

169. (1) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या अन्य संसूचना को निम्नलिखित किन्हीं पद्धतियों द्वारा तामील की जाएगी, अर्थात्:--

(क) प्रेषिती कराधेय व्यक्ति को या उसके प्रबंधक या प्राधिकृत प्रतिनिधि या अधिवक्ता या कर व्यवसायी जिसके पास कराधेय व्यक्ति की ओर से कार्यवाहियों में पेश होने का प्राधिकार है या कारबार के संबंध में उसके द्वारा नियमित रूप से नियोजित व्यक्ति को या कराधेय व्यक्ति के साथ रह रहे किसी व्यस्क व्यक्ति को सीधे देकर या सुपुर्द करके या संदेशवाहक जिसके अंतर्गत कुरियर भी है, के द्वारा ;

(ख) व्यक्ति, जिससे आशयित है या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि यदि कोई है, उसके कारबार या निवास का अंतिम स्थान जो जानकारी में है, को जिससे अभिस्वीकृति देय है रजिस्ट्रीकृत डाक या स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा ;

(ग) रजिस्ट्रीकरण के समय या समय-समय पर संशोधित उसके ई-मेल पते पर संसूचना भेजने के द्वारा ;

(घ) सामान्य पोर्टल पर उपलब्ध करवाने के द्वारा ;

(ङ) परिक्षेत्र जहां, कराधेय व्यक्ति या व्यक्ति जिसे यह जारी किया गया था, इससे पहले रहता था, कारबार करता था या व्यक्तिगत तौर पर अभिलाभ के लिए कार्य करता था, समाचारपत्र में प्रकाशन करके प्रचालन द्वारा ;

(च) यदि उपर्युक्त कोई ढंग व्यवहारिक नहीं है, तो उसके निवास या कारबार के अंतिम स्थान पर किसी सहज दृश्य जगह चिपकाने के द्वारा और यदि किसी कारणवश ऐसी पद्धति भी व्यवहारिक नहीं होती है तो संबद्ध कार्यालय या प्राधिकारी जिसने या जिसके द्वारा ऐसा विनिश्चय या आदेश या समन या नोटिस जारी किया गया है, के नोटिस बोर्ड पर चिपकाने के द्वारा तामील की जाएगी।

(2) प्रत्येक विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या किसी संसूचना की उसी तारीख को तामील हुई समझी जाएगी जिस पर इसे सुपुर्द किया गया या प्रकाशित किया गया या उपधारा (1) में उपबंधित रीति से एक प्रति वहां चिपकाई गई।

(3) जब ऐसे विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या किसी संसूचना को रजिस्ट्रीकृत डाक या स्पीड पोस्ट द्वारा भेजा गया, तो सामान्यतः जितनी अवधि ऐसी डाक को पहुंचने में लगती है, के अनुसार प्रेषिती द्वारा प्राप्त किया गया समझा जाएगा जब तक कि प्रतिकूल साबित नहीं होता।

170. इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर की रकम, व्याज, शास्ति, जुर्माना या कोई अन्य संदेय रकम और प्रतिदाय की रकम या कोई अन्य देय रकम निकटतम रुपए के लिए पूर्णांकित होगी और, इस प्रयोजन के लिए जहां ऐसी रकम जिसमें रुपए का एक भाग पैसे के रूप में है, तब यदि ऐसा भाग

कर का पूर्णांकन आदि।

पचास पैसे या उससे अधिक है, तो एक रुपए तक बढ़ाया जाएगा और यदि ऐसा भाग पचास पैसे से कम है तो इस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।

171. (1) किसी माल या सेवाओं या इनपुट कर प्रत्यय के फायदे पर कर की दर में किसी कमी को मूल्यों में अनुरूप कमी के तौर पर प्राप्तकर्ता को दे दी जाएगी।

मुनाफाखोरी
निरोधी उपाय।

(2) केन्द्रीय सरकार यह परीक्षा करने के लिए कि क्या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपभोग इनपुट कर प्रत्यय या कर दर में कमी से वास्तव में परिणामतः माल और सेवाओं या उसके द्वारा पूर्ति किए गए दोनों के मूल्यों में अनुरूप कमी हुई है, परिषद् की सिफारिशों पर, उस समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन अधिसूचना द्वारा, प्राधिकारी का गठन या किसी विद्यमान प्राधिकारी को सशक्त बना सकेगी।

(3) उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्राधिकारी यथाविहित ऐसी शक्तियों का प्रयोग और ऐसे कृत्यों का निर्वहन कर सकेगा।

172. (1) यदि इस अधिनियम के उपबंधों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो सरकार परिषद् की सिफारिशों पर, किसी साधारण या किसी विशेष आदेश शासकीय राजपत्र में प्रकाशित कर ऐसे उपबंध कर सकेगी, जो इस अधिनियम के उपबंधों या उसके अधीन बनाए गए नियमों या विनियमों से असंगत न हो, जो उस कठिनाई को दूर करने के लिए उसे आवश्यक या समीचीन प्रतीत हो, उस कठिनाई को दूर कर सकेगी/ऐसे उपबंध कर सकेगी :

कठिनाइयों को
दूर करना।

परंतु ऐसा कोई आदेश इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख से तीन वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् नहीं किया जाएगा।

(2) इस धारा के अधीन किया गया प्रत्येक आदेश, किए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, राज्य विधान मंडल के समक्ष रखा जाएगा।

कतिपय
अधिनियमों का
संशोधन।

173. इस अधिनियम में यथा-उपबंधित के सिवाय, इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख से ही,--

(i) दिल्ली नगर निगम अधिनियम, 1957 में, धारा 113 की उपधारा (1) में खंड (घ), धारा 142, धारा 153 की उपधारा (1) में खंड (ग), धारा 154 की उपधारा (1) में आने वाले शब्दों श्या विज्ञापन कर" तथा पांचवी अनुसूची का लोप किया जाएगा य तथा

(ii) नई दिल्ली नगरपालिका परिषद अधिनियम, 1994 में, धारा 60 की उपधारा (1) में खंड ;घद्ध का लोप किया जाएगा।

निरसन और
व्यावृत्ति।

174. (1) इस अधिनियम में यथा उपबंधित के सिवाय, इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख से ही निम्नलिखित अधिनियमों का निरसन किया जाता है, अर्थात् :--

1897 का 10

(i) संविधान की सातवीं अनुसूची की राज्य सूची की प्रविष्टि 54 में सम्मिलित मालों के सिवाय, दिल्ली मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2004 ;

(ii) दिल्ली मनोरंजन एवं शर्त कर अधिनियम, 1996 ;

(iii) दिल्ली विलासिता कर अधिनियम 1996 ;

(जिन्हें इसमें इसके पश्चात् निरसित अधिनियम कहा गया है)।

(2) धारा 173 या उपधारा (1) में उल्लिखित विस्तार तक उक्त अधिनियमों का निरसन और धारा 173 में विनिर्दिष्ट अधिनियमों का संशोधन (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् यथास्थिति "ऐसा संशोधन" या "संशोधित अधिनियम" कहा गया है),--

(क) ऐसे संशोधन या निरसन के समय किसी भी प्रवृत्त या विद्यमान को पुनः प्रवर्तित नहीं करेगा; या

(ख) पूर्व प्रचालित संशोधित अधिनियम या निरसित अधिनियम और आदेश या उसके अधीन सम्यक् रूप से किए गए या भुक्ती गई किसी बात को प्रभावित नहीं करेगा; या

(ग) ऐसे निरसित या संशोधित अधिनियमों के अधीन संशोधित अधिनियम या निरसित अधिनियम या आदेश किसी अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता, या अर्जित, प्रोदभूत या उपगत दायित्व को नहीं करेगा :

परंतु यह कि किसी अधिसूचना के द्वारा विनिवेश पर प्रोत्साहन के रूप में अनुदत्त कोई कर छूट, विशेषाधिकार के रूप में जारी नहीं रहेगी, यदि नियत दिन पर या उसके पश्चात् उक्त अधिसूचना विखंडित हो जाती है ;

(घ) किसी कर, अधिभार, शास्ति, व्याज जो देय हैं या देय हो सकते हैं या कोई समपहरण या

संशोधित अधिनियम या निरसित अधिनियमों के उपबंधों के खिलाफ किए गए किसी अपराध के संबंध में उपगत या दिए गए दंड को प्रभावित नहीं करेगा ;

(ड) किसी अन्वेषण, जांच, निर्धारण कार्यवाही, न्यायनिर्णयन और अन्य कोई विधिक कार्यवाही या बकायों की वसूली या यथापूर्वोक्त किसी कर, अधिभार, शास्ति, जुर्माना, ब्याज, अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता, दायित्व, समपहरण या दंड के संबंध में उपचार और किसी ऐसे अन्वेषण, जांच, निर्धारण कार्यवाही, न्यायनिर्णयन और अन्य विधिक कार्यवाहियों या बकायों की वसूली या उपचार को संस्थित, जारी या प्रवर्तित कर सकेगा और किसी ऐसे कर, अधिभार, शास्ति, जुर्माना, ब्याज, समपहरण या दंड उद्गृहीत या अधिरोपित हो सकेगा जैसे कि इन अधिनियम को इस प्रकार से संशोधित या निरसित नहीं किया गया है, को प्रभावित नहीं करेगा ; या

(च) कार्यवाहियां, जिसके अंतर्गत जिनका संबंध किसी अपील, पुनर्विलोकन या निर्देश जिन्हे नियत दिन से पूर्व या उस दिन पर या उसके पश्चात् उक्त संशोधित अधिनियम या निरसित अधिनियम के अधीन संस्थित किया गया है और ऐसी कार्यवाहियां उक्त संशोधित अधिनियम या निरसित अधिनियम के अधीन जारी रहेंगी जैसे कि यह अधिनियम प्रवृत्त नहीं हुआ हो और उक्त अधिनियम को संशोधित और निरसित नहीं किया गया है, को प्रभावित नहीं करेगा ।

(3) निरसन के प्रभाव के संदर्भ में साधारण खंड अधिनियम, 1897 के साधारण उपयोजन पर प्रतिकूल प्रभाव या प्रभावित करने के लिए धारा 173 और उपधारा (1) में निर्दिष्ट विशिष्ट विषयों के उल्लेख को नहीं रखा जाएगा ।

अनुसूची 1

[धारा 7]

क्रियाकलापों को पूर्ति के रूप में माना जाए यदि बिना विचार के किया गया

1. जहां इनपुट कर प्रत्यय का ऐसी आस्तियों पर उपभोग किया गया है, कारबार आस्तियों का स्थाई अंतरण या निपटान ।

2. जब कारबार के अनुक्रम या अग्रसर में किया गया, धारा 25 में यथाविनिर्दिष्ट संबंधित व्यक्तियों या सुभिन व्यक्तियों के बीच में माल या सेवाओं या दोनों का पूर्ति :

परंतु यह कि किसी नियोजन द्वारा किसी कर्मचारी को एक वित्तीय वर्ष में पचास हजार से अनधिक मूल्य का दान दिया गया, को माल या सेवा या दोनों की पूर्ति नहीं माना जाएगा ।

3. (क) किसी प्रधान द्वारा उसके अभिकर्ता को माल की पूर्ति, जहां अभिकर्ता प्रधान की ओर से ऐसे माल की पूर्ति करने का वचन देता है ।

(ख) किसी अभिकर्ता द्वारा उसके प्रधान को माल की पूर्ति, जहां अभिकर्ता प्रधान की ओर से ऐसे माल को प्राप्त करने का वचन देता है ।

4. कारबार के अग्रसर या अनुक्रम में, कराधेय व्यक्ति द्वारा भारत से बाहर संबंधित व्यक्ति या उसके किसी अन्य स्थापन से सेवाओं का आयात ।

अनुसूची 2

[धारा 7]

क्रियाकलापों को माल की पूर्ति या सेवाओं की पूर्ति के रूप में माना जाए

1. अंतरण--

(क) माल में हक का कोई अंतरण, माल की पूर्ति है ;

(ख) माल में अधिकार या माल में अविभाजित हिस्से का उसके हक के अंतरण के बिना, कोई अंतरण, सेवाओं की पूर्ति है ;

(ग) कोई करार जो अनुबंध करता है कि माल में संपत्ति जैसी सहमती हुई है कि अनुसार पूर्ण प्रतिफल के संदाय पर भविष्य की तारीख को हस्तांतरित होगा, माल की पूर्ति है ।

2. भूमि और भवन--

(क) कोई पट्टा अभिधृति, सुखाचार, भूमि के अधिभोग की अनुज्ञप्ति, सेवाओं की पूर्ति है ;

(ख) भवन जिसके अंतर्गत कारबार या वाणिज्य के लिए वाणिज्यिक, औद्योगिक या

आवासीय प्रक्षेत्र पूर्णतः या अंशतः कोई पट्टा या किराए पर देना, सेवाओं की पूर्ति है।

3. व्यवहार या प्रक्रिया--

कोई व्यवहार या प्रक्रिया जो अन्य व्यक्ति के माल पर लागू की जाती है, सेवाओं की पूर्ति है।

(4) कारबार आस्तियों का अंतरण--

(क) जहां माल जो कारबार की संपत्ति का भाग है, को व्यक्ति जो कारबार चला रहा है के निदेशों के अधीन या द्वारा अंतरित या व्ययनित किया जा रहा है जिससे कि वह उन आस्तियों का और हिस्सा न रहें; जो विचारणीय है या नहीं, ऐसे अंतरण या व्ययन, व्यक्ति द्वारा माल की पूर्ति है;

(ख) जहां, कारबार करने वाले किसी व्यक्ति द्वारा या उसके निदेश के अधीन, कारबार के प्रयोजन के लिए रखे या उपयोग किए गए माल को कारबार के प्रयोजनों से भिन्न किसी निजी उपयोग के लिए रखा गया है या उपयोग कर लिया गया है या किसी व्यक्ति को कारबार के प्रयोजन के सिवाय किसी प्रयोजन में उपयोग के लिए उपलब्ध कराया गया है, चाहे वह किसी प्रतिफल के लिए हो या न हो, ऐसे माल का उपयोग करना या उपलब्ध करवाना, सेवाओं की पूर्ति है ;

(ग) जहां कोई व्यक्ति कराधेय व्यक्ति के रूप में प्रविरत हो जाता है, कोई माल जो उसके द्वारा चलाए गए कारबार की आस्तियों का हिस्सा है, उसके कराधेय व्यक्ति के रूप में प्रविरत होने से तुरंत पूर्व उसके कारबार के अनुक्रम या अग्रसर में उसके द्वारा पूर्ति किया गया समझा जाएगा, जब तक कि:--

(i) अन्य व्यक्ति को चालू समुत्थान के रूप में कारबार का अंतरण नहीं कर दिया जाता है ; या

(ii) कारबार ऐसे वैयक्तिक प्रतिनिधि द्वारा चलाया जाता है जिसे कराधेय व्यक्ति समझा जाएगा।

(5) सेवाओं की पूर्ति --

निम्नलिखित को सेवा की पूर्ति माना जाएगा, अर्थात्:--

(क) स्थावर संपत्ति को किराए पर देना ;

(ख) समापन प्रमाणपत्र के जारी होने के पश्चात् जहां पूर्ण प्रतिफल प्राप्त हो गया है, जहां सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित हो या कब्जा मिलने के पश्चात्; जो भी पहले हो, के सिवाय प्रक्षेत्र का सन्निर्माण, भवन, सिविल संरचना या उसका कोई भाग, जिसके अंतर्गत क्रेता को विक्रय के लिए आशयित पूर्णतः या अंशतः प्रक्षेत्र या भवन।

स्पष्टीकरण--इस खंड के प्रयोजन के लिए--

(1) अभिव्यक्ति "सक्षम प्राधिकारी" से सरकार या तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन समापन प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्राधिकृत कोई प्राधिकारी और ऐसे प्राधिकारी की ओर से ऐसा प्रमाणपत्र गैर अपेक्षित होने की दशा में, निम्नलिखित किन्हीं में से, अर्थात्:--

(i) वास्तुविद् अधिनियम, 1972 के अधीन गठित वास्तुविद् परिषद् के साथ रजिस्ट्रीकृत कोई वास्तुविद् ; या

(ii) इंजिनियरी संस्थान (भारत) के साथ रजिस्ट्रीकृत कोई चार्टर्ड इंजिनियर ; या

(iii) क्रमशः शहर का स्थानीय निकाय या कस्बा या गांव या विकास या योजना प्राधिकारी का कोई अनुज्ञप्त सर्वेक्षक ;

(2) अभिव्यक्ति "सन्निर्माण" जिसके अंतर्गत किसी विद्यमान सिविल संरचना में अतिरिक्त निर्माण परिवर्तन, प्रतिस्थापन या पुनः प्रतिरूपण है ;

(ग) किसी बौद्धिक संपत्ति अधिकार के उपयोग या उपभोग की अनुमति देना या अस्थाई अंतरण करना ;

(घ) सूचना प्रौद्योगिकी सॉफ्टवेयर का विकास, डिजाइन, क्रमादेशन, अनुकूलत, उन्नति, वृद्धि, क्रियान्वयन ;

(ङ) किसी कार्य से विरत होने की बाध्यता को मंजूरी देना या किसी कार्य या किसी

स्थिति को सहन करना या किसी कार्य का करना ; और

(च) किसी प्रयोजन (किसी विनिर्दिष्ट अविधि के लिए या नहीं) नकद, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए किसी माल को उपयोग करने के अधिकार का अंतरण ।

6. संयुक्त प्रदाय--

निम्नलिखित संयुक्त पूर्तियों को सेवाओं की पूर्ति माना जाएगा, अर्थात्--

(क) धारा 2 के खंड (119) में यथा परिभाषित कार्य संविदा ; और

(ख) किसी सेवा के द्वारा या हिस्से के रूप में या किसी अन्य रीति में जो भी हो, माल, खाद्य वस्तुएं या मानव उपभोग के लिए अन्य चीजें या कोई पेय (मानव उपयोग हेतु शराब द्रवण के अतिरिक्त) जहां ऐसा पूर्ति या सेवा नकद, विरत संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए होता है, की पूर्ति ।

1972 का 20

7. माल की पूर्ति --

निम्नलिखित को माल की पूर्ति के रूप में माना जाएगा, अर्थात् --

किसी सदस्य को किसी अनिगमित संगम या व्यक्तियों के निकाय द्वारा नकद, विरत संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए माल की पूर्ति ।

अनुसूची 3

[धारा 7]

क्रियाकलाप या संव्यवहार जिन्हें न तो माल की पूर्ति माना जाएगा न ही सेवाओं की पूर्ति

1. कर्मचारी द्वारा अपने नियोजन के संबंध में या उसके अनुक्रम में नियोजक को सेवाएं ।
2. तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन स्थापित किसी न्यायालय या अधिकरण द्वारा सेवाएं ।
3. (क) संसद सदस्यों, राज्य विधानसभा के सदस्यों, पंचायतों के सदस्यों, नगरपालिकाओं के सदस्यों और अन्य स्थानीय प्राधिकरणों द्वारा पालन किए गए कृत्य ;
(ख) उस हैसियत में संविधान के उपबंधों के अनुसरण में किसी पद को धारण किए हुए किसी व्यक्ति द्वारा पालन किए गए कर्तव्य ; या
(ग) किसी व्यक्ति द्वारा अध्यक्ष या किसी सदस्य या केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा स्थापित निकाय में निदेशक द्वारा और जिसे इस खंड के प्रारंभ से पूर्व किसी कर्मचारी के रूप में न समझा जाए ।
4. अंतिम संस्कार, दफनाना, शवदाहगृह या मुर्दाघर जिसके अंतर्गत मृतक के परिवहन की सेवाएं ।
5. भूमि का विक्रय और अनुसूची-2 के पैरा 5 के खंड (ख) के अध्यक्षीन भवन का विक्रय ।
6. लाटरी, दांव और झूत के अतिरिक्त अनुयोज्य दावे ।

स्पष्टीकरण--पैरा 2 के प्रयोजन के लिए शब्द "न्यायालय" जिसके अंतर्गत जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय भी है ।

उद्देश्य एवं कारणों का विवरण

वर्तमान में केन्द्र सरकार कुछ वस्तुओं के उत्पाद में केन्द्रीय आबकारी शुल्क के रूप में, कुछ सेवाओं में सेवा कर का प्रावधान करके, वस्तुओं की अन्तर-राज्यीय बिक्री पर केन्द्रीय बिक्रीकर के रूप में कर वसूलती है। इसी प्रकार राज्य सरकार मूल्य संवर्धित कर के रूप में खुदरा बिक्री पर, राज्य में सामान के प्रवेश पर प्रवेश कर के रूप में, विलासिता कर तथा खरीद कर आदि वसूलती है। तदनुसार एक ही आपूर्ति श्रृंखला पर विविध प्रकार के करों की वसूली की जा रही है।

2. वस्तुओं एवं सेवाओं पर कर की वर्तमान व्यवस्था में निम्नलिखित कठिनाईयां सामने आ रही हैं--

- (i) राज्य सरकारों द्वारा वसूले जाने वाले करों में केन्द्र सरकार द्वारा वसूल किए जाने वाले करों का कर प्रत्येय न होने के कारण यह व्यवस्था क्रम-प्रपाती है ।
- (ii) राज्य सरकार द्वारा वसूल किए जाने वाले कुछ करों का कर प्रत्येय उनके द्वारा वसूले जाने वाले अन्य करों के भुगतान पर लागू नहीं है ।

- (iii) देश में अलग-अलग कर मूल्य संवर्धित कर कानूनों में कर दरों की विविधता और अलग-अलग कर प्रक्रियायें देश को भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में विभाजित करती है, तथा
- (iv) प्रभारों की वसूली तथा चुंगी, प्रवेश कर, चेक पोस्ट आदि जैसे गैर प्रभार नाको के बनने से संपूर्ण देश में व्यापार का निर्बाध प्रवाह रुक जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के करों से विवरणियों की संख्या, भुगतान आदि के रूप में करदाताओं पर इसके अनुपालन की भारी लागत पड़ती है।
3. उपरोक्त समस्याओं को देखते हुए उपरोक्त सभी करों को एक कर में समाहित करने का प्रस्ताव है जिसे वस्तु एवं सेवा कर कहा जाएगा और जिसका करारोपण निर्माण या आयात से आरंभ करके आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक स्तर पर अंतिम खुदरा स्तर तक होगा। इसलिए वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति पर केन्द्र सरकार या राज्य सरकार द्वारा वसूले जा रहे वर्तमान प्रत्येक कर वस्तु एवं सेवा कर में समाहित हो जाएंगे, जोकि एक दो स्तरीय वसूली प्रक्रिया होगी जिसमें केन्द्र सरकार केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर के रूप में तथा राज्य सरकार राज्य वस्तु एवं सेवा कर के रूप में वस्तु या सेवाओं या दोनों की अन्तरा-राज्यीय आपूर्ति पर कर लगाएगी और संग्रह करेगी।
4. उपरोक्त दृष्टि से प्रत्येक राज्य में ऐसा कानून बनाया जाना आवश्यक हो गया है जिसे राज्य वस्तु एवं सेवा कर विधेयक, 2017 कहा जाएगा। प्रस्तावित विधान से राज्य सरकार को ऐसी वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की राज्य के भीतर आपूर्ति पर वस्तु एवं सेवा कर वसूलने का अधिकार प्रदान किए जाने का प्रस्ताव है।
- दिल्ली के संदर्भ में प्रस्तावित विधान अर्थात् दिल्ली वस्तु एवं सेवा कर विधेयक, 2017 से देश में अप्रत्यक्ष कर प्रशासन को सरल और सुसंगत बनाया जा सकेगा। इससे आशा है कि उत्पादन की लागत घटेगी और देश में मंहगाई कम होगी, जिससे भारतीय व्यापार एवं उद्योग, घरेलू तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतियोगी बन सकेंगे। वस्तु एवं सेवा कर के स्वरूप में ऐसी आन्तरिक प्रक्रिया बनाई गई है जिससे करदाता, इनपुट कर क्रेडिट का मूल्य संवर्धन की श्रृंखला में एक स्तर से दूसरे स्तर पर निर्बाध अन्तरण होने के कारण, इसके अनुपालन के प्रति प्रोत्साहित होंगे। प्रस्तावित वस्तु एवं सेवा कर से कर आधार विस्तृत होगा और मजबूत सूचना प्रौद्योगिकी व्यवस्था के परिणामस्वरूप बेहतर कर अनुपालन हो सकेगा।
5. तदनुसार दिल्ली वस्तु एवं सेवा कर विधेयक, 2017 नामक प्रस्तावित विधेयक में परस्पर निम्न उपबंध किए गए हैं, अर्थात्:-
- (क) मानवीय उपभोग के लिए शराब की आपूर्ति को छोड़कर सभी अन्तरा-राज्यीय वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्तियों पर अधिसूचित की जाने वाली दर से, जो वस्तु एवं सेवा कर परिषद् (परिषद्) द्वारा संस्तुत रूप में 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी, करारोपण करना।
- (ख) व्यापार के दौरान या इसकी वृद्धि में प्रयोग किए गए या प्रयोग किए जाने के लिए वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्तियों पर दिए जाने वाले कर के कर प्रत्येय की उपलब्धता से इनपुट कर क्रेडिट के आधार को विस्तृत बनाना।
- (ग) इलैक्ट्रॉनिक कॉमर्स ऑपरेटरों पर उनके पोर्टल से की गई वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्तियों के भुगतान में से स्रोत पर कर संग्रह, जो कर-योग्य आपूर्तियों की कुल कीमत का एक प्रतिशत से अधिक नहीं होगा, का दायित्व डालना।
- (घ) पंजीकृत व्यक्तियों द्वारा देय करों के स्व-निर्धारण का उपबंध करना।
- (ङ) अधिनियम के प्रावधानों के अनुपालन की जांच हेतु पंजीकृत व्यक्तियों की लेखा-परीक्षा का उपबंध करना।
- (च) कर की बकाया राशि की वसूली के लिए विभिन्न माध्यमों का उपबंध करना जिसमें चूककर्ता के सामान, चल एवं अचल संपत्ति का कब्जा तथा बिक्री करना शामिल है।
- (छ) अधिकारियों को निरीक्षण, तलाशी, जब्ती तथा गिरफ्तारी के अधिकार का उपबंध करना।
- (ज) केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित वस्तु एवं सेवा कर के अपील न्यायाधिकरण को अपीलीय अधिकारी या संशोधन प्राधिकारी द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपील हेतु अधिकृत करना।
- (झ) प्रस्तावित विधान के उपबंधों के उल्लंघन किए जाने पर अर्थदंड या जुर्माने का उपबंध करना।
- (ञ) वस्तु या सेवा या दोनों पर लगने वाले कर में कमी होने से मिलने वाले लाभ को व्यापारी द्वारा उपभोक्ता को उपलब्ध कराने की सुनिश्चितता हेतु प्रति-लाभवृत्ति उपबंध करना; तथा
- (ट) वर्तमान करदाताओं के वस्तु एवं सेवा करप्रणाली के दायरे में सरलतापूर्वक अन्तरण हेतु अन्तरण संबंधी विस्तृत उपबंध बनाना।
6. दिल्ली वस्तु एवं सेवा कर विधेयक, 2017 में उपबंधों पर नोट में विभिन्न उपबंधों को विस्तारपूर्वक बताया गया है।
7. विधेयक उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

मनीष सिसोदिया

नई दिल्ली :

दिनांक : 31/05/2017

उपबंधों पर नोट

खंड-1 प्रस्तावित अधिनियम का संक्षिप्त शीर्षक, विस्तार एवं प्रारंभ का उपबंध करता है।

खंड-2 प्रस्तावित अधिनियम में प्रयुक्त विभिन्न शब्दावली और अभिव्यक्तियों को परिभाषित करता है।

खंड-3 प्रस्तावित अधिनियम के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आयुक्त तथा अन्य श्रेणी के अधिकारियों की नियुक्ति का उपबंध करता है। इस खंड में दिल्ली मूल्य संवर्धित कर अधिनियम, 2004 के अन्तर्गत अधिकारियों को प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत नियुक्त अधिकारी माना जाएगा ऐसा भी उपबंधित किया गया है।

खंड-4 में प्रस्तावित विधान के खंड-3 के अधीन नियुक्त अधिकारियों के अतिरिक्त अन्य अधिकारियों की नियुक्ति का उपबंध किया गया है।

खंड-5 में प्रस्तावित अधिनियम के अधीन कर्तव्यों के निर्वहन के लिए अधिकारियों को शक्तियां प्रदान करने का उपबंध किया गया है।

खंड-6 प्रस्तावित अधिनियम के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु केन्द्रीय कर अधिकारियों को वस्तु एवं सेवा कर परिषद् की सिफारिश पर केन्द्र सरकार द्वारा यथाअधिसूचित शर्तों के अधीन अधिकृत करने के लिए उपबंध करता है।

खंड-7 आपूर्ति की संभावनाओं को उपबंधित करता है। इस खंड में ऐसी गतिविधियों का उपबंध किया गया है जिन्हें आपूर्ति माना गया है इस खंड में यह भी उपबंध किया गया है कि कुछ गतिविधियों, जिन्हें प्रस्तावित अधिनियम की अनुसूची-1 में विनिर्दिष्ट किया गया है, यदि बिना मूल्य के की जाएगी या किए जाने की सहमति होगी, को आपूर्ति माना जाएगा। इस खंड में ऐसी गतिविधियों का भी उपबंध किया गया है जो न तो वस्तु की आपूर्ति होगी और न ही सेवा की आपूर्ति होगी।

खंड-8 में समेकित या मिश्रित आपूर्ति पर कर दायित्व के लिए उपबंध किया गया है।

खंड-9 मानव उपभोग के लिए अल्कोहलिक शराब की आपूर्ति को छोड़कर वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की सभी अन्तरा-राज्यीय आपूर्तियों पर दिल्ली वस्तु एवं सेवा कर (राज्य कर) के खंड 15 के अन्तर्गत निर्धारित मूल्य पर कर की दर, जो 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी, से कर की वसूली तथा संग्रह का उपबंध करता है। इस खंड में यह भी उपबंध किया गया है कि —

(i) कच्चे तेल, हाई स्पीड डीजल, मोटर स्प्रीट (जिसका सामान्य नाम पेट्रोल है) प्राकृतिक गैस तथा विमानन टरबाइन ईंधन की आपूर्ति पर राज्य कर परिषद् की सिफारिशों पर दिल्ली सरकार द्वारा अधिसूचित तारीख से करारोपण किया जाएगा।

(ii) परिषद् की सिफारिश पर दिल्ली सरकार वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्तियों की ऐसी श्रेणियों को अधिसूचित करेगी जिन पर इन वस्तुओं या सेवाओं या दोनों के प्राप्तकर्ता द्वारा विपरित प्रभार आधार पर कर का भुगतान किया जाएगा।

(iii) किसी अपंजीकृत आपूर्तिकर्ता द्वारा किसी पंजीकृत व्यक्ति को कर योग्य वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति पर संबंधित पंजीकृत व्यक्ति द्वारा विपरित प्रभार आधार पर राज्यकर का भुगतान किया जाएगा।

(iv) परिषद् की सिफारिश पर दिल्ली सरकार ऐसी सेवाओं की श्रेणी को अधिसूचित कर सकती है जिस पर अन्तरा-राज्यीय आपूर्ति पर कर का भुगतान इलैक्ट्रॉनिक्स कामर्स ऑपरेटर द्वारा किया जाएगा यदि सेवाओं की आपूर्ति ऑपरेटर के माध्यम से की गई है।

खंड-10 वसूली के प्रश्न के लिए उपबंध करता है। यह कर वसूली की वैकल्पिक पद्धति है जो ऐसे छोटे कर दाताओं के लिए बनाई गई है, जिनकी बिक्री निर्धारित सीमा तक है। इस खंड में यह भी उपबंध है कि कुछ आपूर्ति श्रेणियां या आपूर्तिकर्ता इस कर प्रश्न के विकल्प का चुनाव नहीं कर सकते। इस खंड के अन्तर्गत विकल्प चुनने वाला व्यक्ति इनपुट पर भुगतान किए गए करों पर न तो क्रेडिट ले सकता है और न ही प्राप्तकर्ता से कोई कर संग्रह कर सकता है।

खंड-11 दिल्ली सरकार को परिषद् की सिफारिश पर किसी विशिष्ट विवरण की वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्तियों पर राज्य कर से पूर्णतया या सशर्त छूट प्रदान करने का अधिकार प्रदान करता है। इसमें दिल्ली सरकार को परिषद् की सिफारिश पर विशेष आदेश के माध्यम से किसी वस्तु या सेवा या दोनों पर कर के भुगतान से छूट प्रदान करने की शक्ति प्रदान की गई है।

खंड-12 में वस्तु की आपूर्ति के समय का उपबंध है। इस खंड में सामान्य स्थितियों में, रिवर्स चार्ज स्थिति में, वाउचर एवं अन्य स्थितियों में आपूर्ति की स्थिति के विषय में विस्तार से बताया गया है।

खंड-13 में सेवाओं की आपूर्ति के समय का उपबंध है। इस खंड में सामान्य स्थितियों में, रिवर्स चार्ज स्थिति में, वाउचर एवं अन्य स्थितियों में आपूर्ति की स्थिति के विषय में विस्तार से बताया गया है।

खंड-14 कर की दर में बदलाव की परिस्थिति में संबंधित वस्तुओं या सेवाओं या दोनों की आपूर्तियों के समय का उपबंध करता है।

खंड-15 में कर योग्य आपूर्ति की कीमत के विषय में उपबंध किया गया है। इस खंड में उपबंध है कि वस्तुओं या सेवाओं या दोनों का आपूर्ति मूल्य उसका अन्तरण मूल्य होगा, जिसका वास्तव में भुगतान किया गया हो या किया जाएगा। शर्त है कि आपूर्तिकर्ता

तथा प्राप्तकर्ता दोनों संबंधित नहीं है तथा मूल्य केवल आपूर्ति की कुल कीमत का ही है। इस खंड में उन मदों का विवरण है जिन्हें कर की गणना के उद्देश्य के लिए मूल्य में शामिल किया जाएगा या मूल्य में शामिल नहीं किया जाएगा। इस खंड में कुछ स्थितियों में मूल्यांकन के नियम बनाने की शक्तियों का उपबंध भी है।

खंड-16 में इनपुट टैक्स क्रेडिट प्राप्त करने की पात्रता, शर्तें तथा समयावधि का उपबंध है। इस खंड में उपबंध किया गया है कि अपने व्यापार के दौरान या बढ़ोतरी में प्रयुक्त या प्रयोग की जाने वाली किसी वस्तु या सेवा या दोनों की आपूर्ति पर प्रभारित इनपुट टैक्स का क्रेडिट लेने के लिए पंजीकृत व्यक्ति ही पात्र है।

खंड-17 इनपुट टैक्स क्रेडिट के विभाजन तथा रुके इनपुट टैक्स क्रेडिट के विभाजन का उपबंध करता है। इस खंड में उस क्रेडिट के विभाजन के विस्तार का उपबंध किया गया है जहां वस्तु या सेवा या दोनों अंशतः व्यापार के उद्देश्य के लिए तथा अंशतः किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाएगी और जहां वस्तु या सेवा या दोनों किसी पंजीकृत व्यक्ति द्वारा अंशतः कर योग्य आपूर्ति करने के लिए प्रयोग की जाएगी, इसमें जीरो रेटेड आपूर्ति भी शामिल है। इस उपबंध में किसी बैंकिंग कंपनी या वित्तीय संस्थान जिसमें धनराशि जमा करने वाले, ऋण या अग्रिम राशि देने वाली सेवाओं की आपूर्ति, कार्यों में संलग्न नॉन-बैंकिंग कंपनी या वित्तीय संस्थान द्वारा इनपुट टैक्स क्रेडिट लेने की विशिष्ट प्रक्रिया के लिए भी उपबंध किया गया है। इस खंड में ऐसी आपूर्ति की सूची भी दी गई है जिसमें इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ नहीं लिया जा सकता।

खंड-18 में उन विशेष परिस्थितियों, जिसमें नया पंजीकरण, प्रश्न वसूली से सामान्य वसूली में परिवर्तन, छूट प्राप्त आपूर्ति का कर योग्य बनाया जाना तथा विलोमत परिस्थितियां शामिल हैं, में क्रेडिट की उपलब्धता के विषय में उपबंध किया गया है।

खंड-19 में ऐसे व्यक्ति (अर्थात् प्रधान व्यापारी) जो निर्धारित शर्तों के अधीन इनपुट या पूंजीगत वस्तु की फुटकर कार्यों के लिए भेज चुका हो, के द्वारा इनपुट टैक्स क्रेडिट प्राप्त करने के लिए विशेष प्रावधान का उपबंध है।

खंड-20 "इनपुट सेवा वितरक" के लिए उपबंध करता है जो विनिर्दिष्ट शर्तों के अन्तर्गत तथा निर्धारित पद्धति से इनपुट टैक्स के क्रेडिट को वितरित करेगा।

खंड-21 इनपुट सेवा वितरक द्वारा वितरित अतिरिक्त इनपुट टैक्स क्रेडिट की ब्याज सहित वसूली की पद्धति का उपबंध करता है।

खंड-22 ऐसे प्रत्येक आपूर्तिकर्ता, जो वस्तुओं अथवा सेवाओं या दोनों की आपूर्ति करता है और यदि उसकी सकल वित्तीय बिक्री निर्धारित सीमा से अधिक हो जाती है, के राज्य में पंजीकरण के दायित्व का उपबंध करता है। यह खंड वर्तमान अधिनियम में पंजीकृत प्रत्येक व्यक्ति पर निर्धारित दिन से प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकरण का दायित्व डालता है।

खंड-23 उपबंध करता है कि कुछ श्रेणी के व्यक्तियों को पंजीकरण नहीं करवाना पड़ेगा।

खंड-24 विशेष प्रकार के आपूर्तिकर्ताओं के अनिवार्य पंजीकरण हेतु उपबंध करता है, जिसमें यह नहीं देखा जाएगा कि उसकी सकल बिक्री खंड 22 में उपबंधित छूट सीमा से कम है।

खंड-25 पंजीकरण की प्रक्रिया के विषय में है। इस खंड में उपबंध है कि जिस व्यक्ति को पंजीकरण करवाना आवश्यक है उसे पंजीकरण करवाने की आवश्यकता की तिथि से तीस दिन के भीतर पंजीकरण के लिए आवेदन करना होगा। इस खंड में यह भी उपबंधित है कि अस्थायी कर योग्य व्यक्ति या नॉन रेजिडेंट कर योग्य व्यक्ति अपना व्यापार प्रारंभ करने से कम से कम पांच दिन पहले पंजीकरण के लिए आवेदन करेगा। इस खंड में स्वैच्छिक पंजीकरण का प्रावधान भी है। इस खंड में यह भी प्रावधान है कि कुछ संगठनों को इनवर्ड आपूर्ति पर दिए गए करों की वापसी के उद्देश्य के लिए यूनिक आईडेंटिटी नम्बर जारी किया जाएगा।

खंड-26 केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत पंजीकरण नम्बर या यूनिक पहचान नम्बर जारी या रिजेक्ट किए जाने की स्थिति में प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकरण के लिए आवेदन को पंजीकरण अथवा रिजेक्शन को मानने का प्रावधान करता है।

खंड-27 कैजुअल कर दाता व्यक्ति या गैर आवासीय करदाता व्यक्ति के लिए विशेष प्रावधानों का प्रावधान करता है।

खंड-28 पंजीकरण के संशोधन का प्रावधान करता है। यह खंड संशोधन के अनुमोदन या रिजेक्शन को मानने का भी प्रावधान करता है जहां संशोधन का कोई अनुमोदन या रिजेक्शन केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत किया गया हो।

खंड-29 कुछ विशेष परिस्थितियों के अंतर्गत उचित अधिकारी स्वयं के प्रयास से या पंजीकृत व्यक्ति या उसके कानूनी वारिस द्वारा दायर आवेदन पर, ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के मामले में पंजीकरण रद्द करने का प्रावधान करता है। इसके अलावा यह खंड यह भी प्रावधान करता है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत पंजीकरण के रद्दकरण को प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत पंजीकरण को रद्द माना जाए।

खंड-30 पंजीकरण के रद्दकरण के प्रतिसंहरण का प्रावधान करता है जहां उचित अधिकारी द्वारा स्वयं के प्रयासों से पंजीकरण रद्द किया गया हो। इसके अलावा ये खंड यह भी प्रावधान करता है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत पंजीकरण के रद्दकरण के प्रतिसंहरण को प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत पंजीकरण के रद्दकरण का प्रतिसंहरण माना जाए।

खंड-31 निर्धारित अवधि के अंदर कर बीजक को जारी करने का प्रावधान करता है जोकि निर्धारित विवरण दर्शाता हो। यह खंड सरकार को सशक्त करता है कि विनिर्दिष्ट सर्विस के लिए भी जिसके लिए कोई अन्य दस्तावेज कर बीजक के स्थान पर जारी किया गया हो, को कर बीजक माना जाएगा। यह खंड सरकार को ऐसी सेवाएं विनिर्दिष्ट करने के लिए भी सशक्त करेगा जहां

कर बीजक जारी करना अपेक्षित नहीं होगा। यह खंड कुछ मामलों में कर बीजक के अलावा अन्य दस्तावेज जारी करने का भी प्रावधान करता है।

खंड-32 गैर पंजीकृत व्यक्ति को कर एकत्रण से रोकता है। ये खंड यह भी प्रावधान करता है कि पंजीकृत व्यक्ति प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप कर संग्रहण करेंगे।

खंड-33 प्रावधान करता है कि जहां कोई सप्लाई क्षतिपूर्ति के लिए की गई है, प्रत्येक व्यक्ति जो उस सप्लाई के लिए कर भुगतान हेतु जिम्मेवार है वो निर्धारण, कर बीजक तथा अन्य इसी प्रकार के सभी संबंधित दस्तावेजों में कर की राशि को प्रमुखता से दर्शाएंगे।

खंड-34 विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में क्रेडिट नोट्स तथा डेबिट नोट्स को जारी करने का प्रावधान करता है। ये खंड अधिकतम समय तथा रिटर्न का भी प्रावधान करता है जिसमें क्रेडिट नोट तथा डेबिट नोट के विवरण की घोषणा अपेक्षित है।

खंड-35 प्रावधान करता है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति अपने व्यवसाय के प्रमुख स्थलों पर विनिर्दिष्ट विवरणों का सही लेखा रखेंगे। ये खंड गुड्स के भंडारण के लिए माल गोदाम या गोदाम या किसी अन्य प्रयुक्त स्थल के स्वामी तथा प्रत्येक ट्रांसपोर्टर या आपरेटर पर जिम्मेवारी डालता है कि वे विनिर्दिष्ट रिकार्ड मेनटेन करेंगे। ये खंड आयुक्त को सशक्त करता है कि विनिर्दिष्ट उद्देश्य या अन्य निर्धारित तरीके से लेखा मेनटेन करने के लिए अतिरिक्त लेखा या दस्तावेजों को मेनटेन करने के लिए कर योग्य व्यक्तियों के वर्ग को अधिसूचित करें। ये खंड यह भी प्रावधान करता है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति जिसका टर्नओवर वित्तीय वर्ष के दौरान निर्धारित सीमा से अधिक है वे चार्टर्ड एकाउंटेंट या कास्ट एकाउंटेंट द्वारा अपने लेखा की लेखा परीक्षा कराएंगे।

खंड-36 के तहत अपेक्षित है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति लेखा या अन्य रिकार्ड की बुक्स ऐसे लेखा एवं रिकार्ड से संबंधित वर्ष के लिए वार्षिक रिटर्न के प्रस्तुत करने की देय तिथि से बहत्तर माह की समाप्ति तक रखेंगे।

खंड-37 पंजीकृत व्यक्तियों के कुछ विनिर्दिष्ट संवर्गों के अलावा, पंजीकृत व्यक्ति द्वारा आउट वर्ड सप्लाई के विवरण के प्रस्तुतीकरण के तरीके एवं समय तथा तदनुसार प्राप्तकर्ता को इन विवरणों के संचारण के तरीके एवं समय का प्रावधान करता है। इसके अलावा ये खंड प्राप्तकर्ता से संचारित विवरण की स्वीकृति या रिजेक्शन के तरीके एवं समय का प्रावधान करता है। ये खंड प्राप्तकर्ता के इनवर्ड सप्लाई के साथ आउटवर्ड सप्लाई के असंगत विवरण के परिणामी चूक के सुधार एवं कर एवं ब्याज, यदि कोई है, के भुगतान के लिए तरीके एवं समय अवधि का प्रावधान करता है।

खंड-38 तदनुसार सप्लायर्स द्वारा प्रस्तुत आउटवर्ड सप्लाई के विवरण के सत्यापन, वैधता, सुधार या समापन सहित, पंजीकृत व्यक्ति के कुछ विनिर्दिष्ट संवर्गों के अलावा, पंजीकृत व्यक्ति द्वारा इनवर्ड सप्लाई के विवरण के प्रस्तुत करने के तरीके एवं समय का प्रावधान करता है। इसके अलावा ये खंड तदनुसार सप्लायर्स के प्राप्तकर्ता द्वारा उन्नत या स्वीकृत सप्लाई के विवरण के संचार के तरीके एवं समय का प्रावधान करता है। असंगत विवरण के परिणामी यदि कोई कर एवं ब्याज के भुगतान में कोई भूल या चूक हुई है तो सुधार के लिए तरीके एवं समय अवधि का प्रावधान करता है।

खंड-39 पंजीकृत व्यक्तियों के विभिन्न संवर्गों द्वारा रिटर्न के प्रस्तुतीकरण के तरीके, शर्तों एवं समय का प्रावधान करता है। इसके अलावा ये खंड यह भी प्रावधान करता है कि कर रिटर्न फाइलिंग की तिथि तक कर का भुगतान किया जाना अपेक्षित है। ये खंड समय सीमा का भी निर्धारण करता है जिस दौरान रिटर्न में किसी भूल या गलत विवरण को सुधारा जा सकता है।

खंड-40 प्रावधान करता है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति, जिसने पंजीकरण के दायित्व की तिथि और जिस तिथि को उसे पंजीकरण प्रदान किया गया हो, के बीच की अवधि में आउटवर्ड सप्लाई की है, पंजीकरण प्रदान होने के बाद उसके द्वारा प्रस्तुत प्रथम रिटर्न में वह इसकी घोषणा करेगा।

खंड-41 प्रावधान करता है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति इनपुट कर के क्रेडिट को अनंतिम रूप से लेने का पात्र होगा बशर्ते वह निर्धारित शर्तें एवं प्रतिबंध पूरी करता हो। इसके अलावा ये खंड प्रावधान करता है कि अनंतिम आधार पर लिया गया क्रेडिट सिर्फ उस रिटर्न में स्वमूल्यांकन आउटपुट कर के भुगतान के लिए प्रयोग किया जाए जिसमें अनंतिम आधार पर क्रेडिट लिया गया है।

खंड-42 तदनुसार विवरण के साथ कर अवधि के लिए प्राप्तकर्ता द्वारा प्रस्तुत इनवर्ड सप्लाई के विवरण के निर्धारित समय एवं तरीके में मैचिंग का प्रावधान करता है। ये खंड मिस-मैच के परिणाम के लिए भी प्रावधान करता है।

खंड-43 तदनुसार विवरण के साथ कर अवधि के लिए सप्लायर्स द्वारा प्रस्तुत आउटवर्ड सप्लाई से संबंधित प्रत्येक क्रेडिट नोट के विवरण के निर्धारित समय एवं तरीके में मैचिंग का प्रावधान करता है। ये खंड मिस मैच के परिणाम के लिए भी प्रावधान करता है।

खंड-44 उपबन्ध करता है कि विशिष्ट वर्ग के व्यक्तियों को छोड़कर प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति अपने वार्षिक लेखा की लेखा परीक्षा की रिपोर्ट की प्रति, एक समाधान विवरण तथा यथानिर्धारित अन्य विवरण के साथ वार्षिक रिटर्न भेजने का उपबन्ध करता है।

खंड 45 उपबन्ध करता है कि प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति जिसका पंजीकरण रद्द हो गया है निर्धारित अवधि के अंदर अंतिम रिटर्न प्रस्तुत करेगा।

खंड 46 उस पंजीकृत व्यक्ति को नोटिस जारी करने का उपबन्ध करता है जो रिटर्न प्रस्तुत करने में असफल रहा हो।

खंड 47 रिटर्न के विलंब से फाइल करने पर फीस की उगाही का उपबन्ध करता है।

खंड 48 वस्तु एवं सेवा कर व्यवसायी के अनुमोदन के तरीके, उनकी पात्रता शर्तें, ड्यूटी एवं दायित्व, निष्कासन के तरीके का प्रावधान करता है। यह खंड ये भी उपबन्ध करता है कि पंजीकृत व्यक्ति विभिन्न रिटर्न फाइल करने के लिए किसी व्यवसायी को प्राधिकृत कर सकता है परन्तु प्रस्तावित अधिनियम के तहत संपूर्ण जिम्मेवारी पंजीकृत व्यक्ति की होगी।

खंड 49 कर, ब्याज, दंड तथा अन्य राशि के भुगतान का उपबन्ध करता है। इसके अलावा यह खंड इलेक्ट्रॉनिक कैश लेजर के अनुरक्षण का भी प्रावधान करता है। यह खंड उपबन्ध करता है कि पंजीकृत व्यक्ति के रिटर्न में स्वमूल्यांकित के रूप में इनपुट टैक्स क्रेडिट को उसके इलेक्ट्रॉनिक क्रेडिट लेजर में क्रेडिट किया जाए। यह खंड यह भी उपबन्ध करता है कि इलेक्ट्रॉनिक कैश लेजर या इलेक्ट्रॉनिक क्रेडिट लेजर की राशि को किस तरीके से प्रयोग किया जाए। यह खंड टैक्स के भुगतान के लिए इनपुट टैक्स क्रेडिट की उपयोगिता के क्रम तथा कुछ क्रॉस-उपयोगिता पर प्रतिबंध का प्रावधान भी करता है। यह खंड अपेक्षा करता है कि व्यक्ति अपने जिम्मेवारी का निर्वाह दिए गए तरीके से करे।

खंड 50 टैक्स के विलम्ब भुगतान पर ब्याज का प्रावधान करता है। यह खंड सामान्य एवं अन्य विनिर्दिष्ट स्थितियों में ब्याज दर की सीमा निर्धारित करता है।

खंड 51 सरकारी विभागों, स्थानीय प्राधिकार, सरकारी एजेंसी तथा अन्य अधिसूचित व्यक्ति द्वारा विनिर्दिष्ट स्थिति में आपूर्तिकर्ता को किए गए भुगतान या क्रेडिट से एक प्रतिशत की दर से स्रोत पर टैक्स की कटौती का उपबन्ध करता है। यह खंड कटौती की तिथि, कटौती की गई राशि को सरकार के क्रेडिट में भुगतान की तिथि तथा निर्धारित विवरण के फाइलिंग को प्रतिपादित करता है।

खंड 52 अधिसूचित दर पर इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स ऑपरेटर द्वारा स्रोत पर टैक्स के संग्रहण का प्रावधान करता है जहां सप्लाय के लिए प्रतिफल राशि का संग्रहण ऑपरेटर द्वारा किया जाता है। यह खंड एकत्रण की तिथि, राशि को सरकार के क्रेडिट में भुगतान की तिथि तथा निर्धारित विवरण के फाइलिंग को प्रतिपादित करता है।

खंड 53 एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत देय कर के भुगतान के लिए प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत उपलब्ध इनपुट टैक्स क्रेडिट की उपयोगिता का उपबन्ध करता है कि इस प्रकार प्रयुक्त ऐसे क्रेडिट के समतुल्य राशि द्वारा राज्य कर के रूप में एकत्र राशि को कम किया जाएगा और दिल्ली सरकार निर्धारित तरीके एवं समय में इस प्रकार कम की गई राशि के समतुल्य राशि राज्य कर खाता से एकीकृत कर खाता में स्थानांतरित करेगी।

खंड 54 संबंधित तिथि से दो वर्ष की समाप्ति से पूर्व अतिरिक्त कर एवं ब्याज या भुगतान की गई अन्य राशि के रिफंड का उपबन्ध करता है। यह खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जीरो-रेटेड सप्लाय तथा इनवर्टेड कर ढांचा के मामले में अप्रयुक्त कर क्रेडिट के रिफंड का दावा भी किया जा सकता है। यह खंड समय सीमा का भी प्रावधान करता है जिसके अंतर्गत रिफंड आवेदन का निर्णय किया जाता है। यह खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जीरो-रेटेड सप्लाय के मामले में नब्बे प्रतिशत तक एडवांस रिफंड प्रदान किया जा सकता है।

खंड 55 वस्तु या सेवा या दोनों की अधिसूचित आपूर्तियों पर विनिर्दिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों के वर्ग द्वारा कर के रिफंड को प्राप्त करने का उपबन्ध करता है।

खंड 56 रिफंड के विलम्बित भुगतान पर ब्याज के भुगतान का उपबन्ध करता है। यह सामान्य एवं अन्य विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में ब्याज दर की सीमा नियत करता है।

खंड 57 उपबन्ध करता है कि कर एवं अन्य राशि जोकि अन्यथा रिफंड योग्य हो तथा अनुचित संवर्धन के अलावा हो, को ग्राहक कल्याण निधि में क्रेडिट किया जाए।

खंड 58 उपबन्ध करता है कि ग्राहक कल्याण निधि की राशि का प्रयोग ग्राहकों के कल्याण के लिए किया जाए। यह खंड ये भी प्रावधान करता है कि इसके द्वारा विनिर्दिष्ट प्राधिकार या सरकार उचित एवं अलग खाता अनुरक्षित करेगी और खाते का वार्षिक विवरण तैयार करेगी।

खंड 59 प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति के लिए स्वमूल्यांकन का उपबन्ध करता है।

खंड 60 विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में कर योग्य व्यक्ति द्वारा अनुरोध पर अनंतिम मूल्यांकन का प्रावधान करता है। यह खंड कर भुगतान के तरीके तथा अनंतिम मूल्यांकन को अंतिम रूप देने के लिए विधि एवं समय सीमा का उपबन्ध करता है।

खंड 61 रिटर्न एवं अन्य विवरणों की संवीक्षा तथा रिटर्न में विसंगति को ढूँढने के तरीके तथा विसंगतियों को दूर करने तथा कम भुगतान पर वसूली के लिए सुधारात्मक उपाय करने का उपबन्ध करता है।

खंड 62 व्यक्ति के मूल्यांकन की प्रक्रिया का उपबन्ध करता है जिसने देय तिथि तक रिटर्न फाइल नहीं किया है। यह खंड उपबन्ध करता है कि गैर फाइलकर्ता के कर दायित्व का मूल्यांकन उचित अधिकारी द्वारा स्वयं के निर्णय से किया जाए।

खंड 63 ऐसे व्यक्तियों के मूल्यांकन की प्रक्रिया का उपबन्ध करता है जो पंजीकृत नहीं हैं यद्यपि उनका पंजीकृत होना अपेक्षित हो। यह खंड उपबन्ध करता है कि गैर पंजीकृत व्यक्ति के कर दायित्व का मूल्यांकन उचित अधिकारी द्वारा स्वयं के निर्णय से किया जाए।

खंड 64 अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त की अनुमति के साथ विशेष परिस्थितियों में संक्षिप्त मूल्यांकन का उपबन्ध करता है।

खंड 65 पंजीकृत व्यक्ति द्वारा अनुरक्षित रिकार्ड की लेखापरीक्षा के संचालन की विस्तृत प्रक्रिया का उपबन्ध करता है।

खंड 66 चार्टर्ड एकाउंटेंट या कॉस्ट एकाउंटेंट द्वारा कुछ परिस्थितियों के अंतर्गत पंजीकृत व्यक्ति की लेखापरीक्षा का उपबन्ध करता है।

खंड 67 प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के गैर अनुपालन को उजागर करने हेतु सर्च, जब्ती करने तथा निरीक्षण की विस्तृत प्रक्रिया का प्रावधान एवं शक्ति प्रदान करता है। इन शक्तियों का प्रयोग ऐसे अधिकारियों द्वारा किया जाएगा जो संयुक्त आयुक्त द्वारा प्राधिकृत अधिकारी हों।

खंड 68 ऐसे गुड्स के निरीक्षण का उपबन्ध करता है जो मूवमेंट में हों। यह खंड उपबन्ध करता है कि निर्धारित राशि से अधिक मूल्य के वस्तु के ले जाने वाले वाहन के प्रभारी व्यक्ति को सरकार द्वारा अपेक्षित निर्धारित दस्तावेज एवं उपकरण साथ रखने होंगे।

खंड 69 विनिर्दिष्ट अपराध करने वाले व्यक्ति को गिरफ्तार करने का उपबन्ध करता है।

खंड 70 किसी व्यक्ति को बुलाने की शक्ति प्रदान करता है जिसकी किसी जांच में उपस्थिति वांछनीय हो।

खंड 71 उपबन्ध करता है कि कोई भी प्राधिकृत अधिकारी लेखापरीक्षा, संवीक्षा तथा सत्यापन करने हेतु पंजीकृत व्यक्ति के व्यवसाय स्थल पर जा सकता है और राजस्व के हित को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक जांच कर सकता है।

खंड 72 पुलिस, रेलवे, कस्टम तथा भूराजस्व के संग्रहण में लगे अन्य अधिकारी को प्रस्तावित अधिनियम के कार्यान्वयन में सम्मिलित अधिकारियों की सहायता का उपबन्ध करता है।

खंड 73 भुगतान न किए गए कर के निर्धारण या अल्प भुगतान या गलती से किया गया रिफंड या धोखे के अलावा किसी अन्य कारण के लिए प्रयुक्त इनपुट टैक्स क्रेडिट की गलती से प्राप्यता या कोई जानबूझकर मिस स्टेटमेंट या तथ्यों के दमन के लिए उपबन्ध करता है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि वर्ष के वार्षिक रिटर्न की फाइलिंग की देय तिथि से तीन वर्ष के अंदर न्यायनिर्णय के आदेश जारी किए जाएंगे, जिसके लिए विसंगति देखी गई है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि समय सीमा से कम से कम तीन माह पूर्व कारण बताओ नोटिस जारी करना अपेक्षित है। यह भी उपबन्ध करता है कि एस सी एन जारी करने की आवश्यकता नहीं है यदि ब्याज के साथ टैक्स का भुगतान ऐसे नोटिस के जारी होने से पूर्व कर दिया गया हो। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जब किसी व्यक्ति द्वारा कारण बताओ नोटिस के जारी होने के तीस दिनों के अंदर ब्याज के साथ टैक्स का भुगतान किया जाता है, तो कोई जुर्माना देय नहीं होगा और नोटिस के संबंध में सभी कार्यवाही को समाप्त माना जाएगा।

खंड 74 उपबन्ध करता है कि धोखे के उद्देश्य से या जानबूझकर मिस स्टेटमेंट से या तथ्यों के दमन के लिए, भुगतान न किए गए कर या अल्प भुगतान या गलत तरीके से लिये गये रिफंड या इनपुट टैक्स क्रेडिट की प्राप्यता या किसी अन्य कारण के मामले में प्रयुक्त वर्ष के वार्षिक रिटर्न की फाइलिंग की देय तिथि से पांच वर्ष के अंदर न्याय निर्णय के आदेश जारी किए जाएंगे, जिसके लिए विसंगति देखी गई है। इसके अलावा समय सीमा से कम से कम छह माह पूर्व कारण बताओ नोटिस जारी करना अपेक्षित है। यह खंड यह भी उपबन्ध करता है कि ऐसे नोटिस जारी करने की आवश्यकता नहीं है यदि ब्याज के साथ टैक्स तथा टैक्स के समतुल्य पन्द्रह प्रतिशत जुर्माना ऐसे नोटिस के जारी होने से पूर्व भुगतान कर दिया गया है। यह खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जब कोई व्यक्ति कारण बताओ नोटिस के जारी होने के तीस दिनों के अंदर ब्याज के साथ टैक्स तथा पच्चीस प्रतिशत जुर्माने का भुगतान करना है, तो नोटिस के संबंध में सभी कार्यवाही को समाप्त माना जाएगा। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जब कोई व्यक्ति आदेश के संचारण के तीस दिनों के अंदर ब्याज के साथ टैक्स तथा टैक्स के समतुल्य का पचास प्रतिशत जुर्माना देता है तो नोटिस के संबंध में सभी कार्यवाही को समाप्त माना जाएगा।

खंड 75 टैक्स के निर्धारण के लिए सामान्य शर्तों का प्रावधान करता है। ये खंड उपबन्ध करता है कि कारण बताओ नोटिस या आदेश के जारी होने की समय अवधि की गणना में से स्टे की अवधि, यदि कोई है, को घटा दिया जाए। इसके अलावा ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि ऐसे नोटिस या आदेश के जारी होने की समय अवधि गणना के दौरान उस समय अवधि को छोड़ दिया जाए जिस समय अपील किसी भी न्यायालय में लंबित रही हो। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि रिटर्न के अनुसार स्वमुल्यांकित टैक्स एवं ब्याज के गैर भुगतान पर वसूली के लिए नोटिस जारी करने की आवश्यकता नहीं है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि आदेश सांविधिक समय अवधि के अंदर जारी नहीं होते हैं तो न्यायनिर्णयन की कार्यवाही को समाप्त माना जाएगा।

खंड 76 ग्राहकों से ब्याज के साथ कर के रूप में एकत्र कोई भी राशि का भुगतान सरकारी खाते में किया जाए चाहे सप्लाई कर योग्य हो या न हो। इसके अलावा ये खंड एकत्र की गई परन्तु जमा नहीं की गई राशि के लिए कारण बताओ नोटिस जारी करने का उपबन्ध करता है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि ऐसे नोटिस के जारी होने की तिथि से एक वर्ष के अंदर आदेश जारी करने की आवश्यकता है।

खंड 77 ऐसी परिस्थितियों में राज्य कर के रिफंड का उपबन्ध करता है जहां इंटरा-इस्टेट सप्लाई तत्पश्चात इंटर – इस्टेट सप्लाई निर्धारित की जाए।

खंड 78 उपबन्ध करता है कि आदेश के अनुपालन में देय कोई राशि का भुगतान ऐसे व्यक्ति द्वारा कुछ विशेष मामलों को छोड़कर आदेश के सर्विस की तिथि से तीन माह की अवधि के अंदर किया जाएगा, जिसके असफल रहने पर रिकवरी की कार्यवाही प्रारम्भ की जाएगी।

खंड 79 प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत देय राशि की रिकवरी के विभिन्न प्रकारों का उपबन्ध करता है।

खंड 80 बकाया के भुगतान के लिए अधिकतम चौबीस किशतों का उपबन्ध करता है।

खंड 81 उपबन्ध करता है कि सम्पत्ति का स्थानांतरण कुछ विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में अवैध होगा।

खंड 82 उपबन्ध करता है कि कर योग्य व्यक्ति की सम्पत्ति पर प्रथम चार्ज प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत कर के दायित्व का होगा, बशर्त दिवालियापन एवं दिवाला कोड, 2016 में उपबन्ध हो।

खंड 83 उपबन्ध करता है कि प्रस्तावित अधिनियम की कुछ धाराओं के अंतर्गत किसी कार्यवाही के लंबित होने के दौरान आयुक्त लिखित में आदेश द्वारा आदेश की तिथि से एक वर्ष की अवधि के लिए सम्पत्ति को अनंतिम रूप से कुर्क कर सकता है।

खंड 84 कुछ रिकवरी कार्यवाहियों की निरंतरता एवं वैधता का उपबन्ध करता है।

खंड 85 उपबन्ध करता है कि जहां कर दाता अपना संपूर्ण या आंशिक व्यवसाय का स्थानांतरण करता है, कर दाता एवं वह व्यक्ति जिसे व्यवसाय स्थानांतरित किया गया हो, संपूर्ण रूप से अथवा स्थानांतरण के परीमाण के अनुरूप, संयुक्त रूप से एवं अलग-अलग, स्थानांतरण के समय कर दाता द्वारा देय कर, ब्याज या किसी देय दंड के भुगतान हेतु उत्तरदायी होंगे।

खंड 86 उपबन्ध करता है कि जहां ऐजेंट अपने प्रधान की ओर से कर योग्य वस्तु सप्लाई या प्राप्त करता है, ऐसे ऐजेंट एवं उसके प्रधान ऐसे वस्तुओं पर दिए जाने वाले कर के भुगतान के लिए संयुक्त एवं अलग-अलग उत्तरदायी होंगे।

खंड 87 कम्पनियों के दायित्वों का उपबन्ध करता है जब दो या अधिक कम्पनियां न्यायालय या अधिकरण या अन्य किसी आदेश के अनुपालन में समामेलित या विलय होती है।

खंड 88 कम्पनी एवं इसके निदेशकों के दायित्वों का उपबन्ध करता है जब कोई कम्पनी समाप्त होती है।

खंड 89 निजी कम्पनी के निदेशकों के दायित्वों का उपबन्ध करता है।

खंड 90 फर्म तथा फर्म के प्रत्येक सहभागियों के दायित्व का उपबन्ध करता है।

खंड 91 नाबालिग या अन्य अशक्त व्यक्ति की ओर से कार्यरत अभिभावकों एवं न्यासियों के दायित्वों का उपबन्ध करता है।

खंड 92 कोर्ट ऑफ वार्ड, महाप्रशासक, शासकीय न्यासी या कोई प्राप्तकर्ता या प्रबंधक के दायित्वों का उपबन्ध करता है।

खंड 93 कुछ मामलों में कर, ब्याज या जुर्माना भुगतान के दायित्वों के संबंध में विशेष उपबन्ध करता है।

खंड 94 कर देने वाला व्यक्ति संघ या फर्म या हिंदू अविभाज्य परिवार के कर दायित्व का उपबन्ध करता है जहां ऐसे फर्म, संघ या परिवार ने व्यवसाय बंद कर दिया हो।

खंड 95 अग्रिम विनिर्णय पर अध्याय में प्रयुक्त निबंधन एवं अभिव्यक्ति की परिभाषाएं निहित हैं।

खंड 96 दिल्ली सरकार द्वारा अग्रिम विनिर्णय के लिए प्राधिकार के गठन के लिए उपबन्ध करता है और सरकार को शक्ति भी प्रदान करता है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए प्राधिकार के रूप में अन्य राज्य में स्थापित प्राधिकार को कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सके।

खंड 97 अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन फाइल करने के लिए फार्म, विधि तथा फीस का उपबन्ध करता है। यह खंड प्रश्नों की प्रकृति की सूची बनाता है जिस पर अग्रिम विनिर्णय लिया जा सकता है।

खंड 98 अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन फाइल करने की विस्तृत प्रक्रिया का उपबन्ध करता है। ये खंड उपबन्ध करता है कि आवेदन प्राप्ति की तिथि से नब्बे दिनों के अंदर अग्रिम विनिर्णय घोषित किया जाए।

खंड 99 सरकार द्वारा अग्रिम विनिर्णय के लिए अपीलीय प्राधिकरण के गठन का उपबन्ध करता है और सरकार को सशक्त भी करता है कि वो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए अन्य राज्य में स्थापित किसी प्राधिकरण को अपीलीय प्राधिकरण के रूप में अधिसूचित करे।

खंड 100 उपबन्ध करता है कि कोई पार्टी जो किसी अग्रिम विनिर्णय द्वारा व्यथित है संचारित विरुद्ध विनिर्णय की तिथि से तीस दिनों की अवधि के अंदर अपील प्राधिकारी को अपील कर सकता है।

खंड 101 उपबन्ध करता है कि अपील प्राधिकरण अपील या संदर्भ के फाइलिंग की तिथि से नब्बे दिनों की अवधि के अंदर आदेश पास करेगा। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि जहां अपील या संदर्भ से संबंधित किसी बिन्दु पर अपील प्राधिकरण के सदस्यों में मतभेद है तो यह माना जाएगा कि अपील या संदर्भ के अंतर्गत प्रश्न के संबंध में कोई अग्रिम विनिर्णय जारी नहीं किया जा सकता है।

खंड 102 उपबन्ध करता है कि प्राधिकरण या अपीली प्राधिकरण स्वयं द्वारा पारित किसी आदेश को, केवल कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर आदेश की तिथि से छह माह की अवधि के अंदर संशोधित कर सकते हैं ताकि रिकार्ड में दर्ज गलती को सुधारा जा सके।

खंड 103 उपबन्ध करता है कि आवेदक के संबंध में अग्रिम विनिर्णय केवल आवेदक तथा संबंधित अधिकारी या अधिकारिता अधिकारी पर बाध्यकर होगा। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि अग्रिम विनिर्णय तभी बाध्यकर होगी बशर्ते कानून या तथ्यों में परिवर्तन हो।

खंड 104 उपबन्ध करता है कि अग्रिम विनिर्णय मान्य नहीं होगा जहां विनिर्णय कपट या वास्तविक तथ्यों के दमन या तथ्यों के अन्यथा कथन द्वारा प्राप्त की गई हो।

खंड 105 उपबन्ध करता है कि प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण को प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत अपनी शक्तियों के उद्देश्य के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अंतर्गत सिविल न्यायालय की सभी शक्तियां होंगी।

खंड 106 उपबन्ध करता है कि प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण को अपनी स्वयं की प्रक्रिया को नियंत्रित करने की शक्ति होगी।

खंड 107 उपबन्ध करता है कि कर दाता या विभाग प्रस्तावित अधिनियम या केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत न्याय निर्णय प्राधिकरण द्वारा पास किसी निर्णय या आदेश के विरुद्ध क्रमशः तीन या छह माह के अंदर अपील कर सकते हैं। ये खंड कर दाता द्वारा अपील फाइल के प्रवेशन के लिए दस प्रतिशत के प्री-डिपोजिट तथा शेष राशि पर आटोमेटिक स्टे के प्रदान का उपबन्ध करता है।

खंड 108 आयुक्त को पुनरीक्षण की शक्ति प्रदान करता है। ये खंड उपबन्ध करता है कि आयुक्त स्वयं की पहल पर या केन्द्रीय कर आयुक्त के अनुरोध पर अपने अधीनस्थ अधिकारी द्वारा पारित आदेश को परिशोधित कर सकता है यदि उसका मत है कि यह अशुद्ध है तथा राजस्व के हित के लिए प्रतिकूल है।

खंड 109 उपबन्ध करता है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत गठित अपीली अधिकरण प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत अपीली प्राधिकरण या पुनरीक्षण प्राधिकरण द्वारा पास आदेशों के विरुद्ध अपील के लिए अपीली अधिकरण होगा।

खंड 110 केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम में प्रावधानों के अनुसार अपीली अधिकरण की राज्य बेंच एवं एरिया बेंच के अध्यक्ष एवं सदस्यों की अर्हता, नियुक्ति, सर्विस, निष्कासन की शर्तों का उपबन्ध करता है।

खंड 111 किसी कार्यवाही के निपटान के दौरान या उसके समक्ष प्रस्तुत अपील के लिए अपीली अधिकरण द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया का प्रावधान करता है।

खंड 112 अपीली अधिकरण के समक्ष अपील के फाइलिंग के लिए विस्तृत प्रक्रिया का प्रावधान करता है। इसके अलावा ये खंड केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत पास आदेश द्वारा अपील की फाइलिंग का उपबन्ध करता है ताकि अधिकरण में अपील की जा सके। यह खंड अपीली अधिकरण में कर दाता द्वारा फाइल अपील के प्रवेशन के लिए विवाद में कर की राशि का बीस प्रतिशत के प्री-डिपोजिट तथा शेष राशि पर आटोमेटिक स्टे प्रदान करने का भी उपबन्ध करता है।

खंड 113 उस आदेश जिसके विरुद्ध अपील फाइल की गई है के निर्णय की पुष्टि, सुधार या रद्द करने के लिए अपीली अधिकरण द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया का उपबन्ध करता है।

खंड 114 राज्य एवं एरिया बेंच के ऊपर अपीली अधिकरण के राज्य अध्यक्ष की वित्तीय एवं प्रशासनिक शक्तियों का उपबन्ध करता है।

खंड 115 ब्याज के भुगतान का उपबन्ध करता है जहां प्री-डिपोजिट को अपीली प्राधिकरण या अपीली अधिकरण के किसी आदेश के अनुवर्ती रिफंड करना अपेक्षित हो।

खंड 116 प्राधिकृत प्रतिनिधियों से संबंधित अर्हता, अयोग्यता तथा प्रक्रिया का उपबन्ध करता है।

खंड 117 उपबन्ध करता है कि राज्य बेंच या अधिकरण के एरिया बेंच के आदेश से व्यथित व्यक्ति एक सौ अस्सी दिनों के अन्दर उच्च न्यायालय में अपील कर सकता है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि कानून के तात्त्विक प्रश्नों पर उच्च न्यायालय अपील दायर करेगा।

खंड 118 राष्ट्रीय बेंच या अपीली अधिकरण की क्षेत्रीय बेंच या दिए गए किसी निर्णय या उच्च न्यायालय द्वारा पास आदेश के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष अपील का उपबन्ध करता है।

खंड 119 उपबन्ध करता है कि उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय में अपील होने पर भी राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राज्य, एरिया बेंच या उच्च न्यायालय द्वारा पास आदेश के अनुसरण में सरकार को देय राशि का भुगतान करना होगा।

खंड 120 आयुक्त को आर्थिक सीमा नियत करने के लिए आदेश या अनुदेश या निदेश जारी करने हेतु शक्ति प्रदान करने का उपबन्ध करता है जिसके नीचे विभाग द्वारा अपील फाइल नहीं की जाएगी।

खंड 121 ऐसे मामलों के लिए उपबन्ध करता है जिसमें राज्य कर के अधिकारी द्वारा लिए गए निर्णय या पास आदेश के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती है।

खंड 122 अपराधों की सूची जैसे इनवायस के बिना गुडस की सप्लाई, सप्लाई के बिना इनवायस को जारी करना इत्यादि के लिए उपबन्ध करता है, जिनपर जुर्माना लगाया जाना है। ये खंड यह भी उपबन्ध करता है कि अपराध में सहायता या अपराध के लिए उकसाने पर या बुलावे पर प्रस्तुत होने में असफल रहने पर आदि पर पच्चीस हजार रु० का जुर्माना किया जा सकता है।

खंड 123 खंड 150 के अंतर्गत सूचना प्रस्तुत करने में असफल रहने पर जुर्माने का उपबन्ध करता है।

खंड 124 खंड 151 के अन्तर्गत सूचना या रिटर्न के प्रस्तुत करने में असफल रहने पर जुर्माने का उपबन्ध करता है।

खंड 125 प्रस्तावित अधिनियम के किसी उल्लंघन, जहां ऐसे उल्लंघन के लिए अलग से जुर्माना विनिर्दिष्ट नहीं है, के लिए सामान्य दंड का उपबन्ध जोकि पच्चीस हजार रु० तक विस्तारित है का उपबन्ध करता है।

खंड 126 सामान्य अनुशासन के लिए उपबन्ध करता है जिसका अनुसरण प्रस्तावित अधिनियम के अंतर्गत जुर्माना लगाने वाले अधिकारी द्वारा किया जाएगा।

खंड 127 उचित अधिकारी द्वारा जुर्माना लगाने का उपबन्ध करता है जो कि प्रस्तावित अधिनियम के विनिर्दिष्ट खंड के अंतर्गत की गयी किसी कार्यवाही के तहत नहीं है।

खंड 128 सरकार को प्रस्तावित अधिनियम की विनिर्दिष्ट धाराओं के अंतर्गत संदर्भित जुर्माने को या किसी विलम्ब फीस को विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में कर दाताओं के वर्ग विशेष के लिए आंशिक या पूर्ण से माफ करने हेतु शक्ति प्रदान करता है।

खंड 129 अभिरक्षा, अभिग्रहण और माल की निर्मुक्ति तथा अभिवहन में प्रवहन से संबंधित प्रावधानों का उपबन्ध करता है। ये खंड जुर्माना का भी उपबन्ध करता है जोकि ऐसे गुडस के रिलीज के लिए देय होगा।

खंड 130 माल की जब्ती या प्रवहन और शास्ति का उदग्रहण से संबंधित प्रावधानों का उपबन्ध करता है। ये खंड माल के निर्गमन के लिए जुर्माने का भी उपबन्ध करता है।

खंड-131 स्पष्ट करता है कि प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत की गई जब्ती या लगाए जुर्माना प्रस्तावित अधिनियम या समय-समय पर लागू अन्य कानून के अंतर्गत या प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत लगाए किसी अन्य दंड को प्रभावित नहीं करेगा।

खंड-132 में उन अपराधों की सूची बताई गई है जो कर वचना की राशि या गलत तरीके से लिए गए या प्रयोग किए गए कर प्रत्यय या गलत प्रकार से प्राप्त की गई वापसी की राशि के आधार पर अर्थदंड तथा कारावास के ग्रेडेशन के अनुसार दंडनीय है। इस खंड में ऐसे अपराधों के बारे में भी उपबंध किया गया है जो गैर संज्ञेय तथा जमानती या संज्ञेय या गैर जमानती होंगे।

खंड-133 में उन मामलों में जुर्माने तथा कारावास का प्रावधान है जहां किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा गलत सूचना घोषित की गई है जो खंड 151 के अन्तर्गत आंकड़ों के संग्रह या कॉमन पोर्टल पर सेवाएं प्रदान करने संबंधी कार्य से संलग्न है या कॉमन पोर्टल का एजेंट है।

खंड-134 न्यायालय पर आयुक्त की पूर्वानुमति के बिना प्रस्तावित अधिनियम या इसके अन्तर्गत नियमावली के अंतर्गत किये गये किसी अपराध का संज्ञान लेने के लिए रोक लगाता है।

खंड-135 न्यायालय द्वारा अनुमानित अपराधिक मानसिक स्थिति के विषय में उपबंध करता है, जब तक आरोपी द्वारा अन्यथा रूप में सिद्ध न किया जाए।

खंड-136 किसी सम्मन के आधार पर किसी व्यक्ति द्वारा उपस्थित होने पर दिए गए और हस्ताक्षर किए गए बयान की प्रासंगिकता के लिए उपबंध करता है।

खंड-137 उपबंध करता है कि यदि अपराधकर्ता व्यक्ति एक कंपनी हो तो वह व्यक्ति जो कंपनी के व्यापार कार्य के संचालन के लिए उत्तरदायी या प्रभारी हो, को अपराध का दोषी माना जाएगा और तदनुसार दंड दिया जाएगा।

खंड-138 प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत किसी अपराध के प्रश्न के विषय में उपबंध करता है जो आयुक्त के द्वारा निर्धारित प्रश्न राशि के भुगतान पर आयुक्त द्वारा मुकदमा जारी किए जाने से पूर्व या पश्चात् में किया जा सकता है।

खंड-139 विद्यमान कानून के अन्तर्गत पंजीकृत करदाता को प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत अस्थायी पंजीकरण जारी करने का उपबंध करता है, यदि उक्त करदाता को प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के अन्तर्गत पंजीकृत किया जाना अपेक्षित है।

खंड-140 विद्यमान कानून के अधीन उपलब्ध इनपुट टैक्स क्रेडिट को भविष्य में आगे बढ़ाने के लिए अन्तरण व्यवस्था का प्रावधान करता है।

खंड-141 फुटकर कार्यों के विषय में अन्तरण-प्रावधान का उपबंध करता है।

खंड-142 विभिन्न स्थितियों में वर्तमान करदाता के अन्तरण के लिए विविध प्रावधानों का उपबंध करता है।

खंड-143 किसी इनपुट या पूंजीगत सामान को फुटकर कार्य हेतु कार्य करने वाले को कर दिए बिना इनपुट या पूंजीगत सामान भेजने की प्रक्रिया और शर्तों का उपबंध करता है।

खंड-144 ऐसे दस्तावेजों को साक्ष्य माने जाने का उपबंध करता है जो अभियोजन द्वारा प्रस्तुत किए जाएंगे जब तक अभियोजित व्यक्ति द्वारा अन्यथा सिद्ध न कर दिया जाए।

खंड-145 माइक्रो फिल्म दस्तावेजों, फैंक्समाइल प्रतियां तथा कम्प्यूटर प्रिंट आउट को साक्ष्य के रूप में स्वीकार करने का उपबंध करता है।

खंड-146 ऐसे सामान्य वस्तु तथा सेवा कर इलैक्ट्रॉनिक पोर्टल की अधिसूचना का उपबंध करता है जो पंजीकरण, कर भुगतान, रिटर्न भेजने, सकल कर के परिकलन एवं निपटान, इलैक्ट्रॉनिक वे बिल या अन्य ऐसे प्रकार्यों से जुड़ा है।

खंड-147 सरकार को परिषद् की सिफारिश पर कुछ सामान की आपूर्ति को निर्यात मानने के लिए अधिसूचित करने की शक्तियां प्रदान करता है।

खंड-148 परिषद् की सिफारिश पर किसी विशेष वर्ग के पंजीकृत व्यक्तियों और उन व्यक्तियों द्वारा अपनाई जाने वाली विशेष प्रक्रिया को अधिसूचित करने की सरकार को शक्ति प्रदान करता है।

खंड-149 सामान तथा सेवा कर अनुपालन की रेटिंग के मानदंडों के प्रावधान तथा निर्धारण का उपबंध करता है।

खंड-150 में ऐसे लोगों की सूची का प्रावधान है जिनके द्वारा सूचना रिटर्न भरना अनिवार्य है तथा इस संबंध में अनुपालन की जाने वाली प्रक्रिया का प्रावधान है।

खंड-151 आयुक्त को प्रस्तावित अधिनियम से संबंधित किसी मामले के विषय में आकड़े एकत्रित करने के निदेश देने की शक्तियां प्रदान करता है।

खंड-152 ऐसी स्थितियों और घटनाओं के विषय में उपबन्ध करता है जहां खंड 151 के अन्तर्गत अपेक्षित सूचना को घोषित करने पर प्रतिबंध है।

खंड-153 अधिकारियों को जांच, पूछताछ, छानबीन या किसी अन्य कार्यवाही के किसी स्तर पर किसी विशेषज्ञ की सहायता प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है।

खंड-154 आयुक्त या उसके द्वारा अधिकृत किसी अधिकारी को किसी कर योग्य व्यक्ति के कब्जे से वस्तुओं के नमूने लेने की शक्तियां प्रदान करता है।

खंड-155 उपबन्ध करता है कि इनपुट टैक्स क्रेडिट का अधिकारिक दावा सिद्ध करने का दायित्व क्रेडिट का दावा करने वाले व्यक्ति का होगा।

खंड-156 में उपबंध है कि प्रस्तावित अधिनियम के अधीन कार्य निष्पादन करने वाले सभी व्यक्ति भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 21 के अर्थों के अनुसार लोक सेवक माने जाएंगे।

खंड-157 उपबंध करता है कि अपीलीय अधिकरण के अध्यक्ष, राज्य अध्यक्ष, सदस्यों, अधिकारियों या इसके अन्य कर्मचारियों या प्रस्तावित अधिनियम के अधीन नियुक्त या अधिकृत किसी अन्य अधिकारी के विरुद्ध ऐसे किसी कार्य के लिए जो सद्भाव में किया गया हो या प्रस्तावित अधिनियम या उसके अन्तर्गत बनाई गई नियमावली के अन्तर्गत किए जाने का इरादा हो, कोई मुकदमा, कार्यवाही या कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की जा सकेगी।

खंड-158 में प्रावधान है कि प्रस्तावित अधिनियम के अनुसार दिया गया बयान, भेजी गई रिटर्न या खाते या प्रस्तुत दस्तावेजों में दिए गए किसी विवरण को उदघाटित नहीं किया जाएगा। यह खण्ड यह भी उपबंध करता है कि विनिर्दिष्ट परिस्थितियों में ऐसी जानकारी को उदघाटित किया जा सकेगा।

खंड-159 आयुक्त या उसके द्वारा अधिकृत किसी अन्य अधिकारी को प्रस्तावित अधिनियम के अधीन किसी मुकदमें या कार्यवाही से संबंधित किसी व्यक्ति का नाम तथा कोई अन्य विवरण प्रकाशित करने का अधिकार देता है यदि ऐसा किया जाना जनहित में आवश्यक हो।

खंड-160 में प्रावधान है कि किसी कर निर्धारण, पुनःनिर्धारण, निर्णय, समीक्षा, पुनर्विचार, त्रुटि सुधार, नोटिस, सम्मन या अन्य कार्यवाही जो प्रस्तावित अधिनियम के किसी उपबंध के अनुसरण में हो, स्वीकृत, तैयार, जारी, प्रारंभ की गई या स्वीकृत, तैयार, जारी, प्रारम्भ किए जाने के आशय से हो वह केवल किसी त्रुटि, कमी या छूट के कारण से अवैध या अवैध जैसा नहीं माना जाएगा।

खंड-161 में उपबंध है कि कोई अधिकारी किसी निर्णय या आदेश या नोटिस या प्रमाण-पत्र या किसी अन्य दस्तावेज में रिकार्ड के आधार पर स्पष्ट रूप से किसी गलती में सुधार कर सकता है।

खंड-162 में उपबंध है कि सिविल न्यायालयों को प्रस्तावित अधिनियम के अधीन किए गए किसी कार्य से उत्पन्न किसी प्रश्न या इससे संबंधित किसी बात पर निर्णय लेने या कार्यवाही करने का अधिकार नहीं होगा।

खंड-163 में उपबन्ध है कि किसी आदेश या दस्तावेज को किसी व्यक्ति को उपलब्ध किए जाने पर उसे किसी आदेश या दस्तावेज के लिए शुल्क प्रभारित किया जा सकता है।

खंड-164 दिल्ली सरकार को परिषद की सिफारिश पर प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों पर तदनुसार कार्यवाही करने के लिए नियम बनाने की शक्तियों प्रदान करता है।

खंड-165 प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों पर कार्यवाही करने के लिए विनियम बनाने की शक्ति प्रदान करता है।

खंड-166 दिल्ली सरकार द्वारा बनाए गए नियमों, विनियमों तथा अधिसूचनाओं को दिल्ली विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत करने का उपबन्ध करता है।

खंड-167 में उपबन्ध है कि आयुक्त निदेश दे सकता है कि प्रस्तावित अधिनियम के अन्तर्गत किसी प्राधिकारी या अधिकारी द्वारा प्रयोजनीय किसी अधिकार का उपयोग कोई अन्य प्राधिकारी या अधिकारी भी कर सकता है।

खंड-168 प्रस्तावित अधिनियम के प्रावधानों के एक समान क्रियान्वयन के लिए आयुक्त को केन्द्रीय कर अधिकारियों को आदेश, निर्देश या निदेश देने की शक्ति प्रदान करता है।

खंड-169 ऐसी पद्धति का उपबन्ध करता है कि जिसका अनुपालन प्रस्तावित अधिनियम के अधीन किसी निर्णय, आदेश, सम्मन, नोटिस या अन्य सम्प्रेषण करने के लिए अपनायी जाएगी।

खंड-170 में कर, ब्याज, अर्थदण्ड, जुर्माना या किसी अन्य देय राशि या वापिस लौटाई जाने वाली राशि या देय किसी अन्य राशि के पूर्ण करने का उपबन्ध करता है।

खंड-171 प्रावधान करता है कि कर की दरों में कमी या इनपुट कर क्रेडिट में कमी के कारण होने वाले लाभ को मूल्यों में तदनुसार कमी करके उपभोक्ता का इसका लाभ प्रदान करना अनिवार्य है।

खंड-172 केन्द्र सरकार को प्रस्तावित अधिनियम के प्रारंभ होने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि के भीतर परिषद की सिफारिश पर सामान्य या विशेष आदेश द्वारा ऐसे प्रावधान बनाने की शक्ति प्रदान करता है जो प्रस्तावित अधिनियम या नियमावली या विनियमों के प्रावधानों के असंगत न हो।

खंड-173 प्रस्तावित अधिनियम में उपबंधित अन्यथा किसी बात के होते हुए विनिर्दिष्ट अधिनियमों में संशोधन करता है।

खंड-174 कुछ अधिनियमों के निरसन और कुछ कार्यवाहियों के बचाव का उपबन्ध करता है।

वित्तीय ज्ञापन

विधेयक का खंड-53 दिल्ली सरकार द्वारा एकीकृत वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत देय कर के भुगतान के लिए इस विधेयक के अंतर्गत उपलब्ध इनपुट टैक्स क्रेडिट की उपयोगिता के लेखों के अन्तरण पर करों के प्रभाजन तथा निधियों के व्यवस्थापन के लिये उपबन्ध करता है।

2. विधेयक का खंड-96 दिल्ली सरकार द्वारा अग्रिम विनिर्णय के लिए प्राधिकार के गठन के लिए उपबन्ध करता है और सरकार को शक्ति भी प्रदान करता है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए प्राधिकार के रूप में अन्य राज्य में स्थापित प्राधिकार को कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सके।

3. विधेयक का खंड 99 सरकार द्वारा अग्रिम विनिर्णय के लिए अपीली प्राधिकरण के गठन का उपबन्ध करता है और सरकार को सशक्त भी करता है कि वो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए अन्य राज्य में स्थापित किसी प्राधिकरण को अपीली प्राधिकरण के रूप में अधिसूचित करे।

4. विधेयक का खंड 109 उपबन्ध करता है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम के अंतर्गत गठित वस्तु एवं सेवा कर न्यायाधिकरण अपीलीय प्राधिकारी या इस अधिनियम के अन्तर्गत पुनर्विचार प्राधिकारी द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपील की सुनवाई के लिए अपीलीय न्यायाधिकरण होगा तथा राज्य पीठ की संरचना तथा अधिकार क्षेत्र तथा राज्य में स्थित क्षेत्रीय पीठों का अधिकार क्षेत्र केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम की धारा 109 के प्रावधानों के अनुसार होगा, खंड 110 उपबन्ध करता है कि राज्य पीठ तथा क्षेत्रीय पीठों के अध्यक्ष और सदस्य तथा सदस्यों को दिए जाने वाले वेतन तथा भत्ते केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम की धारा 110 के प्रावधानों के अनुसार होगा।

5. विधेयक के खंड 171 के उपखंड (2) में केन्द्र सरकार के द्वारा ऐसे लाभ विरोधी प्राधिकरण की स्थापना का प्रावधान करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वस्तुओं एवं सेवाओं या दोनों पर कर में कमी के लाभ को व्यापार उपभोक्ता तक पहुंचाये।

6. प्रस्तावित विधान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार्यों के संचालन में होने वाले आवर्ती तथा अनावर्ती कुल वित्तीय खर्च राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा वहन किए जाएंगे। व्यापार एवं कर विभाग के अधिकांश विद्यमान अधिकारी एवं कर्मचारी विधेयक के विभिन्न प्रकार्यों को पूरा करने के लिए प्रयोग किए जाएंगे तथापि इस स्तर पर वास्तविक आवर्ती तथा अनावर्ती खर्च जो दिल्ली समेकित निधि से किया जाएगा का अनुमान लगाना संभव नहीं है।

प्रत्यायोजित विद्यमान से संबंधित ज्ञापन

दिल्ली वस्तु एवं सेवा विधेयक, 2017 का खंड 164 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली को अन्य बातों के साथ निम्नलिखित विषयों पर नियम बनाने की शक्तियां प्रदान करता है :-

(क) धारा 9 के अन्तर्गत करों का संग्रहण (ख) धारा 10 में वसूली का समाशोधन के विकल्प का चुनने वाले व्यक्तियों पर लागू प्रतिबंध तथा शर्तें (ग) धारा 15 के अधीन वस्तु एवं सेवा या दोनों की आपूर्ति का मूल्य (घ) इनपुट कर क्रेडिट का लाभ लेने वाले व्यक्तियों पर प्रतिबंध एवं शर्तें तथा धारा 16 के अधीन कर भुगतान दस्तावेजों की श्रेणियां (ङ) धारा 18 के अधीन विनिर्दिष्ट पूंजीगत वस्तुओं तथा संयंत्र एवं मशीनरी पर मूल्यांश (च) धारा 19 के अधीन फुटकर कार्य के लिए फुटकर कार्य करने वालों के पास भेजे गए इनपुट पर इनपुट कर क्रेडिट की अनुमति पर प्रतिबंध एवं शर्तें (छ) धारा 19 के अधीन फुटकर कार्य के लिए फुटकर कार्य करने वालों के पास भेजे गए पूंजीगत सामान पर इनपुट कर क्रेडिट के अनुमति पर प्रतिबंध एवं शर्तें (ज) धारा 20 के अधीन इनपुट सेवा वितरक द्वारा इनपुट कर क्रेडिट के वितरण की पद्धति (झ) धारा 25 के अधीन पंजीकरण करवाने के लिए पद्धति एवं शर्तें (ञ) धारा 25 के अधीन विभिन्न व्यापार वर्टिकल के लिए अलग पंजीकरण करवाने की शर्तें (ट) धारा 31 के अधीन कर इन्वाइस जारी करने की अवधि (ठ) धारा 31 के अन्तर्गत कर इन्वाइस पर घोषित किए जाने वाला विवरण तथा अवधि जब ये इन्वाइस जारी किए जाएंगे (ड) धारा 34 के अधीन क्रेडिट या डेबिट नोट पर घोषित किए जाने वाले विवरण (ढ) धारा 35 के अधीन प्रमुख व्यापार स्थल पर पंजीकृत व्यक्ति द्वारा बनाए जाने वाले अपेक्षित विवरण (ण) धारा 37 के अन्तर्गत आउटवर्ड आपूर्ति घोषित करने का स्वरूप एवं पद्धति (त) धारा 38 के अधीन इन्वर्ड आपूर्ति घोषित किए जाने के विवरण का स्वरूप एवं पद्धति (थ) धारा 39 के अधीन पंजीकृत व्यक्ति द्वारा भरी जाने वाली रिटर्न का स्वरूप एवं पद्धति (द) धारा 41 के अधीन इनपुट टैक्स क्रेडिट की अस्थाई स्वीकृति एवं दावे के लिए प्रतिबंध एवं शर्तें (ध) धारा 50 के अधीन देरी से किए गए भुगतान पर ब्याज का परिकलन (न) धारा 51 के अधीन स्रोत पर कर में कटौती की पद्धति (प) धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर संग्रहण की पद्धति (फ) धारा 53 के अधीन इनपुट टैक्स क्रेडिट के अन्तरण की पद्धति एवं अवधि (ब) धारा 54 के अधीन कर वापसी के लिए आवेदन का फार्म एवं पद्धति (भ) धारा 55 के अधीन कुछ मामलों में कर वापसी पर प्रतिबंध एवं शर्तें (म) धारा 57 के अन्तर्गत गठित किए जाने वाले उपभोक्ता कल्याण निधि गठित किए जाने की पद्धति (य) धारा 58 के अधीन उपभोक्ता कल्याण निधि के उपयोग की पद्धति (यक) धारा 60 के अधीन अस्थाई कर निर्धारण के लिए बांड का प्रारूप (यख) धारा 61 के अधीन रिटर्न की जांच की पद्धति (यग) धारा 65 के अधीन कर प्राधिकारी द्वारा लेखा परीक्षा किए जाने की आवृत्ति एवं पद्धति (यघ) धारा 96 के अधीन एडवांस रूलिंग अधिकरण के सदस्य की नियुक्ति की योग्यता, नियुक्ति पद्धति, सेवा की शर्तें (यङ) धारा 98 के अन्तर्गत घोषित किए गए अग्रिम निर्णय को प्रमाणित करने की पद्धति (यच) धारा 100 के अधीन अपीलीय अधिकरण को अपील करने का प्रपत्र, पद्धति तथा शुल्क (यछ) धारा 101 के अधीन प्रमाणित किए जाने वाले अपीलीय अधिकरण द्वारा अग्रिम निर्णय घोषित किए जाने की पद्धति (यज) धारा 107 के अधीन अपील अधिकरण को अपील (यझ) धारा 112 के अधीन प्रति आपत्ति के ज्ञापन की जांच (यञ) धारा 114 के अधीन अध्यक्ष द्वारा अपनी वित्तीय एवं प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकारों के उपयोग की पद्धति (यट) धारा 150 के अधीन सूचना रिटर्न भेजने का समय, स्वरूप एवं पद्धति (यठ) धारा 151 के अधीन आंकड़े एकत्रित करने का स्वरूप एवं पद्धति (यड) धारा 163 के अधीन किसी आदेश या दस्तावेज लेने की फीस (यढ) धारा 171 के अधीन ऐसे प्रकार्यों के अधिकार एवं निर्वहन (यण) कोई अन्य मामला जिसमें नियमानुसार कोई उपबंध बनाना है या निर्धारित किया जाना है या होना है।

2. विधेयक के खंड 165 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार को ऐसे किसी मामले में जो विनियमों में किसी विषय पर अपेक्षित नियमावली बनाने के लिए विनिर्दिष्ट हो या जिसके विषय में विनियमों द्वारा उपबंध बनाए जाने अपेक्षित है।

3. ऐसे मामले जो प्रक्रिया एवं प्रशासनिक विवरण स्वरूप के हो उनके विषय में नियम एवं विनियम बनाए जाने हैं तथा उनके लिए प्रस्तावित विधेयक में प्रावधान करना व्यवहार्य नहीं है। अतः विधायी शक्तियों का प्रत्योजन सामान्य स्वरूप का है।

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा, सचिव

LEGISLATIVE ASSEMBLY SECRETARIAT**NOTIFICATION**

Delhi, the 31st May, 2017

No. 21(32)/GST/2017/LAS-VI/Leg./1208.—The following is published for general information:—

BILL NO. 03 OF 2017

“THE DELHI GOODS AND SERVICES TAX BILL, 2017”

(BILL No. 03 OF 2017)

Arrangement of Clauses**CHAPTER I****PRELIMINARY****CLAUSES**

1. Short title, extent and commencement.
2. Definitions.

CHAPTER II**ADMINISTRATION**

3. Officers under this Act.
4. Appointment of officers.
5. Powers of officers.
6. Authorisation of officers of Central tax as proper officer in certain circumstances.

CHAPTER III**LEVY AND COLLECTION OF TAX**

7. Scope of supply.
8. Tax liability on composite and mixed supplies.
9. Levy and collection.
10. Composition levy.
11. Power to grant exemption from tax.

CHAPTER IV**TIME AND VALUE OF SUPPLY**

12. Time of supply of goods.
13. Time of supply of services.
14. Change in rate of tax in respect of supply of goods or services.
15. Value of taxable supply.

CHAPTER V**INPUT TAX CREDIT**

16. Eligibility and conditions for taking input tax credit.
17. Apportionment of credit and blocked credits
18. Availability of credit in special circumstances.
19. Taking input tax credit in respect of inputs and capital goods sent for job-work.
20. Manner of distribution of credit by Input Service Distributor.
21. Manner of recovery of credit distributed in excess.

CHAPTER VI

REGISTRATION

22. Persons liable for registration.
23. Persons not liable for registration.
24. Compulsory registration in certain cases.
25. Procedure for registration.
26. Deemed registration.
27. Special provisions relating to casual taxable person and non-resident taxable person.
28. Amendment of registration.
29. Cancellation of registration.
30. Revocation of cancellation of registration.

CHAPTER VII

TAX INVOICE, CREDIT AND DEBIT NOTES

31. Tax invoice.
32. Prohibition of unauthorised collection of tax.
33. Amount of tax to be indicated in tax invoice and other documents.
34. Credit and debit notes.

CHAPTER VIII

ACCOUNTS AND RECORDS

35. Accounts and other records.
36. Period of retention of accounts.

CHAPTER IX

RETURNS

37. Furnishing details of outward supplies.
38. Furnishing details of inward supplies.
39. Furnishing of returns.
40. First return.
41. Claim of input tax credit and provisional acceptance thereof.
42. Matching, reversal and reclaim of input tax credit.
43. Matching, reversal and reclaim of reduction in output tax liability.
44. Annual return.
45. Final return.
46. Notice to return defaulters.
47. Levy of late fee.
48. Goods and services tax practitioners.

CHAPTER X

PAYMENT OF TAX

49. Payment of tax, interest, penalty and other amounts.
50. Interest on delayed payment of tax.
51. Tax deduction at source.
52. Collection of tax at source.
53. Transfer of input tax credit.

CHAPTER XI

REFUNDS

54. Refund of tax.
55. Refund in certain cases.
56. Interest on delayed refunds.
57. Consumer Welfare Fund.
58. Utilisation of Fund.

CHAPTER XII

ASSESSMENT

59. Self-assessment.
60. Provisional assessment.
61. Scrutiny of returns.
62. Assessment of non-filers of returns.
63. Assessment of unregistered persons.
64. Summary assessment in certain special cases.

CHAPTER XIII

AUDIT

65. Audit by tax authorities.
66. Special audit.

CHAPTER XIV

INSPECTION, SEARCH, SEIZURE AND ARREST

67. Power of inspection, search and seizure.
68. Inspection of goods in movement.
69. Power to arrest.
70. Power to summon persons to give evidence and produce documents.
71. Access to business premises.
72. Officers to assist proper officers.

CHAPTER XV

DEMANDS AND RECOVERY

73. Determination of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised for any reason other than fraud or any wilful misstatement or suppression of facts.
74. Determination of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised by reason of fraud or any wilful misstatement or suppression of facts.
75. General provisions relating to determination of tax.
76. Tax collected but not paid to Government.
77. Tax wrongfully collected and paid to Central Government or State Government.
78. Initiation of recovery proceedings.
79. Recovery of tax.
80. Payment of tax and other amount in instalments.
81. Transfer of property to be void in certain cases.
82. Tax to be first charge on property.
83. Provisional attachment to protect revenue in certain cases.
84. Continuation and validation of certain recovery proceedings.

CHAPTER XVI

LIABILITY TO PAY IN CERTAIN CASES

85. Liability in case of transfer of business.
86. Liability of agent and principal.
87. Liability in case of amalgamation or merger of companies.
88. Liability in case of company in liquidation.
89. Liability of directors of private company.
90. Liability of partners of firm to pay tax.
91. Liability of guardians, trustees, etc.
92. Liability of Court of Wards, etc.
93. Special provisions regarding liability to pay tax, interest or penalty in certain cases.
94. Liability in other cases.

CHAPTER XVII

ADVANCE RULING

95. Definitions.
96. Constitution of Authority for advance Ruling.
97. Application for advance ruling.
98. Procedure on receipt of application.
99. Constitution of Appellate Authority for Advance Ruling.
100. Appeal to Appellate Authority.
101. Orders of Appellate Authority.
102. Rectification of advance ruling.
103. Applicability of advance ruling.
104. Advance ruling to be void in certain circumstances.
105. Powers of Authority and Appellate Authority.
106. Procedure of Authority and Appellate Authority.

CHAPTER XVIII

APPEALS AND REVISION

107. Appeals to Appellate Authority.
108. Powers of Revisional Authority.
109. Appellate Tribunal and Benches thereof.
110. President and Members of Appellate Tribunal, their qualification, appointment, conditions of service, etc.
111. Procedure before Appellate Tribunal.
112. Appeals to Appellate Tribunal.
113. Orders of Appellate Tribunal.
114. Financial and administrative powers of State President.
115. Interest on refund of amount paid for admission of appeal.
116. Appearance by authorised representative.
117. Appeal to High Court.
118. Appeal to Supreme Court.
119. Sums due to be paid notwithstanding appeal, etc.
120. Appeal not to be filed in certain cases.
121. Non appealable decisions and orders.

CHAPTER XIX
OFFENCES AND PENALTIES

- 122. Penalty for certain offences.
- 123. Penalty for failure to furnish information return.
- 124. Fine for failure to furnish statistics.
- 125. General penalty.
- 126. General disciplines related to penalty.
- 127. Power to impose penalty in certain cases.
- 128. Power to waive penalty or fee or both.
- 129. Detention, seizure and release of goods and conveyances in transit.
- 130. Confiscation of goods or conveyances and levy of penalty.
- 131. Confiscation or penalty not to interfere with other punishments.
- 132. Punishment for certain offences.
- 133. Liability of officers and certain other persons.
- 134. Cognizance of offences.
- 135. Presumption of culpable mental state.
- 136. Relevancy of statements under certain circumstances.
- 137. Offences by companies.
- 138. Compounding of offences.

CHAPTER XX
TRANSITIONAL PROVISIONS

- 139. Migration of existing taxpayers.
- 140. Transitional arrangements for input tax credit.
- 141. Transitional provisions relating to job work.
- 142. Miscellaneous transitional provisions.

CHAPTER XXI
MISCELLANEOUS

- 143. Job work procedure.
- 144. Presumption as to documents in certain cases.
- 145. Admissibility of micro films, facsimile copies of documents and computer print-outs as documents and as evidence.
- 146. Common Portal.
- 147. Deemed exports.
- 148. Special procedure for certain processes.
- 149. Goods and services tax compliance rating.
- 150. Obligation to furnish information return.
- 151. Power to collect statistics.
- 152. Bar on disclosure of information.
- 153. Taking assistance from an expert.
- 154. Power to take samples.
- 155. Burden of proof.
- 156. Persons deemed to be public servants.

157. Protection of action taken under this Act.
158. Disclosure of information by a public servant.
159. Publication of information in respect of persons in certain cases.
160. Assessment proceedings, etc., not to be invalid on certain grounds.
161. Rectification of errors apparent on the face of record.
162. Bar on jurisdiction of civil courts.
163. Levy of fee.
164. Power of Government to make rules.
165. Power to make regulations.
166. Laying of rules, regulations and notifications.
167. Delegation of powers.
168. Power to issue instructions or directions.
169. Service of notice in certain circumstances.
170. Rounding off of tax, etc.
171. Anti-profiteering measure.
172. Removal of difficulties.
173. Amendment of certain Acts.
174. Repeal and saving.

SCHEDULE I.

SCHEDULE II.

SCHEDULE III.

**THE DELHI GOODS AND SERVICES TAX
BILL, 2017**

A

BILL

to make a provision for levy and collection of tax on intra-State supply of goods or services or both by the National Capital Territory of Delhi and the matters connected therewith or incidental thereto

BE it enacted by Legislative Assembly of Delhi in the Sixty-eighth Year of the Republic of India as follows:-

CHAPTER I
PRELIMINARY

1. (1) This Act may be called the Delhi Goods and Services Tax Act, 2017.

*Short title, extent
and
commencement.*

- (2) It extends to the whole of the National Capital Territory of Delhi.

- (3) It shall come into force on such date as the State Government may, by notification in the Official Gazette, appoint:

Provided that different dates may be appointed for different provisions of this Act and any reference in any such provision to the commencement of this

Act shall be construed as a reference to the coming into force of that provision.

2. In this Act, unless the context otherwise requires,—

Definitions.

4 of 1882.

- (1) “actionable claim” shall have the same meaning as assigned to it in section 3 of the Transfer of Property Act, 1882;
- (2) “address of delivery” means the address of the recipient of goods or services or both indicated on the tax invoice issued by a registered person for delivery of such goods or services or both;
- (3) “address on record” means the address of the recipient as available in the records of the supplier;
- (4) “adjudicating authority” means any authority, appointed or authorised to pass any order or decision under this Act, but does not include the Commissioner, Revisional Authority, the Authority for Advance Ruling, the Appellate Authority for Advance Ruling, the Appellate Authority and the Appellate Tribunal;
- (5) “agent” means a person, including a factor, broker, commission agent, *arhatia*, *del credere* agent, an auctioneer or any other mercantile agent, by whatever name called, who carries on the business of supply or receipt of goods or services or both on behalf of another;
- (6) “aggregate turnover” means the aggregate value of all taxable supplies (excluding the value of inward supplies on which tax is payable by a person on reverse charge basis), exempt supplies, exports of goods or services or both and inter-State supplies of persons having the same Permanent Account Number, to be computed on all India basis but excludes central tax, State tax, Union territory tax, integrated tax and cess;
- (7) “agriculturist” means an individual or a Hindu Undivided Family who undertakes cultivation of land—
 - (a) by own labour, or
 - (b) by the labour of family, or
 - (c) by servants on wages payable in cash or kind or by hired labour under personal supervision or the personal supervision of any member of the family;
- (8) “Appellate Authority” means an authority appointed or authorised to hear appeals as referred to in section 107;
- (9) “Appellate Tribunal” means the Goods and Services Tax Appellate Tribunal referred to in section 109;
- (10) “appointed day” means the date on which the provisions of this Act shall come into force;
- (11) “assessment” means determination of tax liability under this Act and includes self-assessment, re-assessment, provisional assessment, summary assessment and best judgement assessment;

43 of 1961.

- (12) “associated enterprises” shall have the same meaning as assigned to it in

section 92A of the Income-tax Act, 1961;

- (13) “audit” means the examination of records, returns and other documents maintained or furnished by the registered person under this Act or the rules made thereunder or under any other law for the time being in force to verify the correctness of turnover declared, taxes paid, refund claimed and input tax credit availed, and to assess his compliance with the provisions of this Act or the rules made thereunder;
- (14) “authorised bank” shall mean a bank or a branch of a bank authorised by the Central Government to collect the tax or any other amount payable under this Act;
- (15) “authorised representative” means the representative as referred to under section 116;
- 54 of 1963. (16) “Board” means the Central Board of Excise and Customs constituted under the Central Boards of Revenue Act, 1963;
- (17) “business” includes—
- (a) any trade, commerce, manufacture, profession, vocation, adventure, wager or any other similar activity, whether or not it is for a pecuniary benefit;
 - (b) any activity or transaction in connection with or incidental or ancillary to sub-clause (a);
 - (c) any activity or transaction in the nature of sub-clause (a), whether or not there is volume, frequency, continuity or regularity of such transaction;
 - (d) supply or acquisition of goods including capital goods and services in connection with commencement or closure of business;
 - (e) provision by a club, association, society, or any such body (for a subscription or any other consideration) of the facilities or benefits to its members;
 - (f) admission, for a consideration, of persons to any premises;
 - (g) services supplied by a person as the holder of an office which has been accepted by him in the course or furtherance of his trade, profession or vocation;
 - (h) services provided by a race club by way of totalisator or a licence to book maker in such club; and
 - (i) any activity or transaction undertaken by the Central Government, a State Government or any local authority in which they are engaged as public authorities;
- (18) “business vertical” means a distinguishable component of an enterprise that is engaged in the supply of individual goods or services or a group of related goods or services which is subject to risks and returns that are different from those of the other business verticals.

Explanation.—For the purposes of this clause, factors that should be considered in determining whether goods or services are related include—

- (a) the nature of the goods or services;
- (b) the nature of the production processes;
- (c) the type or class of customers for the goods or services;
- (d) the methods used to distribute the goods or supply of services; and
- (e) the nature of regulatory environment (wherever applicable), including banking, insurance or public utilities;

- (19) "capital goods" means goods, the value of which is capitalised in the books of account of the person claiming the input tax credit and which are used or intended to be used in the course or furtherance of business;
- (20) "casual taxable person" means a person who occasionally undertakes transactions involving supply of goods or services or both in the course or furtherance of business, whether as principal, agent or in any other capacity, in the taxable territory where he has no fixed place of business;
- (21) "central tax" means the central goods and services tax levied under section 9 of the Central Goods and Services Tax Act;
- (22) "cess" shall have the same meaning as assigned to it in the Goods and Services Tax (Compensation to States) Act;
- (23) "chartered accountant" means a chartered accountant as defined in clause (b) of sub-section (1) of section 2 of the Chartered Accountants Act, 1949;
- (24) "Commissioner" means the Commissioner of State tax appointed under section 3 and includes the Principal Commissioner or Chief Commissioner of State tax appointed under Section 3;
- (25) "Commissioner in the Board" means the Commissioner referred to in section 168 of the Central Goods and Services Tax Act;
- (26) "common portal" means the common goods and services tax electronic portal referred to in section 146;
- (27) "common working days" shall mean such days in succession which are not declared as gazetted holidays by the Central Government or the Government of National Capital Territory of Delhi;
- (28) "company secretary" means a company secretary as defined in clause (c) of sub-section (1) of section 2 of the Company Secretaries Act, 1980;
- (29) "competent authority" means such authority as may be notified by the Government;
- (30) "composite supply" means a supply made by a taxable person to a recipient consisting of two or more taxable supplies of goods or services or both, or any combination thereof, which are naturally bundled and supplied in conjunction with each other in the ordinary course of business, one of which is a principal supply;

38 of 1949.

56 of 1980.

Illustration: Where goods are packed and transported with insurance, the supply

of goods, packing materials, transport and insurance is a composite supply and supply of goods is a principal supply.

(31) “consideration” in relation to the supply of goods or services or both includes—

(a) any payment made or to be made, whether in money or otherwise, in respect of, in response to, or for the inducement of, the supply of goods or services or both, whether by the recipient or by any other person but shall not include any subsidy given by the Central Government or a State Government;

(b) the monetary value of any act or forbearance, in respect of, in response to, or for the inducement of, the supply of goods or services or both, whether by the recipient or by any other person but shall not include any subsidy given by the Central Government or a State Government:

Provided that a deposit given in respect of the supply of goods or services or both shall not be considered as payment made for such supply unless the supplier applies such deposit as consideration for the said supply;

(32) “continuous supply of goods” means a supply of goods which is provided, or agreed to be provided, continuously or on recurrent basis, under a contract, whether or not by means of a wire, cable, pipeline or other conduit, and for which the supplier invoices the recipient on a regular or periodic basis and includes supply of such goods as the Government may, subject to such conditions, as it may, by notification, specify;

(33) “continuous supply of services” means a supply of services which is provided, or agreed to be provided, continuously or on recurrent basis, under a contract, for a period exceeding three months with periodic payment obligations and includes supply of such services as the Government may, subject to such conditions, as it may, by notification, specify;

(34) “conveyance” includes a vessel, an aircraft and a vehicle;

(35) “cost accountant” means a cost accountant as defined in clause (c) of sub-section (1) of section 2 of the Cost and Works Accountants Act, 1959;

23 of 1959.

(36) “Council” means the Goods and Services Tax Council established under article 279A of the Constitution;

(37) “credit note” means a document issued by a registered person under sub-section (1) of section 34;

(38) “debit note” means a document issued by a registered person under sub-section (3) of section 34;

(39) “deemed exports” means such supplies of goods as may be notified under section 147;

(40) “designated authority” means such authority as may be notified by the Commissioner;

21 of 2000.

(41) “document” includes written or printed record of any sort and electronic record as defined in clause (t) of section 2 of the Information Technology Act, 2000;

- (42) “drawback” in relation to any goods manufactured in India and exported, means the rebate of duty, tax or cess chargeable on any imported inputs or on any domestic inputs or input services used in the manufacture of such goods;
- (43) “electronic cash ledger” means the electronic cash ledger referred to in sub-section (1) of section 49;
- (44) “electronic commerce” means the supply of goods or services or both, including digital products over digital or electronic network;
- (45) “electronic commerce operator” means any person who owns, operates or manages digital or electronic facility or platform for electronic commerce;
- (46) “electronic credit ledger” means the electronic credit ledger referred to in sub-section (2) of section 49;
- (47) “exempt supply” means supply of any goods or services or both which attracts nil rate of tax or which may be wholly exempt from tax under section 11, or under section 6 of the Integrated Goods and Services Tax Act, and includes non-taxable supply;
- (48) “existing law” means any law, notification, order, rule or regulation relating to levy and collection of duty or tax on goods or services or both passed or made before the commencement of this Act by the Legislature or any Authority or person having the power to make such law, notification, order, rule or regulation;
- (49) “family” means,—
- (i) the spouse and children of the person, and
 - (ii) the parents, grand-parents, brothers and sisters of the person if they are wholly or mainly dependent on the said person;
- (50) “fixed establishment” means a place (other than the registered place of business) which is characterised by a sufficient degree of permanence and suitable structure in terms of human and technical resources to supply services, or to receive and use services for its own needs;
- (51) “Fund” means the Consumer Welfare Fund established under section 57;
- (52) “Goods” means every kind of movable property other than money and securities but includes actionable claim, growing crops, grass and things attached to or forming part of the land which are agreed to be severed before supply or under a contract of supply;
- (53) “Government” means the Lieutenant Governor of National Capital Territory of Delhi appointed under article 239 and designated as such under article 239AA of the Constitution;
- (54) “Goods and Services Tax (Compensation to States) Act” means the Goods and Services Tax (Compensation to States) Act, 2017;
- (55) “Goods and services tax practitioner” means any person who has been approved under section 48 to act as such practitioner;
- (56) “India” means the territory of India as referred to in article 1 of the Constitution, its territorial waters, seabed and sub-soil underlying such waters, continental shelf, exclusive economic zone or any other

maritime zone as referred to in the Territorial Waters, Continental Shelf, Exclusive Economic Zone and other Maritime Zones Act, 1976, and the air space above its territory and territorial waters;

- (57) “Integrated Goods and Services Tax Act” means the Integrated Goods and Services Tax Act, 2017;
- (58) “integrated tax” means the integrated goods and services tax levied under the Integrated Goods and Services Tax Act;
- (59) “input” means any goods other than capital goods used or intended to be used by a supplier in the course or furtherance of business;
- (60) “input service” means any service used or intended to be used by a supplier in the course or furtherance of business;
- (61) “Input Service Distributor” means an office of the supplier of goods or services or both which receives tax invoices issued under section 31 towards the receipt of input services and issues a prescribed document for the purposes of distributing the credit of central tax, State tax, integrated tax or Union territory tax paid on the said services to a supplier of taxable goods or services or both having the same Permanent Account Number as that of the said office;
- (62) “input tax” in relation to a registered person, means the central tax, State tax, integrated tax or Union territory tax charged on any supply of goods or services or both made to him and includes—
- (a) the integrated goods and services tax charged on import of goods;
 - (b) the tax payable under the provisions of sub-sections (3) and (4) of section 9;
 - (c) the tax payable under the provisions of sub-sections (3) and (4) of section 5 of the Integrated Goods and Services Tax Act; *or*
 - (d) *the tax payable under the provisions of sub-sections (3) and (4) of section 9 of the Central Goods and Services Tax Act,*
- but does not include the tax paid under the composition levy;
- (63) “Input tax credit” means the credit of input tax;
- (64) “Intra-State supply of goods” shall have the same meaning as assigned to it in section 8 of the Integrated Goods and Services Tax Act;
- (65) “Intra-State supply of services” shall have the same meaning as assigned to it in section 8 of the Integrated Goods and Services Tax Act;
- (66) “Invoice” or “tax invoice” means the tax invoice referred to in section 31;
- (67) “Inward supply” in relation to a person, shall mean receipt of goods or services or both whether by purchase, acquisition or any other means, with or without consideration;
- (68) “Job work” means any treatment or process undertaken by a person on goods belonging to another registered person and the expression “job worker” shall be construed accordingly;

(69) “local authority” means—

- (a) a “Panchayat” as defined in clause (d) of article 243 of the Constitution;
- (b) a “Municipality” as defined in clause (e) of article 243P of the Constitution;
- (c) a Municipal Committee, a Zilla Parishad, a District Board, and any other authority legally entitled to, or entrusted by the Central Government or any State Government with the control or management of a municipal or local fund;
- (d) a Cantonment Board as defined in section 3 of the Cantonments Act, 2006;
- (e) a Regional Council or a District Council constituted under the Sixth Schedule to the Constitution;
- (f) a Development Board constituted under article 371 of the Constitution; or
- (g) a Regional Council constituted under article 371A of the Constitution;

41 of 2006.

(70) “location of the recipient of services” means,-

- (a) where a supply is received at a place of business for which the registration has been obtained, the location of such place of business;
- (b) where a supply is received at a place other than the place of business for which registration has been obtained (a fixed establishment elsewhere), the location of such fixed establishment;
- (c) where a supply is received at more than one establishment, whether the place of business or fixed establishment, the location of the establishment most directly concerned with the receipt of the supply; and
- (d) in absence of such places, the location of the usual place of residence of the recipient;

(71) “location of the supplier of services” means,-

- (a) where a supply is made from a place of business for which the registration has been obtained, the location of such place of business;
- (b) where a supply is made from a place other than the place of business for which registration has been obtained (a fixed establishment elsewhere), the location of such fixed establishment;
- (c) where a supply is made from more than one establishment, whether the place of business or fixed establishment, the location of the establishment most directly concerned with the provisions of the supply; and
- (d) in absence of such places, the location of the usual place of residence of the supplier;

(72) “Manufacture” means processing of raw material or inputs in any manner that results in emergence of a new product having a distinct name, character and use and the term “manufacturer” shall be construed accordingly;

(73) “Market value” shall mean the full amount which a recipient of a supply is required to pay in order to obtain the goods or services or both of like kind and quality at or about the same time and at the same commercial level where the recipient and the supplier are not related;

(74) “Mixed supply” means two or more individual supplies of goods or services, or any combination thereof, made in conjunction with each other by a taxable person for a single price where such supply does not constitute a composite supply.

Illustration: A supply of a package consisting of canned foods, sweets, chocolates, cakes, dry fruits, aerated drinks and fruit juices when supplied for a single price is a mixed supply. Each of these items can be supplied separately and is not dependent on any other. It shall not be a mixed supply if these items are supplied separately;

59 of 1988.

- (75) “Money” means the Indian legal tender or any foreign currency, cheque, promissory note, bill of exchange, letter of credit, draft, pay order, traveller cheque, money order, postal or electronic remittance or any other instrument recognized by the Reserve Bank of India when used as a consideration to settle an obligation or exchange with Indian legal tender of another denomination but shall not include any currency that is held for its numismatic value;
- (76) “Motor vehicle” shall have the same meaning as assigned to it in clause (28) of section 2 of the Motor Vehicles Act, 1988;
- (77) “Non-resident taxable person” means any person who occasionally undertakes transactions involving supply of goods or services or both, whether as principal or agent or in any other capacity, but who has no fixed place of business or residence in India;
- (78) “Non-taxable supply” means a supply of goods or services or both which is not leviable to tax under this Act or under the Integrated Goods and Services Tax Act;
- (79) “Non-taxable territory” means the territory which is outside the taxable territory;
- (80) “Notification” means a notification published in the Official Gazette and the expressions ‘notify’ and ‘notified’ shall be construed accordingly;
- (81) “Other territory” includes territories other than those comprising in a State and those referred to in sub-clauses (a) to (e) of clause (114);
- (82) “Output tax” in relation to a taxable person, means the tax chargeable under this Act on taxable supply of goods or services or both made by him or by his agent but excludes tax payable by him on reverse charge basis;
- (83) “Outward supply” in relation to a taxable person, means supply of goods or services or both, whether by sale, transfer, barter, exchange, licence, rental, lease or disposal or any other mode, made or agreed to be made by such person in the course or furtherance of business;
- (84) “Person” includes—
- (a) an individual;
 - (b) a Hindu Undivided Family;
 - (c) a company;
 - (d) a firm;
 - (e) a Limited Liability Partnership;
 - (f) an association of persons or a body of individuals, whether incorporated or not, in India or outside India;

(g) any corporation established by or under any Central Act, State Act or Provincial Act or a Government company as defined in clause (45) of section 2 of the Companies Act, 2013;

18 of 2013.

(h) any body corporate incorporated by or under the laws of a country outside India;

(i) a co-operative society registered under any law relating to co-operative societies;

(j) a local authority;

(k) Central Government or a State Government;

(l) society as defined under the Societies Registration Act, 1860;

21 of 1860.

(m) trust; and

(n) every artificial juridical person, not falling within any of the above;

(85) “Place of business” includes—

(a) a place from where the business is ordinarily carried on, and includes a warehouse, a godown or any other place where a taxable person stores his goods, supplies or receives goods or services or both; or

(b) a place where a taxable person maintains his books of account; or

(c) a place where a taxable person is engaged in business through an agent, by whatever name called;

(86) “place of supply” means the place of supply as referred to in Chapter V of the Integrated Goods and Services Tax Act;

(87) “prescribed” means prescribed by rules made under this Act on the recommendations of the Council;

(88) “principal” means a person on whose behalf an agent carries on the business of supply or receipt of goods or services or both;

(89) “principal place of business” means the place of business specified as the principal place of business in the certificate of registration;

(90) “principal supply” means the supply of goods or services which constitutes the predominant element of a composite supply and to which any other supply forming part of that composite supply is ancillary;

(91) “proper officer” in relation to any function to be performed under this Act, means the Commissioner or the officer of the State tax who is assigned that function by the Commissioner;

(92) “quarter” shall mean a period comprising three consecutive calendar months, ending on the last day of March, June, September and December of a calendar year;

(93) “recipient” of supply of goods or services or both, means—

(a) where a consideration is payable for the supply of goods or services or both, the person who is liable to pay that consideration;

(b) where no consideration is payable for the supply of goods, the person to whom the goods are delivered or made available, or to whom possession or use of the goods is given or made available; and

(c) where no consideration is payable for the supply of a service, the person to whom the service is rendered,

and any reference to a person to whom a supply is made shall be construed as a reference to the recipient of the supply and shall include an agent acting as such on behalf of the recipient in relation to the goods or services or both supplied;

(94) “registered person” means a person who is registered under section 25 but does not include a person having a Unique Identity Number.

(95) “regulations” means the regulations made by the *Government* under this Act on the recommendations of the Council;

(96) “removal” in relation to goods, means-

(a) despatch of the goods for delivery by the supplier thereof or by any other person acting on behalf of such supplier; or

(b) collection of the goods by the recipient thereof or by any other person acting on behalf of such recipient;

(97) “return” means any return prescribed or otherwise required to be furnished by or under this Act or the rules made thereunder;

(98) “reverse charge” means the liability to pay tax by the recipient of supply of goods or services or both instead of the supplier of such goods or services or both under sub-section (3) or sub-section (4) of section 9, or under sub-section (3) or sub-section (4) of section 5 of the Integrated Goods and Services Tax Act;

(99) “Revisional Authority” means an authority appointed or authorised for revision of decision or orders as referred to in section 108;

(100) “Schedule” means a Schedule appended to this Act;

(101) “securities” shall have the same meaning as assigned to it in clause (h) of section 2 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956;

(102) “services” means anything other than goods, money and securities but includes activities relating to the use of money or its conversion by cash or by any other mode, from one form, currency or denomination, to another form, currency or denomination for which a separate consideration is charged;

(103) “State” means the Union Territory of National Capital Territory of Delhi;

(104) “State tax” means the tax levied under this Act;

- (105) “supplier” in relation to any goods or services or both, shall mean the person supplying the said goods or services or both and shall include an agent acting as such on behalf of such supplier in relation to the goods or services or both supplied;
- (106) “tax period” means the period for which the return is required to be furnished;
- (107) “taxable person” means a person who is registered or liable to be registered under section 22 or section 24;
- (108) “taxable supply” means a supply of goods or services or both which is leviable to tax under this Act;
- (109) “taxable territory” means the territory to which the provisions of this Act apply;
- (110) “telecommunication service” means service of any description (including electronic mail, voice mail, data services, audio text services, video text services, radio paging and cellular mobile telephone services) which is made available to users by means of any transmission or reception of signs, signals, writing, images and sounds or intelligence of any nature, by wire, radio, visual or other electromagnetic means;
- (111) “the Central Goods and Services Tax Act” means the Central Goods and Services Tax Act, 2017;
- (112) “turnover in State” or “turnover in Union territory” means the aggregate value of all taxable supplies (excluding the value of inward supplies on which tax is payable by a person on reverse charge basis) and exempt supplies made within a State or Union territory by a taxable person, exports of goods or services or both and inter-State supplies of goods or services or both made from the State or Union territory by the said taxable person but excludes central tax, State tax, Union territory tax, integrated tax and cess;
- (113) “usual place of residence” means—
- (a) in case of an individual, the place where he ordinarily resides;
 - (b) in other cases, the place where the person is incorporated or otherwise legally constituted;
- (114) “Union territory” means the territory of,—
- (a) the Andaman and Nicobar Islands;
 - (b) Lakshadweep;
 - (c) Dadra and Nagar Haveli;
 - (d) Daman and Diu;
 - (e) Chandigarh; and
 - (f) other territory;

Explanation.— For the purposes of this Act, each of the territories specified in sub-clauses (a) to (f) shall be considered to be a separate Union territory.

- (115) “Union territory tax” means the Union territory goods and services tax levied under the Union Territory Goods and Services Tax Act;
- (116) “Union Territory Goods and Services Tax Act” means the Union Territory Goods and Services Tax Act, 2017;
- (117) “valid return” means a return furnished under sub-section (1) of section 39 on which self-assessed tax has been paid in full;
- (118) where there is an obligation to accept it as consideration or part consideration for a supply of goods or services or both and where the goods or services or both to be supplied or the identities of their potential suppliers are either indicated on the instrument itself or in related documentation, including the terms and conditions of use of such instrument;
- (119) “works contract” means a contract for building, construction, fabrication, completion, erection, installation, fitting out, improvement, modification, repair, maintenance, renovation, alteration or commissioning of any immovable property wherein transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) is involved in the execution of such contract;
- (120) words and expressions used and not defined in this Act but defined in the Integrated Goods and Services Tax Act, the Central Goods and Services Tax Act, the Union Territory Goods and Services Tax Act and the Goods and Services Tax (Compensation to States) Act shall have the same meanings as assigned to them in those Acts.

CHAPTER II ADMINISTRATION

3. The Government shall, by notification, appoint the following classes of officers for the purposes of this Act, namely:—

Officers under this Act.

List is indicative

- (a) *Commissioner of State tax,*
- (b) *Special Commissioners of State tax,*
- (c) *Additional Commissioners of State tax,*
- (d) *Joint Commissioners of State tax,*
- (e) *Deputy Commissioners of State tax,*
- (f) *Assistant Commissioners of State tax, and*
- (g) *any other class of officers as it may deem fit:*

Provided that, the officers appointed under the Delhi Value Added Tax Act, 2004 shall be deemed to be the officers appointed under the provisions of this Act.

4. (1) *The Government may, in addition to the officers as may be notified under section 3, appoint such persons as it may think fit to be the officers under this Act.*

Appointment of officers.

- (2) The Commissioner shall have jurisdiction over the whole of the State, the Special Commissioner and an Additional Commissioner in respect of all or any of the functions assigned to them, shall have jurisdiction over the whole of the State or where the State Government so directs, over any local area thereof, and all other officers shall, subject to such

conditions as may be specified, have jurisdiction over the whole of the State or over such local areas as the Commissioner may, by order, specify.

5. (1) Subject to such conditions and limitations as the *Commissioner* may impose, an officer of *State* tax may exercise the powers and discharge the duties conferred or imposed on him under this Act.

Powers of officers.

- (2) An officer of State tax may exercise the powers and discharge the duties conferred or imposed under this Act on any other officer of State tax who is subordinate to him.

- (3) The Commissioner may, subject to such conditions and limitations as may be specified in this behalf by him, delegate his powers to any other officer who is subordinate to him.

- (4) Notwithstanding anything contained in this section, an Appellate Authority shall not exercise the powers and discharge the duties conferred or imposed on any other officer of State tax.

6. (1) *Without prejudice to the provisions of this Act, the officers appointed under the Central Goods and Services Tax Act are authorised to be the proper officers for the purposes of this Act, subject to such conditions as the Government shall, on the recommendations of the Council, by notification, specify.*

Authorisation of officers of central tax as proper officer in certain circumstances.

- (2) Subject to the conditions specified in the notification issued under subsection (1),-

- (a) where any proper officer issues an order under this Act, he shall also issue an order under the Central Goods and Services Tax Act, as authorised by the said Act under intimation to the jurisdictional officer of central tax;

- (b) where a proper officer under the Central Goods and Services Tax Act has initiated any proceedings on a subject matter, no proceedings shall be initiated by the proper officer under this Act on the same subject matter.

- (3) Any proceedings for rectification, appeal and revision, wherever applicable, of any order passed by an officer appointed under this Act, shall not lie before an officer appointed under the Central Goods and Services Tax Act.

CHAPTER III LEVY AND COLLECTION OF TAX

7. (1) For the purposes of this Act, the expression “supply” includes—

Scope of supply.

- (a) all forms of supply of goods or services or both such as sale, transfer, barter, exchange, license, rental, lease or disposal made or agreed to be made for a consideration by a person in the course or furtherance of business;

- (b) import of services for a consideration whether or not in the course or furtherance of business;

- (c) the activities specified in Schedule I, made or agreed to be made without a consideration; and

(d) the activities to be treated as supply of goods or supply of services as referred to in Schedule II.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1),—

(a) activities or transactions specified in Schedule III; or

(b) such activities or transactions undertaken by the Central Government, a State Government or any local authority in which they are engaged as public authorities, as may be notified by the Government on the recommendations of the Council,

shall be treated neither as a supply of goods nor a supply of services.

(3) Subject to the provisions of sub-sections (1) and (2), the Government may, on the recommendations of the Council, specify, by notification, the transactions that are to be treated as—

(a) a supply of goods and not as a supply of services; or

(b) a supply of services and not as a supply of goods.

8. The tax liability on a composite or a mixed supply shall be determined in the following manner, namely: —

Tax liability on composite and mixed supplies.

(a) a composite supply comprising two or more supplies, one of which is a principal supply, shall be treated as a supply of such principal supply; and

(b) a mixed supply comprising two or more supplies shall be treated as a supply of that particular supply which attracts the highest rate of tax.

9. (1) Subject to the provisions of sub-section (2), there shall be levied a tax called the Delhi goods and services tax on all intra-State supplies of goods or services or both, except on the supply of alcoholic liquor for human consumption, on the value determined under section 15 and at such rates, not exceeding twenty per cent., as may be notified by the Government on the recommendations of the Council and collected in such manner as may be prescribed and shall be paid by the taxable person.

Levy and collection.

(2) The State tax on the supply of petroleum crude, high speed diesel, motor spirit (commonly known as petrol), natural gas and aviation turbine fuel, shall be levied with effect from such date as may be notified by the Government on the recommendations of the Council.

(3) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify categories of supply of goods or services or both, the tax on which shall be paid on reverse charge basis by the recipient of such goods or services or both and all the provisions of this Act shall apply to such recipient as if he is the person liable for paying the tax in relation to the supply of such goods or services or both.

(4) The State tax in respect of the supply of taxable goods or services or both by a supplier, who is not registered, to a registered person shall be paid by such person on reverse charge basis as the recipient and all the provisions of this Act shall apply to such recipient as if he is the person liable for paying the tax in relation to the supply of such goods or services or both.

(5) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify categories of services the tax on intra-State

supplies of which shall be paid by the electronic commerce operator if such services are supplied through it, and all the provisions of this Act shall apply to such electronic commerce operator as if he is the supplier liable for paying the tax in relation to the supply of such services:

Provided that where an electronic commerce operator does not have a physical presence in the taxable territory, any person representing such electronic commerce operator for any purpose in the taxable territory shall be liable to pay tax:

Provided further that where an electronic commerce operator does not have a physical presence in the taxable territory and also he does not have a representative in the said territory, such electronic commerce operator shall appoint a person in the taxable territory for the purpose of paying tax and such person shall be liable to pay tax.

10. (1) Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act but subject to the provisions of sub-sections (3) and (4) of section 9, a registered person, whose aggregate turnover in the preceding financial year did not exceed fifty lakh rupees may opt to pay, in lieu of the tax payable by him, an amount calculated at such rate as may be prescribed, but not exceeding,-

Composition
levy.

- (a) *one per cent. of the turnover in State in case of a manufacturer,*
- (b) *two and a half per cent. of the turnover in State in case of persons engaged in making supplies referred to in clause (b) of paragraph 6 of Schedule II, and*
- (c) *half per cent. of the turnover in State in case of other suppliers,*

subject to such conditions and restrictions as may be prescribed:

Provided that the Government may, by notification, increase the said limit of fifty lakh rupees to such higher amount, not exceeding one crore rupees, as may be recommended by the Council.

- (2) The registered person shall be eligible to opt under sub-section (1), if—

(a) he is not engaged in the supply of services other than supplies referred to in clause (b) of paragraph 6 of Schedule II;

(b) he is not engaged in making any supply of goods which are not leviable to tax under this Act;

(c) he is not engaged in making any inter-State outward supplies of goods;

(d) he is not engaged in making any supply of goods through an electronic commerce operator who is required to collect tax at source under section 52; and

(e) he is not a manufacturer of such goods as may be notified by the Government on the recommendations of the Council:

Provided that where more than one registered person are having the same Permanent Account Number (issued under the Income-tax Act 1961), the registered person shall not be eligible to opt for the scheme under sub-section (1) unless all such registered persons opt to pay tax under that sub-section.

- (3) The option availed of by a registered person under sub-section (1) shall lapse with effect from the day on which his aggregate turnover during a financial year exceeds the limit specified under sub-section (1).

- (4) A taxable person to whom the provisions of sub-section (1) apply shall not collect any tax from the recipient on supplies made by him nor shall he be entitled to any credit of input tax.
- (5) If the proper officer has reasons to believe that a taxable person has paid tax under sub-section (1) despite not being eligible, such person shall, in addition to any tax that may be payable by him under any other provisions of this Act, be liable to a penalty and the provisions of section 73 or section 74 shall, mutatis mutandis, apply for determination of tax and penalty.
11. (1) Where the Government is satisfied that it is necessary in the public interest so to do, it may, on the recommendations of the Council, by notification, exempt generally, either absolutely or subject to such conditions as may be specified therein, goods or services or both of any specified description from the whole or any part of the tax leviable thereon with effect from such date as may be specified in such notification.
- (2) Where the Government is satisfied that it is necessary in the public interest so to do, it may, on the recommendations of the Council, by special order in each case, under circumstances of an exceptional nature to be stated in such order, exempt from payment of tax any goods or services or both on which tax is leviable.
- (3) The Government may, if it considers necessary or expedient so to do for the purpose of clarifying the scope or applicability of any notification issued under sub-section (1) or order issued under sub-section (2), insert an explanation in such notification or order, as the case may be, by notification at any time within one year of issue of the notification under sub-section (1) or order under sub-section (2), and every such explanation shall have effect as if it had always been the part of the first such notification or order, as the case may be.
- (4) Any notification issued by the Central Government, on the recommendations of the Council, under sub-section (1) of section 11 or order issued under sub-section (2) of the said section of the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a notification or, as the case may be, an order issued under this Act.

Power to grant exemption from tax.

Explanation.—For the purposes of this section, where an exemption in respect of any goods or services or both from the whole or part of the tax leviable thereon has been granted absolutely, the registered person supplying such goods or services or both shall not collect the tax, in excess of the effective rate, on such supply of goods or services or both.

CHAPTER IV TIME AND VALUE OF SUPPLY

12. (1) The liability to pay tax on goods shall arise at the time of supply, as determined in accordance with the provisions of this section.
- (2) The time of supply of goods shall be the earlier of the following dates, namely:-
- (a) the date of issue of invoice by the supplier or the last date on which he is required, under sub-section (1) of section 31, to issue the invoice with respect to the supply; or
- (b) the date on which the supplier receives the payment with respect to the supply:

Time of supply of goods.

Provided that where the supplier of taxable goods receives an amount up to one thousand rupees in excess of the amount indicated in the tax invoice, the time of supply to the extent of such excess amount shall, at the option of the said supplier, be the date of issue of invoice in respect of such excess amount.

Explanation 1.—For the purposes of clauses (a) and (b), “supply” shall be deemed to have been made to the extent it is covered by the invoice or, as the case may be, the payment.

Explanation 2.—For the purposes of clause (b), “the date on which the supplier receives the payment” shall be the date on which the payment is entered in his books of account or the date on which the payment is credited to his bank account, whichever is earlier.

- (3) In case of supplies in respect of which tax is paid or liable to be paid on reverse charge basis, the time of supply shall be the earliest of the following dates, namely:—

(a) the date of the receipt of goods; or

(b) the date of payment as entered in the books of account of the recipient or the date on which the payment is debited in his bank account, whichever is earlier; or

(c) the date immediately following thirty days from the date of issue of invoice or any other document, by whatever name called, in lieu thereof by the supplier:

Provided that where it is not possible to determine the time of supply under clause (a) or clause (b) or clause (c), the time of supply shall be the date of entry in the books of account of the recipient of supply.

- (4) In case of supply of vouchers by a supplier, the time of supply shall be—

(a) the date of issue of voucher, if the supply is identifiable at that point; or

(b) the date of redemption of voucher, in all other cases.

- (5) Where it is not possible to determine the time of supply under the provisions of sub-section (2) or sub-section (3) or sub-section (4), the time of supply shall—

(a) in a case where a periodical return has to be filed, be the date on which such return is to be filed; or

(b) in any other case, be the date on which the tax is paid.

- (6) The time of supply to the extent it relates to an addition in the value of supply by way of interest, late fee or penalty for delayed payment of any consideration shall be the date on which the supplier receives such addition in value.

13. (1) The liability to pay tax on services shall arise at the time of supply, as determined in accordance with the provisions of this section.

Time of supply of services.

- (2) The time of supply of services shall be the earliest of the following dates, namely:—
- (a) the date of issue of invoice by the supplier, if the invoice is issued within the period prescribed under sub-section (2) of section 31 or the date of receipt of payment, whichever is earlier; or
 - (b) the date of provision of service, if the invoice is not issued within the period prescribed under sub-section (2) of section 31 or the date of receipt of payment, whichever is earlier; or
 - (c) the date on which the recipient shows the receipt of services in his books of account, in a case where the provisions of clause (a) or clause (b) do not apply:

Provided that where the supplier of taxable service receives an amount upto one thousand rupees in excess of the amount indicated in the tax invoice, the time of supply to the extent of such excess amount shall, at the option of the said supplier, be the date of issue of invoice relating to such excess amount.

Explanation.—For the purposes of clauses (a) and (b)–

- (i) the supply shall be deemed to have been made to the extent it is covered by the invoice or, as the case may be, the payment;
 - (ii) “the date of receipt of payment” shall be the date on which the payment is entered in the books of account of the supplier or the date on which the payment is credited to his bank account, whichever is earlier.
- (3) In case of supplies in respect of which tax is paid or liable to be paid on reverse charge basis, the time of supply shall be the earlier of the following dates, namely:—

(a) the date of payment as entered in the books of account of the recipient or the date on which the payment is debited in his bank account, whichever is earlier; or

(b) the date immediately following sixty days from the date of issue of invoice or any other document, by whatever name called, in lieu thereof by the supplier:

Provided that where it is not possible to determine the time of supply under clause (a) or clause (b), the time of supply shall be the date of entry in the books of account of the recipient of supply:

Provided further that in case of supply by associated enterprises, where the supplier of service is located outside India, the time of supply shall be the date of entry in the books of account of the recipient of supply or the date of payment, whichever is earlier.

- (4) In case of supply of vouchers by a supplier, the time of supply shall be—

(a) the date of issue of voucher, if the supply is identifiable at that point;
or

(b) the date of redemption of voucher, in all other cases.

- (5) Where it is not possible to determine the time of supply under the provisions of sub-section (2) or sub-section (3) or sub-section (4), the time of supply shall—

(a) in a case where a periodical return has to be filed, be the date on which such return is to be filed; or

(b) in any other case, be the date on which the tax is paid.

- (6) The time of supply to the extent it relates to an addition in the value of supply by way of interest, late fee or penalty for delayed payment of any consideration shall be the date on which the supplier receives such addition in value.

14. Notwithstanding anything contained in section 12 or section 13, the time of supply, where there is a change in the rate of tax in respect of goods or services or both, shall be determined in the following manner, namely:—

Change in rate of tax in respect of supply of goods or services.

(a) in case the goods or services or both have been supplied before the change in rate of tax,—

(i) where the invoice for the same has been issued and the payment is also received after the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of receipt of payment or the date of issue of invoice, whichever is earlier; or

(ii) where the invoice has been issued prior to the change in rate of tax but payment is received after the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of issue of invoice; or

(iii) where the payment has been received before the change in rate of tax, but the invoice for the same is issued after the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of receipt of payment;

(b) in case the goods or services or both have been supplied after the change in rate of tax,—

(i) where the payment is received after the change in rate of tax but the invoice has been issued prior to the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of receipt of payment; or

(ii) where the invoice has been issued and payment is received before the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of receipt of payment or date of issue of invoice, whichever is earlier; or

(iii) where the invoice has been issued after the change in rate of tax but the payment is received before the change in rate of tax, the time of supply shall be the date of issue of invoice;

Provided that the date of receipt of payment shall be the date of credit in the bank account if such credit in the bank account is after four working days from the date of change in the rate of tax.

Explanation.—For the purposes of this section, “the date of receipt of payment” shall be the date on which the payment is entered in the books of account of the supplier or the date on which the payment is credited to his bank account, whichever is earlier.

15. (1) The value of a supply of goods or services or both shall be the transaction value, which is the price actually paid or payable for the said supply of goods or services or both where the supplier and the recipient of the supply are not related and the price is the sole consideration for the supply.

Value of taxable supply.

- (2) The value of supply shall include—

(a) any taxes, duties, cesses, fees and charges levied under any law for the time being in force other than this Act, the *Central Goods and Services Tax Act* and the *Goods and Services Tax (Compensation to States) Act*, if charged separately by the supplier;

(b) any amount that the supplier is liable to pay in relation to such supply but which has been incurred by the recipient of the supply and not included in the price actually paid or payable for the goods or services or both;

(c) incidental expenses, including commission and packing, charged by the supplier to the recipient of a supply and any amount charged for anything done by the supplier in respect of the supply of goods or services or both at the time of, or before delivery of goods or supply of services;

(d) interest or late fee or penalty for delayed payment of any consideration for any supply; and

(e) subsidies directly linked to the price excluding subsidies provided by the Central Government and State Governments.

Explanation.—For the purposes of this sub-section, the amount of subsidy shall be included in the value of supply of the supplier who receives the subsidy.

(3) The value of the supply shall not include any discount which is given—

(a) before or at the time of the supply if such discount has been duly recorded in the invoice issued in respect of such supply; and

(b) after the supply has been effected, if -

(i) such discount is established in terms of an agreement entered into at or before the time of such supply and specifically linked to relevant invoices; and

(ii) input tax credit as is attributable to the discount on the basis of document issued by the supplier has been reversed by the recipient of the supply.

(4) Where the value of the supply of goods or services or both cannot be determined under sub-section (1), the same shall be determined in such manner as may be prescribed.

(5) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) or sub-section (4), the value of such supplies as may be notified by the Government on the recommendations of the Council shall be determined in such manner as may be prescribed.

Explanation.- For the purposes of this Act,-

(a) persons shall be deemed to be “related persons” if -

- (i) such persons are officers or directors of one another's businesses;
- (ii) such persons are legally recognised partners in business;
- (iii) such persons are employer and employee;
- (iv) any person directly or indirectly owns, controls or holds twenty-five per cent. or more of the outstanding voting stock or shares of both of them;

- (v) one of them directly or indirectly controls the other;
- (vi) both of them are directly or indirectly controlled by a third person;
- (vii) together they directly or indirectly control a third person; or
- (viii) they are members of the same family;

(b) the term "person" also includes legal persons.

(c) persons who are associated in the business of one another in that one is the sole agent or sole distributor or sole concessionaire, howsoever described, of the other, shall be deemed to be related.

CHAPTER V INPUT TAX CREDIT

16. (1) Every registered person shall, subject to such conditions and restrictions as may be prescribed and in the manner specified in section 49, be entitled to take credit of input tax charged on any supply of goods or services or both to him which are used or intended to be used in the course or furtherance of his business and the said amount shall be credited to the electronic credit ledger of such person.

Eligibility and conditions for taking input tax credit.

(2) Notwithstanding anything contained in this section, no registered person shall be entitled to the credit of any input tax in respect of any supply of goods or services or both to him unless,—

(a) he is in possession of a tax invoice or debit note issued by a supplier registered under this Act, or such other tax paying documents as may be prescribed;

(b) he has received the goods or services or both.

Explanation.—For the purposes of this clause, it shall be deemed that the registered person has received the goods where the goods are delivered by the supplier to a recipient or any other person on the direction of such registered person, whether acting as an agent or otherwise, before or during movement of goods, either by way of transfer of documents of title to goods or otherwise;

(c) subject to the provisions of section 41, the tax charged in respect of such supply has been actually paid to the Government, either in cash or through utilisation of input tax credit admissible in respect of the said supply; and

(d) he has furnished the return under section 39:

Provided that where the goods against an invoice are received in lots or instalments, the registered person shall be entitled to take credit upon receipt of the last lot or instalment:

Provided further that where a recipient fails to pay to the supplier of goods or services or both, other than the supplies on which tax is payable on reverse charge basis, the amount towards the value of supply along with tax payable thereon within a period of one hundred and eighty days from the date of issue of invoice by the supplier, an amount equal to the input tax credit availed by the recipient shall be added to his output tax liability, along with interest thereon, in such manner as may be prescribed:

Provided also that the recipient shall be entitled to avail of the credit of input tax on payment made by him of the amount towards the value of supply of goods or services or both along with tax payable thereon.

43 of 1961.

- (3) Where the registered person has claimed depreciation on the tax component of the cost of capital goods and plant and machinery under the provisions of the Income-tax Act, 1961, the input tax credit on the said tax component shall not be allowed.
- (4) A registered person shall not be entitled to take input tax credit in respect of any invoice or debit note for supply of goods or services or both after the due date of furnishing of the return under section 39 for the month of September following the end of financial year to which such invoice or invoice relating to such debit note pertains or furnishing of the relevant annual return, whichever is earlier.
17. (1) Where the goods or services or both are used by the registered person partly for the purpose of any business and partly for other purposes, the amount of credit shall be restricted to so much of the input tax as is attributable to the purposes of his business.
- (2) Where the goods or services or both are used by the registered person partly for effecting taxable supplies including zero-rated supplies under this Act or under the Integrated Goods and Services Tax Act and partly for effecting exempt supplies under the said Acts, the amount of credit shall be restricted to so much of the input tax as is attributable to the said taxable supplies including zero-rated supplies.
- (3) The value of exempt supply under sub-section (2) shall be such as may be prescribed, and shall include supplies on which the recipient is liable to pay tax on reverse charge basis, transactions in securities, sale of land and, subject to clause (b) of paragraph 5 of Schedule II, sale of building.
- (4) A banking company or a financial institution including a non-banking financial company, engaged in supplying services by way of accepting deposits, extending loans or advances shall have the option to either comply with the provisions of sub-section (2), or avail of, every month, an amount equal to fifty per cent. of the eligible input tax credit on inputs, capital goods and input services in that month and the rest shall lapse:

Apportionment
of credit and
blocked credits.

Provided that the option once exercised shall not be withdrawn during the remaining part of the financial year:

Provided further that the restriction of fifty per cent. shall not apply to the tax paid on supplies made by one registered person to another registered person having the same Permanent Account Number.

- (5) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) of section 16 and sub-section (1) of section 18, input tax credit shall not be available in respect of the following, namely:-
- (a) motor vehicles and other conveyances except when they are used—
- (i) for making the following taxable supplies, namely:—
- (A) further supply of such vehicles or conveyances; or
- (B) transportation of passengers; or
- (C) imparting training on driving, flying, navigating such vehicles or conveyances;
- (ii) for transportation of goods;

(b) the following supply of goods or services or both:-

(i) food and beverages, outdoor catering, beauty treatment, health services, cosmetic and plastic surgery except where an inward supply of goods or services or both of a particular category is used by a registered person for making an outward taxable supply of the same category of goods or services or both or as an element of a taxable composite or mixed supply;

(ii) membership of a club, health and fitness centre;

(iii) rent-a-cab, life insurance and health insurance except where -
(A) the Government notifies the services which are obligatory for an employer to provide to its employees under any law for the time being in force; or
(B) such inward supply of goods or services or both of a particular category is used by a registered person for making an outward taxable supply of the same category of goods or services or both or as part of a taxable composite or mixed supply; and

(iv) travel benefits extended to employees on vacation such as leave or home travel concession.

(c) works contract services when supplied for construction of an immovable property (other than plant and machinery) except where it is an input service for further supply of works contract service;

(d) goods or services or both received by a taxable person for construction of an immovable property (other than plant or machinery) on his own account including when such goods or services or both are used in the course or furtherance of business.

Explanation.—For the purposes of clauses (c) and (d), the expression “construction” includes re-construction, renovation, additions or alterations or repairs, to the extent of capitalisation, to the said immovable property;

(e) goods or services or both on which tax has been paid under section 10;

(f) goods or services or both received by a non-resident taxable person except on goods imported by him;

(g) goods or services or both used for personal consumption;

(h) goods lost, stolen, destroyed, written off or disposed of by way of gift or free samples; and

(i) any tax paid in accordance with the provisions of sections 74, 129 and 130.

(6) The Government may prescribe the manner in which the credit referred to in sub-sections (1) and (2) may be attributed.

Explanation.— For the purposes of this Chapter and Chapter VI, the expression “plant and machinery” means apparatus, equipment, and machinery fixed to earth by foundation or structural support that are used for making outward supply of goods or services or both and includes such foundation and structural supports but excludes-

(i) land, building or any other civil structures;

(ii) telecommunication towers; and

(iii) pipelines laid outside the factory premises.

18. (1) Subject to such conditions and restrictions as may be prescribed—

Availability of credit in special circumstances.

(a) a person who has applied for registration under this Act within thirty days from the date on which he becomes liable to registration and has been granted such registration shall be entitled to take credit of input tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock on the day immediately preceding the date from which he becomes liable to pay tax under the provisions of this Act;

(b) a person who takes registration under sub-section (3) of section 25 shall be entitled to take credit of input tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock on the day immediately preceding the date of grant of registration;

(c) where any registered person ceases to pay tax under section 10, he shall be entitled to take credit of input tax in respect of inputs held in stock, inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock and on capital goods on the day immediately preceding the date from which he becomes liable to pay tax under section 9:

Provided that the credit on capital goods shall be reduced by such percentage points as may be prescribed;

(d) where an exempt supply of goods or services or both by a registered person becomes a taxable supply, such person shall be entitled to take credit of input tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock relating to such exempt supply and on capital goods exclusively used for such exempt supply on the day immediately preceding the date from which such supply becomes taxable:

Provided that the credit on capital goods shall be reduced by such percentage points as may be prescribed.

- (2) A registered person shall not be entitled to take input tax credit under sub-section (1) in respect of any supply of goods or services or both to him after the expiry of one year from the date of issue of tax invoice relating to such supply.
- (3) Where there is a change in the constitution of a registered person on account of sale, merger, demerger, amalgamation, lease or transfer of the business with the specific provisions for transfer of liabilities, the said registered person shall be allowed to transfer the input tax credit which remains unutilised in his electronic credit ledger to such sold, merged, demerged, amalgamated, leased or transferred business in such manner as may be prescribed.
- (4) Where any registered person who has availed of input tax credit opts to pay tax under section 10 or, where the goods or services or both supplied by him become wholly exempt, he shall pay an amount, by way of debit in the electronic credit ledger or electronic cash ledger, equivalent to the credit of input tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock and on capital goods, reduced by such percentage points as may be prescribed, on the day immediately preceding the date of exercising of such option or, as the case may be, the date of such exemption:

Provided that after payment of such amount, the balance of input tax credit, if any, lying in his electronic credit ledger shall lapse.

- (5) The amount of credit under sub-section (1) and the amount payable under sub-section (4) shall be calculated in such manner as may be prescribed.
- (6) In case of supply of capital goods or plant and machinery, on which input tax credit has been taken, the registered person shall pay an amount equal to the input tax credit taken on the said capital goods or plant and machinery reduced by such percentage points as may be prescribed or the tax on the transaction value of such capital goods or plant and machinery determined under section 15, whichever is higher:

Provided that where refractory bricks, moulds and dies, jigs and fixtures are supplied as scrap, the taxable person may pay tax on the transaction value of such goods determined under section 15.

19. (1) The principal shall, subject to such conditions and restrictions as may be prescribed, be allowed input tax credit on inputs sent to a job worker for job work.

Taking input tax credit in respect of inputs and capital goods sent for job work.

- (2) Notwithstanding anything contained in clause (b) of sub-section (2) of section 16, the principal shall be entitled to take credit of input tax on inputs even if the inputs are directly sent to a job worker for job work without being first brought to his place of business.
- (3) Where the inputs sent for job work are not received back by the principal after completion of job work or otherwise or are not supplied from the place of business of the job worker in accordance with clause (a) or clause (b) of sub-section (1) of section 143 within one year of being sent out, it shall be deemed that such inputs had been supplied by the principal to the job worker on the day when the said inputs were sent out:

Provided that where the inputs are sent directly to a job worker, the period of one year shall be counted from the date of receipt of inputs by the job worker.

- (4) The principal shall, subject to such conditions and restrictions as may be prescribed, be allowed input tax credit on capital goods sent to a job worker for job work.
- (5) Notwithstanding anything contained in clause (b) of sub-section (2) of section 16, the principal shall be entitled to take credit of input tax on capital goods even if the capital goods are directly sent to a job worker for job work without being first brought to his place of business.
- (6) Where the capital goods sent for job work are not received back by the principal within a period of three years of being sent out, it shall be deemed that such capital goods had been supplied by the principal to the job worker on the day when the said capital goods were sent out:

Provided that where the capital goods are sent directly to a job worker, the period of three years shall be counted from the date of receipt of capital goods by the job worker.

- (7) Nothing contained in sub-section (3) or sub-section (6) shall apply to moulds and dies, jigs and fixtures, or tools sent out to a job worker for

job work.

Explanation.- For the purpose of this section, “principal” means the person referred to in section 143.

20. (1) The Input Service Distributor shall distribute the credit of *State* tax as *State* tax or integrated tax and integrated tax as integrated tax or *State* tax, by way of issue of document containing the amount of input tax credit being distributed in such manner as may be prescribed.

Manner of
distribution of
credit by Input
Service
Distributor.

- (2) The Input Service Distributor may distribute the credit subject to the following conditions, namely:—

(a) the credit can be distributed to the recipients of credit against a document containing such details as may be prescribed;

(b) the amount of the credit distributed shall not exceed the amount of credit available for distribution;

(c) the credit of tax paid on input services attributable to a recipient of credit shall be distributed only to that recipient;

(d) the credit of tax paid on input services attributable to more than one recipient of credit shall be distributed amongst such recipients to whom the input service is attributable and such distribution shall be *pro rata* on the basis of the turnover in a State or turnover in a Union territory of such recipient, during the relevant period, to the aggregate of the turnover of all such recipients to whom such input service is attributable and which are operational in the current year, during the said relevant period;

(e) the credit of tax paid on input services attributable to all recipients of credit shall be distributed amongst such recipients and such distribution shall be *pro rata* on the basis of the turnover in a State or turnover in a Union territory of such recipient, during the relevant period, to the aggregate of the turnover of all recipients and which are operational in the current year, during the said relevant period.

Explanation.—For the purposes of this section,—

(a) the “relevant period” shall be—

(i) if the recipients of credit have turnover in their States or Union territories in the financial year preceding the year during which credit is to be distributed, the said financial year; or

(ii) if some or all recipients of the credit do not have any turnover in their States or Union territories in the financial year preceding the year during which the credit is to be distributed, the last quarter for which details of such turnover of all the recipients are available, previous to the month during which credit is to be distributed;

(b) the expression “recipient of credit” means the supplier of goods or services or both having the same Permanent Account Number as that of the Input Service Distributor;

(c) the term “turnover”, in relation to any registered person engaged in the supply of taxable goods as well as goods not taxable under this Act, means the value of turnover, reduced by the amount of any duty or tax levied under entry 84 of List I of the Seventh Schedule to the Constitution and entry 51 and 54 of List II of the said Schedule.

21. Where the Input Service Distributor distributes the credit in contravention of the provisions contained in section 20 resulting in excess distribution of credit to one or more recipients of credit, the excess credit so distributed shall be recovered from such recipients along with interest, and the provisions of section 73 or section 74, as the case may be, shall, *mutatis mutandis*, apply for determination of amount to be recovered.

Manner of recovery of credit distributed in excess.

CHAPTER - VI REGISTRATION

22. (1) *Every supplier making a taxable supply of goods or services or both in the State shall be liable to be registered under this Act if his aggregate turnover in a financial year exceeds twenty lakh rupees:*

Persons liable for registration.

Provided that where such person makes taxable supplies of goods or services or both from any of the special category States, he shall be liable to be registered if his aggregate turnover in a financial year exceeds ten lakh rupees.

- (2) Every person who, on the day immediately preceding the appointed day, is registered or holds a license under an existing law, shall be liable to be registered under this Act with effect from the appointed day.
- (3) Where a business carried on by a taxable person registered under this Act is transferred, whether on account of succession or otherwise, to another person as a going concern, the transferee or the successor, as the case may be, shall be liable to be registered with effect from the date of such transfer or succession.
- (4) Notwithstanding anything contained in sub-sections (1) and (3), in a case of transfer pursuant to sanction of a scheme or an arrangement for amalgamation or, as the case may be, de-merger of two or more companies pursuant to an order of a High Court, Tribunal or otherwise, the transferee shall be liable to be registered, with effect from the date on which the Registrar of Companies issues a certificate of incorporation giving effect to such order of the High Court or Tribunal.

Explanation.—For the purposes of this section,—

- (i) the expression “aggregate turnover” shall include all supplies made by the taxable person, whether on his own account or made on behalf of all his principals;
- (ii) the supply of goods, after completion of job work, by a registered job worker shall be treated as the supply of goods by the principal referred to in section 143, and the value of such goods shall not be included in the aggregate turnover of the registered jobworker;
- (iii) the expression “special category States” shall mean the States as specified in sub-clause (g) of clause (4) of article 279A of the Constitution.

23. (1) The following persons shall not be liable to registration, namely:—

Persons not liable for registration.

- (a) any person engaged exclusively in the business of supplying goods or services or both that are not liable to tax or wholly exempt from tax under this Act or under the Integrated Goods and Services Tax Act;
- (b) an agriculturist, to the extent of supply of produce out of cultivation of land.
- (2) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify the category of persons who may be exempted from obtaining registration under this Act.

24. Notwithstanding anything contained in sub-section (1) of section 22, the

Compulsory

following categories of persons shall be required to be registered under this Act,-

registration in certain cases.

- (i) persons making any inter-State taxable supply;
- (ii) casual taxable persons making taxable supply;
- (iii) persons who are required to pay tax under reverse charge;
- (iv) person who are required to pay tax under sub-section (5) of section 9;
- (v) non-resident taxable persons making taxable supply;
- (vi) persons who are required to deduct tax under section 51, whether or not separately registered under this Act;
- (vii) persons who make taxable supply of goods or services or both on behalf of other taxable persons whether as an agent or otherwise;
- (viii) Input Service Distributor, whether or not separately registered under this Act;
- (ix) persons who supply goods or services or both, other than supplies specified under sub-section (5) of section 9, through such electronic commerce operator who is required to collect tax at source under section 52;
- (x) every electronic commerce operator;
- (xi) every person supplying online information and data base access or retrieval services from a place outside India to a person in India, other than a registered person; and
- (xii) such other person or class of persons as may be notified by the Government on the recommendations of the Council.

25. (1) Every person who is liable to be registered under section 22 or section 24 shall apply for registration within thirty days from the date on which he becomes liable to registration, in such manner and subject to such conditions as may be prescribed:

Procedure for registration.

Provided that a casual taxable person or a non-resident taxable person shall apply for registration at least five days prior to the commencement of business.

Explanation.- Every person who makes a supply from the territorial waters of India shall obtain registration in the coastal State where the nearest point of the appropriate baseline is located.

- (2) A person seeking registration under this Act shall be granted a single registration:

Provided that a person having multiple business verticals in the State may be granted a separate registration for each business vertical, subject to such conditions as may be prescribed.

- (3) A person, though not liable to be registered under section 22 or section 24 may get himself registered voluntarily, and all provisions of this Act, as are applicable to a registered person, shall apply to such person.

- (4) A person who has obtained or is required to obtain more than one registration, whether in one State or Union territory or more than one State or Union territory shall, in respect of each such registration, be treated as distinct persons for the purposes of this Act.

- (5) Where a person who has obtained or is required to obtain registration in

a State or Union territory in respect of an establishment, has an establishment in another State or Union territory, then such establishments shall be treated as establishments of distinct persons for the purposes of this Act.

- 43 of 1961. (6) Every person shall have a Permanent Account Number issued under the Income-tax Act, 1961 in order to be eligible for grant of registration:

Provided that a person required to deduct tax under section 51 may have, in lieu of a Permanent Account Number, a Tax Deduction and Collection Account Number issued under the said Act in order to be eligible for grant of registration.

- (7) Notwithstanding anything contained in sub-section (6), a non-resident taxable person may be granted registration under sub-section (1) on the basis of such other documents as may be prescribed.

- (8) Where a person who is liable to be registered under this Act fails to obtain registration, the proper officer may, without prejudice to any action which may be taken under this Act or under any other law for the time being in force, proceed to register such person in such manner as may be prescribed.

- (9) Notwithstanding anything contained in sub-section (1),—

(a) any specialised agency of the United Nations Organisation or any Multilateral Financial Institution and Organisation notified under the United Nations (Privileges and Immunities) Act, 1947, Consulate or Embassy of foreign countries; and

46 of 1947.

(b) any other person or class of persons, as may be notified by the Commissioner, shall be granted a Unique Identity Number in such manner and for such purposes, including refund of taxes on the notified supplies of goods or services or both received by them, as may be prescribed.

- (10) The registration or the Unique Identity Number shall be granted or rejected after due verification in such manner and within such period as may be prescribed.

- (11) A certificate of registration shall be issued in such form and with effect from such date as may be prescribed.

- (12) A registration or a Unique Identity Number shall be deemed to have been granted after the expiry of the period prescribed under sub-section (10), if no deficiency has been communicated to the applicant within that period.

26. (1) The grant of registration or the Unique Identity Number under the *Central Goods and Services Tax Act* shall be deemed to be a grant of registration or the Unique Identity Number under this Act subject to the condition that the application for registration or the Unique Identity Number has not been rejected under this Act within the time specified in sub-section (10) of section 25.

Deemed
registration.

- (2) Notwithstanding anything contained in sub-section (10) of section 25, any rejection of application for registration or the Unique Identity Number under the *Central Goods and Services Tax Act* shall be deemed to be a rejection of application for registration under this Act.

27. (1) The certificate of registration issued to a casual taxable person or a non-resident taxable person shall be valid for the period specified in the application for registration or ninety days from the effective date of registration, whichever is earlier and such person shall make taxable supplies only after the issuance of the certificate of registration:

Special provisions relating to casual taxable person and non-resident taxable person.

Provided that the proper officer may, on sufficient cause being shown by the said taxable person, extend the said period of ninety days by a further period not exceeding ninety days.

- (2) A casual taxable person or a non-resident taxable person shall, at the time of submission of application for registration under sub-section (1) of section 25, make an advance deposit of tax in an amount equivalent to the estimated tax liability of such person for the period for which the registration is sought:

Provided that where any extension of time is sought under sub-section (1), such taxable person shall deposit an additional amount of tax equivalent to the estimated tax liability of such person for the period for which the extension is sought.

- (3) The amount deposited under sub-section (2) shall be credited to the electronic cash ledger of such person and shall be utilised in the manner provided under section 49.

28. (1) Every registered person and a person to whom a Unique Identity Number has been assigned shall inform the proper officer of any changes in the information furnished at the time of registration or subsequent thereto, in such form and manner and within such period as may be prescribed.

Amendment of registration.

- (2) The proper officer may, on the basis of information furnished under sub-section (1) or as ascertained by him, approve or reject amendments in the registration particulars in such manner and within such period as may be prescribed:

Provided that approval of the proper officer shall not be required in respect of amendment of such particulars as may be prescribed:

Provided further that the proper officer shall not reject the application for amendment in the registration particulars without giving the person an opportunity of being heard.

- (3) Any rejection or approval of amendments under the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a rejection or approval under this Act.

29. (1) The proper officer may, either on his own motion or on an application filed by the registered person or by his legal heirs, in case of death of such person, cancel the registration, in such manner and within such period as may be prescribed, having regard to the circumstances where,—

Cancellation of registration.

(a) the business has been discontinued, transferred fully for any reason including death of the proprietor, amalgamated with other legal entity, demerged or otherwise disposed of; or

(b) there is any change in the constitution of the business; or

(c) the taxable person, other than the person registered under sub-section (3) of section 25, is no longer liable to be registered under section 22 or section 24.

- (2) The proper officer may cancel the registration of a person from such date, including any retrospective date, as he may deem fit, where,—

(a) a registered person has contravened such provisions of the Act or the rules made thereunder as may be prescribed; or

(b) a person paying tax under section 10 has not furnished returns for three consecutive tax periods; or

(c) any registered person, other than a person specified in clause (b), has not furnished returns for a continuous period of six months; or

(d) any person who has taken voluntary registration under sub-section (3) of section 25 has not commenced business within six months from the date of registration; or

- (e) registration has been obtained by means of fraud, wilful misstatement or suppression of facts:

Provided that the proper officer shall not cancel the registration without giving the person an opportunity of being heard.

- (3) The cancellation of registration under this section shall not affect the liability of the person to pay tax and other dues under this Act or to discharge any obligation under this Act or the rules made thereunder for any period prior to the date of cancellation whether or not such tax and other dues are determined before or after the date of cancellation.

- (4) The cancellation of registration under the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a cancellation of registration under this Act.

- (5) Every registered person whose registration is cancelled shall pay an amount, by way of debit in the electronic credit ledger or electronic cash ledger, equivalent to the credit of input tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock or capital goods or plant and machinery on the day immediately preceding the date of such cancellation or the output tax payable on such goods, whichever is higher, calculated in such manner as may be prescribed:

Provided that in case of capital goods or plant and machinery, the taxable person shall pay an amount equal to the input tax credit taken on the said capital goods or plant and machinery, reduced by such percentage points as may be prescribed or the tax on the transaction value of such capital goods or plant and machinery under section 15, whichever is higher.

- (6) The amount payable under sub-section (5) shall be calculated in such manner as may be prescribed.

30. (1) Subject to such conditions as may be prescribed, any registered person, whose registration is cancelled by the proper officer on his own motion, may apply to such officer for revocation of cancellation of the registration in the prescribed manner within thirty days from the date of service of the cancellation order.

Revocation of
cancellation of
registration.

- (2) The proper officer may, in such manner and within such period as may be prescribed, by order, either revoke cancellation of the registration or reject the application:

Provided that the application for revocation of cancellation of registration shall not be rejected unless the applicant has been given an opportunity of being heard.

- (3) The revocation of cancellation of registration under the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a revocation of cancellation of registration under this Act.

CHAPTER- VII TAX INVOICE, CREDIT AND DEBIT NOTES

31. (1) A registered person supplying taxable goods shall, before or at the time of,—

Tax invoice.

(a) removal of goods for supply to the recipient, where the supply involves movement of goods; or

(b) delivery of goods or making available thereof to the recipient, in any other case,

issue a tax invoice showing the description, quantity and value of goods, the tax charged thereon and such other particulars as may be prescribed:

Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify the categories of goods or supplies in respect of which a tax invoice shall be issued, within such time and in such manner as may be prescribed.

- (2) A registered person supplying taxable services shall, before or after the provision of service but within a prescribed period, issue a tax invoice, showing the description, value, tax charged thereon and such other particulars as may be prescribed:

Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, by notification and subject to such conditions as may be mentioned therein, specify the categories of services in respect of which—

(a) any other document issued in relation to the supply shall be deemed to be a tax invoice; or

(b) tax invoice may not be issued.

- (3) Notwithstanding anything contained in sub-sections (1) and (2)—

(a) a registered person may, within one month from the date of issuance of certificate of registration and in such manner as may be prescribed, issue a revised invoice against the invoice already issued during the period beginning with the effective date of registration till the date of issuance of certificate of registration to him;

(b) a registered person may not issue a tax invoice if the value of the goods or services or both supplied is less than two hundred rupees subject to such conditions and in such manner as may be prescribed;

(c) a registered person supplying exempted goods or services or both or paying tax under the provisions of section 10 shall issue, instead of a tax invoice, a bill of supply containing such particulars and in such manner as may be prescribed:

Provided that the registered person may not issue a bill of supply if the

value of the goods or services or both supplied is less than two hundred rupees subject to such conditions and in such manner as may be prescribed;

(d) a registered person shall, on receipt of advance payment with respect to any supply of goods or services or both, issue a receipt voucher or any other document, containing such particulars as may be prescribed, evidencing receipt of such payment;

(e) where, on receipt of advance payment with respect to any supply of goods or services or both the registered person issues a receipt voucher, but subsequently no supply is made and no tax invoice is issued in pursuance thereof, the said registered person may issue to the person who had made the payment, a refund voucher against such payment;

(f) a registered person who is liable to pay tax under sub-section (3) or sub-section (4) of section 9 shall issue an invoice in respect of goods or services or both received by him from the supplier who is not registered on the date of receipt of goods or services or both;

(g) a registered person who is liable to pay tax under sub-section (3) or sub-section (4) of section 9 shall issue a payment voucher at the time of making payment to the supplier.

(4) In case of continuous supply of goods, where successive statements of accounts or successive payments are involved, the invoice shall be issued before or at the time each such statement is issued or, as the case may be, each such payment is received.

(5) Subject to the provisions of clause (d) of sub-section (3), in case of continuous supply of services,—

(a) where the due date of payment is ascertainable from the contract, the invoice shall be issued on or before the due date of payment;

(b) where the due date of payment is not ascertainable from the contract, the invoice shall be issued before or at the time when the supplier of service receives the payment;

(c) where the payment is linked to the completion of an event, the invoice shall be issued on or before the date of completion of that event.

(6) In a case where the supply of services ceases under a contract before the completion of the supply, the invoice shall be issued at the time when the supply ceases and such invoice shall be issued to the extent of the supply made before such cessation.

(7) Notwithstanding anything contained in sub-section (1), where the goods being sent or taken on approval for sale or return are removed before the supply takes place, the invoice shall be issued before or at the time of supply or six months from the date of removal, whichever is earlier.

Explanation.—For the purposes of this section, the expression “tax invoice” shall include any revised invoice issued by the supplier in respect of a supply made earlier.

32. (1) A person who is not a registered person shall not collect in respect of any supply of goods or services or both any amount by way of tax under this Act.

Prohibition of unauthorised collection of tax

(2) No registered person shall collect tax except in accordance with the provisions of this Act or the rules made thereunder.

33. Notwithstanding anything contained in this Act or any other law for the time being in force, where any supply is made for a consideration, every person who is liable to pay tax for such supply shall prominently indicate in all documents relating to assessment, tax invoice and other like documents, the amount of tax which shall form part of the price at which such supply is made.

Amount of tax to be indicated in tax invoice and other documents.

34. (1) Where a tax invoice has been issued for supply of any goods or services or both and the taxable value or tax charged in that tax invoice is found to exceed the taxable value or tax payable in respect of such supply, or where the goods supplied are returned by the recipient, or where goods or services or both supplied are found to be deficient, the registered person, who has supplied such goods or services or both, may issue to the recipient a credit note containing such particulars as may be prescribed.

Credit and debit notes.

(2) Any registered person who issues a credit note in relation to a supply of goods or services or both shall declare the details of such credit note in the return for the month during which such credit note has been issued but not later than September following the end of the financial year in which such supply was made, or the date of furnishing of the relevant annual return, whichever is earlier, and the tax liability shall be adjusted in such manner as may be prescribed:

Provided that no reduction in output tax liability of the supplier shall be permitted, if the incidence of tax and interest on such supply has been passed on to any other person.

(3) Where a tax invoice has been issued for supply of any goods or services or both and the taxable value or tax charged in that tax invoice is found to be less than the taxable value or tax payable in respect of such supply, the registered person, who has supplied such goods or services or both, shall issue to the recipient a debit note containing such particulars as may be prescribed.

(4) Any registered person who issues a debit note in relation to a supply of goods or services or both shall declare the details of such debit note in the return for the month during which such debit note has been issued and the tax liability shall be adjusted in such manner as may be prescribed.

Explanation.—For the purposes of this Act, the expression “debit note” shall include a supplementary invoice.

CHAPTER VIII ACCOUNTS AND RECORDS

35. (1) Every registered person shall keep and maintain, at his principal place of business, as mentioned in the certificate of registration, a true and correct account of-

Accounts and other records.

- (a) production or manufacture of goods;
- (b) inward and outward supply of goods or services or both;
- (c) stock of goods;
- (d) input tax credit availed;
- (e) output tax payable and paid; and
- (f) such other particulars as may be prescribed:

Provided that where more than one place of business is specified in the certificate of registration, the accounts relating to each place of business shall be kept at such places of business:

Provided further that the registered person may keep and maintain such accounts and other particulars in electronic form in such manner as may be prescribed.

- (2) Every owner or operator of warehouse or godown or any other place used for storage of goods and every transporter, irrespective of whether he is a registered person or not, shall maintain records of the consigner, consignee and other relevant details of the goods in such manner as may be prescribed.
- (3) The Commissioner may notify a class of taxable persons to maintain additional accounts or documents for such purpose as may be specified therein.
- (4) Where the Commissioner considers that any class of taxable persons is not in a position to keep and maintain accounts in accordance with the provisions of this section, he may, for reasons to be recorded in writing, permit such class of taxable persons to maintain accounts in such manner as may be prescribed.
- (5) Every registered person whose turnover during a financial year exceeds the prescribed limit shall get his accounts audited by a chartered accountant or a cost accountant and shall submit a copy of the audited annual accounts, the reconciliation statement under sub-section (2) of section 44 and such other documents in such form and manner as may be prescribed.
- (6) Subject to the provisions of clause (h) of sub-section (5) of section 17, where the registered person fails to account for the goods or services or both in accordance with the provisions of sub-section (1), the proper officer shall determine the amount of tax payable on the goods or services or both that are not accounted for, as if such goods or services or both had been supplied by such person and the provisions of section 73 or section 74, as the case may be, shall, mutatis mutandis, apply for determination of such tax.

36. Every registered person required to keep and maintain books of account or other records in accordance with the provisions of sub-section (1) of section 35 shall retain them until the expiry of seventy two months from the due date of furnishing of annual return for the year pertaining to such accounts and records:

Period of retention of accounts.

Provided that a registered person, who is a party to an appeal or revision or any other proceedings before any Appellate Authority or Revisional Authority or Appellate Tribunal or court, whether filed by him or by the Commissioner, or is under investigation for an offence under Chapter XIX, shall retain the books of account and other records pertaining to the subject matter of such appeal or revision or proceedings or investigation for a period of one year after final disposal of such appeal or revision or proceedings or investigation, or for the period specified above, whichever is later.

CHAPTER- IX RETURNS

37. (1) Every registered person, other than an Input Service Distributor, a non-resident taxable person and a person paying tax under the provisions of section 10 or section 51 or section 52, shall furnish, electronically, in such form and manner as may be prescribed, the details of outward supplies of goods or services or both effected during a tax period on or before the tenth day of the month succeeding the said tax period and such details shall be communicated to the recipient of the said supplies within such time and in such manner as may be prescribed:

Furnishing details of outward supplies.

Provided that the registered person shall not be allowed to furnish the details of outward supplies during the period from the eleventh day to the fifteenth day of the month succeeding the tax period:

Provided further that the Commissioner may, for reasons to be recorded in writing, by notification, extend the time limit for furnishing such details for such class of taxable persons as may be specified therein:

Provided also that any extension of time limit notified by the Commissioner of *central* tax shall be deemed to be notified by the Commissioner.

- (2) Every registered person who has been communicated the details under sub-section (3) of section 38 or the details pertaining to inward supplies of Input Service Distributor under sub-section (4) of section 38, shall either accept or reject the details so communicated, on or before the seventeenth day, but not before the fifteenth day, of the month succeeding the tax period and the details furnished by him under sub-section (1) shall stand amended accordingly.
- (3) Any registered person, who has furnished the details under sub-section (1) for any tax period and which have remained unmatched under section 42 or section 43, shall, upon discovery of any error or omission therein, rectify such error or omission in such manner as may be prescribed, and shall pay the tax and interest, if any, in case there is a short payment of tax on account of such error or omission, in the return to be furnished for such tax period:

Provided that no rectification of error or omission in respect of the details furnished under sub-section (1) shall be allowed after furnishing of the return under section 39 for the month of September following the end of the financial year to which such details pertain, or furnishing of the relevant annual return, whichever is earlier.

Explanation.—For the purposes of this Chapter, the expression “details of outward supplies” shall include details of invoices, debit notes, credit notes and revised invoices issued in relation to outward supplies made during any tax period.

38. (1) Every registered person, other than an Input Service Distributor or a non-resident taxable person or a person paying tax under the provisions of section 10 or section 51 or section 52, shall verify, validate, modify or delete, if required, the details relating to outward supplies and credit or debit notes communicated under sub-section (1) of section 37 to prepare the details of his inward supplies and credit or debit notes and may include therein, the details of inward supplies and credit or debit notes received by him in respect of such supplies that have not been declared by the supplier under sub-section (1) of section 37.
- (2) Every registered person, other than an Input Service Distributor or a non-resident taxable person or a person paying tax under the provisions of section 10 or section 51 or section 52, shall furnish, electronically, the details of inward supplies of taxable goods or services or both, including inward supplies of goods or services or both on which the tax is payable on reverse charge basis under this Act and inward supplies of goods or services or both taxable under the Integrated Goods and Services Tax Act or on which integrated goods and services tax is payable under section 3 of the Customs Tariff Act, 1975, and credit or debit notes received in respect of such supplies during a tax period after the tenth day but on or before the fifteenth day of the month succeeding the tax period in such form and manner as may be prescribed:

Furnishing
details of inward
supplies.

Provided that the Commissioner may, for reasons to be recorded in writing,

by notification, extend the time limit for furnishing such details for such class of taxable persons as may be specified therein:

Provided further that any extension of time limit notified by the Commissioner of *central* tax shall be deemed to be notified by the Commissioner.

- (3) The details of supplies modified, deleted or included by the recipient and furnished under sub-section (2) shall be communicated to the supplier concerned in such manner and within such time as may be prescribed.
- (4) The details of supplies modified, deleted or included by the recipient in the return furnished under sub-section (2) or sub-section (4) of section 39 shall be communicated to the supplier concerned in such manner and within such time as may be prescribed.
- (5) Any registered person, who has furnished the details under sub-section (2) for any tax period and which have remained unmatched under section 42 or section 43, shall, upon discovery of any error or omission therein, rectify such error or omission in the tax period during which such error or omission is noticed in such manner as may be prescribed, and shall pay the tax and interest, if any, in case there is a short payment of tax on account of such error or omission, in the return to be furnished for such tax period:

Provided that no rectification of error or omission in respect of the details furnished under sub-section (2) shall be allowed after furnishing of the return under section 39 for the month of September following the end of the financial year to which such details pertain, or furnishing of the relevant annual return, whichever is earlier.

39. (1) Every registered person, other than an Input Service Distributor or a non-resident taxable person or a person paying tax under the provisions of section 10 or section 51 or section 52 shall, for every calendar month or part thereof, furnish, in such form and manner as may be prescribed, a return, electronically, of inward and outward supplies of goods or services or both, input tax credit availed, tax payable, tax paid and such other particulars as may be prescribed on or before the twentieth day of the month succeeding such calendar month or part thereof.
- (2) A registered person paying tax under the provisions of section 10 shall, for each quarter or part thereof, furnish, in such form and manner as may be prescribed, a return, electronically, of turnover in the State, inward supplies of goods or services or both, tax payable and tax paid within eighteen days after the end of such quarter.
- (3) Every registered person required to deduct tax at source under the provisions of section 51 shall furnish, in such form and manner as may be prescribed, a return, electronically, for the month in which such deductions have been made within ten days after the end of such month.
- (4) Every taxable person registered as an Input Service Distributor shall, for every calendar month or part thereof, furnish, in such form and manner as may be prescribed, a return, electronically, within thirteen days after the end of such month.
- (5) Every registered non-resident taxable person shall, for every calendar month or part thereof, furnish, in such form and manner as may be prescribed, a return, electronically, within twenty days after the end of a calendar month or within seven days after the last day of the period of registration specified under sub-section (1) of section 27, whichever is earlier.

Furnishing of returns.

- (6) The Commissioner may, for reasons to be recorded in writing, by notification, extend the time limit for furnishing the returns under this section for such class of registered persons as may be specified therein:

Provided that any extension of time limit notified by the Commissioner of *central* tax shall be deemed to be notified by the Commissioner.

- (7) Every registered person, who is required to furnish a return under sub-section (1) or sub-section (2) or sub-section (3) or sub-section (5), shall pay to the Government the tax due as per such return not later than the last date on which he is required to furnish such return.
- (8) Every registered person who is required to furnish a return under sub-section (1) or sub-section (2) shall furnish a return for every tax period whether or not any supplies of goods or services or both have been made during such tax period.
- (9) Subject to the provisions of sections 37 and 38, if any registered person after furnishing a return under sub-section (1) or sub-section (2) sub-section (3) or sub-section (4) or sub-section (5) discovers any omission or incorrect particulars therein, other than as a result of scrutiny, audit, inspection or enforcement activity by the tax authorities, he shall rectify such omission or incorrect particulars in the return to be furnished for the month or quarter during which such omission or incorrect particulars are noticed, subject to payment of interest under this Act:

Provided that no such rectification of any omission or incorrect particulars shall be allowed after the due date for furnishing of return for the month of September or second quarter following the end of the financial year, or the actual date of furnishing of relevant annual return, whichever is earlier.

- (10) A registered person shall not be allowed to furnish a return for a tax period if the return for any of the previous tax periods has not been furnished by him.

40. Every registered person who has made outward supplies in the period between the date on which he became liable to registration till the date on which registration has been granted shall declare the same in the first return furnished by him after grant of registration.

First Return.

41. (1) Every registered person shall, subject to such conditions and restrictions as may be prescribed, be entitled to take the credit of eligible input tax, as self-assessed, in his return and such amount shall be credited on a provisional basis to his electronic credit ledger.

Claim of input tax credit and provisional acceptance thereof.

- (2) The credit referred to in sub-section (1) shall be utilised only for payment of self-assessed output tax as per the return referred to in the said sub-section.

42. (1) The details of every inward supply furnished by a registered person (hereafter in this section referred to as the "recipient") for a tax period shall, in such manner and within such time as may be prescribed, be matched—

Matching, reversal and reclaim of input tax credit.

(a) with the corresponding details of outward supply furnished by the corresponding registered person (hereafter in this section referred to as the "supplier") in his valid return for the same tax period or any preceding tax period;

51 of 1975.

(b) with the integrated goods and services tax paid under section 3 of the Customs Tariff Act, 1975 in respect of goods imported by him; and

(c) for duplication of claims of input tax credit.

- (2) The claim of input tax credit in respect of invoices or debit notes relating to inward supply that match with the details of corresponding outward supply or with the integrated goods and services tax paid under

51 of 1975

section 3 of the Customs Tariff Act, 1975 in respect of goods imported by him shall be finally accepted and such acceptance shall be communicated, in such manner as may be prescribed, to the recipient.

- (3) Where the input tax credit claimed by a recipient in respect of an inward supply is in excess of the tax declared by the supplier for the same supply or the outward supply is not declared by the supplier in his valid returns, the discrepancy shall be communicated to both such persons in such manner as may be prescribed.
- (4) The duplication of claims of input tax credit shall be communicated to the recipient in such manner as may be prescribed.
- (5) The amount in respect of which any discrepancy is communicated under sub-section (3) and which is not rectified by the supplier in his valid return for the month in which discrepancy is communicated shall be added to the output tax liability of the recipient, in such manner as may be prescribed, in his return for the month succeeding the month in which the discrepancy is communicated.
- (6) The amount claimed as input tax credit that is found to be in excess on account of duplication of claims shall be added to the output tax liability of the recipient in his return for the month in which the duplication is communicated.
- (7) The recipient shall be eligible to reduce, from his output tax liability, the amount added under sub-section (5), if the supplier declares the details of the invoice or debit note in his valid return within the time specified in sub-section (9) of section 39.
- (8) A recipient in whose output tax liability any amount has been added under sub-section (5) or sub-section (6), shall be liable to pay interest at the rate specified under sub-section (1) of section 50 on the amount so added from the date of availing of credit till the corresponding additions are made under the said sub-sections.
- (9) Where any reduction in output tax liability is accepted under sub-section (7), the interest paid under sub-section (8) shall be refunded to the recipient by crediting the amount in the corresponding head of his electronic cash ledger in such manner as may be prescribed:

Provided that the amount of interest to be credited in any case shall not exceed the amount of interest paid by the supplier.

- (10) The amount reduced from the output tax liability in contravention of the provisions of sub-section (7) shall be added to the output tax liability of the recipient in his return for the month in which such contravention takes place and such recipient shall be liable to pay interest on the amount so added at the rate specified in sub-section (3) of section 50.

43. (1) The details of every credit note relating to outward supply furnished by a registered person (hereafter in this section referred to as the "supplier") for a tax period shall, in such manner and within such time as may be prescribed, be matched—

Matching, reversal and reclaim of reduction in output tax liability.

(a) with the corresponding reduction in the claim for input tax credit by the corresponding registered person (hereafter in this section referred to as the "recipient") in his valid return for the same tax period or any subsequent tax period; and

(b) for duplication of claims for reduction in output tax liability.

- (2) The claim for reduction in output tax liability by the supplier that matches with the corresponding reduction in the claim for input tax

credit by the recipient shall be finally accepted and communicated, in such manner as may be prescribed, to the supplier.

- (3) Where the reduction of output tax liability in respect of outward supplies exceeds the corresponding reduction in the claim for input tax credit or the corresponding credit note is not declared by the recipient in his valid returns, the discrepancy shall be communicated to both such persons in such manner as may be prescribed.
- (4) The duplication of claims for reduction in output tax liability shall be communicated to the supplier in such manner as may be prescribed.
- (5) The amount in respect of which any discrepancy is communicated under sub-section (3) and which is not rectified by the recipient in his valid return for the month in which discrepancy is communicated shall be added to the output tax liability of the supplier, in such manner as may be prescribed, in his return for the month succeeding the month in which the discrepancy is communicated.
- (6) The amount in respect of any reduction in output tax liability that is found to be on account of duplication of claims shall be added to the output tax liability of the supplier in his return for the month in which such duplication is communicated.
- ((7) The supplier shall be eligible to reduce, from his output tax liability, the amount added under sub-section (5) if the recipient declares the details of the credit note in his valid return within the time specified in sub-section (9) of section 39.
- (8) A supplier in whose output tax liability any amount has been added under sub-section (5) or sub-section (6), shall be liable to pay interest at the rate specified under sub-section (1) of section 50 in respect of the amount so added from the date of such claim for reduction in the output tax liability till the corresponding additions are made under the said sub-sections.
- (9) Where any reduction in output tax liability is accepted under sub-section (7), the interest paid under sub-section (8) shall be refunded to the supplier by crediting the amount in the corresponding head of his electronic cash ledger in such manner as may be prescribed:

Provided that the amount of interest to be credited in any case shall not exceed the amount of interest paid by the recipient.

- (10) The amount reduced from output tax liability in contravention of the provisions of sub-section (7) shall be added to the output tax liability of the supplier in his return for the month in which such contravention takes place and such supplier shall be liable to pay interest on the amount so added at the rate specified in sub-section (3) of section 50.

44. (1) Every registered person, other than an Input Service Distributor, a person paying tax under section 51 or section 52, a casual taxable person and a non-resident taxable person, shall furnish an annual return for every financial year electronically in such form and manner as may be prescribed on or before the thirty-first day of December following the end of such financial year.

Annual return.

- (2) Every registered person who is required to get his accounts audited in accordance with the provisions of sub-section (5) of section 35 shall furnish, electronically, the annual return under sub-section (1) along with a copy of the audited annual accounts and a reconciliation statement, reconciling the value of supplies declared in the return furnished for the financial year with the audited annual financial statement, and such other particulars as may be prescribed.

45. Every registered person who is required to furnish a return under sub-section (1) of section 39 and whose registration has been cancelled shall furnish a final return within three months of the date of cancellation or

Final return.

date of order of cancellation, whichever is later, in such form and manner as may be prescribed.

- | | |
|--|---|
| <p>46. Where a registered person fails to furnish a return under section 39 or section 44 or section 45, a notice shall be issued requiring him to furnish such return within fifteen days in such form and manner as may be prescribed.</p> <p>47. (1) Any registered person who fails to furnish the details of outward or inward supplies required under section 37 or section 38 or returns required under section 39 or section 45 by the due date shall pay a late fee of one hundred rupees for every day during which such failure continues subject to a maximum amount of five thousand rupees.</p> <p>(2) Any registered person who fails to furnish the return required under section 44 by the due date shall be liable to pay a late fee of one hundred rupees for every day during which such failure continues subject to a maximum of an amount calculated at a quarter per cent. of his turnover in the State.</p> <p>48. (1) The manner of approval of goods and services tax practitioners, their eligibility conditions, duties and obligations, manner of removal and other conditions relevant for their functioning shall be such as may be prescribed.</p> <p>(2) A registered person may authorise an approved goods and services tax practitioner to furnish the details of outward supplies under section 37, the details of inward supplies under section 38 and the return under section 39 or section 44 or section 45 in such manner as may be prescribed.</p> <p>(3) Notwithstanding anything contained in sub-section (2), the responsibility for correctness of any particulars furnished in the return or other details filed by the goods and services tax practitioners shall continue to rest with the registered person on whose behalf such return and details are furnished.</p> | <p>Notice to return defaulters.</p> <p>Levy of late fee.</p> <p>Goods and services tax practitioners.</p> |
|--|---|

CHAPTER-X PAYMENT OF TAX

- | | |
|--|---|
| <p>(1) (1) Every deposit made towards tax, interest, penalty, fee or any other amount by a person by internet banking or by using credit or debit cards or National Electronic Fund Transfer or Real Time Gross Settlement or by such other mode and subject to such conditions and restrictions as may be prescribed, shall be credited to the electronic cash ledger of such person to be maintained in such manner as may be prescribed.</p> <p>(2) The input tax credit as self-assessed in the return of a registered person shall be credited to his electronic credit ledger, in accordance with section 41, to be maintained in such manner as may be prescribed.</p> <p>(3) The amount available in the electronic cash ledger may be used for making any payment towards tax, interest, penalty, fees or any other amount payable under the provisions of this Act or the rules made thereunder in such manner and subject to such conditions and within such time as may be prescribed.</p> <p>(4) The amount available in the electronic credit ledger may be used for making any payment towards output tax under this Act or under the Integrated Goods and Services Tax Act in such manner and subject to such conditions and within such time as may be prescribed.</p> <p>(5) The amount of input tax credit available in the electronic credit ledger of the registered person on account of —</p> | <p>Payment of tax, interest, penalty and other amounts.</p> |
|--|---|

- (a) integrated tax shall first be utilised towards payment of integrated tax and the amount remaining, if any, may be utilised towards the payment of central tax and State tax, or as the case may be, Union territory tax, in that order;
 - (b) the central tax shall first be utilised towards payment of central tax and the amount remaining, if any, may be utilised towards the payment of integrated tax;
 - (c) the State tax shall first be utilised towards payment of State tax and the amount remaining, if any, may be utilised towards the payment of integrated tax;
 - (d) the Union territory tax shall first be utilised towards payment of Union territory tax and the amount remaining, if any, may be utilised towards the payment of integrated tax;
 - (e) the central tax shall not be utilised towards payment of State tax or Union territory tax; and
 - (f) the State tax or Union territory tax shall not be utilised towards payment of central tax.
- (6) The balance in the electronic cash ledger or electronic credit ledger after payment of tax, interest, penalty, fee or any other amount payable under this Act or the rules made thereunder may be refunded in accordance with the provisions of section 54.
- (7) All liabilities of a taxable person under this Act shall be recorded and maintained in an electronic liability register in such manner as may be prescribed.
- (8) Every taxable person shall discharge his tax and other dues under this Act or the rules made thereunder in the following order, namely:—
- (a) self-assessed tax, and other dues related to returns of previous tax periods;
 - (b) self-assessed tax, and other dues related to the return of the current tax period;
 - (c) any other amount payable under this Act or the rules made thereunder including the demand determined under section 73 or section 74.
- (9) Every person who has paid the tax on goods or services or both under this Act shall, unless the contrary is proved by him, be deemed to have passed on the full incidence of such tax to the recipient of such goods or services or both.

Explanation.—For the purposes of this section,

- (a) the date of credit to the account of the Government in the authorised bank shall be deemed to be the date of deposit in the electronic cash ledger;
 - (b) the expression,-
 - (i) “tax dues” means the tax payable under this Act and does not include interest, fee and penalty; and
 - (ii) “other dues” means interest, penalty, fee or any other amount payable under this Act or the rules made thereunder.
- (50) (1) Every person who is liable to pay tax in accordance with the provisions of this Act or the rules made thereunder, but fails to pay the tax or any part thereof to the Government within the period prescribed, shall for the period for which the tax or any part thereof remains unpaid, pay, on his own, interest at such rate, not exceeding eighteen per cent., as may be notified by the Government on the recommendations of the Council.

Interest on
delayed payment
of tax.

- (2) The interest under sub-section (1) shall be calculated, in such manner as may be prescribed, from the day succeeding the day on which such tax was due to be paid.
- (3) A taxable person who makes an undue or excess claim of input tax credit under sub-section (10) of section 42 or undue or excess reduction in output tax liability under sub-section (10) of section 43, shall pay interest on such undue or excess claim or on such undue or excess reduction, as the case may be, at such rate not exceeding twenty-four per cent., as may be notified by the Government on the recommendations of the Council.
- (51) (1) Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act, the Government may mandate,-
- (a) a department or establishment of the Central Government or State Government; or
 - (b) local authority; or
 - (c) Governmental agencies; or
 - (d) such persons or category of persons as may be notified by the Government on the recommendations of the Council,

Tax deduction at source.

(hereafter in this section referred to as “the deductor”), to deduct tax at the rate of one per cent. from the payment made or credited to the supplier (hereafter in this section referred to as “the deductee”) of taxable goods or services or both, where the total value of such supply, under a contract, exceeds two lakh and fifty thousand rupees:

Provided that no deduction shall be made if the location of the supplier and the place of supply is in a State or Union territory which is different from the State or, as the case may be, Union territory of registration of the recipient.

Explanation.—For the purpose of deduction of tax specified above, the value of supply shall be taken as the amount excluding the central tax, State tax, integrated tax and cess indicated in the invoice.

- (2) The amount deducted as tax under this section shall be paid to the Government by the deductor within ten days after the end of the month in which such deduction is made, in such manner as may be prescribed.
- (3) The deductor shall furnish to the deductee a certificate mentioning therein the contract value, rate of deduction, amount deducted, amount paid to the Government and such other particulars in such manner as may be prescribed.
- (4) If any deductor fails to furnish to the deductee the certificate, after deducting the tax at source, within five days of crediting the amount so deducted to the Government, the deductor shall pay, by way of a late fee, a sum of one hundred rupees per day from the day after the expiry of such five day period until the failure is rectified, subject to a maximum amount of five thousand rupees.
- (5) The deductee shall claim credit, in his electronic cash ledger, of the tax deducted and reflected in the return of the deductor furnished under sub-section (3) of section 39, in such manner as may be prescribed.
- (6) If any deductor fails to pay to the Government the amount deducted as tax under sub-section (1), he shall pay interest in accordance with the provisions of sub-section (1) of section 50, in addition to the amount of tax deducted.
- (7) The determination of the amount in default under this section shall be made in the manner specified in section 73 or section 74.
- (8) The refund to the deductor or the deductee arising on account of excess or erroneous deduction shall be dealt with in accordance with the provisions of section 54:

Provided that no refund to the deductor shall be granted, if the amount deducted has been credited to the electronic cash ledger of the deductee.

- (52) (1) Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act, every electronic commerce operator (hereafter in this section referred to as the "operator"), not being an agent, shall collect an amount calculated at such rate not exceeding one per cent., as may be notified by the Government on the recommendations of the Council, of the net value of taxable supplies made through it by other suppliers where the consideration with respect to such supplies is to be collected by the operator.

Collection of tax
at source.

Explanation.—For the purposes of this sub-section, the expression "net value of taxable supplies" shall mean the aggregate value of taxable supplies of goods or services or both, other than services notified under sub-section (5) of section 9, made during any month by all registered persons through the operator reduced by the aggregate value of taxable supplies returned to the suppliers during the said month.

- (2) The power to collect the amount specified in sub-section (1) shall be without prejudice to any other mode of recovery from the operator.
- (3) The amount collected under sub-section (1) shall be paid to the Government by the operator within ten days after the end of the month in which such collection is made, in such manner as may be prescribed.
- (4) Every operator who collects the amount specified in sub-section (1) shall furnish a statement, electronically, containing the details of outward supplies of goods or services or both effected through it, including the supplies of goods or services or both returned through it, and the amount collected under sub-section (1) during a month, in such form and manner as may be prescribed, within ten days after the end of such month.
- (5) Every operator who collects the amount specified in sub-section (1) shall furnish an annual statement, electronically, containing the details of outward supplies of goods or services or both effected through it, including the supplies of goods or services or both returned through it, and the amount collected under the said sub-section during the financial year, in such form and manner as may be prescribed, before the thirty first day of December following the end of such financial year.
- (6) If any operator after furnishing a statement under sub-section (4) discovers any omission or incorrect particulars therein, other than as a result of scrutiny, audit, inspection or enforcement activity by the tax authorities, he shall rectify such omission or incorrect particulars in the statement to be furnished for the month during which such omission or incorrect particulars are noticed, subject to payment of interest, as specified in sub-section (1) of section 50:

Provided that no such rectification of any omission or incorrect particulars shall be allowed after the due date for furnishing of statement for the month of September following the end of the financial year or the actual date of furnishing of the relevant annual statement, whichever is earlier.

- (7) The supplier who has supplied the goods or services or both through the operator shall claim credit, in his electronic cash ledger, of the amount collected and reflected in the statement of the operator furnished under sub-section (4), in such manner as may be prescribed.
- (8) The details of supplies furnished by every operator under sub-section (4) shall be matched with the corresponding details of outward supplies furnished by the concerned supplier registered under this Act in such manner and within such time as may be prescribed.
- (9) Where the details of outward supplies furnished by the operator under sub-section (4) do not match with the corresponding details furnished by the supplier under section 37, the discrepancy shall be communicated to both persons in such manner and within such time as may be prescribed.
- (10) The amount in respect of which any discrepancy is communicated under sub-section (9) and which is not rectified by the supplier in his valid return or the operator in his statement for the month in which discrepancy is communicated, shall be added to the output tax liability of the said supplier, where the value of outward supplies furnished by the operator is

more than the value of outward supplies furnished by the supplier, in his return for the month succeeding the month in which the discrepancy is communicated in such manner as may be prescribed.

- (11) The concerned supplier, in whose output tax liability any amount has been added under sub-section (10), shall pay the tax payable in respect of such supply along with interest, at the rate specified under sub-section (1) of section 50 on the amount so added from the date such tax was due till the date of its payment.
- (12) Any authority not below the rank of Deputy Commissioner may serve a notice, either before or during the course of any proceedings under this Act, requiring the operator to furnish such details relating to—
- (a) supplies of goods or services or both effected through such operator during any period; or
- (b) stock of goods held by the suppliers making supplies through such operator in the godowns or warehouses, by whatever name called, managed by such operator and declared as additional places of business by such suppliers,
- as may be specified in the notice.
- (13) Every operator on whom a notice has been served under sub-section (12) shall furnish the required information within fifteen working days of the date of service of such notice.
- (14) Any person who fails to furnish the information required by the notice served under sub-section (12) shall, without prejudice to any action that may be taken under section 122, be liable to a penalty which may extend to twenty-five thousand rupees.

Explanation.—For the purposes of this section, the expression “concerned supplier” shall mean the supplier of goods or services or both making supplies through the operator.

- (53) On utilisation of input tax credit availed under this Act for payment of tax dues under the Integrated Goods and Services Tax Act in accordance with the provisions of sub-section (5) of section 49, as reflected in the valid return furnished under sub-section (1) of section 39, the amount collected as *State* tax shall stand reduced by an amount equal to such credit so utilised and the *State* Government shall transfer an amount equal to the amount so reduced from the *State* tax account to the integrated tax account in such manner and within such time as may be prescribed.

Transfer of input tax credit.

CHAPTER XI

REFUNDS

- (2) (1) Any person claiming refund of any tax and interest, if any, paid on such tax or any other amount paid by him, may make an application before the expiry of two years from the relevant date in such form and manner as may be prescribed:

Refund of tax.

Provided that a registered person, claiming refund of any balance in the electronic cash ledger in accordance with the provisions of sub-section (6) of section 49, may claim such refund in the return furnished under section 39 in such manner as may be prescribed.

- (2) A specialized agency of the United Nations Organization or any Multilateral Financial Institution and Organization notified under the United Nations (Privileges and Immunities) Act, 1947, Consulate or Embassy of foreign countries or any other person or class of persons, as notified under section 55, entitled to a refund of tax paid by it on inward supplies of goods or services or both, may make an application for such refund, in such form and manner as may be prescribed, before the expiry of six months from the last day of the quarter in which such supply was received.

Subject to the provisions of sub-section (10), a registered person may claim refund of any unutilised input tax credit at the end of any tax period:

Provided that no refund of unutilised input tax credit shall be allowed in cases other than-

- (i) zero-rated supplies made without payment of tax;
- (ii) where the credit has accumulated on account of rate of tax on inputs being higher than the rate of tax on output supplies (other than nil rated or fully exempt supplies), except supplies of goods or services or both as may be notified by the Government on the recommendations of the Council:

Provided further that no refund of unutilised input tax credit shall be allowed in cases where the goods exported out of India are subjected to export duty:

Provided also that no refund of input tax credit shall be allowed, if the supplier of goods or services or both claims refund of the integrated tax paid on such supplies.

The application shall be accompanied by—

- (a) such documentary evidence as may be prescribed to establish that a refund is due to the applicant; and
- (b) such documentary or other evidence (including the documents referred to in section 33) as the applicant may furnish to establish that the amount of tax and interest, if any, paid on such tax or any other amount paid in relation to which such refund is claimed was collected from, or paid by, him and the incidence of such tax and interest had not been passed on to any other person:

Provided that where the amount claimed as refund is less than two lakh rupees, it shall not be necessary for the applicant to furnish any documentary and other evidences but he may file a declaration, based on the documentary or other evidences available with him, certifying that the incidence of such tax and interest had not been passed on to any other person.

- (5) If, on receipt of any such application, the proper officer is satisfied that the whole or part of the amount claimed as refund is refundable, he may make an order accordingly and the amount so determined shall be credited to the Fund referred to in section 57.
- (6) Notwithstanding anything contained in sub-section (5), the proper officer may, in the case of any claim for refund on account of zero-rated supply of goods or services or both made by registered persons, other than such category of registered persons as may be notified by the Government on the recommendations of the Council, refund on a provisional basis, ninety per cent. of the total amount so claimed, excluding the amount of input tax credit provisionally accepted, in such manner and subject to such conditions, limitations and safeguards as may be prescribed and thereafter make an order under sub-section (5) for final settlement of the refund claim after due verification of documents furnished by the applicant.
- (7) The proper officer shall issue the order under sub-section (5) within sixty days from the date of receipt of application complete in all respects.
- (8) Notwithstanding anything contained in sub-section (5), the refundable amount shall, instead of being credited to the Fund, be paid to the applicant, if such amount is relatable to –
 - (a) refund of tax paid on zero-rated supplies of goods or services or both or on inputs or input services used in making such zero-rated supplies;
 - (b) refund of unutilised input tax credit under sub-section (3);
 - (c) refund of tax paid on a supply which is not provided, either wholly or partially, and for which invoice has not been issued, or where a refund voucher has been issued;
 - (d) refund of tax in pursuance of section 77;
 - (e) the tax and interest, if any, or any other amount paid by the applicant, if he had not passed on the incidence of such tax and interest to any other person; or

- (f) the tax or interest borne by such other class of applicants as the Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify.
- (9) Notwithstanding anything to the contrary contained in any judgment, decree, order or direction of the Appellate Tribunal or any court or in any other provisions of this Act or the rules made thereunder or in any other law for the time being in force, no refund shall be made except in accordance with the provisions of sub-section (8).
- (10) Where any refund is due under sub-section (3) to a registered person who has defaulted in furnishing any return or who is required to pay any tax, interest or penalty, which has not been stayed by any court, Tribunal or Appellate Authority by the specified date, the proper officer may—
 - (a) withhold payment of refund due until the said person has furnished the return or paid the tax, interest or penalty, as the case may be;
 - (b) deduct from the refund due, any tax, interest, penalty, fee or any other amount which the taxable person is liable to pay but which remains unpaid under this Act or under the existing law.

Explanation.—For the purposes of this sub-section, the expression “specified date” shall mean the last date for filing an appeal under this Act.

- (11) Where an order giving rise to a refund is the subject matter of an appeal or further proceedings or where any other proceedings under this Act is pending and the Commissioner is of the opinion that grant of such refund is likely to adversely affect the revenue in the said appeal or other proceedings on account of malfeasance or fraud committed, he may, after giving the taxable person an opportunity of being heard, withhold the refund till such time as he may determine.
- (12) Where a refund is withheld under sub-section (11), the taxable person shall, notwithstanding anything contained in section 56, be entitled to interest at such rate not exceeding six per cent. as may be notified on the recommendations of the Council, if as a result of the appeal or further proceedings he becomes entitled to refund.
- (13) Notwithstanding anything to the contrary contained in this section, the amount of advance tax deposited by a casual taxable person or a non-resident taxable person under sub-section (2) of section 27, shall not be refunded unless such person has, in respect of the entire period for which the certificate of registration granted to him had remained in force, furnished all the returns required under section 39.
- (14) Notwithstanding anything contained in this section, no refund under sub-section (5) or sub-section (6) shall be paid to an applicant, if the amount is less than one thousand rupees.

Explanation.—For the purposes of this section,—

(1) “refund” includes refund of tax paid on zero-rated supplies of goods or services or both or on inputs or input services used in making such zero-rated supplies, or refund of tax on the supply of goods regarded as deemed exports, or refund of unutilised input tax credit as provided under sub-section (3).

(2) “relevant date” means –

(a) in the case of goods exported out of India where a refund of tax paid is available in respect of goods themselves or, as the case may be, the inputs or input services used in such goods,—

(i) if the goods are exported by sea or air, the date on which the ship or the aircraft in which such goods are loaded, leaves India; or

(ii) if the goods are exported by land, the date on which such goods pass the frontier; or

(iii) if the goods are exported by post, the date of despatch of goods by the Post Office concerned to a place outside India;

(b) in the case of supply of goods regarded as deemed exports where a refund of tax paid is available in respect of the goods, the date on which the return relating to such deemed exports is furnished;

(c) in the case of services exported out of India where a refund of tax paid is available in respect of services themselves or, as the case may be, the inputs or input services used in such services, the date of—

(i) receipt of payment in convertible foreign exchange, where the supply of services had been completed prior to the receipt of such payment; or

(ii) issue of invoice, where payment for the services had been received in advance prior to the date of issue of the invoice;

(d) in case where the tax becomes refundable as a consequence of judgment, decree, order or direction of the Appellate Authority, Appellate Tribunal or any court, the date of communication of such judgment, decree, order or direction;

(e) in the case of refund of unutilised input tax credit under sub-section (3), the end of the financial year in which such claim for refund arises;

(f) in the case where tax is paid provisionally under this Act or the rules made thereunder, the date of adjustment of tax after the final assessment thereof;

(g) in the case of a person, other than the supplier, the date of receipt of goods or services or both by such person; and

(h) in any other case, the date of payment of tax.

46 of 1947.

- (7) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify any specialized agency of the United Nations Organization or any Multilateral Financial Institution and Organization notified under the United Nations (Privileges and Immunities) Act, 1947, Consulate or Embassy of foreign countries and any other person or class of persons as may be specified in this behalf, who shall, subject to such conditions and restrictions as may be prescribed, be entitled to claim a refund of taxes paid on the notified supplies of goods or services or both received by them.

Refund in certain cases.

- (8) If any tax ordered to be refunded under sub-section (5) of section 54 to any applicant is not refunded within sixty days from the date of receipt of application under sub-section (1) of that section, interest at such rate not exceeding six per cent. as may be specified in the notification issued by the Government on the recommendations of the Council shall be payable in respect of such refund from the date immediately after the expiry of sixty days from the date of receipt of application under the said sub-section till the date of refund of such tax:

Interest on delayed refunds.

Provided that where any claim of refund arises from an order passed by an adjudicating authority or Appellate Authority or Appellate Tribunal or court which has attained finality and the same is not refunded within sixty days from the date of receipt of application filed consequent to such order, interest at such rate not exceeding nine per cent. as may be notified by the Government on the recommendations of the Council shall be payable in respect of such refund from the date immediately after the expiry of sixty days from the date of receipt of application till the date of refund.

Explanation.—For the purposes of this section, where any order of refund is made by an Appellate Authority, Appellate Tribunal or any court against an order of the proper officer under sub-section (5) of section 54, the order passed by the Appellate Authority, Appellate Tribunal or by the court shall be deemed to be an order passed under the said sub-section (5).

- (57) The Government shall constitute a Fund, to be called the Consumer Welfare Fund and there shall be credited to the Fund,—

Consumer Welfare Fund.

(a) the amount referred to in sub-section (5) of section 54;

(b) any income from investment of the amount credited to the Fund; and

(c) such other monies received by it,

in such manner as may be prescribed.

(58) (1) All sums credited to the Fund shall be utilised by the Government for the welfare of the consumers in such manner as may be prescribed.

Utilisation of Fund.

(2) The Government or the authority specified by it shall maintain proper and separate account and other relevant records in relation to the Fund and prepare an annual statement of accounts in such form as may be prescribed in consultation with the Comptroller and Auditor General of India.

CHAPTER— XII

ASSESSMENT

(59) Every registered person shall self-assess the taxes payable under this Act and furnish a return for each tax period as specified under section 39.

Self-assessment.

(60) (1) Subject to the provisions of sub-section (2), where the taxable person is unable to determine the value of goods or services or both or determine the rate of tax applicable thereto, he may request the proper officer in writing giving reasons for payment of tax on a provisional basis and the proper officer shall pass an order, within a period not later than ninety days from the date of receipt of such request, allowing payment of tax on provisional basis at such rate or on such value as may be specified by him.

Provisional assessment.

(2) The payment of tax on provisional basis may be allowed, if the taxable person executes a bond in such form as may be prescribed, and with such surety or security as the proper officer may deem fit, binding the taxable person for payment of the difference between the amount of tax as may be finally assessed and the amount of tax provisionally assessed.

(3) The proper officer shall, within a period not exceeding six months from the date of the communication of the order issued under sub-section (1), pass the final assessment order after taking into account such information as may be required for finalizing the assessment:

Provided that the period specified in this sub-section may, on sufficient cause being shown and for reasons to be recorded in writing, be extended by the Joint Commissioner or Additional Commissioner for a further period not exceeding six months and by the Commissioner for such further period not exceeding four years.

(4) The registered person shall be liable to pay interest on any tax payable on the supply of goods or services or both under provisional assessment but not paid on the due date specified under sub-section (7) of section 39 or the rules made thereunder, at the rate specified under sub-section (1) of section 50, from the first day after the due date of payment of tax in respect of the said supply of goods or services or both till the date of actual payment, whether such amount is paid before or after the issuance of order for final assessment.

(5) Where the registered person is entitled to a refund consequent to the order of final assessment under sub-section (3), subject to the provisions of sub-section (8) of section 54, interest shall be paid on such refund as provided in section 56.

(61)(1) The proper officer may scrutinize the return and related particulars furnished by the registered person to verify the correctness of the return and inform him of the discrepancies noticed, if any, in such manner as may be prescribed and seek his explanation thereto.

Scrutiny of returns.

(2) In case the explanation is found acceptable, the registered person shall be informed accordingly and no further action shall be taken in this regard.

(3) In case no satisfactory explanation is furnished within a period of thirty days of being informed by the proper officer or such further period as may

be permitted by him or where the registered person, after accepting the discrepancies, fails to take the corrective measure in his return for the month in which the discrepancy is accepted, the proper officer may initiate appropriate action including those under section 65 or section 66 or section 67, or proceed to determine the tax and other dues under section 73 or section 74.

- (62)(1) Notwithstanding anything to the contrary contained in section 73 or section 74, where a registered person fails to furnish the return under section 39 or section 45, even after the service of a notice under section 46, the proper officer may proceed to assess the tax liability of the said person to the best of his judgement taking into account all the relevant material which is available or which he has gathered and issue an assessment order within a period of five years from the date specified under section 44 for furnishing of the annual return for the financial year to which the tax not paid relates.

Assessment of non-filers of returns.

- (2) Where the registered person furnishes a valid return within thirty days of the service of the assessment order under sub-section (1), the said assessment order shall be deemed to have been withdrawn but the liability for payment of interest under sub-section (1) of section 50 or for payment of late fee under section 47 shall continue.

- (63) Notwithstanding anything to the contrary contained in section 73 or section 74, where a taxable person fails to obtain registration even though liable to do so or whose registration has been cancelled under sub-section (2) of section 29 but who was liable to pay tax, the proper officer may proceed to assess the tax liability of such taxable person to the best of his judgement for the relevant tax periods and issue an assessment order within a period of five years from the date specified under section 44 for furnishing of the annual return for the financial year to which the tax not paid relates:

Assessment of unregistered persons.

Provided that no such assessment order shall be passed without giving the person an opportunity of being heard.

- (64) (1) The proper officer may, on any evidence showing a tax liability of a person coming to his notice, with the previous permission of Additional Commissioner or Joint Commissioner, proceed to assess the tax liability of such person to protect the interest of revenue and issue an assessment order, if he has sufficient grounds to believe that any delay in doing so may adversely affect the interest of revenue:

Summary assessment in certain special cases.

Provided that where the taxable person to whom the liability pertains is not ascertainable and such liability pertains to supply of goods, the person in charge of such goods shall be deemed to be the taxable person liable to be assessed and liable to pay tax and any other amount due under this section.

- (2) On an application made by the taxable person within thirty days from the date of receipt of order passed under sub-section (1) or on his own motion, if the Additional Commissioner or Joint Commissioner considers that such order is erroneous, he may withdraw such order and follow the procedure laid down in section 73 or section 74.

CHAPTER XIII

AUDIT

- (65)(1) The Commissioner or any officer authorised by him, by way of a general or a specific order, may undertake audit of any registered person for such period, at such frequency and in such manner as may be prescribed.
- (2) The officers referred to in sub-section (1) may conduct audit at the place of business of the registered person or in their office.
- (3) The registered person shall be informed by way of a notice not less than fifteen working days prior to the conduct of audit in such manner as may be prescribed.
- (4) The audit under sub-section (1) shall be completed within a period of three

Audit by tax authorities.

months from the date of commencement of the audit:

Provided that where the Commissioner is satisfied that audit in respect of such registered person cannot be completed within three months, he may, for the reasons to be recorded in writing, extend the period by a further period not exceeding six months.

Explanation.—For the purposes of this sub-section, the expression “commencement of audit” shall mean the date on which the records and other documents, called for by the tax authorities, are made available by the registered person or the actual institution of audit at the place of business, whichever is later.

(5) During the course of audit, the authorised officer may require the registered person,—

(i) to afford him the necessary facility to verify the books of account or other documents as he may require;

(ii) to furnish such information as he may require and render assistance for timely completion of the audit.

(6) On conclusion of audit, the proper officer shall, within thirty days, inform the registered person, whose records are audited, about the findings, his rights and obligations and the reasons for such findings.

(7) Where the audit conducted under sub-section (1) results in detection of tax not paid or short paid or erroneously refunded, or input tax credit wrongly availed or utilised, the proper officer may initiate action under section 73 or section 74.

(66)(1) If at any stage of scrutiny, inquiry, investigation or any other proceedings before him, any officer not below the rank of Assistant Commissioner, having regard to the nature and complexity of the case and the interest of revenue, is of the opinion that the value has not been correctly declared or the credit availed is not within the normal limits, he may, with the prior approval of the Commissioner, direct such registered person by a communication in writing to get his records including books of account examined and audited by a chartered accountant or a cost accountant as may be nominated by the Commissioner.

Special audit.

(2) The chartered accountant or cost accountant so nominated shall, within the period of ninety days, submit a report of such audit duly signed and certified by him to the said Assistant Commissioner mentioning therein such other particulars as may be specified:

Provided that the Assistant Commissioner may, on an application made to him in this behalf by the registered person or the chartered accountant or cost accountant or for any material and sufficient reason, extend the said period by a further period of ninety days.

(3) The provisions of sub-section (1) shall have effect notwithstanding that the accounts of the registered person have been audited under any other provisions of this Act or any other law for the time being in force.

(4) The registered person shall be given an opportunity of being heard in respect of any material gathered on the basis of special audit under sub-section (1) which is proposed to be used in any proceedings against him under this Act or the rules made thereunder.

(5) The expenses of the examination and audit of records under sub-section (1), including the remuneration of such chartered accountant or cost accountant, shall be determined and paid by the Commissioner and such determination shall be final.

(6) Where the special audit conducted under sub-section (1) results in detection of tax not paid or short paid or erroneously refunded, or input tax credit wrongly availed or utilised, the proper officer may initiate action under section 73 or section 74.

CHAPTER XIV

INSPECTION, SEARCH, SEIZURE AND ARREST

- (67)(1) Where the proper officer, not below the rank of Joint Commissioner, has reasons to believe that—

Power of inspection, search and seizure.

(a) a taxable person has suppressed any transaction relating to supply of goods or services or both or the stock of goods in hand, or has claimed input tax credit in excess of his entitlement under this Act or has indulged in contravention of any of the provisions of this Act or the rules made thereunder to evade tax under this Act; or

(b) any person engaged in the business of transporting goods or an owner or operator of a warehouse or a godown or any other place is keeping goods which have escaped payment of tax or has kept his accounts or goods in such a manner as is likely to cause evasion of tax payable under this Act,

he may authorise in writing any other officer of *State* tax to inspect any places of business of the taxable person or the persons engaged in the business of transporting goods or the owner or the operator of warehouse or godown or any other place.

- (2) Where the proper officer, not below the rank of Joint Commissioner, either pursuant to an inspection carried out under sub-section (1) or otherwise, has reasons to believe that any goods liable to confiscation or any documents or books or things, which in his opinion shall be useful for or relevant to any proceedings under this Act, are secreted in any place, he may authorise in writing any other officer of State tax to search and seize or may himself search and seize such goods, documents or books or things:

Provided that where it is not practicable to seize any such goods, the proper officer, or any officer authorised by him, may serve on the owner or the custodian of the goods an order that he shall not remove, part with, or otherwise deal with the goods except with the previous permission of such officer:

Provided further that the documents or books or things so seized shall be retained by such officer only for so long as may be necessary for their examination and for any inquiry or proceedings under this Act.

- (3) The documents, books or things referred to in sub-section (2) or any other documents, books or things produced by a taxable person or any other person, which have not been relied upon for the issue of notice under this Act or the rules made thereunder, shall be returned to such person within a period not exceeding thirty days of the issue of the said notice.
- (4) The officer authorised under sub-section (2) shall have the power to seal or break open the door of any premises or to break open any *almirah*, electronic devices, box, receptacle in which any goods, accounts, registers or documents of the person are suspected to be concealed, where access to such premises, *almirah*, electronic devices, box or receptacle is denied.
- (5) The person from whose custody any documents are seized under sub-section (2) shall be entitled to make copies thereof or take extracts therefrom in the presence of an authorised officer at such place and time as such officer may indicate in this behalf except where making such copies or taking such extracts may, in the opinion of the proper officer, prejudicially affect the investigation.
- (6) The goods so seized under sub-section (2) shall be released, on a provisional basis, upon execution of a bond and furnishing of a security, in such manner and of such quantum, respectively, as may be prescribed or on payment of applicable tax, interest and penalty payable, as the case may be.
- (7) Where any goods are seized under sub-section (2) and no notice in respect thereof is given within six months of the seizure of the goods, the goods shall be returned to the person from whose possession they were seized:

Provided that the period of six months may, on sufficient cause being shown, be extended by the proper officer for a further period not exceeding six months.

- (8) The Government may, having regard to the perishable or hazardous nature of any goods, depreciation in the value of the goods with the passage of time, constraints of storage space for the goods or any other relevant considerations, by notification, specify the goods or class of goods which shall, as soon as may be after its seizure under sub-section (2), be disposed of by the proper officer in such manner as may be prescribed.
- (9) Where any goods, being goods specified under sub-section (8), have been seized by a proper officer, or any officer authorised by him under sub-section (2), he shall prepare an inventory of such goods in such manner as may be prescribed.

2 of 1974.

- (10) The provisions of the Code of Criminal Procedure, 1973, relating to search and seizure, shall, so far as may be, apply to search and seizure under this section subject to the modification that sub-section (5) of section 165 of the said Code shall have effect as if for the word "Magistrate", wherever it occurs, the word "Commissioner" were substituted.
- (11) Where the proper officer has reasons to believe that any person has evaded or is attempting to evade the payment of any tax, he may, for reasons to be recorded in writing, seize the accounts, registers or documents of such person produced before him and shall grant a receipt for the same, and shall retain the same for so long as may be necessary in connection with any proceedings under this Act or the rules made thereunder for prosecution.
- (12) The Commissioner or an officer authorised by him may cause purchase of any goods or services or both by any person authorised by him from the business premises of any taxable person, to check the issue of tax invoices or bills of supply by such taxable person, and on return of goods so purchased by such officer, such taxable person or any person in charge of the business premises shall refund the amount so paid towards the goods after cancelling any tax invoice or bill of supply issued earlier.

- (68) (1) The Government may require the person in charge of a conveyance carrying any consignment of goods of value exceeding such amount as may be specified to carry with him such documents and such devices as may be prescribed.

Inspection of goods in movement.

- (2) The details of documents required to be carried under sub-section (1) shall be validated in such manner as may be prescribed.
- (3) Where any conveyance referred to in sub-section (1) is intercepted by the proper officer at any place, he may require the person in charge of the said conveyance to produce the documents prescribed under the said sub-section and devices for verification, and the said person shall be liable to produce the documents and devices and also allow the inspection of goods.

- (69) (1) Where the Commissioner has reasons to believe that a person has committed any offence specified in clause (a) or clause (b) or clause (c) or clause (d) of sub-section (1) of section 132 which is punishable under clause (i) or (ii) of sub-section (1), or sub-section (2) of the said section, he may, by order, authorise any officer of State tax to arrest such person.

Power to arrest.

- (2) Where a person is arrested under sub-section (1) for an offence specified under sub-section (5) of section 132, the officer authorised to arrest the person shall inform such person of the grounds of arrest and produce him before a Magistrate within twenty four hours.

(3) Subject to the provisions of the Code of Criminal Procedure, 1973,--

(a) where a person is arrested under sub-section (1) for any offence specified under sub-section (4) of section 132, he shall be admitted to bail or in default of bail, forwarded to the custody of the Magistrate;

- 2 of 1974. (b) in the case of a non-cognizable and bailable offence, the Deputy Commissioner or the Assistant Commissioner shall, for the purpose of releasing an arrested person on bail or otherwise, have the same powers and be subject to the same provisions as an officer-in-charge of a police station
- 5 of 1908 (70) (1) The proper officer under this Act shall have power to summon any person whose attendance he considers necessary either to give evidence or to produce a document or any other thing in any inquiry in the same manner, as provided in the case of a civil court under the provisions of the Code of Civil Procedure, 1908. Power to summon persons to give evidence and produce documents.
- 45 of 1860. (2) Every such inquiry referred to in sub-section (1) shall be deemed to be a "judicial proceedings" within the meaning of section 193 and section 228 of the Indian Penal Code.
- (71) (1) Any officer under this Act, authorised by the proper officer not below the rank of Joint Commissioner, shall have access to any place of business of a registered person to inspect books of account, documents, computers, computer programs, computer software whether installed in a computer or otherwise and such other things as he may require and which may be available at such place, for the purposes of carrying out any audit, scrutiny, verification and checks as may be necessary to safeguard the interest of revenue. Access to business premises.
- (2) Every person in charge of place referred to in sub-section (1) shall, on demand, make available to the officer authorised under sub-section (1) or the audit party deputed by the proper officer or a cost accountant or chartered accountant nominated under section 66—
- (i) such records as prepared or maintained by the registered person and declared to the proper officer in such manner as may be prescribed;
- (ii) trial balance or its equivalent;
- (iii) statements of annual financial accounts, duly audited, wherever required;
- 18 of 2013. (iv) cost audit report, if any, under section 148 of the Companies Act, 2013;
- (v) the income-tax audit report, if any, under section 44AB of the Income-tax Act, 1961; and
- 43 of 1961. (vi) any other relevant record,
- for the scrutiny by the officer or audit party or the chartered accountant or cost accountant within a period not exceeding fifteen working days from the day when such demand is made, or such further period as may be allowed by the said officer or the audit party or the chartered accountant or cost accountant.
- (72) (1) All officers of Police, Railways, Customs, and those officers engaged in the collection of land revenue, including village officers, officers of *central* tax and officers of the Union territory tax shall assist the proper officers in the implementation of this Act. Officers to assist proper officers.
- (2) The Government may, by notification, empower and require any other class of officers to assist the proper officers in the implementation of this Act when called upon to do so by the Commissioner.

CHAPTER XV

DEMANDS AND RECOVERY

- (73)(1) Where it appears to the proper officer that any tax has not been paid or short paid or erroneously refunded, or where input tax credit has been wrongly availed or utilised for any reason, other than the reason of fraud or any wilful misstatement or suppression of facts to evade tax, he shall serve notice on the person chargeable with tax which has not been so paid or which has been so short paid or to whom the refund has erroneously been made, or who has wrongly availed or utilised input tax credit, requiring him
- Determination of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed

to show cause as to why he should not pay the amount specified in the notice along with interest payable thereon under section 50 and a penalty leviable under the provisions of this Act or the rules made thereunder.

or utilised for any reason other than fraud or any wilful misstatement or suppression of facts.

- (2) The proper officer shall issue the notice under sub-section (1) at least three months prior to the time limit specified in sub-section (10) for issuance of order.
- (3) Where a notice has been issued for any period under sub-section (1), the proper officer may serve a statement, containing the details of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised for such periods other than those covered under sub-section (1), on the person chargeable with tax.
- (4) The service of such statement shall be deemed to be service of notice on such person under sub-section (1), subject to the condition that the grounds relied upon for such tax periods other than those covered under sub-section (1) are the same as are mentioned in the earlier notice.
- (5) The person chargeable with tax may, before service of notice under sub-section (1) or, as the case may be, the statement under sub-section (3), pay the amount of tax along with interest payable thereon under section 50 on the basis of his own ascertainment of such tax or the tax as ascertained by the proper officer and inform the proper officer in writing of such payment.
- (6) The proper officer, on receipt of such information, shall not serve any notice under sub-section (1) or, as the case may be, the statement under sub-section (3), in respect of the tax so paid or any penalty payable under the provisions of this Act or the rules made thereunder.
- (7) Where the proper officer is of the opinion that the amount paid under sub-section (5) falls short of the amount actually payable, he shall proceed to issue the notice as provided for in sub-section (1) in respect of such amount which falls short of the amount actually payable.
- (8) Where any person chargeable with tax under sub-section (1) or sub-section (3) pays the said tax along with interest payable under section 50 within thirty days of issue of show cause notice, no penalty shall be payable and all proceedings in respect of the said notice shall be deemed to be concluded.
- (9) The proper officer shall, after considering the representation, if any, made by person chargeable with tax, determine the amount of tax, interest and a penalty equivalent to ten per cent. of tax or ten thousand rupees, whichever is higher, due from such person and issue an order.
- (10) The proper officer shall issue the order under sub-section (9) within three years from the due date for furnishing of annual return for the financial year to which the tax not paid or short paid or input tax credit wrongly availed or utilised relates to or within three years from the date of erroneous refund.
- (11) Notwithstanding anything contained in sub-section (6) or sub-section (8), penalty under sub-section (9) shall be payable where any amount of self-assessed tax or any amount collected as tax has not been paid within a period of thirty days from the due date of payment of such tax.
- (74) (1) Where it appears to the proper officer that any tax has not been paid or short paid or erroneously refunded or where input tax credit has been wrongly availed or utilised by reason of fraud, or any wilful misstatement or suppression of facts to evade tax, he shall serve notice on the person chargeable with tax which has not been so paid or which has been so short paid or to whom the refund has erroneously been made, or who has wrongly availed or utilised input tax credit, requiring him to show cause as to why he should not pay the amount specified in the notice along with interest payable thereon under section 50 and a penalty equivalent to the tax specified in the notice.

Determination of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised by reason of fraud or any wilful misstatement or

suppression of facts.

- (2) The proper officer shall issue the notice under sub-section (1) at least six months prior to the time limit specified in sub-section (10) for issuance of order.
- (3) Where a notice has been issued for any period under sub-section (1), the proper officer may serve a statement, containing the details of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised for such periods other than those covered under sub-section (1), on the person chargeable with tax.
- (4) The service of statement under sub-section (3) shall be deemed to be service of notice under sub-section (1) of section 73, subject to the condition that the grounds relied upon in the said statement, except the ground of fraud, or any wilful-misstatement or suppression of facts to evade tax, for periods other than those covered under sub-section (1) are the same as are mentioned in the earlier notice.
- (5) The person chargeable with tax may, before service of notice under sub-section (1), pay the amount of tax along with interest payable under section 50 and a penalty equivalent to fifteen per cent. of such tax on the basis of his own ascertainment of such tax or the tax as ascertained by the proper officer and inform the proper officer in writing of such payment.
- (6) The proper officer, on receipt of such information, shall not serve any notice under sub-section (1), in respect of the tax so paid or any penalty payable under the provisions of this Act or the rules made thereunder.
- (7) Where the proper officer is of the opinion that the amount paid under sub-section (5) falls short of the amount actually payable, he shall proceed to issue the notice as provided for in sub-section (1) in respect of such amount which falls short of the amount actually payable.
- (8) Where any person chargeable with tax under sub-section (1) pays the said tax along with interest payable under section 50 and a penalty equivalent to twenty five per cent. of such tax within thirty days of issue of the notice, all proceedings in respect of the said notice shall be deemed to be concluded.
- (9) The proper officer shall, after considering the representation, if any, made by the person chargeable with tax, determine the amount of tax, interest and penalty due from such person and issue an order.
- (10) The proper officer shall issue the order under sub-section (9) within a period of five years from the due date for furnishing of annual return for the financial year to which the tax not paid or short paid or input tax credit wrongly availed or utilised relates to or within five years from the date of erroneous refund.
- (11) Where any person served with an order issued under sub-section (9) pays the tax along with interest payable thereon under section 50 and a penalty equivalent to fifty per cent. of such tax within thirty days of communication of the order, all proceedings in respect of the said notice shall be deemed to be concluded.

Explanation 1.—For the purposes of section 73 and this section, —

- (i) the expression “all proceedings in respect of the said notice” shall not include proceedings under section 132;
- (ii) where the notice under the same proceedings is issued to the main person liable to pay tax and some other persons, and such proceedings against the main person have been concluded under section 73 or section 74, the proceedings against all the persons liable to pay penalty under sections 122, 125, 129 and 130 are deemed to be concluded.

Explanation 2.—For the purposes of this Act, the expression “suppression” shall mean non-declaration of facts or information which a taxable person is required to declare in the return, statement, report or any other document furnished under this Act or the rules made thereunder, or failure to furnish any information on being asked for, in writing, by the proper officer.

- (75)(1) Where the service of notice or issuance of order is stayed by an order of a court or Appellate Tribunal, the period of such stay shall be excluded in computing the period specified in sub-sections (2) and (10) of section 73 or sub-sections (2) and (10) of section 74, as the case may be.
- (2) Where any Appellate Authority or Appellate Tribunal or court concludes that the notice issued under sub-section (1) of section 74 is not sustainable for the reason that the charges of fraud or any wilful misstatement or suppression of facts to evade tax has not been established against the person to whom the notice was issued, the proper officer shall determine the tax payable by such person, deeming as if the notice were issued under sub-section (1) of section 73.
- (3) Where any order is required to be issued in pursuance of the direction of the Appellate Authority or Appellate Tribunal or a court, such order shall be issued within two years from the date of communication of the said direction.
- (4) An opportunity of hearing shall be granted where a request is received in writing from the person chargeable with tax or penalty, or where any adverse decision is contemplated against such person.
- (5) The proper officer shall, if sufficient cause is shown by the person chargeable with tax, grant time to the said person and adjourn the hearing for reasons to be recorded in writing:
- Provided that no such adjournment shall be granted for more than three times to a person during the proceedings.
- (6) The proper officer, in his order, shall set out the relevant facts and the basis of his decision.
- (7) The amount of tax, interest and penalty demanded in the order shall not be in excess of the amount specified in the notice and no demand shall be confirmed on the grounds other than the grounds specified in the notice.
- (8) Where the Appellate Authority or Appellate Tribunal or court modifies the amount of tax determined by the proper officer, the amount of interest and penalty shall stand modified accordingly, taking into account the amount of tax so modified.
- (9) The interest on the tax short paid or not paid shall be payable whether or not specified in the order determining the tax liability.
- (10) The adjudication proceedings shall be deemed to be concluded, if the order is not issued within three years as provided for in sub-section (10) of section 73 or within five years as provided for in sub-section (10) of section 74.
- (11) An issue on which the Appellate Authority or the Appellate Tribunal or the High Court has given its decision which is prejudicial to the interest of revenue in some other proceedings and an appeal to the Appellate Tribunal or the High Court or the Supreme Court against such decision of the Appellate Authority or the Appellate Tribunal or the High Court is pending, the period spent between the date of the decision of the Appellate Authority and that of the Appellate Tribunal or the date of decision of the Appellate Tribunal and that of the High Court or the date of the decision of the High Court and that of the Supreme Court shall be excluded in computing the period referred to in sub-section (10) of section 73 or sub-section (10) of section 74 where proceedings are initiated by way of issue of a show cause notice under the said sections.

General provisions relating to determination of tax.

Notwithstanding anything contained in section 73 or section 74, where any amount of self-assessed tax in accordance with a return furnished under section 39 remains unpaid, either wholly or partly, or any amount of interest payable on such tax remains unpaid, the same shall be recovered under the provisions of section 79.

Where any penalty is imposed under section 73 or section 74, no penalty for the same act or omission shall be imposed on the same person under any other provision of this Act.

- (76)(1) Notwithstanding anything to the contrary contained in any order or direction of any Appellate Authority or Appellate Tribunal or court or in any other provisions of this Act or the rules made thereunder or any other law for the time being in force, every person who has collected from any other person any amount as representing the tax under this Act, and has not paid the said amount to the Government, shall forthwith pay the said amount to the Government, irrespective of whether the supplies in respect of which such amount was collected are taxable or not.
- (2) Where any amount is required to be paid to the Government under sub-section (1), and which has not been so paid, the proper officer may serve on the person liable to pay such amount a notice requiring him to show cause as to why the said amount as specified in the notice, should not be paid by him to the Government and why a penalty equivalent to the amount specified in the notice should not be imposed on him under the provisions of this Act.
- (3) The proper officer shall, after considering the representation, if any, made by the person on whom the notice is served under sub-section (2), determine the amount due from such person and thereupon such person shall pay the amount so determined.
- (4) The person referred to in sub-section (1) shall in addition to paying the amount referred to in sub-section (1) or sub-section (3) also be liable to pay interest thereon at the rate specified under section 50 from the date such amount was collected by him to the date such amount is paid by him to the Government.
- (5) An opportunity of hearing shall be granted where a request is received in writing from the person to whom the notice was issued to show cause.
- (6) The proper officer shall issue an order within one year from the date of issue of the notice.
- (7) Where the issuance of order is stayed by an order of the court or Appellate Tribunal, the period of such stay shall be excluded in computing the period of one year.
- (8) The proper officer, in his order, shall set out the relevant facts and the basis of his decision.
- (9) The amount paid to the Government under sub-section (1) or sub-section (3) shall be adjusted against the tax payable, if any, by the person in relation to the supplies referred to in sub-section (1).
- (10) Where any surplus is left after the adjustment under sub-section (9), the amount of such surplus shall either be credited to the Fund or refunded to the person who has borne the incidence of such amount.
- (11) The person who has borne the incidence of the amount, may apply for the refund of the same in accordance with the provisions of section 54.
- (77)(1) A registered person who has paid the central tax and State tax on a transaction considered by him to be an intra-State supply, but which is subsequently held to be an inter-State supply, shall be refunded the amount of taxes so paid in such manner and subject to such conditions as may be prescribed.
- (2) A registered person who has paid integrated tax on a transaction considered by him to be an inter-State supply, but which is subsequently held to be an intra-State supply, shall not be required to pay any interest on the amount of State tax payable.
- (78) Any amount payable by a taxable person in pursuance of an order passed under this Act shall be paid by such person within a period of three months from the date of service of such order failing which recovery proceedings shall be initiated:

Tax collected but not paid to Government.

Tax wrongfully collected and paid to Central Government or State Government.

Initiation of recovery proceedings.

Provided that where the proper officer considers it expedient in the interest of revenue, he may, for reasons to be recorded in writing, require the said

taxable person to make such payment within such period less than a period of three months as may be specified by him.

(79)(1) Where any amount payable by a person to the Government under any of the provisions of this Act or the rules made thereunder is not paid, the proper officer shall proceed to recover the amount by one or more of the following modes, namely:—

Recovery of tax.

(a) the proper officer may deduct or may require any other specified officer to deduct the amount so payable from any money owing to such person which may be under the control of the proper officer or such other specified officer;

(b) the proper officer may recover or may require any other specified officer to recover the amount so payable by detaining and selling any goods belonging to such person which are under the control of the proper officer or such other specified officer;

(c) (i) the proper officer may, by a notice in writing, require any other person from whom money is due or may become due to such person or who holds or may subsequently hold money for or on account of such person, to pay to the Government either forthwith upon the money becoming due or being held, or within the time specified in the notice not being before the money becomes due or is held, so much of the money as is sufficient to pay the amount due from such person or the whole of the money when it is equal to or less than that amount;

(ii) every person to whom the notice is issued under sub-clause (i) shall be bound to comply with such notice, and in particular, where any such notice is issued to a post office, banking company or an insurer, it shall not be necessary to produce any pass book, deposit receipt, policy or any other document for the purpose of any entry, endorsement or the like being made before payment is made, notwithstanding any rule, practice or requirement to the contrary;

(iii) in case the person to whom a notice under sub-clause (i) has been issued, fails to make the payment in pursuance thereof to the Government, he shall be deemed to be a defaulter in respect of the amount specified in the notice and all the consequences of this Act or the rules made thereunder shall follow;

(iv) the officer issuing a notice under sub-clause (i) may, at any time, amend or revoke such notice or extend the time for making any payment in pursuance of the notice;

(v) any person making any payment in compliance with a notice issued under sub-clause (i) shall be deemed to have made the payment under the authority of the person in default and such payment being credited to the Government shall be deemed to constitute a good and sufficient discharge of the liability of such person to the person in default to the extent of the amount specified in the receipt;

(vi) any person discharging any liability to the person in default after service on him of the notice issued under sub-clause (i) shall be personally liable to the Government to the extent of the liability discharged or to the extent of the liability of the person in default for tax, interest and penalty, whichever is less;

(vii) where a person on whom a notice is served under sub-clause (i) proves to the satisfaction of the officer issuing the notice that the money demanded or any part thereof was not due to the person in default or that he did not hold any money for or on account of the person in default, at the time the notice was served on him, nor is the money demanded or any part thereof, likely to become due to the said person or be held for or on account of such person, nothing contained in this section shall be deemed to require the person on whom the notice has been served to pay to the Government any such money or part thereof;

(d) the proper officer may, in accordance with the rules to be made in this behalf, distrain any movable or immovable property belonging to or under the control of such person, and detain the same until the amount payable is paid; and in case, any part of the said amount payable or of the cost of the distress or keeping of the property, remains unpaid for a period of thirty days next after any such distress, may cause the said property to be sold and with the proceeds of such sale, may satisfy the amount payable and the costs including cost of sale remaining unpaid and shall render the surplus amount, if any, to such person;

(e) the proper officer may prepare a certificate signed by him specifying the amount due from such person and send it to the Collector of the district in which such person owns any property or resides or carries on his business or to any officer authorised by the Government and the said Collector or the said officer, on receipt of such certificate, shall proceed to recover from such person the amount specified thereunder as if it were an arrear of land revenue;

(f) Notwithstanding anything contained in the Code of Criminal Procedure, 1973, the proper officer may file an application to the appropriate Magistrate and such Magistrate shall proceed to recover from such person the amount specified thereunder as if it were a fine imposed by him.

2 of 1974.

- (2) Where the terms of any bond or other instrument executed under this Act or any rules or regulations made thereunder provide that any amount due under such instrument may be recovered in the manner laid down in sub-section (1), the amount may, without prejudice to any other mode of recovery, be recovered in accordance with the provisions of that sub-section.
- (3) Where any amount of tax, interest or penalty is payable by a person to the Government under any of the provisions of this Act or the rules made thereunder and which remains unpaid, the proper officer of central tax, during the course of recovery of said tax arrears, may recover the amount from the said person as if it were an arrear of central tax and credit the amount so recovered to the account of the Government.

Where the amount recovered under sub-section (3) is less than the amount due to the Central Government and State Government, the amount to be credited to the account of the respective Governments shall be in proportion to the amount due to each such Government.

- (80) On an application filed by a taxable person, the Commissioner may, for reasons to be recorded in writing, extend the time for payment or allow payment of any amount due under this Act, other than the amount due as per the liability self-assessed in any return, by such person in monthly instalments not exceeding twenty four, subject to payment of interest under section 50 and subject to such conditions and limitations as may be prescribed:

Payment of tax and other amount in instalments.

Provided that where there is default in payment of any one instalment on its due date, the whole outstanding balance payable on such date shall become due and payable forthwith and shall, without any further notice being served on the person, be liable for recovery.

- (81) Where a person, after any amount has become due from him, creates a charge on or parts with the property belonging to him or in his possession by way of sale, mortgage, exchange, or any other mode of transfer whatsoever of any of his properties in favour of any other person with the intention of defrauding the Government revenue, such charge or transfer shall be void as against any claim in respect of any tax or any other sum payable by the said person:

Transfer of property to be void in certain cases.

Provided that, such charge or transfer shall not be void if it is made for adequate consideration, in good faith and without notice of the pendency of such proceedings under this Act or without notice of such tax or other sum payable by the said person, or with the previous permission of the proper officer.

- (82) Notwithstanding anything to the contrary contained in any law for the time being in force, save as otherwise provided in the Insolvency and

Tax to be first charge on

31 of 2016

- Bankruptcy Code, 2016, any amount payable by a taxable person or any other person on account of tax, interest or penalty which he is liable to pay to the Government shall be a first charge on the property of such taxable person or such person.
- (83)(1) Where during the pendency of any proceedings under section 62 or section 63 or section 64 or section 67 or section 73 or section 74, the Commissioner is of the opinion that for the purpose of protecting the interest of the Government revenue, it is necessary so to do, he may, by order in writing attach provisionally any property, including bank account, belonging to the taxable person in such manner as may be prescribed.
- (2) Every such provisional attachment shall cease to have effect after the expiry of a period of one year from the date of the order made under sub-section (1).
- (84) Where any notice of demand in respect of any tax, penalty, interest or any other amount payable under this Act, (hereafter in this section referred to as "Government dues"), is served upon any taxable person or any other person and any appeal or revision application is filed or any other proceedings is initiated in respect of such Government dues, then—
- (a) where such Government dues are enhanced in such appeal, revision or other proceedings, the Commissioner shall serve upon the taxable person or any other person another notice of demand in respect of the amount by which such Government dues are enhanced and any recovery proceedings in relation to such Government dues as are covered by the notice of demand served upon him before the disposal of such appeal, revision or other proceedings may, without the service of any fresh notice of demand, be continued from the stage at which such proceedings stood immediately before such disposal;
- (b) where such Government dues are reduced in such appeal, revision or in other proceedings—
- (i) it shall not be necessary for the Commissioner to serve upon the taxable person a fresh notice of demand;
- (ii) the Commissioner shall give intimation of such reduction to him and to the appropriate authority with whom recovery proceedings is pending;
- (iii) any recovery proceedings initiated on the basis of the demand served upon him prior to the disposal of such appeal, revision or other proceedings may be continued in relation to the amount so reduced from the stage at which such proceedings stood immediately before such disposal.

CHAPTER XVI

LIABILITY TO PAY IN CERTAIN CASES

- (85)(1) Where a taxable person, liable to pay tax under this Act, transfers his business in whole or in part, by sale, gift, lease, leave and license, hire or in any other manner whatsoever, the taxable person and the person to whom the business is so transferred shall, jointly and severally, be liable wholly or to the extent of such transfer, to pay the tax, interest or any penalty due from the taxable person upto the time of such transfer, whether such tax, interest or penalty has been determined before such transfer, but has remained unpaid or is determined thereafter.
- (2) Where the transferee of a business referred to in sub-section (1) carries on such business either in his own name or in some other name, he shall be liable to pay tax on the supply of goods or services or both effected by him with effect from the date of such transfer and shall, if he is a registered person under this Act, apply within the prescribed time for amendment of his certificate of registration.
- (86) Where an agent supplies or receives any taxable goods on behalf of his principal, such agent and his principal shall, jointly and severally, be liable to pay the tax payable on such goods under this Act.

	<p>(87)(1) When two or more companies are amalgamated or merged in pursuance of an order of court or of Tribunal or otherwise and the order is to take effect from a date earlier to the date of the order and any two or more of such companies have supplied or received any goods or services or both to or from each other during the period commencing on the date from which the order takes effect till the date of the order, then such transactions of supply and receipt shall be included in the turnover of supply or receipt of the respective companies and they shall be liable to pay tax accordingly.</p> <p>(2) Notwithstanding anything contained in the said order, for the purposes of this Act, the said two or more companies shall be treated as distinct companies for the period up to the date of the said order and the registration certificates of the said companies shall be cancelled with effect from the date of the said order.</p>	Liability in case of amalgamation or merger of companies.
31 of 2016	<p>(88)(1) When any company is being wound up whether under the orders of a court or Tribunal or otherwise, every person appointed as receiver of any assets of a company (hereafter in this section referred to as the "liquidator"), shall, within thirty days after his appointment, give intimation of his appointment to the Commissioner.</p> <p>(2) The Commissioner shall, after making such inquiry or calling for such information as he may deem fit, notify the liquidator within three months from the date on which he receives intimation of the appointment of the liquidator, the amount which in the opinion of the Commissioner would be sufficient to provide for any tax, interest or penalty which is then, or is likely thereafter to become, payable by the company.</p> <p>(3) When any private company is wound up and any tax, interest or penalty determined under this Act on the company for any period, whether before or in the course of or after its liquidation, cannot be recovered, then every person who was a director of such company at any time during the period for which the tax was due shall, jointly and severally, be liable for the payment of such tax, interest or penalty, unless he proves to the satisfaction of the Commissioner that such non-recovery cannot be attributed to any gross neglect, misfeasance or breach of duty on his part in relation to the affairs of the company.</p>	Liability in case of company in liquidation.
18 of 2013.	<p>(89)(1) Notwithstanding anything contained in the Companies Act, 2013, where any tax, interest or penalty due from a private company in respect of any supply of goods or services or both for any period cannot be recovered, then, every person who was a director of the private company during such period shall, jointly and severally, be liable for the payment of such tax, interest or penalty unless he proves that the non-recovery cannot be attributed to any gross neglect, misfeasance or breach of duty on his part in relation to the affairs of the company.</p> <p>(2) Where a private company is converted into a public company and the tax, interest or penalty in respect of any supply of goods or services or both for any period during which such company was a private company cannot be recovered before such conversion, then, nothing contained in sub-section (1) shall apply to any person who was a director of such private company in relation to any tax, interest or penalty in respect of such supply of goods or services or both of such private company:</p> <p>Provided that nothing contained in this sub-section shall apply to any personal penalty imposed on such director.</p> <p>(90) Notwithstanding any contract to the contrary and any other law for the time being in force, where any firm is liable to pay any tax, interest or penalty under this Act, the firm and each of the partners of the firm shall, jointly and severally, be liable for such payment:</p> <p>Provided that where any partner retires from the firm, he or the firm, shall intimate the date of retirement of the said partner to the Commissioner by a notice in that behalf in writing and such partner shall be liable to pay tax,</p>	<p>Liability of directors of private company.</p> <p>Liability of partners of firm to pay tax.</p>

interest or penalty due upto the date of his retirement whether determined or not, on that date:

Provided further that if no such intimation is given within one month from the date of retirement, the liability of such partner under the first proviso shall continue until the date on which such intimation is received by the Commissioner.

(91) Where the business in respect of which any tax, interest or penalty is payable under this Act is carried on by any guardian, trustee or agent of a minor or other incapacitated person on behalf of and for the benefit of such minor or other incapacitated person, the tax, interest or penalty shall be levied upon and recoverable from such guardian, trustee or agent in like manner and to the same extent as it would be determined and recoverable from any such minor or other incapacitated person, as if he were a major or capacitated person and as if he were conducting the business himself, and all the provisions of this Act or the rules made thereunder shall apply accordingly.

Liability of guardians, trustees etc.

(92) Where the estate or any portion of the estate of a taxable person owning a business in respect of which any tax, interest or penalty is payable under this Act is under the control of the Court of Wards, the Administrator General, the Official Trustee or any receiver or manager (including any person, whatever be his designation, who in fact manages the business) appointed by or under any order of a court, the tax, interest or penalty shall be levied upon and be recoverable from such Court of Wards, Administrator General, Official Trustee, receiver or manager in like manner and to the same extent as it would be determined and be recoverable from the taxable person as if he were conducting the business himself, and all the provisions of this Act or the rules made thereunder shall apply accordingly.

Liability of Court of Wards, etc.

31 of 2016

(93)(1) Save as otherwise provided in the Insolvency and Bankruptcy Code, 2016, where a person, liable to pay tax, interest or penalty under this Act, dies, then—

Special provisions regarding liability to pay tax, interest or penalty in certain cases.

(a) if a business carried on by the person is continued after his death by his legal representative or any other person, such legal representative or other person, shall be liable to pay tax, interest or penalty due from such person under this Act; and

(b) if the business carried on by the person is discontinued, whether before or after his death, his legal representative shall be liable to pay, out of the estate of the deceased, to the extent to which the estate is capable of meeting the charge, the tax, interest or penalty due from such person under this Act,

whether such tax, interest or penalty has been determined before his death but has remained unpaid or is determined after his death.

31 of 2016

(2) Save as otherwise provided in the Insolvency and Bankruptcy Code, 2016, where a taxable person, liable to pay tax, interest or penalty under this Act, is a Hindu Undivided Family or an association of persons and the property of the Hindu Undivided Family or the association of persons is partitioned amongst the various members or groups of members, then, each member or group of members shall, jointly and severally, be liable to pay the tax, interest or penalty due from the taxable person under this Act upto the time of the partition whether such tax, penalty or interest has been determined before partition but has remained unpaid or is determined after the partition.

31 of 2016

(3) Save as otherwise provided in the Insolvency and Bankruptcy Code, 2016, where a taxable person, liable to pay tax, interest or penalty under this Act, is a firm, and the firm is dissolved, then, every person who was a partner shall, jointly and severally, be liable to pay the tax, interest or penalty due from the firm under this Act upto the time of dissolution whether such tax,

31 of 2016

- interest or penalty has been determined before the dissolution, but has remained unpaid or is determined after dissolution.
- (4) Save as otherwise provided in the Insolvency and Bankruptcy Code, 2016, where a taxable person liable to pay tax, interest or penalty under this Act,—
- (a) is the guardian of a ward on whose behalf the business is carried on by the guardian; or
- (b) is a trustee who carries on the business under a trust for a beneficiary,

then, if the guardianship or trust is terminated, the ward or the beneficiary shall be liable to pay the tax, interest or penalty due from the taxable person upto the time of the termination of the guardianship or trust, whether such tax, interest or penalty has been determined before the termination of guardianship or trust but has remained unpaid or is determined thereafter.

- (94) (1) Where a taxable person is a firm or an association of persons or a Hindu Undivided Family and such firm, association or family has discontinued business—

(a) the tax, interest or penalty payable under this Act by such firm, association or family upto the date of such discontinuance may be determined as if no such discontinuance had taken place; and

(b) every person who, at the time of such discontinuance, was a partner of such firm, or a member of such association or family, shall, notwithstanding such discontinuance, jointly and severally, be liable for the payment of tax and interest determined and penalty imposed and payable by such firm, association or family, whether such tax and interest has been determined or penalty imposed prior to or after such discontinuance and subject as aforesaid, the provisions of this Act shall, so far as may be, apply as if every such person or partner or member were himself a taxable person.

- (2) Where a change has occurred in the constitution of a firm or an association of persons, the partners of the firm or members of association, as it existed before and as it exists after the reconstitution, shall, without prejudice to the provisions of section 90, jointly and severally, be liable to pay tax, interest or penalty due from such firm or association for any period before its reconstitution.

The provisions of sub-section (1) shall, so far as may be, apply where the taxable person, being a firm or association of persons is dissolved or where the taxable person, being a Hindu Undivided Family, has effected partition with respect to the business carried on by it and accordingly references in that sub-section to discontinuance shall be construed as reference to dissolution or to partition.

Explanation.—For the purposes of this Chapter,—

(i) a “Limited Liability Partnership” formed and registered under the provisions of the Limited Liability Partnership Act, 2008 shall also be considered as a firm;

(ii) “court” means the District Court, High Court or Supreme Court.

CHAPTER XVII

ADVANCE RULING

- (95) In this Chapter, unless the context otherwise requires,—

(a) “advance ruling” means a decision provided by the Authority or the Appellate Authority to an applicant on matters or on questions specified in sub-section (2) of section 97 or sub-section (1) of section 100, in relation to the supply of goods or services or both being undertaken or proposed to be undertaken by the applicant;

(b) “Appellate Authority” means the Appellate Authority for Advance Ruling constituted under section 99;

(c) “applicant” means any person registered or desirous of obtaining registration under this Act;

Liability in other cases.

Definitions.

6 of 2009.

(d) "application" means an application made to the Authority under sub-section (1) of section 97;

(e) "Authority" means the Authority for Advance Ruling, *constituted under section 96.*

96. (1) *The Government shall, by notification, constitute an Authority to be known as the Delhi Authority for Advance Ruling:*

Constitution of Authority for Advance Ruling.

Provided that the Government may, on the recommendation of the Council, notify any Authority located in another State to act as the Authority for the State.

(2) *The Authority shall consist of-*

(i) *one member from amongst the officers of central tax; and*

(ii) *one member from amongst the officers of State tax,*

to be appointed by the Central Government and the State Government respectively.

(3) *The qualifications, the method of appointment of the members and the terms and conditions of their services shall be such as may be prescribed.*

97. (1) An applicant desirous of obtaining an advance ruling under this Chapter may make an application in such form and manner and accompanied by such fee as may be prescribed, stating the question on which the advance ruling is sought.

Application for advance ruling.

(2) The question on which the advance ruling is sought under this Act, shall be in respect of, -

(a) classification of any goods or services or both;

(b) applicability of a notification issued under the provisions of this Act;

(c) determination of time and value of supply of goods or services or both;

(d) admissibility of input tax credit of tax paid or deemed to have been paid;

(e) determination of the liability to pay tax on any goods or services or both;

(f) whether applicant is required to be registered;

(g) whether any particular thing done by the applicant with respect to any goods or services or both amounts to or results in a supply of goods or services or both, within the meaning of that term.

98. (1) On receipt of an application, the Authority shall cause a copy thereof to be forwarded to the concerned officer and, if necessary, call upon him to furnish the relevant records:

Procedure on receipt of application.

Provided that where any records have been called for by the Authority in any case, such records shall, as soon as possible, be returned to the said concerned officer.

(2) The Authority may, after examining the application and the records called for and after hearing the applicant or his authorised representative and the concerned officer or his authorised representative, by order, either admit or reject the application:

Provided that the Authority shall not admit the application where the question raised in the application is already pending or decided in any proceedings in the case of an applicant under any of the provisions of this Act:

Provided further that no application shall be rejected under this sub-

section unless an opportunity of hearing has been given to the applicant:

Provided also that where the application is rejected, the reasons for such rejection shall be specified in the order.

- (3) A copy of every order made under sub-section (2) shall be sent to the applicant and to the concerned officer.
- (4) Where an application is admitted under sub-section (2), the Authority shall, after examining such further material as may be placed before it by the applicant or obtained by the Authority and after providing an opportunity of being heard to the applicant or his authorised representative as well as to the concerned officer or his authorised representative, pronounce its advance ruling on the question specified in the application.
- (5) Where the members of the Authority differ on any question on which the advance ruling is sought, they shall state the point or points on which they differ and make a reference to the Appellate Authority for hearing and decision on such question.
- (6) The Authority shall pronounce its advance ruling in writing within ninety days from the date of receipt of application.
- (7) A copy of the advance ruling pronounced by the Authority duly signed by the members and certified in such manner as may be prescribed shall be sent to the applicant, the concerned officer and the jurisdictional officer after such pronouncement.

99. *The Government shall, by notification, constitute an Authority to be known as Delhi Appellate Authority for Advance Ruling for Goods and Services Tax for hearing appeals against the advance ruling pronounced by the Advance Ruling Authority consisting of—*

*Constitution of
Appellate
Authority for
Advance Ruling.*

- (i) the Chief Commissioner of central tax as designated by the Board; and
- (ii) the Commissioner of State tax:

Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, notify any Appellate Authority located in another State or Union territory to act as the Appellate Authority for the State.

100. (1) The concerned officer, the jurisdictional officer or an applicant aggrieved by any advance ruling pronounced under sub-section (4) of section 98, may appeal to the Appellate Authority.
- (2) Every appeal under this section shall be filed within a period of thirty days from the date on which the ruling sought to be appealed against is communicated to the concerned officer, the jurisdictional officer and the applicant:

*Appeal to the
Appellate
Authority.*

Provided that the Appellate Authority may, if it is satisfied that the appellant was prevented by a sufficient cause from presenting the appeal within the said period of thirty days, allow it to be presented within a further period not exceeding thirty days.

- (3) Every appeal under this section shall be in such form, accompanied by such fee and verified in such manner as may be prescribed.

101. (1) The Appellate Authority may, after giving the parties to the appeal or reference an opportunity of being heard, pass such order as it thinks fit, confirming or modifying the ruling appealed against or referred to.

*Orders of
Appellate
Authority.*

- (2) The order referred to in sub-section (1) shall be passed within a period of ninety days from the date of filing of the appeal under section 100 or a reference under sub-section (5) of section 98.
- (3) Where the members of the Appellate Authority differ on any point or points referred to in appeal or reference, it shall be deemed that no advance ruling can be issued in respect of the question under the appeal or reference.
- (4) A copy of the advance ruling pronounced by the Appellate Authority duly signed by the Members and certified in such manner as may be prescribed shall be sent to the applicant, the concerned officer, the jurisdictional

officer and to the Authority after such pronouncement.

102. The Authority or the Appellate Authority may amend any order passed by it under section 98 or section 101, so as to rectify any error apparent on the face of the record, if such error is noticed by the Authority or the Appellate Authority on its own accord, or is brought to its notice by the concerned officer, the jurisdictional officer, or the applicant or the appellant within a period of six months from the date of the order:

Rectification of advance ruling.

Provided that no rectification which has the effect of enhancing the tax liability or reducing the amount of admissible input tax credit shall be made unless the applicant or the appellant has been given an opportunity of being heard.

103. (1) The advance ruling pronounced by the Authority or the Appellate Authority under this Chapter shall be binding only -

Applicability of advance ruling.

(a) on the applicant who had sought it in respect of any matter referred to in sub-section (2) of section 97 for advance ruling;

(b) on the concerned officer or the jurisdictional officer in respect of the applicant.

- (2) The advance ruling referred to in sub-section (1) shall be binding unless the law, facts or circumstances supporting the original advance ruling have changed.

104. (1) Where the Authority or the Appellate Authority finds that advance ruling pronounced by it under sub-section (4) of section 98 or under sub-section (1) of section 101 has been obtained by the applicant or the appellant by fraud or suppression of material facts or misrepresentation of facts, it may, by order, declare such ruling to be void *ab-initio* and thereupon all the provisions of this Act or the rules made thereunder shall apply to the applicant or the appellant as if such advance ruling had never been made:

Advance ruling to be void in certain circumstances.

Provided that no order shall be passed under this sub-section unless an opportunity of being heard has been given to the applicant or the appellant.

Explanation.—The period beginning with the date of such advance ruling and ending with the date of order under this sub-section shall be excluded while computing the period specified in sub-sections (2) and (10) of section 73 or sub-sections (2) and (10) of section 74.

A copy of the order made under sub-section (1) shall be sent to the applicant, the concerned officer and the jurisdictional officer.

105. (1) The Authority or the Appellate Authority shall, for the purpose of exercising its powers regarding -

Powers of Authority and Appellate Authority.

(a) discovery and inspection;

(b) enforcing the attendance of any person and examining him on oath;

(c) issuing commissions and compelling production of books of account and other records,

have all the powers of a civil court under the Code of Civil Procedure, 1908.

- (2) The Authority or the Appellate Authority shall be deemed to be a civil court for the purposes of section 195, but not for the purposes of Chapter XXVI of the Code of Criminal Procedure, 1973, and every proceeding before the Authority or the Appellate Authority shall be deemed to be a judicial proceedings within the meaning of sections 193 and 228, and for the purpose of section 196 of the Indian Penal Code.

106. The Authority or the Appellate Authority shall, subject to the provisions of this Chapter, have power to regulate its own procedure.

Procedure of Authority and Appellate Authority.

5 of 1908.

2 of 1974.

45 of 1860.

CHAPTER—XVIII

APPEALS AND REVISION

107. (1) Any person aggrieved by any decision or order passed under this Act or the *Central Goods and Services Tax Act* by an adjudicating authority may appeal to such Appellate Authority as may be prescribed within three months from the date on which the said decision or order is communicated to such person.
- (2) The Commissioner may, on his own motion, or upon request from the Commissioner of central tax, call for and examine the record of any proceeding in which an adjudicating authority has passed any decision or order under this Act or the *Central Goods and Services Tax Act*, for the purpose of satisfying himself as to the legality or propriety of the said decision or order and may, by order, direct any officer subordinate to him to apply to the Appellate Authority within six months from the date of communication of the said decision or order for the determination of such points arising out of the said decision or order as may be specified by the Commissioner in his order.
- (3) Where, in pursuance of an order under sub-section (2), the authorised officer makes an application to the Appellate Authority, such application shall be dealt with by the Appellate Authority as if it were an appeal made against the decision or order of the adjudicating authority and such authorised officer were an appellant and the provisions of this Act relating to appeals shall apply to such application.
- (4) The Appellate Authority may, if he is satisfied that the appellant was prevented by sufficient cause from presenting the appeal within the aforesaid period of three months or six months, as the case may be, allow it to be presented within a further period of one month.
- (5) Every appeal under this section shall be in such form and shall be verified in such manner as may be prescribed.
- (6) No appeal shall be filed under sub-section (1), unless the appellant has paid—
- (a) in full, such part of the amount of tax, interest, fine, fee and penalty arising from the impugned order, as is admitted by him; and
 - (b) a sum equal to ten per cent. of the remaining amount of tax in dispute arising from the said order, in relation to which the appeal has been filed.
- (7) Where the appellant has paid the amount under sub-section (6), the recovery proceedings for the balance amount shall be deemed to be stayed.
- (8) The Appellate Authority shall give an opportunity to the appellant of being heard.
- (9) The Appellate Authority may, if sufficient cause is shown at any stage of hearing of an appeal, grant time to the parties or any of them and adjourn the hearing of the appeal for reasons to be recorded in writing:
- Provided that no such adjournment shall be granted more than three times to a party during hearing of the appeal.
- (10) The Appellate Authority may, at the time of hearing of an appeal, allow an appellant to add any ground of appeal not specified in the grounds of appeal, if it is satisfied that the omission of that ground from the grounds of appeal was not wilful or unreasonable.
- (11) The Appellate Authority shall, after making such further inquiry as may be necessary, pass such order, as it thinks just and proper, confirming, modifying or annulling the decision or order appealed against but shall not refer the case back to the adjudicating authority that passed the said decision or order:

Appeals to
Appellate
Authority.

Provided that an order enhancing any fee or penalty or fine in lieu of confiscation or confiscating goods of greater value or reducing the amount of refund or input tax credit shall not be passed unless the appellant has been given a reasonable opportunity of showing cause against the proposed order:

Provided further that where the Appellate Authority is of the opinion that any tax has not been paid or short-paid or erroneously refunded, or where input tax credit has been wrongly availed or utilised, no order requiring the appellant to pay such tax or input tax credit shall be passed unless the appellant is given notice to show cause against the proposed order and the order is passed within the time limit specified under section 73 or section 74.

(12) The order of the Appellate Authority disposing of the appeal shall be in writing and shall state the points for determination, the decision thereon and the reasons for such decision.

(13) The Appellate Authority shall, where it is possible to do so, hear and decide every appeal within a period of one year from the date on which it is filed:

Provided that where the issuance of order is stayed by an order of a court or Tribunal, the period of such stay shall be excluded in computing the period of one year.

(14) On disposal of the appeal, the Appellate Authority shall communicate the order passed by it to the appellant, respondent and to the adjudicating authority.

(15) A copy of the order passed by the Appellate Authority shall also be sent to the Commissioner or the authority designated by him in this behalf and the jurisdictional Commissioner of *central* tax or an authority designated by him in this behalf.

(16) Every order passed under this section shall, subject to the provisions of section 108 or section 113 or section 117 or section 118 be final and binding on the parties.

108. (1) Subject to the provisions of section 121 and any rules made thereunder, the Revisional Authority may, on his own motion, or upon information received by him or on request from the Commissioner of *central* tax, call for and examine the record of any proceedings, and if he considers that any decision or order passed under this Act or under the *Central* Goods and Services Tax Act by any officer subordinate to him is erroneous in so far as it is prejudicial to the interest of revenue and is illegal or improper or has not taken into account certain material facts, whether available at the time of issuance of the said order or not or in consequence of an observation by the Comptroller and Auditor General of India, he may, if necessary, stay the operation of such decision or order for such period as he deems fit and after giving the person concerned an opportunity of being heard and after making such further inquiry as may be necessary, pass such order, as he thinks just and proper, including enhancing or modifying or annulling the said decision or order.

Powers of
Revisional
Authority.

(2) The Revisional Authority shall not exercise any power under sub-section (1), if—

(a) the order has been subject to an appeal under section 107 or section 112 or section 117 or section 118; or

(b) the period specified under sub-section (2) of section 107 has not yet expired or more than three years have expired after the passing of the decision or order sought to be revised; or

(c) the order has already been taken for revision under this section at an earlier stage; or

(d) the order has been passed in exercise of the powers under sub-section (1):

Provided that the Revisional Authority may pass an order under sub-section (1) on any point which has not been raised and decided in an appeal referred to in clause (a) of sub-section (2), before the expiry of a period of one year from the date of the order in such appeal or before the expiry of a period of three years referred to in clause (b) of that sub-section, whichever is later.

(3) Every order passed in revision under sub-section (1) shall, subject to the provisions of section 113 or section 117 or section 118, be final and binding on the parties.

- (4) If the said decision or order involves an issue on which the Appellate Tribunal or the High Court has given its decision in some other proceedings and an appeal to the High Court or the Supreme Court against such decision of the Appellate Tribunal or the High Court is pending, the period spent between the date of the decision of the Appellate Tribunal and the date of the decision of the High Court or the date of the decision of the High Court and the date of the decision of the Supreme Court shall be excluded in computing the period of limitation referred to in clause (b) of sub-section (2) where proceedings for revision have been initiated by way of issue of a notice under this section.
- (5) Where the issuance of an order under sub-section (1) is stayed by the order of a court or Appellate Tribunal, the period of such stay shall be excluded in computing the period of limitation referred to in clause (b) of sub-section (2).
- (6) For the purposes of this section, the term,—
- (i) “record” shall include all records relating to any proceedings under this Act available at the time of examination by the Revisional Authority;
- (ii) “decision” shall include intimation given by any officer lower in rank than the Revisional Authority.

109.(1) *Subject to the provisions of this Chapter, the Goods and Services Tax Tribunal constituted under the Central Goods and Services Tax Act shall be the Appellate Tribunal for hearing appeals against the orders passed by the Appellate Authority or the Revisional Authority under this Act.*

Appellate Tribunal and Benches thereof.

(2) *The constitution and jurisdiction of the State Bench and the Area Benches located in the State shall be in accordance with the provisions of section 109 of the Central Goods and Services Tax Act or the rules made thereunder.*

110. *The qualifications, appointment, salary and allowances, terms of office, resignation and removal of the President and Members of the State Bench and Area Benches shall be in accordance with the provisions of section 110 of the Central Goods and Services Tax Act.*

President and Members of Appellate Tribunal, their qualification, appointment, conditions of service, etc.

111. (1) The Appellate Tribunal shall not, while disposing of any proceedings before it or an appeal before it, be bound by the procedure laid down in the Code of Civil Procedure, 1908, but shall be guided by the principles of natural justice and subject to the other provisions of this Act and the rules made thereunder, the Appellate Tribunal shall have power to regulate its own procedure.

Procedure before Appellate Tribunal.

5 of 1908.

5 of 1908.

(2) The Appellate Tribunal shall, for the purposes of discharging its functions under this Act, have the same powers as are vested in a civil court under the Code of Civil Procedure, 1908, while trying a suit in respect of the following matters, namely:—

- (a) summoning and enforcing the attendance of any person and examining him on oath;
- (b) requiring the discovery and production of documents;
- (c) receiving evidence on affidavits;
- (d) subject to the provisions of sections 123 and 124 of the Indian Evidence Act, 1872, requisitioning any public record or document or a copy of such record or document from any office;
- (e) issuing commissions for the examination of witnesses or documents;
- (f) dismissing a representation for default or deciding it *ex parte*;
- (g) setting aside any order of dismissal of any representation for default or any order passed by it *ex parte*; and

1 of 1872.

- (h) any other matter which may be prescribed.
- (3) Any order made by the Appellate Tribunal may be enforced by it in the same manner as if it were a decree made by a court in a suit pending therein, and it shall be lawful for the Appellate Tribunal to send for execution of its orders to the court within the local limits of whose jurisdiction,—

(a) in the case of an order against a company, the registered office of the company is situated; or

(b) in the case of an order against any other person, the person concerned voluntarily resides or carries on business or personally works for gain.

45 of 1860.

- (4) All proceedings before the Appellate Tribunal shall be deemed to be judicial proceedings within the meaning of sections 193 and 228, and for the purposes of section 196 of the Indian Penal Code, and the Appellate Tribunal shall be deemed to be civil court for the purposes of section 195 and Chapter XXVI of the Code of Criminal Procedure, 1973.

2 of 1974.

- 112. (1) Any person aggrieved by an order passed against him under section 107 or section 108 of this Act or the *Central Goods and Services Tax Act* may appeal to the Appellate Tribunal against such order within three months from the date on which the order sought to be appealed against is communicated to the person preferring the appeal.

Appeals to
Appellate
Tribunal.

- (2) The Appellate Tribunal may, in its discretion, refuse to admit any such appeal where the tax or input tax credit involved or the difference in tax or input tax credit involved or the amount of fine, fee or penalty determined by such order, does not exceed fifty thousand rupees.

- (3) The Commissioner may, on his own motion, or upon request from the Commissioner of central tax, call for and examine the record of any order passed by the Appellate Authority or the Revisional Authority under this Act or under the Central Goods and Services Tax Act for the purpose of satisfying himself as to the legality or propriety of the said order and may, by order, direct any officer subordinate to him to apply to the Appellate Tribunal within six months from the date on which the said order has been passed for determination of such points arising out of the said order as may be specified by the Commissioner in his order.

- (4) Where in pursuance of an order under sub-section (3) the authorised officer makes an application to the Appellate Tribunal, such application shall be dealt with by the Appellate Tribunal as if it were an appeal made against the order under sub-section (11) of section 107 or under sub-section (1) of section 108 and the provisions of this Act shall apply to such application, as they apply in relation to appeals filed under sub-section (1).

- (5) On receipt of notice that an appeal has been preferred under this section, the party against whom the appeal has been preferred may, notwithstanding that he may not have appealed against such order or any part thereof, file, within forty five days of the receipt of notice, a memorandum of cross-objections, verified in the prescribed manner, against any part of the order appealed against and such memorandum shall be disposed of by the Appellate Tribunal, as if it were an appeal presented within the time specified in sub-section (1).

- (6) The Appellate Tribunal may admit an appeal within three months after the expiry of the period referred to in sub-section (1), or permit the filing of a memorandum of cross-objections within forty five days after the expiry of the period referred to in sub-section (5), if it is satisfied that there was sufficient cause for not presenting it within that period.

- (7) An appeal to the Appellate Tribunal shall be in such form, verified in such manner and shall be accompanied by such fee, as may be prescribed.

- (8) No appeal shall be filed under sub-section (1), unless the appellant has paid—

(a) in full, such part of the amount of tax, interest, fine, fee and penalty

arising from the impugned order, as is admitted by him, and

(b) a sum equal to twenty per cent. of the remaining amount of tax in dispute, in addition to the amount paid under sub-section (6) of the section 107, arising from the said order, in relation to which the appeal has been filed.

(9) Where the appellant has paid the amount as per sub-section (8), the recovery proceedings for the balance amount shall be deemed to be stayed till the disposal of the appeal.

(10) Every application made before the Appellate Tribunal, —

(a) in an appeal for rectification of error or for any other purpose; or

(b) for restoration of an appeal or an application,

shall be accompanied by such fees as may be prescribed.

113. (1) The Appellate Tribunal may, after giving the parties to the appeal an opportunity of being heard, pass such orders thereon as it thinks fit, confirming, modifying or annulling the decision or order appealed against or may refer the case back to the Appellate Authority, or the Revisional Authority or to the original adjudicating authority, with such directions as it may think fit, for a fresh adjudication or decision after taking additional evidence, if necessary.

Orders of
Appellate
Tribunal.

(2) The Appellate Tribunal may, if sufficient cause is shown, at any stage of hearing of an appeal, grant time to the parties or any of them and adjourn the hearing of the appeal for reasons to be recorded in writing:

Provided that no such adjournment shall be granted more than three times to a party during hearing of the appeal.

(3) The Appellate Tribunal may amend any order passed by it under sub-section (1) so as to rectify any error apparent on the face of the record, if such error is noticed by it on its own accord, or is brought to its notice by the Commissioner or the Commissioner of central tax or the other party to the appeal within a period of three months from the date of the order:

Provided that no amendment which has the effect of enhancing an assessment or reducing a refund or input tax credit or otherwise increasing the liability of the other party, shall be made under this sub-section, unless the party has been given an opportunity of being heard.

(4) The Appellate Tribunal shall, as far as possible, hear and decide every appeal within a period of one year from the date on which it is filed.

(5) The Appellate Tribunal shall send a copy of every order passed under this section to the Appellate Authority or the Revisional Authority, or the original adjudicating authority, as the case may be, the appellant and the Commissioner or the jurisdictional Commissioner of central tax.

(6) Save as provided in section 117 or section 118, orders passed by the Appellate Tribunal on an appeal shall be final and binding on the parties.

114. *The State President shall exercise such financial and administrative powers over the State Bench and Area Benches of the Appellate Tribunal in a State, as may be prescribed:*

*Financial and
administrative
powers of State
President.*

Provided that the State President shall have the authority to delegate such of his financial and administrative powers as he may think fit to any other Member or any officer of the State Bench or Area Benches, subject to the condition that such Member or officer shall, while exercising such delegated powers, continue to act under the direction, control and supervision of the State President.

115. Where an amount paid by the appellant under sub-section (6) of section 107 or sub-section (8) of section 112 is required to be refunded consequent to any order of the Appellate Authority or of the Appellate Tribunal, interest at the rate specified under section 56 shall be payable in respect of such refund from the date of payment of the amount till the date of refund of such amount.

Interest on
refund of amount
paid for
admission of
appeal.

116. (1) Any person who is entitled or required to appear before an officer appointed under this Act, or the Appellate Authority or the Appellate Tribunal in connection with any proceedings under this Act, may, otherwise than when required under this Act to appear personally for examination on oath or affirmation, subject to the other provisions of this section, appear by an authorised representative.

Appearance by authorised representative.

(2) For the purposes of this Act, the expression “authorised representative” shall mean a person authorised by the person referred to in sub-section (1) to appear on his behalf, being —

(a) his relative or regular employee; or

(b) an advocate who is entitled to practice in any court in India, and who has not been debarred from practicing before any court in India; or

(c) any chartered accountant, a cost accountant or a company secretary, who holds a certificate of practice and who has not been debarred from practice; or

(d) a retired officer of the Commercial Tax Department of any State Government including Department of Trade and Taxes, Department of Excise, Entertainment and Luxury Tax of Government of National Capital Territory of Delhi or Union territory or of the Board who, during his service under the Government, had worked in a post not below the rank than that of a Group-B Gazetted officer for a period of not less than two years:

Provided that such officer shall not be entitled to appear before any proceedings under this Act for a period of one year from the date of his retirement or resignation; or

(e) any person who has been authorised to act as a goods and services tax practitioner on behalf of the concerned registered person.

(3) No person, —

(a) who has been dismissed or removed from Government service; or

(b) who is convicted of an offence connected with any proceedings under this Act, the *Central Goods and Services Tax Act*, the *Integrated Goods and Services Tax Act* or the *Union Territory Goods and Services Tax Act*, or under the existing law or under any of the Acts passed by a State Legislature dealing with the imposition of taxes on sale of goods or supply of goods or services or both; or

(c) who is found guilty of misconduct by the prescribed authority;

(d) who has been adjudged as an insolvent,

shall be qualified to represent any person under sub-section (1)—

(i) for all times in case of persons referred to in clauses (a), (b) and (c); and

(ii) for the period during which the insolvency continues in the case of a person referred to in clause (d).

(4) Any person who has been disqualified under the provisions of the *Central Goods and Services Tax Act* or the *Goods and Services Tax Act* of any other State or the *Union Territory Goods and Services Tax Act* shall be deemed to be disqualified under this Act.

117. (1) Any person aggrieved by any order passed by the State Bench or Area Benches of the Appellate Tribunal may file an appeal to the High Court and the High Court may admit such appeal, if it is satisfied that the case involves a substantial question of law.

Appeal to High Court.

(2) An appeal under sub-section (1) shall be filed within a period of one hundred and eighty days from the date on which the order appealed against is received by the aggrieved person and it shall be in such form, verified in

such manner as may be prescribed:

Provided that the High Court may entertain an appeal after the expiry of the said period if it is satisfied that there was sufficient cause for not filing it within such period.

- (3) Where the High Court is satisfied that a substantial question of law is involved in any case, it shall formulate that question and the appeal shall be heard only on the question so formulated, and the respondents shall, at the hearing of the appeal, be allowed to argue that the case does not involve such question:

Provided that nothing in this sub-section shall be deemed to take away or abridge the power of the court to hear, for reasons to be recorded, the appeal on any other substantial question of law not formulated by it, if it is satisfied that the case involves such question.

- (4) The High Court shall decide the question of law so formulated and deliver such judgment thereon containing the grounds on which such decision is founded and may award such cost as it deems fit.

- (5) The High Court may determine any issue which—

(a) has not been determined by the State Bench or Area Benches; or

(b) has been wrongly determined by the State Bench or Area Benches, by reason of a decision on such question of law as herein referred to in sub-section (3).

- (6) Where an appeal has been filed before the High Court, it shall be heard by a Bench of not less than two Judges of the High Court, and shall be decided in accordance with the opinion of such Judges or of the majority, if any, of such Judges.

- (7) Where there is no such majority, the Judges shall state the point of law upon which they differ and the case shall, then, be heard upon that point only, by one or more of the other Judges of the High Court and such point shall be decided according to the opinion of the majority of the Judges who have heard the case including those who first heard it.

- (8) Where the High Court delivers a judgment in an appeal filed before it under this section, effect shall be given to such judgment by either side on the basis of a certified copy of the judgment.

5 of 1908

- (9) Save as otherwise provided in this Act, the provisions of the Code of Civil Procedure, 1908, relating to appeals to the High Court shall, as far as may be, apply in the case of appeals under this section.

118. (1) An appeal shall lie to the Supreme Court—

(a) from any order passed by the National Bench or Regional Benches of the Appellate Tribunal; or

(b) from any judgment or order passed by the High Court in an appeal made under section 117 in any case which, on its own motion or on an application made by or on behalf of the party aggrieved, immediately after passing of the judgment or order, the High Court certifies to be a fit one for appeal to the Supreme Court.

5 of 1908

- (2) The provisions of the Code of Civil Procedure, 1908, relating to appeals to the Supreme Court shall, so far as may be, apply in the case of appeals under this section as they apply in the case of appeals from decrees of a High Court.

- (3) Where the judgment of the High Court is varied or reversed in the appeal, effect shall be given to the order of the Supreme Court in the manner provided in section 117 in the case of a judgment of the High Court.

119. Notwithstanding that an appeal has been preferred to the High Court or the Supreme Court, sums due to the Government as a result of an order passed by the National or Regional Benches of the Appellate Tribunal under sub-

Appeal to
Supreme Court.

Sums due to be
paid
notwithstanding

- section (1) of section 113 or an order passed by the State Bench or Area Benches of the Appellate Tribunal under sub-section (1) of section 113 or an order passed by the High Court under section 117, as the case may be, shall be payable in accordance with the order so passed.
120. (1) The Commissioner may, on the recommendations of the Council, from time to time, issue orders or instructions or directions fixing such monetary limits, as he may deem fit, for the purposes of regulating the filing of appeal or application by the officer of the *State* tax under the provisions of this Chapter.
- (2) Where, in pursuance of the orders or instructions or directions issued under sub-section (1), the officer of the State tax has not filed an appeal or application against any decision or order passed under the provisions of this Act, it shall not preclude such officer of the State tax from filing appeal or application in any other case involving the same or similar issues or questions of law.
- (3) Notwithstanding the fact that no appeal or application has been filed by the officer of the State tax pursuant to the orders or instructions or directions issued under sub-section (1), no person, being a party in appeal or application shall contend that the officer of the State tax has acquiesced in the decision on the disputed issue by not filing an appeal or application.
- (4) The Appellate Tribunal or court hearing such appeal or application shall have regard to the circumstances under which appeal or application was not filed by the officer of the State tax in pursuance of the orders or instructions or directions issued under sub-section (1).
121. Notwithstanding anything to the contrary in any provisions of this Act, no appeal shall lie against any decision taken or order passed by an officer of *State* tax if such decision taken or order passed relates to any one or more of the following matters, namely:—
- (a) an order of the Commissioner or other authority empowered to direct transfer of proceedings from one officer to another officer; or
- (b) an order pertaining to the seizure or retention of books of account, register and other documents; or
- (c) an order sanctioning prosecution under this Act; or
- (d) an order passed under section 80.

CHAPTER XIX

OFFENCES AND PENALTIES

122. (1) Where a taxable person who—
- (i) supplies any goods or services or both without issue of any invoice or issues an incorrect or false invoice with regard to any such supply;
- (ii) issues any invoice or bill without supply of goods or services or both in violation of the provisions of this Act or the rules made thereunder;
- (iii) collects any amount as tax but fails to pay the same to the Government beyond a period of three months from the date on which such payment becomes due;
- (iv) collects any tax in contravention of the provisions of this Act but fails to pay the same to the Government beyond a period of three months from the date on which such payment becomes due;
- (v) fails to deduct the tax in accordance with the provisions of sub-section (1) of section 51, or deducts an amount which is less than the amount required to be deducted under the said sub-section, or where he fails to pay to the Government under sub-section (2) thereof, the amount deducted as tax;

(vi) fails to collect tax in accordance with the provisions of sub-section (1) of section 52, or collects an amount which is less than the amount required to be collected under the said sub-section or where he fails to pay to the Government the amount collected as tax under sub-section (3) of section 52;

(vii) takes or utilizes input tax credit without actual receipt of goods or services or both either fully or partially, in contravention of the provisions of this Act or the rules made thereunder;

(viii) fraudulently obtains refund of tax under this Act;

(ix) takes or distributes input tax credit in contravention of section 20, or the rules made thereunder;

(x) falsifies or substitutes financial records or produces fake accounts or documents or furnishes any false information or return with an intention to evade payment of tax due under this Act;

(xi) is liable to be registered under this Act but fails to obtain registration;

(xii) furnishes any false information with regard to registration particulars, either at the time of applying for registration, or subsequently;

(xiii) obstructs or prevents any officer in discharge of his duties under this Act;

(xiv) transports any taxable goods without the cover of documents as may be specified in this behalf;

(xv) suppresses his turnover leading to evasion of tax under this Act;

(xvi) fails to keep, maintain or retain books of account and other documents in accordance with the provisions of this Act or the rules made thereunder;

(xvii) fails to furnish information or documents called for by an officer in accordance with the provisions of this Act or the rules made thereunder or furnishes false information or documents during any proceedings under this Act;

(xviii) supplies, transports or stores any goods which he has reasons to believe are liable to confiscation under this Act;

(xix) issues any invoice or document by using the registration number of another registered person;

(xx) tampers with, or destroys any material evidence or documents;

(xxi) disposes off or tampers with any goods that have been detained, seized, or attached under this Act,

he shall be liable to pay a penalty of ten thousand rupees or an amount equivalent to the tax evaded or the tax not deducted under section 51 or short deducted or deducted but not paid to the Government or tax not collected under section 52 or short collected or collected but not paid to the Government or input tax credit availed of or passed on or distributed irregularly, or the refund claimed fraudulently, whichever is higher.

(2) Any registered person who supplies any goods or services or both on which any tax has not been paid or short-paid or erroneously refunded, or where the input tax credit has been wrongly availed or utilized,-

(a) for any reason, other than the reason of fraud or any wilful misstatement or suppression of facts to evade tax, shall be liable to a penalty of ten thousand rupees or ten per cent. of the tax due from such person, whichever is higher;

(b) for reason of fraud or any wilful misstatement or suppression of facts to evade tax, shall be liable to a penalty equal to ten thousand rupees or the tax due from such person, whichever is higher.

(3) Any person who—

(a) aids or abets any of the offences specified in clauses (i) to (xxi) of sub-section (1);

(b) acquires possession of, or in any way concerns himself in transporting, removing, depositing, keeping, concealing, supplying, or purchasing or in any other manner deals with any goods which he knows or has reasons to believe are liable to confiscation under this Act or the rules made thereunder;

(c) receives or is in any way concerned with the supply of, or in any other manner deals with any supply of services which he knows or has reasons to believe are in contravention of any provisions of this Act or the rules made thereunder;

(d) fails to appear before the officer of *State* tax, when issued with a summon for appearance to give evidence or produce a document in an inquiry;

(e) fails to issue invoice in accordance with the provisions of this Act or the rules made thereunder or fails to account for an invoice in his books of account,

shall be liable to a penalty which may extend to twenty five thousand rupees.

123. If a person who is required to furnish an information return under section 150 fails to do so within the period specified in the notice issued under sub-section (3) thereof, the proper officer may direct, that such person shall be liable to pay a penalty of one hundred rupees for each day of the period during which the failure to furnish such return continues:

Penalty for failure to furnish information return.

Provided that the penalty imposed under this section shall not exceed five thousand rupees.

124. If any person required to furnish any information or return under section 151,—

Fine for failure to furnish statistics.

(a) without reasonable cause fails to furnish such information or return as may be required under that section, or

(b) wilfully furnishes or causes to furnish any information or return which he knows to be false,

he shall be punishable with a fine which may extend to ten thousand rupees and in case of a continuing offence to a further fine which may extend to one hundred rupees for each day after the first day during which the offence continues subject to a maximum limit of twenty five thousand rupees.

125. Any person, who contravenes any of the provisions of this Act or any rules made thereunder for which no penalty is separately provided for in this Act, shall be liable to a penalty which may extend to twenty five thousand rupees.

General penalty.

126. (1) No officer under this Act shall impose any penalty for minor breaches of tax regulations or procedural requirements and in particular, any omission or mistake in documentation which is easily rectifiable and made without fraudulent intent or gross negligence.

General disciplines related to penalty.

Explanation.—For the purpose of this sub-section,—

(a) a breach shall be considered a ‘minor breach’ if the amount of tax involved is less than five thousand rupees;

(b) an omission or mistake in documentation shall be considered to be easily rectifiable if the same is an error apparent on the face of record.

(2) The penalty imposed under this Act shall depend on the facts and circumstances of each case and shall commensurate with the degree and severity of the breach.

- (3) No penalty shall be imposed on any person without giving him an opportunity of being heard.
- (4) The officer under this Act shall while imposing penalty in an order for a breach of any law, regulation or procedural requirement, specify the nature of the breach and the applicable law, regulation or procedure under which the amount of penalty for the breach has been specified.
- (5) When a person voluntarily discloses to an officer under this Act the circumstances of a breach of the tax law, regulation or procedural requirement prior to the discovery of the breach by the officer under this Act, the proper officer may consider this fact as a mitigating factor when quantifying a penalty for that person.
- (6) The provisions of this section shall not apply in such cases where the penalty specified under this Act is either a fixed sum or expressed as a fixed percentage.

127. Where the proper officer is of the view that a person is liable to a penalty and the same is not covered under any proceedings under section 62 or section 63 or section 64 or section 73 or section 74 or section 129 or section 130, he may issue an order levying such penalty after giving a reasonable opportunity of being heard to such person.

Power to impose penalty in certain cases.

128. The Government may, by notification, waive in part or full, any penalty referred to in section 122 or section 123 or section 125 or any late fee referred to in section 47 for such class of taxpayers and under such mitigating circumstances as may be specified therein on the recommendations of the Council.

Power to waive penalty or fee or both

129. (1) Notwithstanding anything contained in this Act, where any person transports any goods or stores any goods while they are in transit in contravention of the provisions of this Act or the rules made thereunder, all such goods and conveyance used as a means of transport for carrying the said goods and documents relating to such goods and conveyance shall be liable to detention or seizure and after detention or seizure, shall be released,—

Detention, seizure and release of goods and conveyances in transit.

- (a) on payment of the applicable tax and penalty equal to one hundred per cent. of the tax payable on such goods and, in case of exempted goods, on payment of an amount equal to two per cent of the value of goods or twenty five thousand rupees, whichever is less, where the owner of the goods comes forward for payment of such tax and penalty;
- (b) on payment of the applicable tax and penalty equal to the fifty per cent. of the value of the goods reduced by the tax amount paid thereon and, in case of exempted goods, on payment of an amount equal to five per cent of the value of goods or twenty five thousand rupees, whichever is less, where the owner of the goods does not come forward for payment of such tax and penalty;
- (c) upon furnishing a security equivalent to the amount payable under clause (a) or clause (b) in such form and manner as may be prescribed:

Provided that no such goods or conveyance shall be detained or seized without serving an order of detention or seizure on the person transporting the goods.

- (2) The provisions of sub-section (6) of section 67 shall, *mutatis mutandis*, apply for detention and seizure of goods and conveyances.
- (3) The proper officer detaining or seizing goods or conveyances shall issue a notice specifying the tax and penalty payable and thereafter, pass an order for payment of tax and penalty under clause (a) or clause (b) or clause (c).
- (4) No tax, interest or penalty shall be determined under sub-section (3) without giving the person concerned an opportunity of being heard.
- (5) On payment of amount referred in sub-section (1), all proceedings in respect of the notice specified in sub-section (3) shall be deemed to be concluded.

- (6) Where the person transporting any goods or the owner of the goods fails to pay the amount of tax and penalty as provided in sub-section (1) within seven days of such detention or seizure, further proceedings shall be initiated in accordance with the provisions of section 130:

Provided that where the detained or seized goods are perishable or hazardous in nature or are likely to depreciate in value with passage of time, the said period of seven days may be reduced by the proper officer.

130. (1) Notwithstanding anything contained in this Act, if any person –

Confiscation of goods or conveyances and levy of penalty.

- (i) supplies or receives any goods in contravention of any of the provisions of this Act or the rules made thereunder with intent to evade payment of tax; or
- (ii) does not account for any goods on which he is liable to pay tax under this Act; or
- (iii) supplies any goods liable to tax under this Act without having applied for registration; or
- (iv) contravenes any of the provisions of this Act or the rules made thereunder with intent to evade payment of tax; or
- (v) uses any conveyance as a means of transport for carriage of goods in contravention of the provisions of this Act or the rules made thereunder unless the owner of the conveyance proves that it was so used without the knowledge or connivance of the owner himself, his agent, if any, and the person in charge of the conveyance,

then, all such goods or conveyances shall be liable to confiscation and the person shall be liable to penalty under section 122.

- (2) Whenever confiscation of any goods or conveyance is authorised by this Act, the officer adjudging it shall give to the owner of the goods an option to pay in lieu of confiscation, such fine as the said officer thinks fit:

Provided that such fine leviable shall not exceed the market value of the goods confiscated, less the tax chargeable thereon:

Provided further that the aggregate of such fine and penalty leviable shall not be less than the amount of penalty leviable under sub-section (1) of section 129:

Provided also that where any such conveyance is used for the carriage of the goods or passengers for hire, the owner of the conveyance shall be given an option to pay in lieu of the confiscation of the conveyance a fine equal to the tax payable on the goods being transported thereon.

- (3) Where any fine in lieu of confiscation of goods or conveyance is imposed under sub-section (2), the owner of such goods or conveyance or the person referred to in sub-section (1), shall, in addition, be liable to any tax, penalty and charges payable in respect of such goods or conveyance.
- (4) No order for confiscation of goods or conveyance or for imposition of penalty shall be issued without giving the person an opportunity of being heard.
- (5) Where any goods or conveyance are confiscated under this Act, the title of such goods or conveyance shall thereupon vest in the Government.
- (6) The proper officer adjudging confiscation shall take and hold possession of the things confiscated and every officer of Police, on the requisition of such proper officer, shall assist him in taking and holding such possession.
- (7) The proper officer may, after satisfying himself that the confiscated goods or conveyance are not required in any other proceedings under this Act and after giving reasonable time not exceeding three months to pay fine in lieu of confiscation, dispose of such goods or conveyance and deposit the sale proceeds thereof with the Government.

2 of 1974.

131. Without prejudice to the provisions contained in the Code of Criminal Procedure, 1973, no confiscation made or penalty imposed under the provisions of this Act or the rules made thereunder shall prevent the infliction of any other punishment to which the person affected thereby is liable under the provisions of this Act or under any other law for the time being in force.

Confiscation or penalty not to interfere with other punishments.

132. (1) Whoever commits any of the following offences, namely:—

Punishment for certain offences

(a) supplies any goods or services or both without issue of any invoice, in violation of the provisions of this Act or the rules made thereunder, with the intention to evade tax;

(b) issues any invoice or bill without supply of goods or services or both in violation of the provisions of this Act, or the rules made thereunder leading to wrongful availment or utilisation of input tax credit or refund of tax;

(c) avails input tax credit using such invoice or bill referred to in clause (b);

(d) collects any amount as tax but fails to pay the same to the Government beyond a period of three months from the date on which such payment becomes due;

(e) evades tax, fraudulently avails input tax credit or fraudulently obtains refund and where such offence is not covered under clauses (a) to (d);

(f) falsifies or substitutes financial records or produces fake accounts or documents or furnishes any false information with an intention to evade payment of tax due under this Act;

(g) obstructs or prevents any officer in the discharge of his duties under this Act;

(h) acquires possession of, or in any way concerns himself in transporting, removing, depositing, keeping, concealing, supplying, purchasing or in any other manner deals with, any goods which he knows or has reasons to believe are liable to confiscation under this Act or the rules made thereunder;

(i) receives or is in any way concerned with the supply of, or in any other manner deals with any supply of services which he knows or has reasons to believe are in contravention of any provisions of this Act or the rules made thereunder;

(j) tampers with or destroys any material evidence or documents;

(k) fails to supply any information which he is required to supply under this Act or the rules made thereunder or (unless with a reasonable belief, the burden of proving which shall be upon him, that the information supplied by him is true) supplies false information; or

(l) attempts to commit, or abets the commission of any of the offences mentioned in clauses (a) to (k) of this section,

shall be punishable—

(i) in cases where the amount of tax evaded or the amount of input tax credit wrongly availed or utilised or the amount of refund wrongly taken exceeds five hundred lakh rupees, with imprisonment for a term which may extend to five years and with fine;

(ii) in cases where the amount of tax evaded or the amount of input tax credit wrongly availed or utilised or the amount of refund wrongly taken exceeds two hundred lakh rupees but does not exceed five hundred lakh rupees, with imprisonment for a term which may extend to three years and with fine;

(iii) in the case of any other offence where the amount of tax evaded or the amount of input tax credit wrongly availed or utilised or the amount of refund wrongly taken exceeds one hundred lakh rupees but does not exceed two hundred lakh rupees, with imprisonment for a term which may extend to one year and with fine;

(iv) in cases where he commits or abets the commission of an offence specified in clause (f) or clause (g) or clause (j), he shall be punishable with imprisonment

for a term which may extend to six months or with fine or with both.

- (2) Where any person convicted of an offence under this section is again convicted of an offence under this section, then, he shall be punishable for the second and for every subsequent offence with imprisonment for a term which may extend to five years and with fine.
- (3) The imprisonment referred to in clauses (i), (ii) and (iii) of sub-section (1) and sub-section (2) shall, in the absence of special and adequate reasons to the contrary to be recorded in the judgment of the Court, be for a term not less than six months.
- (4) Notwithstanding anything contained in the Code of Criminal Procedure, 1973, all offences under this Act, except the offences referred to in sub-section (5) shall be non-cognizable and bailable.
- (5) The offences specified in clause (a) or clause (b) or clause (c) or clause (d) of sub-section (1) and punishable under clause (i) of that sub-section shall be cognizable and non-bailable.
- (6) A person shall not be prosecuted for any offence under this section except with the previous sanction of the Commissioner.

Explanation.- For the purposes of this section, the term “tax” shall include the amount of tax evaded or the amount of input tax credit wrongly availed or utilised or refund wrongly taken under the provisions of this Act, the *Central Goods and Services Tax Act*, the *Integrated Goods and Services Tax Act*, and cess levied under the *Goods and Services Tax (Compensation to States) Act*.

133.(1) Where any person engaged in connection with the collection of statistics under section 151 or compilation or computerisation thereof or if any officer of *State tax* having access to information specified under sub-section (1) of section 150, or if any person engaged in connection with the provision of service on the common portal or the agent of common portal, wilfully discloses any information or the contents of any return furnished under this Act or rules made thereunder otherwise than in execution of his duties under the said sections or for the purposes of prosecution for an offence under this Act or under any other Act for the time being in force, he shall be punishable with imprisonment for a term which may extend to six months or with fine which may extend to twenty five thousand rupees, or with both.

Liability of officers and certain other persons.

(2) Any person –

- (a) who is a Government servant shall not be prosecuted for any offence under this section except with the previous sanction of the Government;
- (b) who is not a Government servant shall not be prosecuted for any offence under this section except with the previous sanction of the Commissioner.

134. No court shall take cognizance of any offence punishable under this Act or the rules made thereunder except with the previous sanction of the Commissioner, and no court inferior to that of a Magistrate of the First Class, shall try any such offence.

Cognizance of offences.

135. In any prosecution for an offence under this Act which requires a culpable mental state on the part of the accused, the court shall presume the existence of such mental state but it shall be a defence for the accused to prove the fact that he had no such mental state with respect to the act charged as an offence in that prosecution.

Presumption of culpable mental state.

*Explanation.—*For the purposes of this section,—

(i) the expression “culpable mental state” includes intention, motive, knowledge of a fact, and belief in, or reason to believe, a fact;

(ii) a fact is said to be proved only when the court believes it to exist beyond reasonable doubt and not merely when its existence is established by a preponderance of probability.

136. A statement made and signed by a person on appearance in response to any summons issued under section 70 during the course of any inquiry or proceedings under this Act shall be relevant, for the purpose of proving, in any prosecution for an offence under this Act, the truth of the facts which it

Relevancy of statements under certain circumstances.

contains,—

(a) when the person who made the statement is dead or cannot be found, or is incapable of giving evidence, or is kept out of the way by the adverse party, or whose presence cannot be obtained without an amount of delay or expense which, under the circumstances of the case, the court considers unreasonable; or

(b) when the person who made the statement is examined as a witness in the case before the court and the court is of the opinion that, having regard to the circumstances of the case, the statement should be admitted in evidence in the interest of justice.

137. (1) Where an offence committed by a person under this Act is a company, every person who, at the time the offence was committed was in charge of, and was responsible to, the company for the conduct of business of the company, as well as the company, shall be deemed to be guilty of the offence and shall be liable to be proceeded against and punished accordingly.
- (2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1), where an offence under this Act has been committed by a company and it is proved that the offence has been committed with the consent or connivance of, or is attributable to any negligence on the part of, any director, manager, secretary or other officer of the company, such director, manager, secretary or other officer shall also be deemed to be guilty of that offence and shall be liable to be proceeded against and punished accordingly.
- (3) Where an offence under this Act has been committed by a taxable person being a partnership firm or a Limited Liability Partnership or a Hindu Undivided Family or a trust, the partner or *karta* or managing trustee shall be deemed to be guilty of that offence and shall be liable to be proceeded against and punished accordingly and the provisions of sub-section (2) shall *mutatis mutandis* apply to such persons.
- (4) Nothing contained in this section shall render any such person liable to any punishment provided in this Act, if he proves that the offence was committed without his knowledge or that he had exercised all due diligence to prevent the commission of such offence.

Offences by
Companies.

Explanation.—For the purposes of this section,—

(i) “company” means a body corporate and includes a firm or other association of individuals; and

(ii) “director”, in relation to a firm, means a partner in the firm.

138. (1) Any offence under this Act may, either before or after the institution of prosecution, be compounded by the Commissioner on payment, by the person accused of the offence, to the Central Government or the State Government, as the case may be, of such compounding amount in such manner as may be prescribed:

Compounding of
offences.

Provided that nothing contained in this section shall apply to —

- (a) a person who has been allowed to compound once in respect of any of the offences specified in clauses (a) to (f) of sub-section (1) of section 132 and the offences specified in clause (l) which are relatable to offences specified in clauses (a) to (f) of the said sub-section;
- (b) a person who has been allowed to compound once in respect of any offence, other than those in clause (a), under this Act or under the provisions of any State Goods and Services Tax Act or the Central Goods and Services Tax Act or the Union Territory Goods and Services Tax Act or the Integrated Goods and Services Tax Act in respect of supplies of value exceeding one crore rupees;
- (c) a person who has been accused of committing an offence under this Act which is also an offence under any other law for the time being in force;

- (d) a person who has been convicted for an offence under this Act by a court;
- (e) a person who has been accused of committing an offence specified in clause (g) or clause (j) or clause (k) of sub-section (1) of section 132; and
- (f) any other class of persons or offences as may be prescribed:

Provided further that any compounding allowed under the provisions of this section shall not affect the proceedings, if any, instituted under any other law:

Provided also that compounding shall be allowed only after making payment of tax, interest and penalty involved in such offences.

- (2) The amount for compounding of offences under this section shall be such as may be prescribed, subject to the minimum amount not being less than ten thousand rupees or fifty per cent. of the tax involved, whichever is higher, and the maximum amount not being less than thirty thousand rupees or one hundred and fifty per cent. of the tax, whichever is higher.
- (3) On payment of such compounding amount as may be determined by the Commissioner, no further proceedings shall be initiated under this Act against the accused person in respect of the same offence and any criminal proceedings, if already initiated in respect of the said offence, shall stand abated.

CHAPTER XX

TRANSITIONAL PROVISIONS

139. (1) On and from the appointed day, every person registered under any of the existing laws and having a valid Permanent Account Number shall be issued a certificate of registration on provisional basis, subject to such conditions and in such form and manner as may be prescribed, which unless replaced by a final certificate of registration under sub-section (2), shall be liable to be cancelled if the conditions so prescribed are not complied with.
- (2) The final certificate of registration shall be granted in such form and manner and subject to such conditions as may be prescribed.
- (3) The certificate of registration issued to a person under sub-section (1) shall be deemed to have not been issued if the said registration is cancelled in pursuance of an application filed by such person that he was not liable to registration under section 22 or section 24.
140. (1) A registered person, other than a person opting to pay tax under section 10, shall be entitled to take, in his electronic credit ledger, *credit of the amount of Value Added Tax* carried forward in the return relating to the period ending with the day immediately preceding the appointed day, furnished by him under the existing law in such manner as may be prescribed:

Migration of existing taxpayers.

Transitional arrangements for input tax credit.

Provided that the registered person shall not be allowed to take credit in the following circumstances, namely: –

- (i) where the said amount of credit is not admissible as input tax credit under this Act; or
- (ii) where he has not furnished all the returns required under the existing law for the period of six months immediately preceding the appointed date; or

Provided further that so much of the said credit as is attributable to any claim related to section 3, sub-section (3) of section 5, section 6, section 6A or sub-section (8) of section 8 of the Central Sales Tax Act, 1956 which is not substantiated in the manner, and within the period, prescribed in rule 12 of the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Rules, 1957 shall not be eligible to be credited to the electronic credit ledger:

74 of 1956

Provided also that an amount equivalent to the credit specified in the second proviso shall be refunded under the existing law when the said claims are substantiated in the manner prescribed in rule 12 of the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Rules, 1957.

- (2) A registered person, other than a person opting to pay tax under section 10, shall be entitled to take, in his electronic credit ledger, credit of the unavailed input tax credit in respect of capital goods, not carried forward in a return, furnished under the existing law by him, for the period ending with the day immediately preceding the appointed day in such manner as may be prescribed:

Provided that the registered person shall not be allowed to take credit unless the said credit was admissible as *input tax* credit under the existing law and is also admissible as input tax credit under this Act.

Explanation.—For the purposes of this section, the expression “unavailed *input tax* credit” means the amount that remains after subtracting the amount of *input tax* credit already availed in respect of capital goods by the taxable person under the existing law from the aggregate amount of *input tax* credit to which the said person was entitled in respect of the said capital goods under the existing law.

- (3) A registered person, who was not liable to be registered under the existing law or who was engaged in the sale of exempted goods or tax free goods, by whatever name called, under the existing law but which are liable to tax under this Act or where the person was entitled to the credit of input tax at the time of sale of goods, if any, shall be entitled to take, in his electronic credit ledger, credit of the value added tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock on the appointed day subject to the following conditions namely:—

(i) such inputs or goods are used or intended to be used for making taxable supplies under this Act;

(ii) the said registered person is eligible for input tax credit on such inputs under this Act;

(iii) the said registered person is in possession of invoice or other prescribed documents evidencing payment of *tax* under the existing law in respect of such inputs; and

(iv) such invoices or other prescribed documents were issued not earlier than twelve months immediately preceding the appointed day:

Provided that where a registered person, other than a manufacturer or a supplier of services, is not in possession of an invoice or any other documents evidencing payment of *tax* in respect of inputs, then, such registered person shall, subject to such conditions, limitations and safeguards as may be prescribed, including that the said taxable person shall pass on the benefit of such credit by way of reduced prices to the recipient, be allowed to take credit at such rate and in such manner as may be prescribed.

A registered person, who was engaged in the sale of taxable goods as well as exempted goods or tax free goods, by whatever name called, under the existing law but which are liable to tax under this Act, shall be entitled to take, in his electronic credit ledger,—

(a) the amount of *credit of the value added tax* carried forward in a return furnished under the existing law by him in accordance with the provisions of sub-section (1); and

(b) the amount of *credit of the value added tax* in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock on the appointed day, relating to such exempted goods or *tax free goods, by whatever name called*, in accordance with the provisions of sub-section (3).

A registered person shall be entitled to take, in his electronic credit ledger, credit

of value added tax in respect of inputs received on or after the appointed day but the tax in respect of which has been paid by the supplier under the existing law, subject to the condition that the invoice or any other tax paying document of the same was recorded in the books of account of such person within a period of thirty days from the appointed day:

Provided that the period of thirty days may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding thirty days:

Provided further that the said registered person shall furnish a statement, in such manner as may be prescribed, in respect of credit that has been taken under this sub-section.

A registered person, who was either paying tax at a fixed rate or paying a fixed amount in lieu of the tax payable under the existing law shall be entitled to take, in his electronic credit ledger, credit of value added tax in respect of inputs held in stock and inputs contained in semi-finished or finished goods held in stock on the appointed day subject to the following conditions, namely:—

(i) such inputs or goods are used or intended to be used for making taxable supplies under this Act;

(ii) the said registered person is not paying tax under section 10;

(iii) the said registered person is eligible for input tax credit on such inputs under this Act;

(iv) the said registered person is in possession of invoice or other prescribed documents evidencing payment of tax under the existing law in respect of inputs; and

(v) such invoices or other prescribed documents were issued not earlier than twelve months immediately preceding the appointed day.

(7) The amount of credit under sub-sections (3), (4) and (6) shall be calculated in such manner as may be prescribed.

141. (1) Where any inputs received at a *place of business* had been *despatched* as such or *despatched* after being partially processed to a job worker for further processing, testing, repair, reconditioning or any other purpose in accordance with the provisions of existing law prior to the appointed day and such inputs are returned to the *said place* on or after the appointed day, no tax shall be payable if such inputs, after completion of the job work or otherwise, are returned to the *said place* within six months from the appointed day:

Provided that the period of six months may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding two months:

Provided further that if such inputs are not returned within the period specified in this sub-section, the input tax credit shall be liable to be recovered in accordance with the provisions of clause (a) of sub-section (8) of section 142.

Where any semi-finished goods had been despatched from the place of business to any other premises for carrying out certain manufacturing processes in accordance with the provisions of existing law prior to the appointed day and such goods (hereafter in this sub-section referred to as “the said goods”) are returned to the said place on or after the appointed day, no tax shall be payable if the said goods, after undergoing manufacturing processes or otherwise, are returned to the said place within six months from the appointed day:

Provided that the period of six months may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding two months:

Provided further that if the said goods are not returned within a period specified in this sub-section, the input tax credit shall be liable to be recovered in accordance with the provisions of clause (a) of sub-section (8) of section 142:

Provided also that the person *despatching* the goods may, in

Transitional provisions relating to job work.

accordance with the provisions of the existing law, transfer the said goods to the premises of any registered person for the purpose of supplying therefrom on payment of tax in India or without payment of tax for exports within the period specified in this sub-section.

Where any goods had been despatched from the place of business without payment of tax for carrying out tests or any other process, to any other premises, whether registered or not, in accordance with the provisions of existing law prior to the appointed day and such goods, are returned to the said place of business on or after the appointed day, no tax shall be payable if the said goods, after undergoing tests or any other process, are returned to such place within six months from the appointed day:

Provided that the period of six months may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding two months:

Provided further that if the said goods are not returned within the period specified in this sub-section, the input tax credit shall be liable to be recovered in accordance with the provisions of clause (a) of sub-section (8) of section 142:

Provided also that the person *despatching* the goods may, in accordance with the provisions of the existing law, transfer the said goods from the said other premises on payment of tax in India or without payment of tax for exports within the period specified in this sub-section.

The tax under sub-sections (1), (2) and (3) shall not be payable, only if the person despatching the goods and the job worker declare the details of the inputs or goods held in stock by the job worker on behalf of the said person on the appointed day in such form and manner and within such time as may be prescribed.

142. (1) Where any goods on which *tax*, if any, had been paid under the existing law at the time of *sale* thereof, not being earlier than six months prior to the appointed day, are returned to any place of business on or after the appointed day, the registered person shall be eligible for refund of the *tax* paid under the existing law where such goods are returned by a person, other than a registered person, to the said place of business within a period of six months from the appointed day and such goods are identifiable to the satisfaction of the proper officer:

Miscellaneous
transitional
provisions.

Provided that if the said goods are returned by a registered person, the return of such goods shall be deemed to be a supply.

(a) where, in pursuance of a contract entered into prior to the appointed day, the price of any goods is revised upwards on or after the appointed day, the registered person who had sold such goods shall issue to the recipient a supplementary invoice or debit note, containing such particulars as may be prescribed, within thirty days of such price revision and for the purposes of this Act, such supplementary invoice or debit note shall be deemed to have been issued in respect of an outward supply made under this Act;

(b) where, in pursuance of a contract entered into prior to the appointed day, the price of any goods is revised downwards on or after the appointed day, the registered person who had *sold* such goods may issue to the recipient a credit note, containing such particulars as may be prescribed, within thirty days of such price revision and for the purposes of this Act such credit note shall be deemed to have been issued in respect of an outward supply made under this Act:

Provided that the registered person shall be allowed to reduce his tax liability on account of issue of the credit note only if the recipient of the credit note has reduced his input tax credit corresponding to such reduction of tax liability.

Every claim for refund filed by any person before, on or after the appointed day

for refund of any amount of input tax credit, tax, interest or any other amount paid under the existing law, shall be disposed of in accordance with the provisions of existing law and any amount eventually accruing to him shall be refunded to him in cash in accordance with the provisions of the said law:

Provided that where any claim for refund of the amount of *input tax* credit is fully or partially rejected, the amount so rejected shall lapse:

Provided further that no refund shall be allowed of any amount of *input tax* credit where the balance of the said amount as on the appointed day has been carried forward under this Act.

Every claim for refund filed after the appointed day for refund of any tax paid under the existing law in respect of the goods exported before or after the appointed day, shall be disposed of in accordance with the provisions of the existing law:

Provided that where any claim for refund of *input tax* credit is fully or partially rejected, the amount so rejected shall lapse:

Provided further that no refund shall be allowed of any amount of *input tax* credit where the balance of the said amount as on the appointed day has been carried forward under this Act.

Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act, any amount of input tax credit reversed prior to the appointed day shall not be admissible as input tax credit under this Act.

(a) every proceeding of appeal, revision, review or reference relating to a claim for input tax credit initiated whether before, on or after the appointed day under the existing law shall be disposed of in accordance with the provisions of the existing law, and any amount of credit found to be admissible to the claimant shall be refunded to him in cash in accordance with the provisions of the existing law, and the amount rejected, if any, shall not be admissible as input tax credit under this Act:

Provided that no refund shall be allowed of any amount of *input tax* credit where the balance of the said amount as on the appointed day has been carried forward under this Act;

(b) every proceeding of appeal, *revision*, review or reference relating to recovery of *input tax* credit initiated whether before, on or after the appointed day under the existing law shall be disposed of in accordance with the provisions of the existing law, and if any amount of credit becomes recoverable as a result of such appeal, *revision*, review or reference, the same shall, unless recovered under the existing law, be recovered as an arrear of tax under this Act and the amount so recovered shall not be admissible as input tax credit under this Act.

(a) every proceeding of appeal, revision, review or reference relating to any output tax liability initiated whether before, on or after the appointed day under the existing law, shall be disposed of in accordance with the provisions of the existing law, and if any amount becomes recoverable as a result of such appeal, revision, review or reference, the same shall, unless recovered under the existing law, be recovered as an arrear of tax under this Act and the amount so recovered shall not be admissible as input tax credit under this Act.

(b) every proceeding of appeal, *revision*, review or reference relating to any output *tax* liability initiated whether before, on or after the appointed day under the existing law, shall be disposed of in accordance with the provisions of the existing law, and any amount found to be admissible to the claimant shall be refunded to him in cash in accordance with the provisions of the existing law *and the amount rejected, if any, shall not be admissible as input tax credit under this Act.*

(a) where in pursuance of an assessment or adjudication proceedings instituted, whether before, on or after the appointed day under the existing law, any

amount of tax, interest, fine or penalty becomes recoverable from the person, the same shall, unless recovered under the existing law, be recovered as an arrear of tax under this Act and the amount so recovered shall not be admissible as input tax credit under this Act;

(b) where in pursuance of an assessment or adjudication proceedings instituted, whether before, on or after the appointed day under the existing law, any amount of tax, interest, fine or penalty becomes refundable to the taxable person, the same shall be refunded to him in cash under the said law, *and the amount rejected, if any, shall not be admissible as input tax credit under this Act.*

(a) where any return, furnished under the existing law, is revised after the appointed day and if, pursuant to such revision, any amount is found to be recoverable or any amount of input tax credit is found to be inadmissible, the same shall, unless recovered under the existing law, be recovered as an arrear of tax under this Act and the amount so recovered shall not be admissible as input tax credit under this Act;

(b) where any return, furnished under the existing law, is revised after the appointed day but within the time limit specified for such revision under the existing law and if, pursuant to such revision, any amount is found to be refundable or *input tax* credit is found to be admissible to any taxable person, the same shall be refunded to him in cash under the existing law, and the amount rejected, if any, shall not be admissible as *input tax credit* under this Act.

Save as otherwise provided in this Chapter, the goods or services or both supplied on or after the appointed day in pursuance of a contract entered into prior to the appointed day shall be liable to tax under the provisions of this Act.

(a) notwithstanding anything contained in section 12, no tax shall be payable on goods under this Act to the extent the tax was leviable on the said goods under the Delhi Value Added Tax Act, 2004;

32 of 1994

(b) notwithstanding anything contained in section 13, no tax shall be payable on services under this Act to the extent the tax was leviable on the said services under Chapter V of the Finance Act, 1994;

--- of ---

32 of 1994

(c) where tax was paid on any supply, both under the Delhi Value Added Tax Act, 2004 and under Chapter V of the Finance Act, 1994, tax shall be leviable under this Act and the taxable person shall be entitled to take credit of value added tax or service tax paid under the existing law to the extent of supplies made after the appointed day and such credit shall be calculated in such manner as may be prescribed.

Where any goods sent on approval basis, not earlier than six months before the appointed day, are rejected or not approved by the buyer and returned to the seller on or after the appointed day, no tax shall be payable thereon if such goods are returned within six months from the appointed day:

Provided that the said period of six months may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding two months:

Provided further that the tax shall be payable by the person returning the goods if such goods are liable to tax under this Act, and are returned after the period specified in this sub-section:

Provided also that tax shall be payable by the person who has sent the goods on approval basis if such goods are liable to tax under this Act, and are not returned within the period specified in this sub-section.

Where a supplier has made any sale of goods in respect of which tax was required to be deducted at source under the Delhi Value Added Tax Act, 2004 and has also issued an invoice for the same before the appointed day, no deduction of tax at source under section 51 shall be made by the deductor under the said section where payment to the said supplier is made on or after the appointed day.

(14) Where any goods or capital goods belonging to the principal are lying at the premises of the agent on the appointed day, the agent shall be entitled to take credit of the tax paid on such goods or capital goods subject to fulfilment of the following conditions:

- (i) the agent is a registered taxable person under this Act;
- (ii) both the principal and the agent declare the details of stock of goods or capital goods lying with such agent on the day immediately preceding the appointed day in such form and manner and within such time as may be prescribed in this behalf;
- (iii) the invoices for such goods or capital goods had been issued not earlier than twelve months immediately preceding the appointed day; and
- (iv) the principal has either reversed or not availed of the input tax credit in respect of such,-
 - (a) goods; or
 - (b) capital goods or, having availed of such credit, has reversed the said credit, to the extent availed of by him.

Explanation.- For the purposes of this Chapter, the expression “capital goods” shall have the same meaning as assigned to it in the Delhi Value Added Tax Act, 2004.

CHAPTER XXI

MISCELLANEOUS

143. (1) A registered person (hereafter in this section referred to as the “principal”) may, under intimation and subject to such conditions as may be prescribed, send any inputs or capital goods, without payment of tax, to a job worker for job work and from there subsequently send to another job worker and likewise, and shall,—

Job work
procedure.

(a) bring back inputs, after completion of job work or otherwise, or capital goods, other than moulds and dies, jigs and fixtures, or tools, within one year and three years, respectively, of their being sent out, to any of his place of business, without payment of tax;

(b) supply such inputs, after completion of job work or otherwise, or capital goods, other than moulds and dies, jigs and fixtures, or tools, within one year and three years, respectively, of their being sent out from the place of business of a job worker on payment of tax within India, or with or without payment of tax for export, as the case may be:

Provided that the principal shall not supply the goods from the place of business of a job worker in accordance with the provisions of this clause unless the said principal declares the place of business of the job worker as his additional place of business except in a case-

- (i) where the job worker is registered under section 25; or
 - (ii) where the principal is engaged in the supply of such goods as may be notified by the Commissioner.
- (2) The responsibility for keeping proper accounts for the inputs or capital goods shall lie with the principal.
- (3) Where the inputs sent for job work are not received back by the principal after completion of job work or otherwise in accordance with the provisions of clause (a) of sub-section (1) or are not supplied from the place of business of the job worker in accordance with the provisions of clause (b) of sub-section (1) within a period of one year of their being sent out, it shall be deemed that such inputs had been supplied by the principal to the job worker on the day when the said inputs were sent out.
- (4) Where the capital goods, other than moulds and dies, jigs and fixtures, or

tools, sent for job work are not received back by the principal in accordance with the provisions of clause (a) of sub-section (1) or are not supplied from the place of business of the job worker in accordance with the provisions of clause (b) of sub-section (1) within a period of three years of their being sent out, it shall be deemed that such capital goods had been supplied by the principal to the job worker on the day when the said capital goods were sent out.

- (5) Notwithstanding anything contained in sub-sections (1) and (2), any waste and scrap generated during the job work may be supplied by the job worker directly from his place of business on payment of tax, if such job worker is registered, or by the principal, if the job worker is not registered.

Explanation. - For the purposes of job work, input includes intermediate goods arising from any treatment or process carried out on the inputs by the principal or the job worker.

144. Where any document-

Presumption as to documents in certain cases.

- (i) is produced by any person under this Act or any other law for the time being in force; or
- (ii) has been seized from the custody or control of any person under this Act or any other law for the time being in force; or
- (iii) has been received from any place outside India in the course of any proceedings under this Act or any other law for the time being in force,

and such document is tendered by the prosecution in evidence against him or any other person who is tried jointly with him, the court shall--

- (a) unless the contrary is proved by such person, presume —
 - (i) the truth of the contents of such document;
 - (ii) that the signature and every other part of such document which purports to be in the handwriting of any particular person or which the court may reasonably assume to have been signed by, or to be in the handwriting of, any particular person, is in that person's handwriting, and in the case of a document executed or attested, that it was executed or attested by the person by whom it purports to have been so executed or attested;
- (b) admit the document in evidence notwithstanding that it is not duly stamped, if such document is otherwise admissible in evidence.

145. (1) Notwithstanding anything contained in any other law for the time being in force, —

Admissibility of micro films, facsimile copies of documents and computer printouts as documents and as evidence.

- (a) a micro film of a document or the reproduction of the image or images embodied in such micro film (whether enlarged or not); or
- (b) a facsimile copy of a document; or
- (c) a statement contained in a document and included in a printed material produced by a computer, subject to such conditions as may be prescribed; or
- (d) any information stored electronically in any device or media, including any hard copies made of such information,

shall be deemed to be a document for the purposes of this Act and the rules made thereunder and shall be admissible in any proceedings thereunder, without

further proof or production of the original, as evidence of any contents of the original or of any fact stated therein of which direct evidence would be admissible.

(2) In any proceedings under this Act and or the rules made thereunder, where it is desired to give a statement in evidence by virtue of this section, a certificate, —

(a) identifying the document containing the statement and describing the manner in which it was produced;

(b) giving such particulars of any device involved in the production of that document as may be appropriate for the purpose of showing that the document was produced by a computer,

shall be evidence of any matter stated in the certificate and for the purposes of this sub-section it shall be sufficient for a matter to be stated to the best of the knowledge and belief of the person stating it.

146. The Government may, on the recommendations of the Council, notify the Common Goods and Services Tax Electronic Portal for facilitating registration, payment of tax, furnishing of returns, computation and settlement of integrated tax, electronic way bill and for carrying out such other functions and for such purposes as may be prescribed.

Common Portal.

147. The Government may, on the recommendations of the Council, notify certain supplies of goods as “deemed exports”, where goods supplied do not leave India, and payment for such supplies is received either in Indian rupees or in convertible foreign exchange, if such goods are manufactured in India.

Deemed Exports.

148. The Government may, on the recommendations of the Council, and subject to such conditions and safeguards as may be prescribed, notify certain classes of registered persons, and the special procedures to be followed by such persons including those with regard to registration, furnishing of return, payment of tax and administration of such persons.

Special procedure for certain processes.

149.(1) Every registered person may be assigned a goods and services tax compliance rating score by the Government based on his record of compliance with the provisions of this Act.

Goods and services tax compliance rating.

The goods and services tax compliance rating score may be determined on the basis of such parameters as may be prescribed.

The goods and services tax compliance rating score may be updated at periodic intervals and intimated to the registered person and also placed in the public domain in such manner as may be prescribed.

150.(1) Any person, being—

Obligation to furnish information return.

(a) a taxable person; or

(b) a local authority or other public body or association; or

(c) any authority of the State Government responsible for the collection of value added tax or sales tax or State excise duty or an authority of the Central Government responsible for the collection of excise duty or customs duty; or

43 of 1961.

(d) an income tax authority appointed under the provisions of the Income-tax Act, 1961; or

2 of 1934.

(e) a banking company within the meaning of clause (a) of section 45A of the Reserve Bank of India Act, 1934; or

36 of 2003.

(f) a State Electricity Board or an electricity distribution or transmission licensee under the Electricity Act, 2003, or any other entity entrusted with such functions by the Central Government or the State Government; or

- 16 of 1908. (g) the Registrar or Sub-Registrar appointed under section 6 of the Registration Act, 1908; or
- 18 of 2013. (h) a Registrar within the meaning of the Companies Act, 2013; or
- 59 of 1988. (i) the registering authority empowered to register motor vehicles under the Motor Vehicles Act, 1988; or
- 30 of 2013. (j) the Collector referred to in clause (c) of section 3 of the Right to Fair Compensation and Transparency in Land Acquisition, Rehabilitation and Resettlement Act, 2013; or
- 42 of 1956. (k) the recognised stock exchange referred to in clause (f) of section 2 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956; or
- 22 of 1996. (l) a depository referred to in clause (e) of sub-section (1) of section 2 of the Depositories Act, 1996; or
- 2 of 1934. (m) an officer of the Reserve Bank of India as constituted under section 3 of the Reserve Bank of India Act, 1934; or
- 18 of 2013. (n) the Goods and Services Tax Network, a company registered under the Companies Act, 2013; or
- (o) a person to whom a Unique Identity Number has been granted under sub-section (9) of section 25; or
- (p) any other person as may be specified, on the recommendations of the Council, by the Government,

Who is responsible for maintaining record of registration or statement of accounts or any periodic return or document containing details of payment of tax and other details of transaction of goods or services or both or transactions related to a bank account or consumption of electricity or transaction of purchase, sale or exchange of goods or property or right or interest in a property under any law for the time being in force, shall furnish an information return of the same in respect of such periods, within such time, in such form and manner and to such authority or agency as may be prescribed.

Where the Commissioner, or an officer authorised by him in this behalf, considers that the information furnished in the information return is defective, he may intimate the defect to the person who has furnished such information return and give him an opportunity of rectifying the defect within a period of thirty days from the date of such intimation or within such further period which, on an application made in this behalf, the said authority may allow and if the defect is not rectified within the said period of thirty days or, the further period so allowed, then, notwithstanding anything contained in any other provisions of this Act, such information return shall be treated as not furnished and the provisions of this Act shall apply.

Where a person who is required to furnish information return has not furnished the same within the time specified in sub-section (1) or sub-section (2), the said authority may serve upon him a notice requiring furnishing of such information return within a period not exceeding ninety days from the date of service of the notice and such person shall furnish the information return.

151.(1) The Commissioner may, if he considers that it is necessary so to do, by notification, direct that statistics may be collected relating to any matter dealt with by or in connection with this Act.

Power to collect statistics.

(2) Upon such notification being issued, the Commissioner, or any person authorised by him in this behalf, may call upon the concerned persons to furnish such information or returns, in such form and manner as may be prescribed, relating to any matter in respect of which statistics is to be collected.

152. (1) No information of any individual return or part thereof with respect to any matter given for the purposes of section 150 or section 151 shall, without the previous consent in writing of the concerned person or his authorised representative, be published in such manner so as to enable such particulars to be identified as referring to a particular person and no such information shall be used for the purpose of any proceedings under this

Bar on disclosure of information.

	Act.	
	(2) Except for the purposes of prosecution under this Act or any other Act for the time being in force, no person who is not engaged in the collection of statistics under this Act or compilation or computerisation thereof for the purposes of this Act, shall be permitted to see or have access to any information or any individual return referred to in section 151.	
	(3) Nothing in this section shall apply to the publication of any information relating to a class of taxable persons or class of transactions, if in the opinion of the Commissioner, it is desirable in the public interest to publish such information.	
	153. Any officer not below the rank of Assistant Commissioner may, having regard to the nature and complexity of the case and the interest of revenue, take assistance of any expert at any stage of scrutiny, inquiry, investigation or any other proceedings before him.	Taking assistance from an expert.
	154. The Commissioner or an officer authorised by him may take samples of goods from the possession of any taxable person, where he considers it necessary, and provide a receipt for any samples so taken.	Power to take samples.
	155. Where any person claims that he is eligible for input tax credit under this Act, the burden of proving such claim shall lie on such person.	Burden of Proof.
45 of 1860.	156. All persons discharging functions under this Act shall be deemed to be public servants within the meaning of section 21 of the Indian Penal Code.	Persons deemed to be public servants.
	157. (1) No suit, prosecution or other legal proceedings shall lie against the President, State President, Members, officers or other employees of the Appellate Tribunal or any other person authorised by the said Appellate Tribunal for anything which is in good faith done or intended to be done under this Act or the rules made thereunder.	Protection of action taken under this Act.
	(2) No suit, prosecution or other legal proceedings shall lie against any officer appointed or authorised under this Act for anything which is done or intended to be done in good faith under this Act or the rules made thereunder.	
	158. (1) All particulars contained in any statement made, return furnished or accounts or documents produced in accordance with this Act, or in any record of evidence given in the course of any proceedings under this Act (other than proceedings before a criminal court), or in any record of any proceedings under this Act shall, save as provided in sub-section (3), not be disclosed.	Disclosure of information by a public servant.
1 of 1872.	(2) Notwithstanding anything contained in the Indian Evidence Act, 1872, no court shall, save as otherwise provided in sub-section (3), require any officer appointed or authorised under this Act to produce before it or to give evidence before it in respect of particulars referred to in sub-section (1).	
45 of 1860.	(3) Nothing contained in this section shall apply to the disclosure of,—	
49 of 1988.	(a) any particulars in respect of any statement, return, accounts, documents, evidence, affidavit or deposition, for the purpose of any prosecution under the Indian Penal Code or the Prevention of Corruption Act, 1988, or any other law for the time being in force; or	
	(b) any particulars to the Central Government or the State Government or to any person acting in the implementation of this Act, for the purposes of carrying out the objects of this Act; or	
	(c) any particulars when such disclosure is occasioned by the lawful exercise under this Act of any process for the service of any notice or recovery of any demand; or	
	(d) any particulars to a civil court in any suit or proceedings, to which the Government or any authority under this Act is a party, which relates to any matter arising out of any proceedings under this Act or under any other law for the time being in force authorising any such authority to exercise any powers thereunder; or	

(e) any particulars to any officer appointed for the purpose of audit of tax receipts or refunds of the tax imposed by this Act; or

(f) any particulars where such particulars are relevant for the purposes of any inquiry into the conduct of any officer appointed or authorised under this Act, to any person or persons appointed as an inquiry officer under any law for the time being in force; or

(g) any such particulars to an officer of the Central Government or of any State Government, as may be necessary for the purpose of enabling that Government to levy or realise any tax or duty; or

(h) any particulars when such disclosure is occasioned by the lawful exercise by a public servant or any other statutory authority, of his or its powers under any law for the time being in force; or

(i) any particulars relevant to any inquiry into a charge of misconduct in connection with any proceedings under this Act against a practising advocate, a tax practitioner, a practising cost accountant, a practising chartered accountant, a practising company secretary to the authority empowered to take disciplinary action against the members practising the profession of a legal practitioner, a cost accountant, a chartered accountant or a company secretary, as the case may be; or

(j) any particulars to any agency appointed for the purposes of data entry on any automated system or for the purpose of operating, upgrading or maintaining any automated system where such agency is contractually bound not to use or disclose such particulars except for the aforesaid purposes; or

(k) any such particulars to an officer of the Government as may be necessary for the purposes of any other law for the time being in force; and

(l) any information relating to any class of taxable persons or class of transactions for publication, if, in the opinion of the Commissioner, it is desirable in the public interest, to publish such information.

159.(1) If the Commissioner, or any other officer authorised by him in this behalf, is of the opinion that it is necessary or expedient in the public interest to publish the name of any person and any other particulars relating to any proceedings or prosecution under this Act in respect of such person, it may cause to be published such name and particulars in such manner as it thinks fit.

Publication of information in respect of persons in certain cases.

(2) No publication under this section shall be made in relation to any penalty imposed under this Act until the time for presenting an appeal to the Appellate Authority under section 107 has expired without an appeal having been presented or the appeal, if presented, has been disposed of.

Explanation.—In the case of firm, company or other association of persons, the names of the partners of the firm, directors, managing agents, secretaries and treasurers or managers of the company, or the members of the association, as the case may be, may also be published if, in the opinion of the Commissioner, or any other officer authorised by him in this behalf, circumstances of the case justify it.

160. (1) No assessment, re-assessment, adjudication, review, revision, appeal, rectification, notice, summons or other proceedings done, accepted, made, issued, initiated, or purported to have been done, accepted, made, issued, initiated in pursuance of any of the provisions of this Act shall be invalid or deemed to be invalid merely by reason of any mistake, defect or omission therein, if such assessment, re-assessment, adjudication, review, revision, appeal, rectification, notice, summons or other proceedings are in substance and effect in conformity with or according to the intents, purposes and requirements of this Act or any existing law.

Assessment proceedings, etc. not to be invalid on certain grounds.

(2) The service of any notice, order or communication shall not be called in question, if the notice, order or communication, as the case may be, has already been acted upon by the person to whom it is issued or where such service has not been called in question at or in the earlier proceedings

commenced, continued or finalised pursuant to such notice, order or communication.

161. Without prejudice to the provisions of section 160, and notwithstanding anything contained in any other provisions of this Act, any authority, who has passed or issued any decision or order or notice or certificate or any other document, may rectify any error which is apparent on the face of record in such decision or order or notice or certificate or any other document, either on its own motion or where such error is brought to its notice by any officer appointed under this Act or an officer appointed under the *Central Goods and Services Tax Act* or by the affected person within a period of three months from the date of issue of such decision or order or notice or certificate or any other document, as the case may be:

Rectification of errors apparent on the face of record.

Provided that no such rectification shall be done after a period of six months from the date of issue of such decision or order or notice or certificate or any other document:

Provided further that the said period of six months shall not apply in such cases where the rectification is purely in the nature of correction of a clerical or arithmetical error, arising from any accidental slip or omission:

Provided also that where such rectification adversely affects any person, the principles of natural justice shall be followed by the authority carrying out such rectification.

162. Save as provided in sections 117 and 118, no civil court shall have jurisdiction to deal with or decide any question arising from or relating to anything done or purported to be done under this Act.

Bar on jurisdiction of civil courts.

163. Wherever a copy of any order or document is to be provided to any person on an application made by him for that purpose, there shall be paid such fee as may be prescribed.

Levy of fee.

- 164.(1) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, make rules for carrying out the provisions of this Act.

Power of Government to make rules.

- (2) Without prejudice to the generality of the provisions of sub-section (1), the Government may make rules for all or any of the matters which by this Act are required to be, or may be, prescribed or in respect of which provisions are to be or may be made by rules.

- (3) The power to make rules conferred by this section shall include the power to give retrospective effect to the rules or any of them from a date not earlier than the date on which the provisions of this Act come into force.

- (4) Any rules made under sub-section (1) or sub-section (2) may provide that a contravention thereof shall be liable to a penalty not exceeding ten thousand rupees.

165. The *Government* may, by notification, make regulations consistent with this Act and the rules made thereunder to carry out the provisions of this Act.

Power to make regulations.

166. Every rule made by the Government, every regulation made by the *Government* and every notification issued by the Government under this Act, shall be laid, as soon as may be after it is made or issued, before the Legislative Assembly of Delhi, while it is in session, for a total period of thirty days which may be comprised in one session or in two or more successive sessions, and if, before the expiry of the session immediately following the session or the successive sessions aforesaid, the *House* agrees in making any modification in the rule or regulation or in the notification, as the case may be, or the *House* agrees that the rule or regulation or the notification should not be made, the rule or regulation or notification, as the case may be, shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be; so, however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done under that rule or regulation or notification, as the case may be.

Laying of rules, regulations and notifications.

- | | |
|--|--|
| <p>167. The Commissioner may, by notification, direct that subject to such conditions, if any, as may be specified in the notification, any power exercisable by any authority or officer under this Act may be exercisable also by another authority or officer as may be specified in such notification.</p> | <p>Delegation of powers.</p> |
| <p>168. The <i>Commissioner</i> may, if he considers it necessary or expedient so to do for the purpose of uniformity in the implementation of this Act, issue such orders, instructions or directions to the <i>State</i> tax officers as it may deem fit, and thereupon all such officers and all other persons employed in the implementation of this Act shall observe and follow such orders, instructions or directions.</p> | <p>Power to issue instructions or directions.</p> |
| <p>169.(1) Any decision, order, summons, notice or other communication under this Act or the rules made thereunder shall be served by any one of the following methods, namely:--</p> <p>(a) by giving or tendering it directly or by a messenger including a courier to the addressee or the taxable person or to his manager or authorised representative or an advocate or a tax practitioner holding authority to appear in the proceedings on behalf of the taxable person or to a person regularly employed by him in connection with the business, or to any adult member of family residing with the taxable person; or</p> <p>(b) by registered post or speed post or courier with acknowledgement due, to the person for whom it is intended or his authorised representative, if any, at his last known place of business or residence; or</p> <p>(c) by sending a communication to his e-mail address provided at the time of registration or as amended from time to time; or</p> <p>(d) by making it available on the common portal; or</p> <p>(e) by publication in a newspaper circulating in the locality in which the taxable person or the person to whom it is issued is last known to have resided, carried on business or personally worked for gain; or</p> <p>(f) if none of the modes aforesaid is practicable, by affixing it in some conspicuous place at his last known place of business or residence and if such mode is not practicable for any reason, then by affixing a copy thereof on the notice board of the office of the concerned officer or authority who or which passed such decision or order or issued such summons or notice.</p> <p>(2) Every decision, order, summons, notice or any communication shall be deemed to have been served on the date on which it is tendered or published or a copy thereof is affixed in the manner provided in sub-section (1).</p> <p>(3) When such decision, order, summons, notice or any communication is sent by registered post or speed post, it shall be deemed to have been received by the addressee at the expiry of the period normally taken by such post in transit unless the contrary is proved.</p> | <p>Service of notice in certain circumstances.</p> |
| <p>170. The amount of tax, interest, penalty, fine or any other sum payable, and the amount of refund or any other sum due, under the provisions of this Act shall be rounded off to the nearest rupee and, for this purpose, where such amount contains a part of a rupee consisting of paise, then, if such part is fifty paise or more, it shall be increased to one rupee and if such part is less than fifty paise it shall be ignored.</p> | <p>Rounding off of tax etc.</p> |
| <p>171.(1) Any reduction in rate of tax on any supply of goods or services or the benefit of input tax credit shall be passed on to the recipient by way of commensurate reduction in prices.</p> <p>(2) The Central Government may, on recommendations of the Council, by notification, constitute an Authority, or empower an existing Authority constituted under any law for the time being in force, to examine whether input tax credits availed by any registered person or the reduction in the tax rate have actually resulted in a commensurate reduction in the price of the goods or services or both supplied by him.</p> | <p>Anti-profiteering Measure.</p> |

- (3) The Authority referred to in sub-section (2) shall exercise such powers and discharge such functions as may be prescribed.

172.(1) If any difficulty arises in giving effect to any provisions of this Act, the Government may, on the recommendations of the Council, by a general or a special order published in the Official Gazette, make such provisions not inconsistent with the provisions of this Act or the rules or regulations made thereunder, as may be necessary or expedient for the purpose of removing the said difficulty:

Removal of difficulties.

Provided that no such order shall be made after the expiry of a period of three years from the date of commencement of this Act.

- (2) Every order made under this section shall be laid, as soon as may be, after it is made, before the State Legislature.

Omissions, substitutions, and insertions in the Acts to be entered here

173. *Save as otherwise provided in this Act, on and from the date of commencement of this Act,-*

Amendment of certain Acts.

(i) in the Delhi Municipal Corporations Act, 1957, clause (d) of sub-section (1) of section 113, section 142, clause (c) of sub-section (1) of section 153, the words "or the tax on advertisements" appearing in sub-section (1) of section 154 and the Fifth Schedule shall be omitted; and

(ii) in the New Delhi Municipal Council Act, 1994, clause (d) of sub-section (1) of section 60 shall be omitted.

List of other Acts to be repealed to be entered here

174.(1) *Save as otherwise provided in this Act, on and from the date of commencement of this Act,*

Repeal and saving.

(i) the Delhi Value Added Tax Act, 2004,

except in respect of goods included in the Entry 54 of the State List of the Seventh Schedule to the Constitution,

(ii) The Delhi Entertainment and Betting Tax Act, 1996

(iii) The Delhi Tax on Luxury Tax Act, 1996

(hereafter referred to as the repealed Acts) are hereby repealed.

(2) The repeal of the said Acts and the amendment of the Acts specified in section 173 (hereafter referred to as "such amendment" or "amended Act", as the case may be) to the extent mentioned in sub-section (1) or section 173 shall not—

(a) revive anything not in force or existing at the time of such amendment or repeal; or

(b) affect the previous operation of the amended Acts or repealed Acts and orders or anything duly done or suffered thereunder; or

(c) affect any right, privilege, obligation, or liability acquired, accrued or incurred under the amended Acts or repealed Acts or orders under such repealed or amended Acts:

Provided that any tax exemption granted as an incentive against investment through a notification shall not continue as privilege if the said notification is rescinded on or after the appointed day; or

(d) affect any tax, surcharge, penalty, fine, interest as are due or may become due or any forfeiture or punishment incurred or inflicted in respect of any offence or violation committed against the provisions of the amended Acts or repealed Acts; or

(e) affect any investigation, inquiry, verification (including scrutiny and audit), assessment proceedings, adjudication and any other legal proceedings or recovery of arrears or remedy in respect of any such tax, surcharge, penalty, fine, interest, right, privilege, obligation, liability, forfeiture or punishment, as aforesaid, and any such investigation, inquiry, verification (including scrutiny and audit), assessment proceedings, adjudication and other legal proceedings or recovery of arrears or remedy

may be instituted, continued or enforced, and any such tax, surcharge, penalty, fine, interest, forfeiture or punishment may be levied or imposed as if these Acts had not been so amended or repealed; or

(f) affect any proceedings including that relating to an appeal, revision, review or reference, instituted before, on or after the appointed day under the said amended Acts or repealed Acts and such proceedings shall be continued under the said amended Acts or repealed Acts as if this Act had not come into force and the said Acts had not been amended or repealed.

10 of 1897.

(3) The mention of the particular matters referred to in section 173 and sub-section (1) shall not be held to prejudice or affect the general application of the General Clauses Act, 1897 with regard to the effect of repeal.

	SCHEDULE I [See section 7]	
	ACTIVITIES TO BE TREATED AS SUPPLY EVEN IF MADE WITHOUT CONSIDERATION	
	<p>1. Permanent transfer or disposal of business assets where input tax credit has been availed on such assets.</p> <p>2. Supply of goods or services or both between related persons or between distinct persons as specified in section 25, when made in the course or furtherance of business:</p> <p>Provided that gifts not exceeding fifty thousand rupees in value in a financial year by an employer to an employee shall not be treated as supply of goods or services or both.</p> <p>3. Supply of goods—</p> <p>(a) by a principal to his agent where the agent undertakes to supply such goods on behalf of the principal; or</p> <p>(b) by an agent to his principal where the agent undertakes to receive such goods on behalf of the principal.</p> <p>4. Import of services by a taxable person from a related person or from any of his other establishments outside India, in the course or furtherance of business.</p>	

	SCHEDULE II [See section 7]	
	ACTIVITIES TO BE TREATED AS SUPPLY OF GOODS OR SUPPLY OF SERVICES	
	<p>1. Transfer</p> <p>(a) any transfer of the title in goods is a supply of goods;</p> <p>(b) any transfer of right in goods or of undivided share in goods without the transfer of title thereof, is a supply of services;</p> <p>(c) any transfer of title in goods under an agreement which stipulates that property in goods shall pass at a future date upon payment of full consideration as agreed, is a supply of goods.</p> <p>2. Land and Building</p> <p>(a) any lease, tenancy, easement, licence to occupy land is a supply of services;</p> <p>(b) any lease or letting out of the building including a commercial, industrial or residential complex for business or commerce, either wholly or partly, is a supply of</p>	

20 of 1972	<p>services.</p> <p>3. Treatment or process</p> <p>Any treatment or process which is applied to another person's goods is a supply of services.</p> <p>4. Transfer of business assets</p> <p>(a) where goods forming part of the assets of a business are transferred or disposed of by or under the directions of the person carrying on the business so as no longer to form part of those assets, whether or not for a consideration, such transfer or disposal is a supply of goods by the person;</p> <p>(b) where, by or under the direction of a person carrying on a business, goods held or used for the purposes of the business are put to any private use or are used, or made available to any person for use, for any purpose other than a purpose of the business, whether or not for a consideration, the usage or making available of such goods is a supply of services;</p> <p>(c) where any person ceases to be a taxable person, any goods forming part of the assets of any business carried on by him shall be deemed to be supplied by him in the course or furtherance of his business immediately before he ceases to be a taxable person, unless—</p> <p>(i) the business is transferred as a going concern to another person; or</p> <p>(ii) the business is carried on by a personal representative who is deemed to be a taxable person.</p> <p>5. Supply of services</p> <p>The following shall be treated as supply of service, namely:--</p> <p>(a) renting of immovable property;</p> <p>(b) construction of a complex, building, civil structure or a part thereof, including a complex or building intended for sale to a buyer, wholly or partly, except where the entire consideration has been received after issuance of completion certificate, where required, by the competent authority or after its first occupation, whichever is earlier.</p> <p><i>Explanation.</i>—For the purposes of this clause—</p> <p>(1) the expression "competent authority" means the Government or any authority authorised to issue completion certificate under any law for the time being in force and in case of non-requirement of such certificate from such authority, from any of the following, namely:—</p> <p>(i) an architect registered with the Council of Architecture constituted under the Architects Act, 1972; or</p> <p>(ii) a chartered engineer registered with the Institution of Engineers (India); or</p> <p>(iii) a licensed surveyor of the respective local body of the city or town or village or development or planning authority;</p> <p>(2) the expression "construction" includes additions, alterations, replacements or remodeling of any existing civil structure;</p> <p>(c) temporary transfer or permitting the use or enjoyment of any intellectual property right;</p> <p>(d) development, design, programming, customisation, adaptation, upgradation, enhancement, implementation of information technology software;</p> <p>(e) agreeing to the obligation to refrain from an act, or to tolerate an act or a situation, or to do an act; and</p> <p>(f) transfer of the right to use any goods for any purpose (whether or not for a specified period) for cash, deferred payment or other valuable consideration.</p> <p>6. Composite supply</p>	
------------	---	--

	<p>The following composite supplies shall be treated as a supply of services, namely:—</p> <p>(a) works contract as defined in clause (119) of section 2; and</p> <p>(b) supply, by way of or as part of any service or in any other manner whatsoever, of goods, being food or any other article for human consumption or any drink (other than alcoholic liquor for human consumption), where such supply or service is for cash, deferred payment or other valuable consideration.</p> <p>7. Supply of Goods</p> <p>The following shall be treated as supply of goods, namely:—</p> <p>Supply of goods by any unincorporated association or body of persons to a member thereof for cash, deferred payment or other valuable consideration.</p>	
--	--	--

	<p style="text-align: center;">SCHEDULE III</p> <p style="text-align: center;">[See section 7]</p>	
	<p>ACTIVITIES OR TRANSACTIONS WHICH SHALL BE TREATED NEITHER AS A SUPPLY OF GOODS NOR A SUPPLY OF SERVICES</p>	
	<p>1. Services by an employee to the employer in the course of or in relation to his employment.</p> <p>2. Services by any court or Tribunal established under any law for the time being in force.</p> <p>3.(a) the functions performed by the Members of Parliament, Members of State Legislature, Members of Panchayats, Members of Municipalities and Members of other local authorities;</p> <p>(b) the duties performed by any person who holds any post in pursuance of the provisions of the Constitution in that capacity; or</p> <p>(c) the duties performed by any person as a Chairperson or a Member or a Director in a body established by the Central Government or a State Government or local authority and who is not deemed as an employee before the commencement of this clause.</p> <p>4. Services of funeral, burial, crematorium or mortuary including transportation of the deceased.</p> <p>5. Sale of land and, subject to clause (b) of paragraph 5 of Schedule II, sale of building.</p> <p>6. Actionable claims, other than lottery, betting and gambling.</p> <p><i>Explanation.</i>—For the purposes of paragraph 2, the term “court” includes District Court, High Court and Supreme Court.</p>	

STATEMENT OF OBJECTS AND REASONS

Presently, the Central Government levies tax on, manufacture of certain goods in the form of Central Excise duty, provision of certain services in the form of service tax, inter-State sale of goods in the form of Central Sales tax. Similarly, the State Governments levy tax on and on retail sales in the form of value added tax, entry of goods in the State in the form of entry tax, luxury tax and purchase tax, etc. Accordingly, there is multiplicity of taxes which are being levied on the same supply chain.

2. The present tax system on goods and services is facing certain difficulties as under—

(i) there is cascading of taxes as taxes levied by the Central Government are not available as set off against the taxes being levied by the State Governments;

(ii) certain taxes levied by State Governments are not allowed as set off for payment of other taxes being levied by them;

(iii) the variety of Value Added Tax Laws in the country with disparate tax rates and dissimilar tax practices divides the country into separate economic spheres; and

(iv) the creation of tariff and non-tariff barriers such as octroi, entry tax, check posts, etc., hinder the free flow

of trade throughout the country. Besides that, the large number of taxes create high compliance cost for the taxpayers in the form of number of returns, payments, etc.

3. In view of the aforesaid difficulties, all the above mentioned taxes are proposed to be subsumed in a single tax called the goods and services tax which will be levied on supply of goods or services or both at each stage of supply chain starting from manufacture or import and till the last retail level. So, any tax that is presently being levied by the Central Government or the State Governments on the supply of goods or services is going to be converged in goods and services tax which is proposed to be a dual levy where the Central Government will levy and collect tax in the form of central goods and services tax and the State Government will levy and collect tax in the form of state goods and services tax on intra-State supply of goods or services or both.

4. In view of the above, it has become necessary to have a State legislation in each state, namely the State Goods and Services Tax Bill, 2017. The proposed legislation will confer power upon the State Government for levying goods and services tax on the supply of goods or services or both which takes place within a State.

The proposed legislation in the context of Delhi i.e. the Delhi Goods and Services Tax Bill, 2017 will simplify and harmonise the indirect tax regime in the country. It is expected to reduce cost of production and inflation in the economy, thereby making the Indian trade and industry more competitive, domestically as well as internationally. Due to the seamless transfer of input tax credit from one stage to another in the chain of value addition, there is an in-built mechanism in the design of goods and services tax that would incentivise tax compliance by taxpayers. The proposed goods and services tax will broaden the tax base, and result in better tax compliance due to a robust information technology infrastructure.

5. Accordingly, the proposed Bill titled the Delhi Goods and Services Tax Bill, 2017, *inter alia*, provides for the following, namely:—

(a) to levy tax on all intra-State supplies of goods or services or both except supply of alcoholic liquor for human consumption at a rate to be notified, not exceeding twenty per cent. as recommended by the Goods and Services Tax Council (the Council);

(b) to broad base the input tax credit by making it available in respect of taxes paid on any supply of goods or services or both used or intended to be used in the course or furtherance of business;

(c) to impose obligation on electronic commerce operators to collect tax at source, at such rate not exceeding one per cent. of net value of taxable supplies, out of payments to suppliers supplying goods or services through their portals;

(d) to provide for self-assessment of the taxes payable by the registered person;

(e) to provide for conduct of audit of registered persons in order to verify compliance with the provisions of the Act;

(f) to provide for recovery of arrears of tax using various modes including detaining and sale of goods, movable and immovable property of defaulting taxable person;

(g) to provide for powers of inspection, search, seizure and arrest to the officers;

(h) to authorise the Goods and Services Tax Appellate Tribunal established by the Central Government for hearing appeals against the orders passed by the Appellate Authority or the Revisional Authority;

(i) to make provision for penalties for contravention of the provisions of the proposed Legislation;

(j) to provide for an anti-profiteering clause in order to ensure that business passes on the benefit of reduced tax incidence on goods or services or both to the consumers; and

(k) to provide for elaborate transitional provisions for smooth transition of existing taxpayers to goods and services tax regime.

6. The Notes on clauses explain in detail the various provisions contained in the Delhi Goods and Services Tax Bill, 2017.

7. The Bill seeks to achieve the above objectives.

NEW DELHI;

MANISH SISODIA.

Dated the 31st May, 2017.

Notes on clauses

Clause 1 provides for short title, extent and commencement of the proposed Act.

Clause 2 defines various terms and expressions used in the proposed Act.

Clause 3 provides for appointment of Commissioners and other class of officers as may be required for carrying out the purposes of the proposed Act. This clause also provides that the officers under the Delhi Value Added Tax Act, 2004 shall be deemed to be the officers appointed under the proposed Act.

Clause 4 provides for appointment of officers in addition to the officers appointed under clause 3 of the proposed legislation.

Clause 5 provides for powers to officers to discharge functions under the proposed Act.

Clause 6 provides for authorisation of Central tax officers, subject to such conditions as shall be notified by the Central Government on recommendations of the Council, to be proper officers for the purposes of the proposed Act.

Clause 7 provides the scope of supply. This clause provides for activities to be treated as supply. This clause further provides that certain activities, specified in Schedule I of the proposed Act, even made or agreed to be made without a consideration shall be treated as supply. This clause also provides activities which are neither supply of goods nor supply of services.

Clause 8 provides for the tax liability on a composite or a mixed supply.

Clause 9 provides for levy and collection of Delhi Goods and Services Tax (State Tax) on all intra-State supplies of goods or services or both except on the supply of alcoholic liquor for human consumption, on the value determined under clause 15 at a rate not exceeding twenty per cent. This clause further provides that—

(i) state tax on the supply of petroleum crude, high speed diesel, motor spirit (commonly known as petrol), natural gas and aviation turbine fuel to be levied with effect from a date notified by the Government of Delhi on the recommendations of the Council;

(ii) the Government of Delhi to notify categories of supply of goods or services or both, the tax on which shall be paid on reverse charge basis by the recipient of such goods or services or both, on the recommendations of the Council;

(iii) the state tax in respect of the supply of taxable goods or services or both by a supplier, who is not registered, to a registered person shall be paid by such person on reverse charge basis;

(iv) the Government of Delhi may notify categories of services, the tax on intra-State supplies of which shall be paid by the electronic commerce operator if such services are supplied through it, on the recommendations of the Council.

Clause 10 provides for composition levy. It is an alternative method of levy of tax designed for small taxpayers whose turnover is upto prescribed limit. This clause also provides that certain categories of supplies or suppliers cannot opt for composition levy. A person opting to pay under this clause can neither take credit of taxes paid on inputs nor it can collect any tax from the recipient.

Clause 11 confers powers on the Government of Delhi to exempt either absolutely or conditionally goods or services or both of any specified description from the whole or part of the state tax, on the recommendations of the Council. It also confers powers on the Government of Delhi to exempt from payment of tax any goods or services or both, by special order, on the recommendations of the Council.

Clause 12 provides for time of supply of goods. This clause extensively elaborates time of supply in normal situations, in reverse charge situations, in situations of supply of voucher and remainder situations.

Clause 13 provides for time of supply of services. This clause extensively elaborates time of supply in normal situations, in reverse charge situations, in situations of supply of voucher and remainder situations.

Clause 14 provides for time of supply of goods or services or both where rate of tax changes.

Clause 15 provides for value of taxable supply. This clause provides that the value of a supply of goods or services or both shall be the transaction value, which is the price actually paid or payable given the conditions that the supplier and the recipient of the supply are not related and the price is the sole consideration for the supply. This clause enumerates the items which are to be included in the value and the items which are not to be included in the value for the purpose of calculation of tax. This clause also provides power to make rules of valuation in certain situations.

Clause 16 provides for eligibility, conditions and time period for taking input tax credit. This clause provides that a registered person is entitled to take credit of input tax charged on any supply of goods or services or both to him which are used or intended to be used in the course or furtherance of his business.

Clause 17 provides for apportionment of input tax credit and blocked input tax credit. This clause provides for the extent of apportionment of credit where the goods or services or both are used partly for the purpose of any business and partly for other purposes or where the goods or services or both are used by the registered person partly for effecting

taxable supplies including zero-rated supplies. This clause further provides for a specific mechanism of taking of input tax credit by a banking company or a financial institution including a non-banking financial company engaged in supplying services by way of accepting deposits, extending loans or advances. This clause also provides the list of supplies on which input tax credit cannot be availed of.

Clause 18 provides for availability of credit in special circumstances like new registration, shifting from composition levy to normal levy, exempted supplies becoming taxable and *vice versa*.

Clause 19 provides for special provision for taking input tax credit by a person (called "principal") who has sent inputs or capital goods for job work subject to prescribed conditions.

Clause 20 provides for an "Input Service Distributor" who shall distribute the credit of input tax in prescribed manner and subject to specified conditions.

Clause 21 provides for manner of recovery of excess input tax credit distributed by the Input Service Distributor along with interest thereon.

Clause 22 seeks to create liability for registration on every supplier in the State from where he makes a taxable supply of goods or services or both, if his aggregate turnover in a financial year exceeds prescribed amount. This clause creates liability for registration under the proposed Act with effect from the appointed day on every person who is registered under an existing law.

Clause 23 provides that certain categories of persons are not liable for registration.

Clause 24 provides for compulsory registration of certain suppliers notwithstanding that their aggregate turnover is below the exempted threshold provided in clause 22.

Clause 25 provides for procedure of registration. This clause provides that every person who is liable to be registered shall apply for registration within thirty days from the date on which he becomes liable to registration. This clause further provides that a casual taxable person or a non-resident taxable person shall apply for registration at least five days prior to the commencement of business. This clause also provides for voluntary registration. This clause also provides that certain organisations would be issued Unique Identity Number mainly for the purpose of refund of taxes paid on inward supplies.

Clause 26 provides for deemed registration or rejection of application for registration under the proposed Act where registration number or Unique Identity Number has been issued or rejected under Central Goods and Services Tax Act.

Clause 27 provides for special provisions for a casual taxable person and a non-resident taxable person.

Clause 28 provides for amendment of registration. This clause also provides for deemed approval or rejection of amendment where any approval or rejection of amendments has been done under the Central Goods and Services Tax Act.

Clause 29 provides that the proper officer may, either on his own motion or on an application filed by the registered person or by his legal heirs, in case of death of such person, cancel the registration under certain specified circumstances. This clause further provides that cancellation of registration under the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a cancellation of registration under the proposed Act.

Clause 30 provides for revocation of cancellation of registration where the registration had been cancelled by the proper officer on his own motion. This clause further provides that the revocation of cancellation of registration under the Central Goods and Services Tax Act shall be deemed to be a revocation of cancellation of registration under the proposed Act.

Clause 31 provides for issuance of tax invoice within the prescribed period showing the prescribed particulars. This clause also empowers the Government to specify services, for which any other document issued in lieu of tax invoice, shall be deemed to be tax invoice and also specify services where no tax invoice is required to be issued. This clause provides for issue of documents other than tax invoice in certain cases.

Clause 32 prohibits an unregistered person to collect tax. This clause also provides that a registered person shall collect tax in accordance with the provisions of the proposed Act.

Clause 33 provides that where any supply is made for a consideration, every person who is liable to pay tax for such supply shall prominently indicate the amount of tax forming part of the price in all documents relating to assessment, tax invoice and other like documents.

Clause 34 provides for issuance of a credit notes and debit notes in specified situations. This clause also provides for maximum time and return in which details of credit note and debit note are required to be declared.

Clause 35 provides that every registered person shall keep and maintain at his principal place of business records showing true account of specified particulars. This clause casts responsibility on owner or operator of warehouse or godown or any other place used for storage of goods and on every transporter to maintain specified records. This clause empowers the Commissioner to notify a class of taxable persons to maintain additional accounts or documents for specified purpose or to maintain accounts in other prescribed manner. This clause provides that every registered person

whose turnover during a financial year exceeds the prescribed limit shall get his accounts audited by a chartered accountant or a cost accountant.

Clause 36 requires every registered person to retain books of account or other records until the expiry of seventy two months from the due date of furnishing of annual return for the year pertaining to such accounts and records.

Clause 37 provides for manner and time of furnishing of the details of outward supplies by a registered person, other than certain specified categories of registered persons, and manner and time of communication of these details to the corresponding recipients. This clause further provides for manner and time of acceptance or rejection of the details communicated from the recipients. This clause also provides for manner and time period for rectification of error or omission and payment of tax and interest, if any, as a consequence of the unmatched details of outward supplies with inward supplies of the recipient.

Clause 38 provides for manner and time of furnishing of the details of inward supplies by a registered person, other than certain specified categories of registered persons, including verification, validation, modification or deletion of details of outward supplies furnished by the corresponding suppliers. This clause further provides for manner and time of communication of the details of supplies, as modified or accepted by the recipient, to the corresponding supplier. This clause also provides for manner and time period for rectification of error or omission and payment of tax and interest, if any, as a consequence to the unmatched details.

Clause 39 provides for manner, conditions and time of furnishing of returns by different categories of registered persons. This clause further provides that the tax is required to be paid by the due date of filing of return. This clause also provides for the time limit upto which rectification of any omission or incorrect particulars in the return can be carried out.

Clause 40 provides that every registered person who has made outward supplies in the period between the date on which he became liable to registration till the date on which registration has been granted shall declare the same in the first return furnished by him after grant of registration.

Clause 41 provides that every registered person shall be entitled to provisionally take the credit of eligible input tax subject to prescribed conditions and restrictions. This clause further provides that the credit taken on provisional basis shall be utilised only for payment of output tax self-assessed in the return in which the credit on provisional basis is taken.

Clause 42 provides for matching, in prescribed time and manner, of details of inward supplies furnished by a recipient for a tax period with the corresponding details. This clause also provides for the consequences of mis-match.

Clause 43 provides for matching, in prescribed time and manner, of details of every credit note relating to outward supply furnished by a supplier for a tax period with the corresponding details. This clause also provides for the consequences of mis-match.

Clause 44 provides that every registered person, other than certain specified category of persons, shall furnish an annual return along with a copy of the audited annual accounts, a reconciliation statement and such other particulars as may be prescribed.

Clause 45 provides that every registered person whose registration has been cancelled shall furnish a final return within prescribed period.

Clause 46 provides for issuance of notice to registered person who has failed to furnish a return.

Clause 47 provides for levy of fee for delayed filing of return.

Clause 48 provides for the manner of approval of goods and services tax practitioner, their eligibility conditions, duties and obligations, manner of removal. This clause also provides that a registered person may authorise a practitioner for filing of various returns, but all the responsibilities under the proposed Act lie with the registered person.

Clause 49 provides for payment of tax, interest, penalty and other amounts. This clause further provides for maintenance of electronic cash ledger. This clause provides that the input tax credit as self-assessed in the return of a registered person shall be credited to his electronic credit ledger. This clause also provides for the manner in which the amount in the electronic cash ledger or electronic credit ledger can be used. This clause also provides for the ordering of the utilisation of input tax credit for payment of tax, and provides restriction on certain cross-utilisation. This clause also requires a person to discharge his liabilities in a given order.

Clause 50 provides for interest on delayed payment of tax. This clause fixes the ceiling of interest rate in normal and other specified situations.

Clause 51 provides for deduction of tax at source by Government departments, local authorities, government agencies and other notified persons, at the rate of one per cent. from the payment made or credited to the supplier in specified situations. This clause elaborates on date of deduction, date of payment of the deducted amount to the credit of Government and filing of prescribed statements.

Clause 52 provides for collection of tax at source by an electronic commerce operator, at a notified rate where the consideration for supplies is to be collected by the operator. This clause elaborates on date of collection, date of payment of the amount to the credit of Government and filing of prescribed statements.

Clause 53 provides that on utilisation of input tax credit availed under the proposed Act for payment of tax dues under the Integrated Goods and Services Tax Act, the amount collected as state tax shall stand reduced by an amount equal to such credit so utilised and the Government of Delhi shall transfer an amount equal to the amount so reduced from the state tax account to the integrated tax account in prescribed manner and time.

Clause 54 provides that refund of excess tax and interest or any other amount paid can be claimed before the expiry of two years from the relevant date. This clause further provides that in case of zero-rated supplies and inverted tax structure, refund of unutilised input tax credit can be claimed. This clause also provides for the time limit within which the refund application has to be decided. This clause also provides that in case of zero-rated supplies advance refund of ninety per cent. can be granted.

Clause 55 provides for refund of taxes paid on the notified supplies of goods or services or both received by specified person or class of persons.

Clause 56 provides for payment of interest on delayed payment of refund. It fixes the ceiling of interest rate in normal and other specified situations.

Clause 57 provides that tax and other amounts which are otherwise refundable barring unjust enrichment shall be credited to a Consumer Welfare Fund.

Clause 58 provides that the money in the Consumer Welfare Fund would be used for the welfare of the consumers. This clause also provides that the Government or the authority specified by it shall maintain proper and separate account of the Fund and prepare an annual statement of accounts.

Clause 59 provides for self-assessment by every registered person.

Clause 60 provides for provisional assessment on request by a taxable person in specified situations. This clause provides for the manner of paying tax and also the manner and time limits for finalising of provisional assessment.

Clause 61 provides for scrutiny of returns and other particulars and manner of sorting out the discrepancies in the returns and also taking corrective measures for realisation of short-payment.

Clause 62 provides procedure of assessment of persons who have not filed returns by the due dates. This clause provides that the proper officer may proceed to assess the tax liability of the non-filer to the best of his judgment.

Clause 63 provides procedure of assessment of persons who are not registered though they are liable to get registered. This clause provides that the proper officer may proceed to assess the tax liability of the unregistered person to the best of his judgment.

Clause 64 provides for summary assessment in special circumstances with the permission of Additional Commissioner or Joint Commissioner.

Clause 65 provides detailed procedure for conduct of audit of records, maintained by a registered person, to verify the correctness of tax liability and tax payment.

Clause 66 provides for audit of a registered person, under certain circumstances, by a chartered accountant or a cost accountant.

Clause 67 provides for power and provides for the detailed procedure for carrying out search, seizure and inspection to unearth non-compliance of provisions of the proposed Act. This power can be exercised by an officer not below the rank of Joint Commissioner or by an officer authorised by Joint Commissioner.

Clause 68 provides for inspection of goods in movement. This clause provides that the Government may require the person-in-charge of a conveyance carrying any consignment of goods of value exceeding specified amount to carry with him prescribed documents and devices.

Clause 69 provides for power to arrest a person who has committed certain specified offence.

Clause 70 provides for power to summon any person whose attendance is considered necessary in any inquiry.

Clause 71 provides that any authorised officer shall have access to any place of business of a registered person for the purposes of carrying out any audit, scrutiny, verification and checks as may be necessary to safeguard the interest of revenue.

Clause 72 provides for officers of Police, Railways, Customs and other officers engaged in collection of land revenue to assist officers involved in implementation of the proposed Act.

Clause 73 provides for determination of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised for any reason other than fraud or any wilful misstatement or suppression of facts. This clause further provides that the adjudication order will be issued within three years from the due date of filing of annual return for the year to which the discrepancy is noticed. This clause also provides that the show cause notice is required to be issued at least three months prior to the time limit. It has also been provided that SCN need not be issued if tax along with interest is paid before issue of such notice. This clause also provides that where any person chargeable with tax pays the tax along

with interest within thirty days of issue of show cause notice, no penalty shall be payable and all proceedings in respect of the notice shall be deemed to be concluded.

Clause 74 provides that in cases of tax not paid or short paid or erroneously refunded or input tax credit wrongly availed or utilised, for reasons of fraud or wilful misstatement or suppression of facts, the adjudication order will be issued within five years from the due date of filing of annual return for the year to which the discrepancy is noticed. Further, the show cause notice is required to be issued at least six months prior to the time limit. This clause also provides that such notice need not be issued if tax along with interest and penalty equal to fifteen per cent. of tax is paid before issue of such notice. This clause also provides that where any person chargeable with tax pays the tax along with interest and penalty equal to twenty five per cent. of tax within thirty days of issue of show cause notice, all proceedings in respect of the notice shall be deemed to be concluded. This clause also provides that where any person chargeable with tax pays the tax along with interest and penalty equal to fifty per cent. of tax within thirty days of communication of order, all proceedings in respect of the notice shall be deemed to be concluded.

Clause 75 provides for general provisions for determination of tax. This clause provides that the period of stay, if any, would be excluded while calculating the time period for issuance of show cause notice or passing of order. This clause further provides that the time period during which appeal is pending in any appellate fora would be excluded while calculating the time period for issuance of such notice or passing of order. This clause also provides that no such notice needs to be issued for recovery of unpaid self-assessed tax as per return and interest thereon. This clause also provides that the adjudication proceedings shall be deemed to be concluded, if the order is not issued within the statutory time limit.

Clause 76 provides that any amount collected as tax, along with interest, from customers shall be paid to account of the Government regardless of whether the supplies are taxable or not. This clause further provides for issuance of a show cause notice for the amount collected but not deposited. This clause also provides that the order needs to be issued within one year from the date of issuance of such notice.

Clause 77 provides for refund of state tax in situations where intra-State supplies are subsequently held to be inter-State supplies.

Clause 78 provides that any amount payable in pursuance of an order shall be paid by such person within a period of three months, except in certain specified cases, from the date of service of order failing which recovery proceedings shall be initiated.

Clause 79 provides for various modes of recovery of amount payable under the proposed Act.

Clause 80 provides for payment of arrears in a maximum of twenty-four instalments.

Clause 81 provides that transfer of property would be void in certain specified circumstances.

Clause 82 provides that liabilities under the proposed Act shall be the first charge on the property of the taxable person, save as otherwise provided in the Insolvency and Bankruptcy Code, 2016.

Clause 83 provides that during the pendency of any proceedings under certain sections of the proposed Act, the Commissioner by order in writing attach provisionally any property for a period of one year from the date of the order for provisional attachment.

Clause 84 provides for continuation and validation of certain recovery proceedings.

Clause 85 provides that where a taxable person transfers his business in whole or in part, the taxable person and the person to whom the business is so transferred shall, jointly and severally, be liable wholly or to the extent of such transfer, to pay the tax, interest or any penalty due from the taxable person upto the time of such transfer.

Clause 86 provides that where an agent supplies or receives any taxable goods on behalf of his principal, such agent and his principal shall, jointly and severally, be liable to pay the tax payable on such goods.

Clause 87 provides for the liability of companies when two or more companies are amalgamated or merged in pursuance of an order of court or of Tribunal or otherwise.

Clause 88 provides for the liability of company and its directors when any company is being wound up.

Clause 89 provides for the liability of director of a private company.

Clause 90 provides for the liability of the firm and each of the partners of the firm.

Clause 91 provides for the liability of guardians and trustees acting on behalf of a minor or other incapacitated person.

Clause 92 provides for the liability of the Court of Wards, the Administrator General, the Official Trustee or any receiver or manager.

Clause 93 provides for special provisions regarding liability to pay tax, interest or penalty in certain cases.

Clause 94 provides for liability where a taxable person is a firm or an association of persons or a Hindu undivided family and such firm, association or family has discontinued business.

Clause 95 contains definitions of the terms and expressions used in the Chapter on Advance Ruling.

Clause 96 provides for constitution of the Authority for Advance Ruling by the Government of Delhi and also empowers the Government to notify any authority located in another State to act as the Authority for the National Capital Territory of Delhi.

Clause 97 provides for form, manner and fee for filing of an application for advance ruling. This clause also lists the nature of questions on which advance ruling can be sought.

Clause 98 provides for the detailed procedure for filing of an application for advance ruling. This clause provides that the advance ruling is to be pronounced within ninety days from the date of receipt of application.

Clause 99 provides for constitution of the Appellate Authority for Advance Ruling by the Government and also empowers the Government to notify any authority located in another State to act as the Appellate Authority for the National Capital Territory of Delhi.

Clause 100 provides that any party aggrieved by any advance ruling may appeal to the Appellate Authority within a period of thirty days from the date on which the ruling sought to be appealed against is communicated.

Clause 101 provides that the Appellate Authority shall pass order within a period of ninety days from the date of filing of the appeal or a reference. This clause also provides that where the members of the Appellate Authority differ on any point referred to in appeal or reference; it shall be deemed that no advance ruling can be issued in respect of the question under the appeal or reference.

Clause 102 provides that the Authority or the Appellate Authority may amend any order passed by it so as to rectify any error apparent on the face of the record, except under certain specified circumstances, within a period of six months from the date of the order.

Clause 103 provides that the advance ruling shall be binding only on the applicant and on the concerned officer or the jurisdictional officer in respect of the applicant. This clause also provides that the advance ruling shall be binding unless there is a change in law or facts.

Clause 104 provides that the advance ruling shall be void where the ruling has been obtained by fraud or suppression of material facts or misrepresentation of facts.

Clause 105 provides that the Authority or the Appellate Authority shall have all the powers of a civil court under the Code of Civil Procedure, 1908 for the purpose of exercising its powers under the proposed Act.

Clause 106 provides that the Authority or the Appellate Authority shall have power to regulate its own procedure.

Clause 107 provides the tax payer or the department may appeal against any decision or order passed by an adjudicating authority under the proposed Act or the Central Goods and Services Tax Act within three months or six months respectively. The clause provides for a pre-deposit of ten per cent. for admittance of the appeal filed by the tax payer and grant of automatic stay on the remaining amount.

Clause 108 provides power of revision to the Commissioner. The clause provides that the Revisional Authority, on his own motion, or upon request from Commissioner of Central tax may revise an order passed by an officer subordinate to him if he considers it to be erroneous and prejudicial to the interest of revenue.

Clause 109 provides that the Appellate Tribunal constituted under the Central Goods and Services Tax Act shall be the Appellate Tribunal for appeals against the orders passed by the Appellate Authority or the Revisional Authority under the proposed Act.

Clause 110 provides for the qualification, appointment, conditions of services, removal of the President and Members of the Appellate Tribunal of the State Bench and Area Benches shall be as per the provisions in the Central Goods and Services Tax Act.

Clause 111 provides for the procedure to be followed by the Appellate Tribunal while disposing of any proceedings before it or appeal presented before it.

Clause 112 provides for the detailed procedure for filing of appeal before the Appellate Tribunal. The clause further provides for filing of appeal by order passed under the Central Goods and Services Tax Act to be appealed in the Tribunal. The clause also provides for a pre-deposit of twenty per cent. of amount of tax in dispute for admittance of appeal filed by the taxpayer in the Appellate Tribunal and grant of automatic stay on the remaining amount.

Clause 113 provides for the process to be followed by Appellate Tribunal while confirming, modifying or annulling the decision or order against which an appeal has been filed.

Clause 114 provides for financial and administrative power of the State President of the Appellate Tribunal over the State and Area Benches.

Clause 115 provides for payment of interest where the pre-deposits are required to be refunded consequent to any order of the Appellate Authority or of the Appellate Tribunal.

Clause 116 provides for qualification, disqualification and other procedures relating to authorised representative.

Clause 117 provides that the appeals to the High Court can be filed by a person, aggrieved by an order of the State Bench or Area Bench of the Tribunal, within one hundred and eighty days. This clause also provides that the High Court may admit the appeal on substantial question of law.

Clause 118 provides for appeal before the Supreme Court from an order of the National Bench or Regional Benches of the Appellate Tribunal, or from any judgment given or order passed by the High Court.

Clause 119 provides that sums due to the Government in accordance with an order passed by the National, Regional, State, Area Bench or a High Court shall be payable notwithstanding that an appeal has been preferred to the High Court or the Supreme Court.

Clause 120 confers powers on the Commissioner to issue orders or instructions or directions fixing monetary limits below which appeals will not be filed by the department.

Clause 121 provides for matters in which any decision taken or order passed by an officer of state tax cannot be appealed against.

Clause 122 provides for a list of offences such as supply of goods without invoice, issue of invoice without supply, etc., which shall be liable to penalty. The clause also provides for offences such as aiding or abetting offences specified, fails to appear on a summon, etc., will be liable of a penalty of twenty-five thousand rupees.

Clause 123 provides for a penalty for failure to furnish information return under clause 150.

Clause 124 provides for a fine on any person who fails to furnish any information or return under clause 151.

Clause 125 provides for a general penalty extending to twenty-five thousand rupees for any contravention to the provisions of the proposed Act and where no penalty has been separately specified for such contravention.

Clause 126 provides for general disciplines which shall be followed by the officer imposing penalty under the proposed Act.

Clause 127 provides for the proper officer to impose penalty which is not covered under any proceedings under specified clauses of the proposed Act.

Clause 128 confers power to the Government to waive penalty in part or full, any penalty referred to in specified sections of the proposed Act or any late fee for specified class of taxpayers and under specified circumstances.

Clause 129 provides for provisions relating to detention, seizure and release of goods and conveyances in transit. This clause also provides for penalty which shall be payable for release of such goods.

Clause 130 provides for provisions relating to confiscation of goods or conveyances. This clause also provides for a fine which shall be payable for release of such goods.

Clause 131 clarifies that confiscation made or penalty imposed under the provisions of the proposed Act should not prevent the infliction of any other punishment imposed under provisions of the proposed Act or under any other law for the time being in force.

Clause 132 provides for a list of offences which shall be punishable with gradation of fine and imprisonment depending on the amount of tax evaded or the amount of input tax credit wrongly availed or utilised or the amount of refund wrongly taken. This clause also provides for offences which shall be non-cognisable and bailable or cognisable and non-bailable.

Clause 133 provides for punishment and imprisonment for wrongful declaration of information by any person engaged in connection with the collection of statistics under clause 151 or any person engaged in connection with the provision of service on the common portal or the agent of common portal.

Clause 134 provides for restriction to Courts to take cognizance of any offence under the proposed Act or the rules made thereunder except with the previous sanction of the Commissioner.

Clause 135 provides presumption of culpable mental state by the court unless otherwise proved by the accused.

Clause 136 provides for relevancy of the statements made and signed by a person on appearance in response to any summons.

Clause 137 provides that if the person who committed an offence is a company, the person who was in charge and responsible for the conduct of business of the company shall be deemed to be guilty of the offence and punished accordingly.

Clause 138 provides for compounding of any offence under the proposed Act, either before or after the institution of prosecution, by the Commissioner on payment of a prescribed compounding amount.

Clause 139 provides for migration of taxpayers registered under the existing law to be issued provisional registration under the proposed Act, if the said taxpayer is required to be registered under the provisions of the proposed Act.

Clause 140 provides for transitional arrangements for carrying forward of input tax credit available under the existing law.

Clause 141 provides for transitional provisions relating to job work.

Clause 142 provides for miscellaneous provisions for transition of existing tax payers in various situations.

Clause 143 provides for the procedure and conditions for sending any inputs or capital goods, without payment of tax to a job worker for job-work.

Clause 144 provides for presumption to be made for documents tendered by the prosecution in evidence unless the contrary is proved by the person being prosecuted.

Clause 145 provides for admissibility of micro films, facsimile copies of documents and computer printouts as evidence.

Clause 146 provides for notification of the Common Goods and Services Tax Electronic Portal for facilitating registration, payment of tax, furnishing of returns, computation and settlement of integrated tax, electronic way bill and other functions.

Clause 147 confers powers on the Government to notify certain supplies of goods as deemed exports on the recommendations of the Council.

Clause 148 confers powers on the Government to notify certain classes of registered persons, and the special procedures to be followed by such persons on the recommendations of the Council.

Clause 149 provides for the assignment and provision of parameters for Goods and Services tax compliance rating.

Clause 150 provides for list of persons who are obligated to furnish information return and the procedure to be followed by such persons.

Clause 151 confers powers on the Commissioner to direct collection of statistics relating to any matter in connection with the proposed Act.

Clause 152 provides for situations and instances where there is a bar on disclosure of information required under clause 151.

Clause 153 confers powers on officers to take assistance of any expert at any stage of scrutiny, inquiry, investigation or any other proceedings.

Clause 154 provides for the power of the Commissioner or an officer authorised by him to take samples of goods from the possession of any taxable person.

Clause 155 provides that the burden of proving rightful claim of input tax credit will lie on the person claiming the credit.

Clause 156 provides that all persons discharging functions under the proposed Act shall be deemed to be public servants within the meaning of section 21 of the Indian Penal Code, 1860.

Clause 157 provides that no suit, prosecution or other legal proceedings shall lie against the President, State President, Members, officers or other employees of the Appellate Tribunal or any other officer appointed or authorised under the proposed Act for anything which is in good faith done or intended to be done under the proposed Act or rules made thereunder.

Clause 158 provides that no particulars contained in any statement made, return furnished or accounts or documents produced in accordance with the proposed Act should be disclosed. The clause also provides for specific circumstances under which such information can be disclosed.

Clause 159 confers power on the Commissioner, or any other officer authorised by him to publish the name of any person and any other particulars relating to any proceedings or prosecution under the proposed Act if it is necessary in public interest to do so.

Clause 160 provides that no assessment, re-assessment, adjudication, review, revision, appeal, rectification, notice, summons or other proceedings done, accepted, made, issued, initiated, or purported to have been done, accepted, made, issued, initiated in pursuance of any of the provisions of the proposed Act shall be invalid or deemed to be invalid merely by reason of any mistake, defect or omission.

Clause 161 provides that any authority can rectify any error which is apparent on the face of record in any decision or order or notice or certificate or any other document.

Clause 162 restricts civil courts to have jurisdiction to deal with or decide any question arising from or relating to anything done under the proposed Act.

Clause 163 provides that a fee may be charged for a copy of any order or document provided to any person on an application made by him.

Clause 164 confers powers on the Government of Delhi to make rules for carrying out the provisions of the proposed Act on recommendations of the Council.

Clause 165 confers powers on the Government of Delhi to make regulations for carrying out the provisions of the proposed Act.

Clause 166 provides for laying of rules, regulations and notifications made by the Government of Delhi before the Legislative Assembly of Delhi.

Clause 167 provides that the Commissioner may direct that any power exercisable by any authority or officer under the proposed Act may be exercisable also by another authority or officer, subject to specified conditions.

Clause 168 confers powers to the Commissioner to issue orders, instructions or directions to the central tax officers for uniform implementation of the provisions of the proposed Act.

Clause 169 provides for methods which should be followed for communication of any decision, order, summons, notice or other communication under the proposed Act.

Clause 170 provides for rounding off of tax, interest, penalty, fine or any other sum payable and the amount of refund or any other sum due.

Clause 171 provides that it is mandatory to pass on the benefit due to reduction in rate of tax or from input tax credit to the consumer by way of commensurate reduction in prices.

Clause 172 confers powers on the Central Government to make such provisions not inconsistent with the provisions of the proposed Act or the rules or regulations by a general or special order, on the recommendations of the Council within a period of three years from the date of commencement of the proposed Act.

Clause 173 provides for amendments in the specified Acts, save as otherwise provided in the proposed Act.

Clause 174 provides repeal of certain Acts and savings of certain actions.

FINANCIAL MEMORANDUM

Clause 53 of the Bill provides for apportionment of tax and settlement of funds on account of transfer of utilisation of input tax credit under this Bill for the payment of tax dues under the Integrated Goods and Services Tax Act by the Government of Delhi.

2. Clause 96 of the Bill provides for constitution of the Authority for Advance Ruling by the Government of Delhi and also empowers the Government to notify any authority located in another State to act as the Authority for the National Capital Territory of Delhi.

3. *Clause 99* provides for constitution of the Appellate Authority for Advance Ruling by the Government and also empowers the Government to notify any authority located in another State to act as the Appellate Authority for the National Capital Territory of Delhi.

4. Clause 109 of the Bill provides that the Goods and Services Tax Tribunal constituted under the Central Goods and Services Tax Act shall be the Appellate Tribunal for hearing appeals against the orders passed by the Appellate Authority or the Revisional Authority under this Act and that the constitution and jurisdiction of the State Bench and the Area Benches located in the State shall be in accordance with the provisions of section 109 of the Central Goods and Services Tax Act. Clause 110 provides that the salary and allowances payable to the President and Members of the State Bench and the Area Benches shall be in accordance with the provisions of section 110 of the Central Goods and Services Tax Act.

5. Sub-clause (2) of clause 171 of the Bill provides for establishment of an Authority by the Central Government for an anti-profiteering clause in order to ensure that business passes on the benefit of reduced tax incidence on goods or services or both to the consumers.

6. The total financial implications in terms of recurring and non-recurring expenditure involved in carrying out the various functions under the proposed Legislation would be borne by the Government of National Capital Territory of Delhi. Most of the existing officers and staff of the Department of Trade and Taxes would be used for carrying out the various functions under the Bill. However, it is not possible to estimate the exact recurring and non-recurring expenditure from the Consolidated Fund of Delhi at this stage.

MEMORANDUM REGARDING DELEGATED LEGISLATION

Clause 164 of the Delhi Goods and Services Bill, 2017 seeks to empower the Government of National Capital Territory of Delhi to make rules, *inter alia*, in the following matters, namely:—

(a) collection of taxes under section 9; (b) restrictions and conditions applicable to person opting for composition levy on under section 10; (c) value of the supply of goods or services or both under section 15; (d)

conditions and restrictions on availing input tax credit and categories of tax paying documents under section 16; (e) depreciation on capital goods and plant and machinery as specified under section 18; (f) conditions and restrictions to allow input tax credit on inputs sent to a job-worker for job-work under section 19; (g) conditions and restrictions to allow input tax credit on capital goods sent to a job worker for job work under section 19; (h) manner of distribution of input tax credit by input service distributor under section 20; (i) manner and conditions for getting registered under section 25; (j) conditions for getting separate registration for business vertical under section 25; (k) period in which tax invoice is to be issued under section 31; (l) particulars to be declared on a tax invoice and a time in which such invoices are to be issued under section 31; (m) particulars to be declared on a credit or debit note under section 34; (n) particulars required to be maintained by a registered person at his principal place of business under section 35; (o) form and manner in which details of outward supplies are to be declared under section 37; (p) form and manner in which details of inward supplies are to be declared under section 38; (q) form and manner in which a return is to be filed by the registered person under section 39; (r) conditions and restrictions for provisional acceptance and claim of input tax credit under section 41; (s) calculation of interest on delayed payment of tax under section 50; (t) manner in which tax is to be deducted at source under section 51; (u) manner in which tax is to be collected at source under section 52; (v) manner and time for transfer of input tax credit under section 53; (w) form and manner in which application of refund is to be made under section 54; (x) condition and restrictions on refund in certain cases under section 55; (y) manner in which consumer welfare fund is to be constituted under section 57; (z) manner in which consumer welfare fund is to be utilised under section 58; (za) form in which a bond for provisional assessment is to be filed under section 60; (zb) manner in which returns are to be scrutinised under section 61; (zc) frequency and manner in which audit will be taken by tax authorities under section 65; (zd) qualifications, method of appointment, and terms and conditions of services for members of the Authority for Advance Ruling under section 96; (ze) manner in which advance ruling pronounced is to be certified under section 98; (zf) form, manner and fee for appeal to Appellate Authority under section 100; (zg) manner in which Advance Ruling pronounced by the Appellate Authority is to be certified under section 101; (zh) appeals to Appellate Authority under section 107; (zi) verification of memorandum of cross objection under section 112; (zj) manner in which President exercise his financial and administrative powers under section 114; (zk) time, form and manner in which persons furnish information return under section 150; (zl) form and manner in which statistics is to be collected under section 151; (zm) fee for taking a copy of any order or document under section 163; (zn) powers and discharge such functions under section 171; and (zo) any other matter which is to be, or may be, prescribed, or in respect of which provision is to be made, by rules.

2. Clause 165 of the Bill empowers the Government of National Capital Territory of Delhi to make regulations to provide for any matter which is required to be, or may be, specified by regulation or in respect of which provision is to be made by regulations.

3. The matters in respect of which the said rules and regulations may be made are matters of procedure and administrative detail, and as such, it is not practicable to provide for them in the proposed Bill itself. The delegation of legislative power is, therefore, of a normal character.

PRASANNA KUMAR SURYA DEVARA, Secy.